कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम्

विजयेश्वर पञ्चाङ्ग

पञ्चाङ्गप्रवर्तक :-
ज्योतिषी आनाभराम

संशोधक :
प्रेमनाथ शास्त्री

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत । अभ्युत्थानम्-अधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् । धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे श्री भगवद्गीता

वन्दे-मातरम्

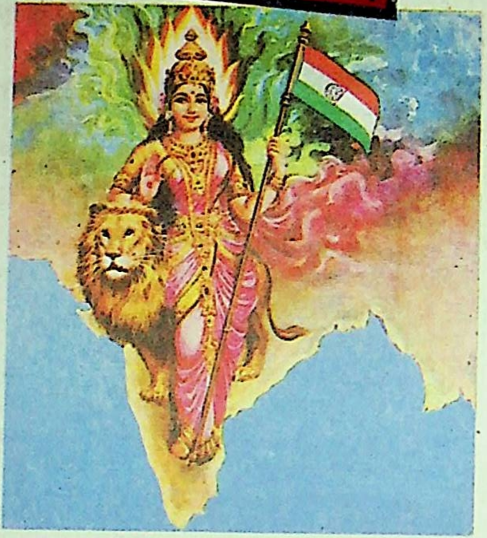

श्वेत शुद्ध वेदों की वाणी
हरा-हरी है धरती रानी

भगवा तप की एक निशानी
चक्र दुष्ट दल के दलने को

लहरों सा लहराये
तिरंगा झण्डा घर घर पर फहराये

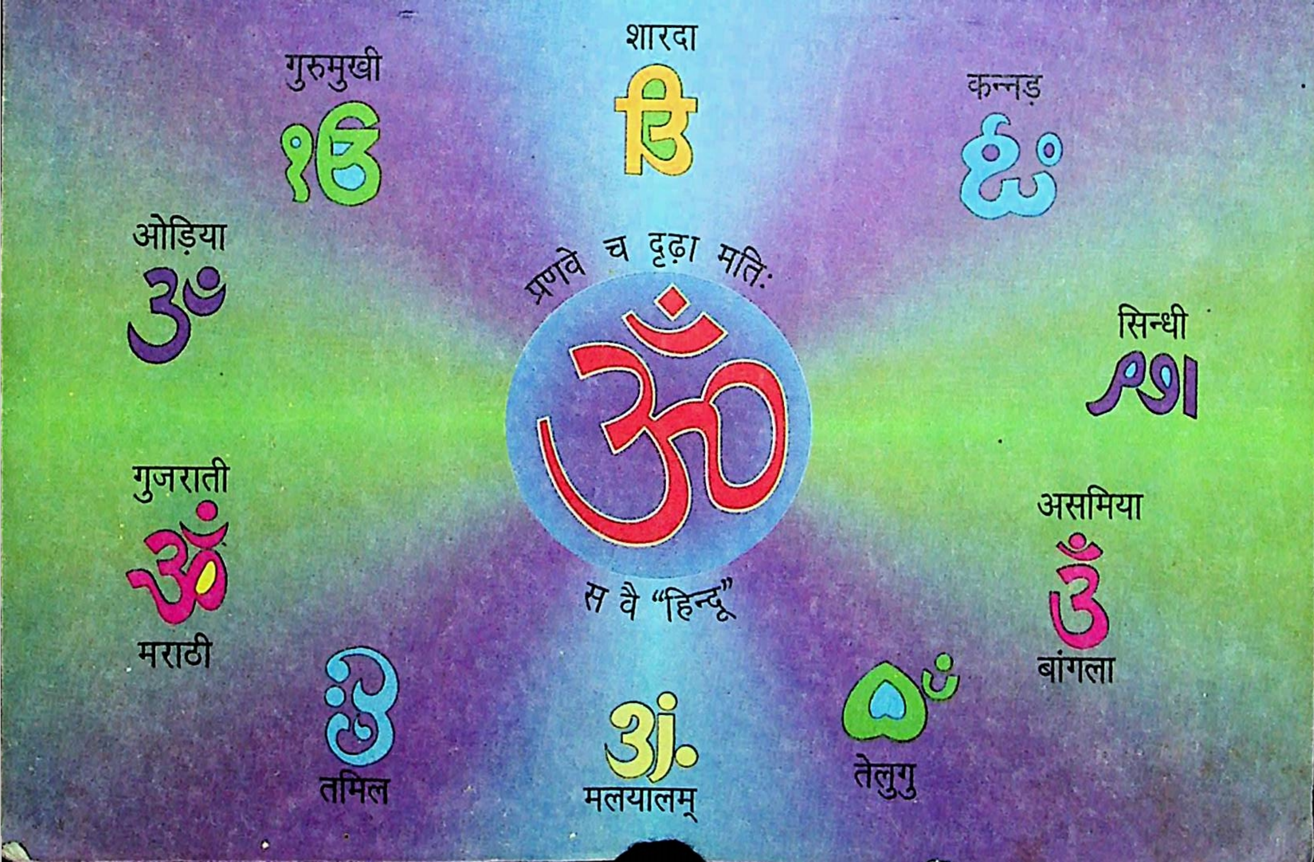

शारदा
गुरुमुखी
कन्नड़
ओड़िया
प्रणवे च दृढ़ा मतिः
सिन्धी
गुजराती
असमिया
स वै "हिन्दू"
मराठी
बांगला
तमिल
मलयालम्
तेलुगु

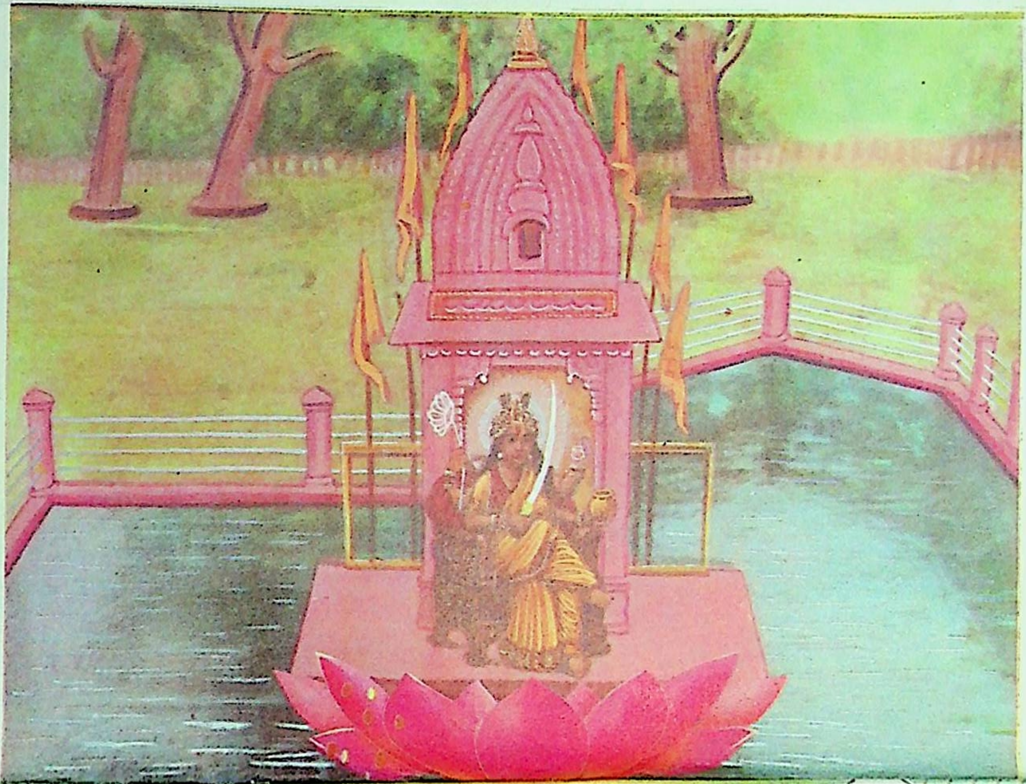

पञ्चांग प्रवर्तक
ज्यो० आप्ताभ शर्मा

विजयेश्वर पञ्चांग

सप्तर्षि सम्वत्
5073

विक्रमी सम्वत्
2054

1997-98

संशोधक :
ज्योतिषी प्रेमनाथ शास्त्री

सम्पादक :
ओंकार नाथ शास्त्री
भूषण लाल ज्योतिषी

मूल्य 25/-

सिद्धान्तज्योतिषाचार्य साहित्याचार्य एम.ए. स्वर्णरजतपदक प्राप्त

मार्तण्ड पंचांग के सम्पादक श्री प्रियव्रत शर्मा

की सम्मति

विजयेश्वर पंचांग के विषय में

गतवर्ष सं० 2053 वि० में श्री विजयेश्वर पंचाङ्ग के सम्पादकों ने ग्रहों के दृक्पक्षीय भोगांश अपना लिए थे, लेकिन तिथ्यादि पंचाङ्ग वही परम्परानुसार खण्डखाद्यकीय रहने दिया थां।

इस वर्ष तिथ्यादि पंचाङ्ग भी दृक्पक्षीय अपनाया है, अतः हम यह कह सकते हैं अब "विजयेश्वर पंचाङ्ग" जम्मू काश्मीर का एकमात्र दृक्तुल्य पंचाङ्ग है। इस पंचाङ्ग को भारत के अन्य अनेक सूक्ष्मगणनावाले दृक्तुल्य पंचागों की सम्मान्य पंक्ति में ला कर खड़ा करने के उपलक्ष्य में मैं इस के सम्पादकों का हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ।

(प्रियव्रत शर्मा)
2.7.96

विजयेश्वर पंचाङ्ग दृग्गणित के आधार से

काश्मीरी पण्डित जनता, पंचाङ्ग में ग्रहसंचार, नक्षत्र, मुहूर्त आदि की अपेक्षा तिथि 'दिवा' "प्रविष्ट" से दैनिक अधिक काम लेते हैं, इसलिये हमारा कर्तव्य बनता है तिथि, 'दिवा' "प्रविष्ट" बिल्कुल शुद्ध हो, "तिथि" 'दिवा' प्रविष्ट के लिये सूर्योदय में भी एक आध मिनट का अन्तर होना नहीं चाहे, जब कि सूर्योदय की गलती होने से कभी तिथि के क्षय तथा अधिक होने, ऐसे ही "दिवा" "प्रविष्ट" में अन्तर पड सकता है, इन बातों को ध्यान में रख कर इस वर्ष हमने पंचांग सम्पूर्णरूप में दृग्गणित के आधार से गणित किया है, उसके अतिरिक्त जम्मू के "Longitude" पर दैनिक सूर्योदय तथा अस्त गणित किया है, भिन्न-भिन्न स्थान का अक्षांश भिन्न-भिन्न होने से हर स्थान का सूर्योदय सूर्यास्त अलग अलग होता है, सम्भव है हमारे पञ्चाङ्ग को भारत के दृग्गणित के आधार से गणित किये हुयें पंचांगों के साथ कहीं तिथि आदि में अन्तर हो, ऐसा होना सम्भव है, पाठक उस से भ्रम में न पडें।

सम्पादक

गीता प्रवचन
काश्मीरी भाषा में

(प्रेम नाथ शास्त्री के ज़बान से)

27 मार्च 1996 को चैत्रशुद्धि दुर्गाष्टमी के दिन काश्मीरी पण्डित सभा एम्फला में रचाये गये एक विशाल यज्ञ में "काश्मीरी भाषा में गीता प्रवचन, का विमोचन डाक्टर कौशल्या वल्ली के हाथों से हुआ, यह गीता प्रवचन 11 कैस्टों में भरा हुआ है जिस का मूल्य 300/ रुपया है -

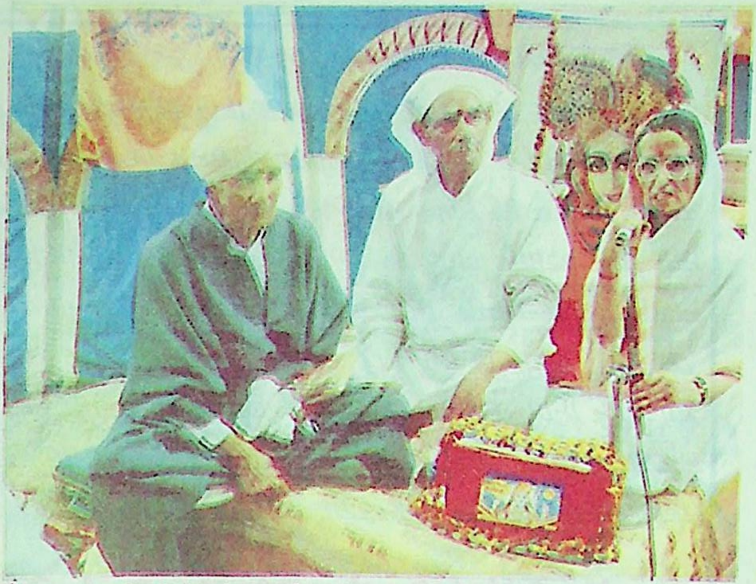

प्रेम नाथ शास्त्री, श्री त्रैलोकी नाथ सोसा (प्रधान) काशमीरी पण्डित सभा जम्मू, डा॰ कौशल्या

'गीता प्रवचन' कैसट्स का विमोचन डा॰ कौशल्या वल्ली के हाथों से काशमीरी पण्डित सभा एम्फला जम्मू में।

डाक खर्च अलग। आर्डर देते समय 150 रुपये एडवान्स भेजिये।

1. यदि आप घर में धार्मिक वातावरण बनाये रखना चाहते हैं, तो नियम से "गीताप्रवचन" सुनने का कार्यक्रम बनायें।
2. यदि आप अपनी संस्कृति के अंगभूत काश्मीरी भाषा को घर में सुरक्षित रखना चाहते हैं उस में भी यह "गीता प्रवचन" सहायक रहेगा।
3. यदि आप बिखरे काश्मीरी पण्डितों को एक धागे में पिरोना चाहते है तो उसकी भी यह "गीता प्रवचन" पूर्ति करेगा।
4. यदि आप वेदों उपनिषदों का सारभूत अमृतपान करना चाहते हैं तो "गीताप्रवचन" सुनने से बढ कर और कोई साधन नहीं है।
5. यदि आप किसी घरेलू, आर्थिक, मानसिक उलझन में उलझे हैं तो "गीता प्रवचन" सुनिये।
6. यदि आप के घर में कोई पैतृक, दैविक, महोत्सव है - यदि ऐसे अवसर पर श्राद्ध अथवा कोई यज्ञ करने का प्रोग्राम न बन सके तो "गीता प्रवचन" सुनिये।
7. यदि आप मनुष्य जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पूर्णसफलता प्राप्त करना चाहते हैं - "गीता प्रवचन" को अपनायें।

लल्लद्यद — सरस्वती का अवतार — मनुष्य रूप में

श्री विवेकानन्द महाराज ने कहा है, "ऋषियों ने वेद, उपनिषद् षड्दर्शन तिजोरियों में बन्द रखे हैं" परन्तु उन तिजोरियों को खोलकर लल्लीश्वरी ने उपनिषदों, षड्दर्शनों, वेदान्त तथा शैवदर्शन के मोतिया लड्डू बना कर काश्मीरी पण्डितों के आध्यात्मिक उद्धार के लिये तैयार रखे हैं।

लल्लीश्वर्यै: नम:

मैं लल्लवाक्य नाम का पुस्तक बना रहा हूँ, जिसके प्रकाशित होने में अभी कुछ समय लगेगा – जो पुस्तक आप को कैस्टरूप में भी प्राप्त होगी, तीन कैस्ट काश्मीरी भाषा में अर्थ और व्याख्या सहित तैयार है, लल्लवाक्य कैस्ट के साथ श्री भास्कराचार्य और आचार्य रामशास्त्री जी का संस्कृतपद्यानुवाद साथ-साथ जोड़ा है, व्याख्या में मैंने यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया है – लल्लीश्वरी के हर एक वाक्य का वेदों उपनिषदों विशेषतया शैवदर्शन के साथ तुलनात्मक मेल हैं।

(प्रतिकैस्ट का मूल्य 30 रुपया है डाकखर्च अलग)

प्रेमनाथ शास्त्री

काश्मीरी पण्डितों को बुजर्गों से विरसे में मिला हुआ आध्यात्मिक एक सारगर्भित उपहार है, प्रेमनाथ शास्त्री ने इस स्तोत्र की सरल तथा सुबोध हिन्दी टीका की है, इस वरसे में प्राप्त स्तुति का हम काश्मीरी पण्डितों को अर्थ समझने का प्रयत्न अवश्य करना चाहिये, यह अर्थ सहति पञ्चस्तवी आप को **धार्मिक पुस्तक भण्डार तिलोतालाब जम्मू** से मिलेगी। अवश्य इस स्तुति का पाठ करना चाहिये जब कि भगवत् गीता के अन्तिम अध्याय के 65, 66 वें श्लोक में भगवान् अर्जुन से कहता है **'मामेकं शरणं व्रज'** माँ की शरण में जा, ऐसे ही **"मां नमस्कुरु"** मां की शरण में जा, 9 वें अध्याय के 22 वें श्लोक में कहता है ***'अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते तेषां योग क्षेमंवहाम्यहम्'*** जो अनन्य भाव से मां की शरण में जाता है, मैं उस की सभी कामनायें पूरी करता हूँ।

पञ्चस्तवी

पाठक! यद्यपि इन श्लोकों में मां का अर्थ है मुझ कृष्ण को, परन्तु वह कौन सा ताला है जिस की चाबी श्री मद्भगवत् गीता में मिलती नहीं है इन श्लोकों में 'मां' का अर्थ मां भी हो सकता है जैसा कि कई माता के विद्वान उपासकों ने किया है। देखिये गीताप्रेस के छपे हुये शक्ति अंक में **"सहज साधना में महाशक्ति या मां"** यह लेख श्री भीमचन्द्र चटोपाध्याय बी.ए.बी.एस.सी, एम.सी, एम.आर, ई०ई० ऐम्० आई.ई. देवी भक्त ने लिखा है

प्रबन्धक

हमारे प्रकाशन

(1) कर्म काण्डदीपक (हिन्दी तथा उर्दू में)

(जिस में धूपदीप, विष्णुपूजन, प्रेप्युन, शिवपूजा, दिवचक्षीर पूजा यक्षामावसी पूजा, जन्मदिन पूजा, बुनियाद मकान पूजा, गृह प्रवेश पूजा, दीपमाला पूजा, श्राद्ध संकल्प विधि, रुद्र मन्त्र, चमानुवाक्य, पत्र कथा तथा पत्र पूजा, शिवरात्रि पूजा, शिव महिम्नस्तोत्र हैं)

(2) पंचस्तवी (हिन्दी में) भाषा टीका सहित

पंचस्तवी (उर्दू में) भाषा टीका सहित

(3) भवानी सहस्त्रनाम, महिम्नास्तोत्र, बहुरूपगर्भ, इन्द्राक्षी (उर्दू तथा हिन्दी में)

(4) शिवरात्रि पूजा (हिन्दी तथा उर्दू में)

(5) महिम्नस्तोत्र (उर्दू में अर्थ सहित)

(6) सन्ध्या (हिन्दी तथा उर्दू में)

(7) सहस्त्रनामावली (पुष्पार्चन) हवन के लिये स्वाहाकार हिन्दी में

(1) शिवसहस्र नामावली, (2) विष्णुसहस्र नामावली (3) गणेश सहस्र नामावली (4) सूर्य सहस्र नामावली (5) भवानी सहस्र नामावली (6) शारिका सहस्रनामावली (7) ज्वाला सहस्र नामावली (8) महाराज्ञी सहस्र नामावली (9) शारदा पढिये (10) राम गीता (हिन्दी में) (11) श्रीमत् भगवद्गीता (उर्दू में छप रही है)

इस के अतिरिक्त प्रेम नाथ शास्त्री की ज़बान से भरे हुए निम्नलिखित कैसट्स मिल सकते हैं।

1. गीता प्रवचन (काश्मीरी जबान में व्याख्या सहित)
2. लल वाक्य (काश्मीरी जबान में व्याख्या सहित)
3. भवानी सहस्त्रनाम, 4. नित्य नियम विधि, 5. जन्मदिन पूजा तथा पन्न पूजा, 6. पंचस्तवी, 7. शिवरात्रि पूजा, 8. दुर्गा सप्तशती, 9. राम गीता, 10. अन्तिम संस्कार विधि, 11. महिम्नस्तोत्र।

(1) **देहली :-**

(1) **तनेजा इल्कट्रानिक्स एण्ड टैन्ट हाऊस,** रघुनाथ मन्दिर, अमर कॉलोनी, लाजपत नगर, ☎ 6429046

(2) **ब्रह्मपुत्र शापिंग कम्पलैक्स,** शाप नं० 45, सैक्टर-29, नौएडा, ☎ : 8539338

(2) **उधमपुर (जम्मू)**

यूनिवर्सल न्यूज़ एजेन्सी, मुर्कजी बाजार,

(3) **जम्मू**

(1) **विजयेश्वर धार्मिक पुस्तक भण्डार** तालाब तिलो ☎ 555763

(2) **जे० के० बुकशाप,** तालाब तिलो

(3) **भसीन पिक्चर पैलस पक्का ढंगा,** ☎ 43885

(4) **गुप्ता स्टेशनरी स्टोर,** सिटी चौक

D.P.B. PUBLICATION
(Dehati Pustak Bhandar)
110, Chawri Bazar, Delhi-110006

☎ 3273220

विजेयश्वर ज्योतिष कार्यालय के नियम

जन्म पत्री के लिये शुद्ध गणित का होना आवश्यक होता है यदि आप शुद्ध और सही जन्मपत्री बनवाना चाहते हैं तो सम्वत्, तिथि, समय, जन्मस्थान और गोत्र लिख कर भेजें।

(1) जन्मपत्री बनवाने की दक्षिणा = 150 रु॰

(2) यदि आप संक्षिप्त रूप से अपने भविष्य में होने वाली महत्व पूर्ण घटनाओं, नौकरी, शिक्षा, विवाह इत्यादि के विषय में जानना चाहते हैं तो उसके लिये अलग से 300 रुपये एडवांस भेजने की कृपा करें।

(3) यदि आप ने सम्पादक से मिलना हो तो विजेयश्वर धार्मिक पुस्तक भण्डार तालाब तिलो जम्मू अथवा **दूरभाष** : 555763, 555607 से सम्पर्क करें।

वटुक परमूज़ुन

फाल्गुन कृष्ण पक्ष अमावसी 26 फरवरी को

वटुक परमोज़ुन के लिये सूर्य (प्राण) चन्द्रमा (मन) के संयोग का होना आवश्यक है जो संयोग अमावस्या तिथि पर ही होता है जब कि अमावस्या के दिन सूर्य चन्द्र का अन्तर 12 अंश से कम होता है योगियों और साधकों की दृष्टि से अमावस्या के दिन सूर्य चन्द्रमा का संयोग साधना के लिये उत्तम माना गया है इस कारण दिन घटे या बढे (त्र्यह: हो या त्रिस्पक्) वटुक परमोज़ुन अमावस्या को ही मनाने का विधान है।

सम्पादक

ब्राह्मी - विद्या

ॐ ॐ ॐ = तीन प्रकार के दुःखों का निवारण करने के लिये मंगलरूप में तीन बार आरम्भ में 'ॐ' का उच्चारण किया गया है, त्रिगुण पुरुष = तुम त्रिगुण पुरुष हो अर्थात् तीन गुणों में तेरा ही निवास है, क्षेत्र चर = शरीर रूपी क्षेत्र में फिरने से तुम ही क्षेत्रचर हो, मोहं = मोह रूपी ग्रन्थी को, भिन्धि= काटो, रजस्तमसी = रजो गुण, तमो गुण रूपी ग्रन्थियों को काटो, प्राकृत = बनावटी, पाशजालं = बन्धनों का जाल, सावरणं = आवरण सहित, परिहर = फैंक दो, सत्वं ग्रहाण = तत्वं को जान, पुरुषोत्तमोसि = तुम स्वयं ही, पुरुषोत्तम हो, सोम = चन्द्रमा, सूर्य = सूरज, =अग्नि, प्रवर=तेजोमय रूप, परमधामन् = उत्तम स्थान वाले, ब्रह्म, विष्णु, महेश्वर, स्वरुप = तुम ही ब्रह्मा, विष्णु, महेश रूप हो, सृष्टि स्थिति = तुम ही सृष्टि को बनाने वाले हो, संहार कारक=नाश करने वाले हो, भ्रू-मध्य-निलय = भ्रुवों के मध्य में ध्यान टिकाने से तुम जाने जाते हो, तेजोसि = तुम तेज रूप हो, धामसि = तुम उत्तम धाम वाले हो, अमृतात्मन् = तुम अमृत रूप हो, ॐ तत्सत् = तुम सत् रूप हो, हंसः = तुम स्वयं प्रकाश हो, शुचिषत् = तुम निर्मल स्थान पर रहने वाले हो, वसुरन्त-रिक्षसत् =तुम आकाश में रहने वाले वसु नाम के देवता हो, होता = तुम ही अग्नि में आहुति डालने वाले हो, वेदिषत् = तुम ही यज्ञ की वेदी पर ठहरे हुये अग्नि हो, अतिथिर्दराणसत् = तुम ही ग्रहस्थों में अतिथि रूप देवता हो, नृषत =

तुम मनुष्यों में रहने वाले हो, **वरसत** = तुम देवताओं में रहने वाले हो, **ऋत सत्** = तुम सत्य में रहने वाले हो, **व्योम सत्** = तुम आकाश में ओत प्रोत हो, **अब्जः** = तुम जल में उत्पन्न होने वाले रत्न शंक आदि हो, **गोजा** = तुम पर्वतों तथा पृथ्वी से प्रकट होने वाले अन्न औषधि रूप हो, **अद्रिजा** = तुम पवर्तों से प्रकाट होने वाले नदी-नाले रुप हो, **ऋतजा** = तुम सब से महान् और परम सत्य हो, **परम-ब्रह्म-स्वरुप** = तुम परम ब्रह्म स्वरूप हो, **सर्वगत** = तुम सब में गए हो, **सर्व शक्ते** = तुम सर्व शक्तिमान् हो, **सर्वेश्वर** = तुम सबों के स्वामी हो, **सर्वेन्द्रिय** = सब इन्द्रियों से, **ग्रन्थि भेदं कुरु** = आसक्ति छोड़ो, **परमं-पदं** = उस परमपद का, **पर मार्ग** = उस उत्तम मार्ग का, **परामर्शय** = विचार कर, **ब्रह्म-द्वारं सर** = ब्रह्मद्वार की ओर चल अर्थात् अपने स्वरूप को ज़ान, **कुमार्ग जहि** = अज्ञान के मार्ग को छोड, **षट्-कौशिकं शरीरं** = इस षट् कोशिक शरीर अर्थात् रोम, रक्त, मांस, मज्जा, हड्डियां और वीर्य से बने हुये शरीर को, **त्यज** = छोडो, **शुद्धोसि** = तुम शुद्ध रूप हो, **बुद्धोसि** = तुम बुद्धि रूप हो, **विमलोसि** = तुम निर्मल हो, **स्वपदम्-आस्वादय स्वाहा** = अपने स्वरूप का अनुभव कर इस ज्ञान को तू अच्छी प्रकार स्वीकार कर !

नित्यप्रार्थनाविधिः

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजं प्रसन्नवदनं ध्याये सर्वविघ्नो पशान्तये।
अभिप्रीतार्थ सिद्धयर्थ पूजितो यः सुरैरपि सर्वविघ्नच्छिदेतस्मै गणाधिपतये नमः।।

शब्दार्थः- ***शुक्ल*** = सफेद, ***अम्बर*** = वस्त्र, ***धरं*** = धारण किये हुये, ***विष्णुं*** = सर्वव्यापक, ***शशिवर्णं*** = चन्द्रमा जैसे वर्ण वाले, ***चतुर्भुजं*** = चार भुज वाले, ***प्रसन्नवदनं*** = प्रसन्न मुख वाले, ***ध्याये*** = ध्यान करता हूँ, ***सर्वविघ्नोनपशान्तये*** = सब विघ्नों के शान्ति के लिये, ***अभिप्रीत*** = चाही हुई, ***सिद्धयर्थ*** = सिद्धि के लिये, ***यः*** = जो गणेश जी, ***सुरैः*** = देवताओं से, ***अपि*** = भी, ***पूजितः*** = पूजा जाता है, ***तस्मैः*** =उस, ***सर्वविघ्नच्छिदे*** = सब विघ्नों के नाश करने वाले, ***गणाधिपतये*** = गणेश जी को **नमः** = नमस्कार हो।

अर्थः- *मैं सफेद वस्त्र धारण किये हुये सर्वव्यापक, चन्द्रमा के जैसे वर्णमाले चार भुजाओं से युक्त प्रसन्नमुखवाले गणेश जी का ध्यान सभी विघ्नों की शान्ति के लिये करता हूँ जिस गणेश जी का पूजन देवता भी अपना इष्ट पाने के लिये करते हैं उसी सभी विघ्नों का नाश करने वाले गणेश जी को नमस्कार करता हूँ।*

टिप्पणीः- गणेश जी का वर्ण लाल होते हुए भी ऊपर के श्लोक में गणेश जी के वस्त्रों का रंग सफेद क्यों कहा है? इस श्लोक से संकेत मिलता है गणेश पूजा अनादि काल से चलती आई है जबकि चार युगों में से पहला युग है सत्य युग, सत्य युग के गणेश का वर्ण था सफेद।

बिभ्रत-दक्षिण-हस्त-पद्म-युगले, दन्ताक्ष सूत्रे शुभे- वामे मोदक-पूर्णपात्र-परशू-नागोपवीती-त्रिदृक्।
श्रीमान्-सिंहयुगासन: श्रुतियुगे, शंखौ वहन्-मौलिमान् दिश्यात्-ईश्वर पुत्र-ईश भगवान् लोम्बोदरः शर्म-न:।।

शब्दार्थ:- *बिभ्रत्* = धारण किया है, *हस्तपद्मयुगले* = दो करकमलों में, *दन्ताक्षसूत्रे* = एक में हाथी का दान्त, दूसरे में अक्षमाला, *शुभे* = निर्मल, *वामे* = बायें दो हाथें में, *मोदक पूर्ण पात्र* = लड्डू से परिपूर्ण पात्र और *परशु* = कुल्हाड़ी, *नागोपवीती* = यज्ञोपवपीत के रूप में ही सर्प धारण किया हुआ है, *त्रिदृक्* = अग्नि, चन्दन और सूर्य जिस के तीन नेत्र हैं। *श्रीमान* = शोभायमान् *सिंहयुगासन:* = दो सिंह के चरम जिस के आसन है, *श्रुति युगे* = जिस ने दोनों कानों में, *शंखौ* = दो शंख; *वहन्* = ध ारण किये हैं, *मौलिमान्* = जिसने मुंकुट धारण किया है, *ईश्वरपुत्र:* = वही शंकर के पुत्र, **ईश** = सर्वशक्तिमान् *भगवान्* = ऐश्वर्य, *लम्बोदर:* = लम्बे पेट वाला (सब चराचर सृष्टि को लय करने वाला) *न:* = हमें, *शर्म* = कल्याण, *दिश्यात्* = दे।

अर्थ:- वह गणेश जी हमारा कल्याण करे, जिस के दायें के दो हाथों में निर्मल दन्त और अक्षमाला है, बायें के दो हाथों में मोदक का पूर्णपात्र और कुल्हाड़ी है, सर्प यज्ञोपवीत के रूप में है जिस के तीन नेत्र है, जो शोभायमान है, दो सिंह के चरम जिस के सिर पर मुकुट है वह शंकर का पुत्र सर्वशक्तिमान ऐश्वर्यवाला हमारा कल्याण करे।

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं विश्वधारं गगनसहदृशं मेघवर्ण शुभाङ्गम् ।
लक्ष्मीकांतं कमलनयनं योगिभिर्ध्यान् - गम्यं वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैक नाथम् ।।

शब्दार्थः- ***शान्ताकारं*** = शान्त आकार वाले, ***भुजगशयनं*** = जो शेषनाग पर शयन करता है, ***पद्मनाभं*** = जिस के नाभि में पद्म है, ***सुरेशं*** = देवताओं का स्वामी, ***विश्वाधारं*** = जगत् का आधार, ***गगन सदृशं*** = आकाश जैसा विशाल, ***मेघवर्णं*** = श्यामवर्ण का, ***शुभाङ्गम्*** = सुन्दर अंगों वाला, ***लक्ष्मीकान्तं*** = लक्ष्मी का पति, ***कमल नयनं*** = कमल जैसे नेत्र वाला, ***योगिभिः*** = योगी लोग, ***ध्यानगम्यं*** = जिस को ध्यान से जानते हैं, ***.व भयहंर*** = संसार के भयों को दूर करने वाले, ***सर्वलोकैक नाथम्*** = सवलोकों के स्वामी, ***विष्णुं*** = भगवान् को, ***वन्दे*** = प्रणाम करता हूँ।

अर्थः- शान्त आकार वाले, शेष नाग पर शयन करने वाले पद्मनाभवाले देवताओं के स्वामी, जगत्के आध ार, आकाश के समान श्याम वर्ण वाले, सुन्दर अंगों वाले, लक्ष्मी के पति, कमल जैसे नेत्र वाले, योगी जिसका ध यान करते हैं, संसार के भयों का नाश करने वाले, सब लोकों के स्वामी मैं ऐसे ही विष्णु भगवान् का ध्यान करता हूँ।

दुर्गा स्तोत्र

नमस्ते शरण्ये शिवे सानुकम्पे, नमस्ते जगद्व्यापिके विश्वरूपे।
नमस्ते जगद्वन्द्य पादारविन्दे, नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे।।
नमस्ते जगच्चिन्त्यमान स्वरूपे, नमस्ते महायोगि विज्ञान रूपे।
नमस्ते नमस्ते सदानन्दरूपे, नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे।।
अनाथस्य दीनस्य तृष्णातुरस्य, भयाभीतभीतस्य बद्धस्य जन्तोः।
त्वमेकागतिर्देवि निस्तार कर्त्री, नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे।।
अरण्ये रणे दारुणे शत्रुमध्ये, जले संकटे राजगेहे प्रवाते।
त्वमेकागतिर्देवि! निस्तार हेतु, नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे।।

गौरीस्तुतिः

ॐ लीलारब्ध-स्थापित-लुप्ताखिल-लोकां, लोकातीतै-र्योगिभिर्-अन्तर्-हृदि-मृग्याम्
बालादित्य-श्रेणि-समान-द्युति-पुञ्जां, गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईडये

अर्थः- जो जगदम्बा बिना किसी परिश्रम के सृष्टि को बनाती है पालन करती है और नाश करती है, योग के अन्तिम अवस्था पर पहुंचे हुये योगी जिस शक्ति रूपी मां को हृदय में ढूंढते हैं, उदित होते हुये असंख्य सूर्यों जैसी प्रकाश वाली, कमल जैसे नेत्रों वाली माता गौरी = योगाग्नि से जलाये हुये शरीर के कारण गौर वर्ण वाली की मैं स्तुति करता हूँ।

आशा-पाश-क्लेश-विनाशं विदधानां, पादाम्भोज-ध्यान-पराणां पुरुषाणाम्।
ईशीम्-ईशाङ्. गार्ध हरां तां तनुमध्यां, गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-इहम्-ई० ।।

अर्थः- जो भक्त जन उस शक्ति रूपी माता के चरण कमलों के ध्यान में लगे हुयें हैं, उन के आशा के बन्धनों से पैदा हुये कष्टों को नाश करने वाली, शक्ति शाली, शंकर के आधे शरीर पर अधिकार वाली, सूक्ष्म कमर वाली, कमल जैसे नेत्रों वाली, माता गौरी की मैं स्तुती करता हूँ।

प्रत्याहार-ध्यान-समाधि-स्थितिभाजां, नित्यं चित्ते निर्वृत्तिकाष्ठां कलयन्तीम् ।
सत्य-ज्ञाना-नन्दमयीं तां तडित्-आभां, गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईडये् ।।

अर्थ:- प्रत्याहार, ध्यान तथा समधि की साधना में लगे हुये भक्तों के चित्त में आनन्द उत्पन्न करने वाली, सत्य ज्ञान तथा आनन्द स्वरूप वाली, बिजली की जैसी प्रकाशवाली, कमल जैसे नेत्रों वाली गौरी माता की मैं स्तुति करता हूँ।

टिप्पणी-: (प्रत्याहार) इन्द्रियों का अपने अपने विषयों के संग से मुंहमोड़ना इन्द्रियों का चित्त के नियन्त्रण में ही रहना 'प्रत्याहार' कहलाता है, प्रत्याहार के सिद्ध होने पर प्रत्याहार के समय योगी को बाहर का ज्ञान नहीं होता है अपितु व्यवहार के समय पर होता है। (ध्यान) धार्मिक चिन्तन-अथवा चित्तवृत्ति की एकान्तता को ध्यान करते हैं। (समाधि) ध्यान का दूसरा रूप ही समाधि है, ध्यान करते समय योगी का चित्त जब ध्येयाकार वाला हो जाता है, ध्येय के बिना जब योगी अपना आप भूल जाता है तो समाधि कहलाती है। ध्यान और समाधि में अन्तर:- ध्यान में ध्यान करने वाला अर्थात् ध्याता, ध्यान, ध्येय इन तीनों का भान रहता है परन्तु समाधि में इन तीनों की एकता हो जाती है, केवल ध्यानाकार वृत्ति ही रहती है।

चन्द्रापीडा-नन्दितमन्द-स्मितवक्त्रां, चन्द्रापीडा-लंकतृ-लोला-लकभाराम् ।
इन्द्रोपेन्द्रा-द्यर्चित पादाम्बुजयुग्मां, गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम-ई० ।।

अर्थः- भगवान् शंकर को आनन्दित करने वाले मुस्कराहट से युक्त मुख वाली, भगवान् शंकर के निमित सजाये हुये घूंघट वाले बालों की भार वाली, इन्द्र तथा नारायण जिस के चरणों की पूजा करते हैं उस कमल जैसे नेत्रों वाली गौरी माता की मैं स्तुति करता हूँ।

नाना कारैः शक्ति-कदम्बै-र्भुवनानि, व्याप्य स्वैरं क्रीडति यासौ स्वयमेका।
कलयाणीं तां कल्पलताम्-आनतिभाजां, गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-इड्ये ।।

अर्थः- भिन्न-भिन्न शक्तियों से भूः, भुवः, स्वः लोकों में व्याप्त हो कर जो मां अकेली स्वंतन्त्र रूप से खेलती रहती है, जो कल्याण रूप से शरण में आये हुओं के लिये कल्पलता है अर्थात् हर कामना को पूर्ण करने वाली है ऐसी ही कमल जैसी नेत्रों वाली मां की मैं स्तुति करता हूँ।

मूलाधारात्-उत्थित-वन्तीं विधिरन्ध्रं, सौरं-चान्द्रं धाम विहाय ज्वलिताङ्गीम्।
स्थूलां सूक्ष्मां सूक्ष्मतरां ताम्-अभिवन्द्यां, गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईड्ये ।।

अर्थः- सूर्य लोक और चन्द्रमा लोक से गुज़र कर मूलाधार से उठी हुई ब्रह्म रन्ध्र तक पहुंची हुई प्रकाश रूप, स्थूल, सूक्ष्म तथा कारण शरीर में व्याप्त, प्रणाम के योग्य, कमलों जैसी नेत्रों वाली माता गौरी की मैं स्तुति करता हूँ।

टिप्पणी:- *इस श्लोक में मूलाधार ब्रह्मरन्ध्र का उल्लेख है इसलिये मूलाधार इत्यादि षट् चक्रों के विषय में पाठकों की जानकारी के लिये इस विषय पर थोड़ा सा प्रकाश डालना ज़रूरी है। मनुष्य शरीर शक्ति का केन्द्र है योगियों का कहना है कि मूलाधार में कुण्डलिनी सोई होती है, कुण्डलिनी सर्प के आकार की होती है, इसलिये कुण्डलिनी कहलाती है, योगियों के शरीर में इस के जाग्रत होने पर यह चक्र की तरह बहुत गति से चलती है इस के चलने की शक्ति प्रकाश की गति से भी अधिक है प्रकाश 25 हज़ार मील प्रति सैकण्ड की गति से चलता है, और कुण्डलिनी 3,45000 मील प्रति सेकेण्ड की गति से चलती है, कुण्डलिनी जाग्रत हो कर इडा पिंगला नाडी से गुजर कर अथवा इसी सूर्य तथा चन्द्रमा नाडी की सहायता से षट् चक्रों को अथवा षट्-कमलों को प्रफुल्लित करके ब्रह्मरन्ध्र अथवा सहस्र दल में पहुँच कर सदा शिव के साथ मिल जाती है, सहस्रदल को प्रज्वलित करना ही कुण्डलिनी साधना की अन्तिम अवस्था है।*

षट् चक्र अथवा षट् दल

(1)	मूलाधार चक्र	=	जो गुदा के समीप है, इस के चार दल हैं।
(2)	मणिपूरक	=	नाभि के सामने हैं, जिस के दस दल हैं।
(3)	स्वाधिष्ठान चक्र	=	जो लिंग के सामने है, जिसके 6 दल हैं।
(4)	अनाहत	=	हृदय के सामने है, जिसके 12 दल हैं।
(5)	विशुद्धाख्य	=	कण्ठ के सामने है, जिसके 16 दल हैं।
(6)	आज्ञाचक्र	=	भौंहों के मध्य में है, जिसके 2 दल हैं।

आदि-क्षान्ताम्-अक्षर मूर्त्या, विलसन्तीं, भूते भूते भूत-कदम्बं प्रसवित्रीम्।
शब्द-ब्रह्मा-नन्द-मयीं ताम्-अभिरामां, गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ई०।।

अर्थ= 'अ' से लेकर 'क्ष' तक अक्षर रूप में विलास करने वाली, युग-युग में प्राणियों को उत्पन्न करने वाली, शब्द ब्रह्मस्वरूप आनन्दमई उस सुन्दर मां का, जिस के नेत्र कमल के सम्मान हैं मैं स्तुति करता हूँ।

टिप्पणी = ऊपर लिखित षट्दलों में 'अ' से लेकर 'क्ष' तक अक्षर अंकित हैं जिन को मात्रिकायें कहते हैं, योगियों के मत से षट् दलों में अन्तिम मात्रा 'क्ष' है जो आज्ञाचक्र में अंकित है इसी कारण इस श्लोक में 'अ' से 'क्ष' तक का वर्णन है जबकि वर्णमाला में पहला अक्षर 'अ' है और अन्तिम अक्षर 'ह' है। "शब्द ब्रह्म" योगी की जब कुण्डलिनी जाग्रत होती है तो उससे **'स्फुट'** अर्थात् शब्द होता है, उसका पहला शब्द **'नाद'** कहलाता है इसी प्रकार जीव सृष्टि में पहला उत्पन्न होने वाला शब्द **'ब्रह्म'** कहलाता हैं।

यस्या कुक्षौ लीनम्-अखण्ड़ं, जगत्-अण्डं, भूयो भूयः प्रादुर्-अभूत्-अक्षतमेव।
भर्त्रा सार्धं तां स्फटिकाद्रौ, विहरन्तीं, गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ईड्०

अर्थ = जिस जगदम्बा की गोद में यह सब सृष्टि लय हो जाती है फिर बार-बार किसी खण्डन के बिना फिर से उत्पन्न होती है प्रकाश के केन्द्र ब्रह्मरन्ध्र में सदाशिव के साथ विहार करती हुई अथवा बर्फ

से ढक्के हुये सफेद हिमालय पर्वत पर विहार करने वाली कमल जैसे नेत्रों वाली गौरी माता की मैं स्तुति करता हूं।

यस्याम्-एतत्प्रोतम्-अशेषं मणिमाला, सूत्रे यत्-वत् क्वापि चरं चाप्यचरं च।
ताम्-अध्यात्म-ज्ञानपदव्या-गमनीयां, गैरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम-अहम्-ईड्ये।।

अर्थ =जिस शक्ति में यह सारी चराचर सृष्टि ऐसे पिरोई हुई है जैसे सूत्र में रत्न गुथे हुये होते हैं उसी शक्ति रूपी मां को जो आध्यात्मज्ञान से जानी जाती है जिस के नेत्र कमलों के समान हैं उसी मां की मैं स्तुति करता हूँ।

नित्य: सत्यो निष्कल एको जगदीश: साक्षी यस्या: सर्गविधौ सहंरणे च।
विश्वत्राण-क्रीडन शीलां शिवपत्नीं, गौरीम्-अम्बाम्-अम्बु-रुहा-क्षीम्-अहम्-ई०।।

अर्थ =जिस महामाया के सृष्टि बनाते समय अथवा संहार करते समय सदा शिव जो नित्य, सत्य, सजातीय इत्यादि तीन भेदों से रहित है जो आप के बनाने के काम में केवल साथी रूप में रहते हैं, जगत की रक्षा करना जिन का एक खेल है उसी कमल जैसी नेत्रों वाली गौरी माता की मैं स्तुति करता हूँ।

प्रातः काले भावविशुद्धिं विदधानो, भक्त्या नित्यं जल्पति गौरीदशकं यः।
वाचां सिद्धिं सम्पत्तिम् - उच्चैः शिवभक्तिं, तस्या-वश्यं पर्वत-पुत्री विदधाति।।

अर्थ = जो प्रातः काल शुद्ध हृदय से युक्त और संकल्प विकल्प रहित होकर भक्ति से नित्य इन दस गौरी माता के श्लोकों का उच्चारण करता है उस भक्त को सिद्धि, ऐश्वर्य, भगवान् शंकर की भक्ति पार्वती माता अवश्य देती है।

सर्वमङ्गल-मङ्गल्ये, शिवे-सर्वार्थ-साधिके शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोस्तु ते।।

सर्वमङ्गल = भक्त की सभी शुभकामनायें सिद्ध करने से, ***मङ्गला*** = सुन्दर अथवा कल्याण कारी, ***शिवे***, (दिवी पुराण में शिवा शब्द मुक्ति का वाचक है) हे मोक्ष देने वाली, ***सर्वार्थसाधिके*** = धर्म, अर्थ काम, मोक्ष वाली, ***शरण्ये*** = दुःखों से रक्षा करने वाली, ***त्र्यम्बके*** = अग्नि, सूर्य, चन्द्रमा रूप तीन नेत्र वाली ***गौरी*** = दक्ष के यज्ञ में योग-अग्नि में भस्म बनी हुई, हे गौर वर्णवाली ***नारायणि*** = विष्णु की लक्ष्मी रूपा शक्ति वाली हे माता, ***नमः*** = नमस्कार ***अस्तु*** = हो, ***ते*** = तुम्हें।।

अर्थः- *सभी शुभकामनाओं को सिद्ध करने से सुन्दर अथवा कल्याणकारी, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष को देने वाली, दुःखों से रक्षा करने वाली अग्नि चन्द्रमा, सूर्य रूप तीन नेत्रों वाली, दक्ष प्रजापति के यज्ञ में योग अग्नि में भस्म बनी हुई अतः गौरवर्णवाली, विष्णु की लक्ष्मी रूपा शक्तिवाली माता तुम्हें नमस्कार हो।*

अभिनवगुप्त कृत शिवस्तुतिः

इस स्तुति के बारे में जनश्रुति चलती आई है, "जब अभिनवगुप्त स्वेच्छा से अपना पंचभौतिक शरीर छोड़ने के लिये किसी रम्य एकान्त भूमि की तलाश में जन्मभूमि काश्मीर के घने जंगलों में घूम रहे थे, उस समय उनकी शिष्य मण्डली उन के साथ थी, उसी समय शैवशास्त्रों के रचयिता अभिनवगुप्त ने इस स्तुति की रचना की है शिष्यमण्डली के साथ इस शिवस्तुति के गूँज में ही मनोवाँछित स्थान पर पहुँच कर अभिनवगुप्त पञ्चभौतिक शरीर छोडकर ब्रह्मलीन हुये।

ॐ व्याप्त-चराचर-भाव-विशेषं, चिन्मयम्-एकम्-अनन्तम्-अनादिम्।
भैर-व-नाथम्-अनाथ-शरण्यम्, तन्मय-चित्ततया-हृदि वन्दे।। 11

भावार्थ: मैं अभिनवगुप्त मन की एकाग्रता से उस शंकर की हृदय में वन्दना करता हूँ, जो शंकर अखिल चराचर सृष्टि में ओत प्रोत है। जो ज्ञान रूप है, अनन्त है। भैरवों का स्वामी है और अनाथों को शरण देने वाला है।

त्वन्मयम्-एतत्-अशेषम्-इदानीं, भाति मम त्वत्-अनुग्रह शक्त्या
त्वं च महेश सदैव ममात्मा, स्वात्ममयं मम तेन समस्तम्।। 2 ।।

अर्थः यह चराचर सृष्टि आप का ही रूप है, ऐसा मुझे आप की अनुग्रहशक्ति से प्रतीत होता है, परन्तु हे शंकर मेरी आत्मा ही आप हैं, अतः यह सारा जगत् मेरा ही रूप है, ऐसा भी मैं अनुभव करता हूँ।

स्वात्मनि-विश्वगते त्वयि नाथे, तेन न संसृति-भीतेः कथास्ति
सत्-स्वपि दुर्धर-दुःख विमोह, त्रास-विधायिषु कर्म-गणेषु।। 3 ।।

अर्थः हे नाथ ! भयंकर दुःख मोह उत्पन्न करने वाले कर्मों के जाल में फंसे हुये, आप के भक्त इस भावना से कि विश्व आप का ही रूप है अतः वे संसार के क्षणिक दुःखों से डरते नहीं हैं, क्योंकि डर अथवा भय तब होता है जब दूसरा हो, जब आप के बिना कोई दूसरा है ही नहीं तो डर कहाँ "भयं द्वितीयात्"

अन्तक ! मां प्रति मा दृशम्-एनां, क्रोध-कराल-तमां विदधीहि
शंकर-सेवन-चिन्तन-धीरो, भीषण-भैरव-शक्ति-मयोस्मि ।। 4 ।।

अर्थः हे यमराज ! क्रोध से कराल भयंकर दृष्टि से मेरी ओर न देख, जबकि मैं हर समय शंकर सेवन

के चिन्तन में लगा रहता हूँ, जिस सेवा चिन्तन से मैं भैरवशक्ति का पुंज बना हूँ अतः आप की यह कराल क्रोधभरी दृष्टि मेरा कुछ बिगाड़ नहीं सकती है।

इत्थम्-उपोढ-भवन्मय-संवित्, दीधिति-दारित-भूरि-तमिस्रः
मृत्यु-यमान्तक कर्म-पिशाचै, र्नाथ ! नमोस्तु न जातु बिभेमि ।। 5 ।।

अर्थः हे शंकर सब कुछ आप का ही रूप है ऐसी संवित् के जागृत होने से मेरा अज्ञानरूपी अन्धकार नष्ट हो चुका है, अतः मैं यमराज के परिवारभूत पिशाच आदि से डरता नहीं हूँ, हे नाथ मेरा आप को बार-बार नमस्कार हो।

प्रोदित-सत्य-विबोध-मरीचि-प्रोक्षित-विश्व-पदार्थ-सतत्वः
भाव-परामृत-निर्भरपूर्णे, त्वय्यहम्-आत्मनि निर्वृतिम्-एमि।। 6 ।।

अर्थः हे शंकर ! आप के सत्यज्ञानरूप किरणों से विश्व के पदार्थ तथा सभी तत्व सिंचित अथवा हरकत में है। ऐसे ही इस ज्ञान के प्रकट होने पर मैं श्रद्धा के अमृत से परिपूर्ण आप के ही स्वरूप भूत अपने ही आत्मा में परमानन्द का अनुभव करने लगता हूँ।

मानस-गोचरम्-एति, यदैव-क्लेश-तनु-ताप-विधात्री
नाथ ! तदैव मम-त्वत्-अभेद, स्तोत्र-परामृत-वृष्टिर्-उदेति ।। 7 ।।

अर्थः शरीर के ताप को उत्पन्न करने वाली कष्ट की दशा को जब मैं मन से महसूस करने लगता हूँ, उसी समय मेरे अन्दर आप के अनुग्रह से प्राप्त अभेद वृष्टि का उदय होता है, जिस के प्रभाव से मैं किसी प्रकार का कष्ट अनुभव नहीं करता हूँ।

शंकर ! सत्यम्-इदं व्रत, दान-स्नान-तपो-भव-ताप-विनाशि
तावक-शास्त्र-परामृत, चिन्ता-सिध्यति चेतसि-निर्वृति-धारा ।। 8 ।।

अर्थः हे शंकर ! यद्यपि व्रत-दान-तप से संसार के दुःखों का नाश होता है, शैवशास्त्र के चिन्तनमात्र से ही मन में अमृत की धारायें प्रवाहित होने लगती हैं।

नृत्यति गायति हृष्यति गाढं, संवित्-इयं मम भैरवनाथ।
त्वां प्रियं आप्य सुदर्शनम्-एकं, दुर्लभम्-अन्यजनैः समयज्ञम् ।। 9 ।।

अर्थः हे मेरे भैरवनाथ ! मेरी दृढ़ संवित् यज्ञादिकों से अप्राप्य आप के अलौकिक दर्शन प्राप्त करके कभी नाचती है कभी गायन करती है कभी हर्ष का अभिनय करती है।

वसु-रस-पौषे कृष्ण-दशम्यां, अभिनव-गुप्तः स्तवम्-इमम्-अकरोत्
येन विभु-भव-मरु-सन्तापं, शमयति झटिति जनस्य दयालुः ।। 10 ।।

भावार्थः भक्तों पर दयालु आध्यात्मिक बलवाले अभिनवगुप्त ने सम्वत् 68 पौषकृष्णदशमी को यह शंकरस्तुति की है जिस के उच्चारण श्रवण मनन से क्षणमात्र में दयालु शंकर संसार रूपी मरुस्थल के दुःखों का नाश करता है। प्रत्यभिज्ञाहृदय, स्पन्द सन्दोह, बोधविलास पराप्रवेशिका आदि शैवशास्त्रों के रचयिता आचार्य क्षेमराज के गुरु, अद्वैतसिद्धान्त के सर्वश्रेष्ठ व्याख्याता "तन्त्रालोक" जैसे महान् शैवग्रन्थ के निर्माता **अभिनवगुप्त** की उपरिलिखित स्तुति संक्षिप्तभावार्थ सहित पाठको को अर्पित है, यह स्तुति विशेषतया हर एक काश्मीरी पण्डित को कण्ठस्थ करनी चाहिये ताकि हमारी आगामी सन्तति अपने आदरणीय पूर्वज काश्मीर के गौरवभूत आचार्य अभिनवगुप्त को भूल न जायें।

शिवसंकल्प (यजुर्वेद से)

यत्-जाग्रतो-दूरम्-उदेति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति।
दूरं-गमं ज्योतिषां ज्योतिर्-एकं- तन्मे मनः शिव-संकल्पम्-अस्तु ।। 1 ।।

अर्थः जो मन जागते हुये मनुष्य का दूर चला जाता है, और सोते हुये का निकट आ जात है, जो परमात्मा के साक्षात्कार का एकमात्र साधन है, जो ज्ञानेन्द्रियों का प्रकाशक और प्रवर्तक है, मेरा वह मन शिव, (कल्याणकारी) संकल्प वाला हो।

येन कर्मा-ण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः।
यत्-अपूर्वं यक्षम्-अन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिव संकल्पम्-अस्तु।। 2 ।।

अर्थः कर्मयोगी विद्वान् जिस मन के द्वारा हर एक कर्म को यज्ञ के ढाँचे में डालते हैं, जो इन्द्रियों का अध्यक्ष है, जो समस्त प्रजा के हृदय में निवास करता है, वह मेरा मन शिव संकल्प वाला हो।

यत्-प्रज्ञानम्-उत चेतो धृतिश्च यत्-ज्योतिर्-अन्तर्-अमृतं प्रजासु।
यस्मात्-न ऋते किंचन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसंकल्पम्-अस्तु।। 3 ।।

अर्थः-जो मन ज्ञान का करण है जो धैर्यरूप है, जो समस्त प्रजा के हृदय में रह कर उन की इन्द्रियों को प्रकाशित करता है, जो मृत्यु होने पर भी अमर रहता है, जिस के बिना कोई भी कर्म किया नहीं जाता है वह मेरा मन शिवसंकल्प वाला हो।

येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत् परिगृहीतम्-अमृतेन सर्वम्।
येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिव-संकल्पम्-अस्तु।। 4 ।।

जिस अमृतरूप मन के द्वारा भूत-भविष्य वर्तमान की सभी वस्तुयें जानी जाती हैं, जिस के द्वारा सात होता वाला शरीर रूपी यज्ञ सम्पन्न होता है मेरा वह मन शिवसंकल्प वाला हो (सात होता:-पांच ज्ञानेन्द्रिय मन और बुद्धि)

यस्मिन्-ऋचः साम यजूंषि, यस्मिन् प्रतिष्ठिता-रथनाभौ-इवाराः।
यस्मिन्-चितं सर्वम्-ओतं प्रजानां तन्मे मनः शिव-संकल्पम्-अस्तु।। 5 ।।

अर्थः जिस मन में रथचक्र की नाभि में अरियों के समान वेद प्रतिष्ठित है, जिस में सब पदार्थों से सम्बन्ध रखने वाला सम्पूर्ण ज्ञान ओत प्रोत है, मेरा वह मन शिवसंकल्प वाला हो।

सुषा-रथिर्-अश्वान्-इव, यन्मनुष्यान् नेनीयते-अभीशुभिर्-वाजिनःइव।
हृत्प्रतिष्ठं यत्-अजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिव-संकल्पम्-अस्तु।। 6 ।।

अर्थः योग्य सारथि जैसे घोड़ों का संचालन करता है और लगाम के द्वारा घोडों का नियन्त्रण करता है, वैसे ही प्राणियों का संचालन तथा नियन्त्रण करने वाला हृदय में रहने वाला कभी बूढा-न होने वाला, अधिक तेज भागने वाला मेरा मन शिव संकल्प वाला हो।

अष्टादशश्लोकी गीता

यं ब्रह्मा वरुणेन्द्रमरुतः स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवै-
वेंदैः साँगपद-क्रमोप-निषदै-र्गायन्ति यं सामगाः।
ध्यानावस्थित-तद्‌गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो
यस्यान्तं न विदुः सुरा-सुर-गणा देवाय तस्मै नमः।।

अर्थ-जिनका ब्रह्मा, वरुण, इन्द्र, और मरुद्‌गण दिव्य स्तोत्रों द्वारा स्तुति करते हैं, सामवेदके गानेवाले अंग, पद, क्रम और उपनिषदों के सहित वेदो द्वारा जिनका गान करते हैं, योगीजन ध्यान में स्थित तद्‌गत हुए मनसे जिनका दर्शन करते हैं, देवता और असुरगण (कोई भी) जिनके अन्तको नहीं जानते, उन (परमपुरुष नारायण) देव के लिए मेरा नमस्कार है।

निमित्तानि च पश्यामि-विपरीतानि केशव
न च श्रेयो-नुपश्यामि हत्वा स्वजनम्-आहवे।। 1 ।।

अर्थ- अर्जुन भगवान् से कहता है, कि अब मुझे सब लक्षण उल्टे दिखाई देते हैं, ऐसे मुझे प्रतीत नहीं होता है कि अपने सम्बन्धियों को युद्ध में मारकर कुछ कल्याण हो सकेगा।अध्याय 1 श्लोक 31

योगस्थः कुरु कर्माणि संगं त्यक्त्वा धनंजय।

सिद्ध्य-सिद्ध-योः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते।। 2 ।।

अर्थ-फल की आशा छोड़ कर सिद्धि हो या न हो फिर भी अपने मन की वृत्ति समान रखनी चाहिये, इस प्रकार की चित्त की समवृत्ति को योग कहते हैं, इस योग से युक्त होकर मनुष्य अपने सब कर्म करे।

कर्मेन्द्रियाणि संयम्य य आस्ते मनसा स्मरन्।

इद्रियार्थान्-विमूढात्मा मिथ्याचारः स उच्यते।। 3 ।।

अर्थ-जो हठ से कर्मेन्द्रियों को रोकता है परन्तु अन्दर ही अन्दर मन से विषयों का चिन्तन करता है उस मूर्ख को मिथ्याचारी कहते हैं। अध्याय 3 श्लोक 6

श्रद्धावान्-लभते ज्ञानं तत्-परः संयतेन्द्रियः

ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिम्-अचिरेणाधिगच्छति।। 4 ।।

अर्थ-ईश्वर गुरु और धर्म शास्त्रों में श्रद्धा रखने वाला मनुष्य ज्ञान को प्राप्त करता है और ज्ञान होने

पर उसको शान्ति प्राप्त होती है। अध्याय 4 श्लोक 39

यतेन्द्रिय मनो बुद्धि-र्मुनि-मोक्ष-परायणः

विगतेच्छा-भय क्रोधो-यः सदा मुक्त एव सः।। 5 ।।

अर्थ-जो मनुष्य इन्द्रियों, मन और बुद्धि को वश में रखता है और केवल ब्रह्मशान्ति प्राप्त करने में लगा रहता है वह सदा मुक्त है। अध्याय 5 श्लोक 28

युक्ताहार-विहारस्य युक्त-चेष्टस्य कुर्मसु

युक्त-स्वप्ना-व बोधस्य योगो भवति दुःखहा।। 6 ।।

अर्थ- यथायोग्य आहार विहार करने वाला कर्मों को यथायोग्य ढंग से करने वाला यथायोग्य निद्रा करने और योग्य समय पर उठने वाले साधक का योग दुःख को दूर करने वाला होता है।

अध्याय 6श्लोक 17

दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया,

मामेव ये प्रपद्यन्ते मायाम्-एतां-तरन्ति-ते।। 7 ।।

अर्थ-परमात्मा की सत्वरज तमोगुणमयी माया को पार करना कठिन है जो मुझ ईश्वर को प्राप्त करते

हैं वह इस माया से पार हो जाते हैं। अध्याय 7 श्लोक 14

अग्निर्-ज्योतिर्-अहः शुक्लः षणमासा उत्तरायणम्

तत्र प्रयाता गच्छन्ति ब्रह्म ब्रह्मविदो जनाः।। 8 ।।

अर्थ–उत्तरायण काल के छः मास के शुक्ल पक्ष में दिन के प्रकाश में प्रदीप्त अग्नि के समय जो ब्रह्मज्ञानी इस शरीर को छोड़कर चले जाते हैं वे ब्रह्म को प्राप्त होते हैं। अध्याय 8 श्लेक 24

अपि चेत्-सुदुराचारो भजते माम्-अनन्यभाक्

साधुर्-एव स मन्तव्यः सम्यक्-व्यव-सितोहि-सः।

अर्थ- बड़े से बड़ा दुराचारी यदि अनन्यभाव से मेरा भजन करेगा तो यह समझ लेना चाहिये कि वह साधु हो जायेगा। अध्याय 9 श्लोक 30

यो माम्-अजम्-अनादिम्-च वेत्ति-लोक-महेश्वरम्

असंमूढः स मर्त्येषु सर्वपापैः प्रमुच्यते।।

अर्थ–जो मुझे जन्म रहित, आदि रहित सब लोकों का स्वामी समझता है वह संसार में अज्ञान से छूटकर यानी ज्ञानी बनकर सब पापों से मुक्त होता है। अध्याय 10 श्लोक 3

मत्कर्म कृत्-मत्परमो मत्-भक्तः संघ-वर्जितः
निर्वैरः, सर्व-भूतेषु यः स मामेति पाण्डव।।

अर्थ-हे अर्जुन जो मेरे लिये कर्म करता है, जो मुझे परमश्रेष्ठ मानता है जो भोगों का संग छोड़ता है और सब प्राणियों के विषय में वैर रहित होता है मेरा वही भक्त मुझे प्राप्त करता है।

अध्याय 11 श्लोक 55

श्रेयो हि ज्ञानम्-अभ्यासात्, ज्ञानात्-ध्यानं विशिष्यते,
ध्यानात्-कर्म-पलत्याग, स्त्यागात्-शान्तिर्-अनन्तरम्।।

अर्थ-अभ्यास योग से ज्ञान योग श्रेष्ठ है, ज्ञान योग से ध्यान योग की विशेषता अधिक है, ध्यान योग से कर्मफल का त्याग उत्तम है, कर्मफल का त्याग करने से शीघ्र ही शान्ति मिलती है।

अध्याय 12 श्लोक 12

क्षेत्रज्ञं चापि मां विद्धि सर्व-क्षेत्रेषु भारत
क्षेत्र-क्षेत्र ज्ञयोर्ज्ञानं-तत्-यत्-ज्ञानं मतं मम।।

अर्थ-हे भारत! सब क्षेत्र में रहने वाले मुझे तू क्षेत्रज्ञ समझ जो क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ का ज्ञान है वही मेरा ज्ञान है।

अध्याय 13 श्लोक 2

मां च यो -व्यभिचारेण भक्तियोगेन सेवते,
स गुणान्-सम्-अतीत्य-तान्-ब्रह्म्-भूयाय कल्पते।।

अर्थ-जो एक निष्ठ भक्ति भाव से मेरी सेवा करता है वह इन गुणों को लांघ कर ब्रह्म के महत्व को प्राप्त करने योग्य बन जाता है। अध्याय 14 श्लोक 26

निर्मान-मोहा जितसंग-दोषा अध्यात्म-नित्या विनि-वृत्तकामाः
द्वन्द्वै-र्विमुक्ता सुख दुःख संज्ञैर्गच्छन्त्य मूढाःपदम्-अव्ययं-तत्।।

अर्थ-जो अभिमान रहित, मोह रहित, अनासक्त आत्मनिष्ठ भोगवासना रहित, द्वन्द्वभाव से दूर और ज्ञानी है, वह उस अविनाशी परम पद को प्राप्त होते हैं। अध्याय 15 श्लोक 5

यः शास्त्र-विधिम्-उत्सृज्य वर्तते काम-कारतः।
न स सिद्धिम्-अवाप्नोति न सुखं न परां गतिम्।।

अर्थ- जो शास्त्र विधि को त्याग कर मनमाना आचरण करता है उसे न सिद्धि मिलती है न सुख मिलता है और न श्रेष्ठ गति ही प्राप्त होती है। अध्याय 16 श्लोक 23

मनः प्रसादः सौम्यत्वं मौनम्-आत्म-विनिग्रहः।
भाव-संशुद्धिर्-इत्येतत्-तपो मानसम् उच्यते।।

अर्थ- मन को प्रसन्न रखना, शान्ति का अवलम्बन करना, मौन धारण करना, संयम करना और आत्मशुद्धि करना मानसिक तप है। अध्याय 17 श्लोक 16

सर्व-धर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वा सर्व-पापेभ्यो मोक्ष-यिष्यामि मा-शुचः।।

अर्थ-सब धर्मो को छोड़कर मुझ अकेले (ईश्वर) की शरण आये मैं तुम्हें सब पापों से मुक्त करूँगा, तू शोक मत कर। अध्याय 18 श्लोक 66

सप्तश्लोकी गीता

ॐ इत्येकाक्षंर ब्रह्म, व्याहरन्-माम्-अनुस्मरन्
यः प्रयाति त्यजन् देहं, स याति परमां गतिम्।.

अर्थ- योग धारण में स्थित ओंकार रूपी एकाक्षर ब्रह्म का उच्चारण करता हुआ और मेरा (परमेश्वर) का चिन्तन्न करता हुआ जो साधक देह त्यागता है वह निःसनदेह श्रेष्ठगति को प्राप्त होता है।

अध्याय 8 श्लोक 13

स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या। जगत्-प्रहृष्य-त्यनुरज्यते च।।

रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति। सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसंघाः 1. 2।।

अर्थ-हे हृषीकेश यह ठीक ही है आपका कीर्तन करने से जगत् प्रसन्न होता है और उसमें उसकी प्रीति होती है, राक्षस तुम से डर कर दिशाओं में भाग जाते हैं और सभी पुरुषों के समुदाय आपको प्रणाम करते हैं।

अध्याय 11 श्लोक 36

सर्वतः पाणिपादं तत्-सर्वतोक्षि-शिरोमुखम्।

सर्वतः श्रुतिमत्-लोके सर्वम्-आवृत्य-तिष्ठति।। 3 ।।

अर्थ-इस लोक में उसके सर्वत्र हाथ, पांव सब ओर आँख, सिर और मुख और सब ओर कान हैं वह सर्वत्र व्याप कर रह रहा है।

अध्याय 13 श्लोक 13

कविं पुराणम्-अनुशासितारम्। अणोरणीयांसम्-अनु-स्मरेत्-यः।।
सर्वस्य धातारम्-अचिन्त्यरूपम्। आदित्यवर्णं तमसः परस्तात्।। 4 ।।

अर्थ- जो अन्तकाल में सर्वज्ञ पुरातन नियन्ता अणु से भी सूक्ष्म, सब के धारण कर्ता अचिन्त्य स्वरूप अन्धकार से परे रहने वाले सूर्य के समान तेजस्वी ईश्वर का स्मरण करता है-वह उसी दिव्य परमात्मा को प्राप्त होता है।

अध्याय 8 श्लोक 9

उर्ध्वमूलम्-अधः-शाखम्-अश्व-त्थं प्राहुर्-अव्ययम्।
छन्दांसि-यस्य पर्णानि यस्तं वेद स वेदवित्।। 5 ।।

अर्थ- संसार का वृक्ष अनादि अनन्त चारों ओर फैला है, इसके ज्ञान रूपी पत्ते सबको शीतल छाया देने वाले हैं, शाखायें ऊपर नीचे फैली है, इनमें सत्त्व-रज तम गुणों का रस भरपूर भरा है, शब्द स्पर्श रूप रस गंध विषयों के सुखदायी कोमल अंकुर लगे हैं और इनकी कर्मों से सम्बन्ध जोड़ने वाली जड़े चारों ओर फैली हुई है।

अध्याय 15 श्लोक 1

सर्वस्य चाहं हृदि संनिविष्टो मत्तः स्मृतिर्-ज्ञानम्-अपोहनं च।
वेदैश्च सर्वैर्-अहमेव वेद्यो वेदान्त-कृत्-वेद विदेव-चाहम्।। 6।।

अर्थ– मैं ईश्वर सबके हृदयों में रहता हूँ, मुझसे ही सब को स्मरण, ज्ञान विस्मरण और अज्ञान होता है मैं ही सब वेदों के द्वारा जानने योग्य हूं और मैं ही वेदान्त शास्त्र का निर्माण करने वाला और वेद का ज्ञाता हूं।

अध्याय 15 श्लोक 15

मन्मना–भव–मत्–भक्तो मत्–याजी मां नमस्कुरु।
मामे–वैष्यसि युक्त्वैवम्–आत्मानं मत्–परायणः।। 7 ।।

अर्थ– मुझमें मन लगा, मेरा भक्त बन, मेरे निमित्त भजन कर, मुझे नमस्कार कर, इस तरह मुझमें परायण होकर मेरे साथ आत्मा का योग करने से तू मुझे प्राप्त कर लेगा।

अध्याय 9 श्लोक 34

सप्तश्लोकी दुर्गा

ज्ञानि–नाम्–अपि चेतांसि देवी भगवती हि सा।
बलात्–आकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति।। 1 ।।

अर्थः भगवती माहमाया देवी ज्ञानियों के भी चित को बलपूर्वक खींच कर मोह में डाल देती है।।1।।

अध्याय 1 श्लोक 55

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिम्-अशेष-जन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिम्-अतीव शुभां ददासि।
दारि-द्र्य-दुःख-भय-हारिणि का त्वत्-अन्या
सर्वोप-कार-करणाय दयार्द्र-चित्ता।। 2 ।।

अर्थः माँ दुर्गे! आप स्मरण करने पर सब प्राणियों का भय हर लेती है, और स्वस्थ पुरुषों द्वारा चिन्तन करने पर उन्हें परम कल्याण रूपी बुद्धि देती है, दुःख दरिद्रता हरनेवाली देवी आप के बिना कौन है जिस का चित्त सब का उपकार करने के लिये सदा ही दयार्द्र रहता है।।2।। अध्याय 4 श्लोक 17

सर्व-मंगल-मंगल्ये शिवे सर्वार्थ-साधिके,
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोस्तुते।। 3 ।।

अर्थः हे माँ! तुम सब प्रकार का मंगल करने वाली मंगलमयी हो, कल्याण करने वाली शिवा हो, सब पुरुषार्थो को सिद्ध करने वाली, शरणागत-वत्सला, तीन नेत्रों वाली तथा सब की पीड़ा दूर करने वाली, नारायणी देवी, तुम्हें नमस्कार है। अध्याय 11 श्लोक 10

शरणागत-दीनार्त-परित्राण-परायणे

सर्वस्यार्ति-हरे देवि नारायणि नमोस्तु ते।। 4 ।।

अर्थः शरण में आये हुये, दीनों एवं पीड़ितों की रक्षा में लगी रहने वाली, तथा सब की पीड़ा दूर करने वाली, नारायणी देवी तुम्हें नमस्कार है।

अध्याय 11 श्लोक 12

सर्व-स्वरूपे सर्वेशे सर्व-शक्ति-समन्विते,

भयेभ्यस्त्राहि-नो देवि दुर्गे देवि नमोस्तुते।। 5 ।।

अर्थः सर्वरूपा, सर्वेश्वरी तथा सब प्रकार की शक्तियों से सम्पन्न, दिव्यरूपा दुर्गे सब भयों से हमारी रक्षा करो, तुम्हें नमस्कार है।

अध्याय 11 श्लोक 24

रोगान्-अशेषान्-अपहंसि तुष्टा

रुष्टा-तु कामान् सकलान्-अभीष्टान्

त्वाम्-आश्रितानां न विपत्-नराणां

त्वाम्-आश्रिता ह्या श्रयतां प्रयान्ति।। 6 ।।

अर्थः हे देवी ! तुम प्रसन्न होने पर सब रोगों को नष्ट करने वाली, और कुपित होने पर मनोवांछित सभी कामनाओं का नाश कर देती हो। जो लोग तुम्हारी शरण में जा चुके हैं, उन पर विपत्ति आती ही नहीं है, तुम्हारी शरण में गये हुये मनुष्य दूसरों को शरण देने वाले हो जाते है।।6।।

अध्याय 11 श्लोक 29

सर्वा-बाधा-प्रशमनं त्रैलोक्य-स्याखिलेश्वरि
एवम्-एव त्वया कार्यम्-अस्मत्-वैरि-विनाशनम्।। 7 ।।

अर्थः हे सर्वेश्वरि ! जिस प्रकार तुम ने मधुकैटभ का नाश किया तुम उसी प्रकार तीनों लोकों की सभी बाधाओं को शान्त करो और हमारे शत्रुओं का नाश करती रहो। अध्याय 11 श्लोक 29

इति सप्तश्लोकी दुर्गा समाप्ता

* *

भगवान् कृष्ण कहते हैं

जो व्यक्ति श्रद्धा से गीता संवाद (गीता प्रवचन) सिर्फ सुनेगा ही, वह मुक्त होकर, पुण्यात्मा जहां पहुंचते हैं उन शुभलोकों को वह भी पावेगा।

अध्याय 18 श्लोक 71

वन्दे महापुरुष ते चरणारबिन्दम्

ध्येयं सदा परिभवघ्नं-अभीष्टदोहं
तीर्थास्पदं शिव-विरिञ्चि-नुतं शरण्यम्।
भृत्यार्तिहं प्रणतपाल ! भवाब्धिपोतं
वन्दे-महापुरुष ! ते चरणारबिन्दम्।। 1।।

अन्वय-शब्दार्थ

__महापुरुष__ = हे भगवान् कृष्ण, __प्रणतपाल !__ = प्रणाम करने वालों की रक्षा करने वाले, __ते__ = आपके, __चरणारबिन्दं__ = चरण कमल को, __ध्येयं__ = जो ध्यान करने के योग है, __सदा__ = हर समय, __परिभवघ्नं__ = अपमानादि दु:खों का नाश करने वाला, __अभीष्ट दोहं__ = इछित पदार्थों का देने वाला, __तीर्थास्पदं__ = तीर्थों का स्थान, __शिवविरिञ्चिनुतं__ = शंकर और ब्रह्मा जिस को झुकते हैं, __शरण्यं__ = रक्षा करने वाला, __भृत्यार्तिहं__ = दासों अथवा भक्तों के दु:खों का नाश करने वाला, भवाब्धिपोतं= संसार सागर से पार करने वाला जहाज़।।

अर्थ :–हे महापुरुष-हे प्रणतपाल भगवान कृष्ण! मैं आपके उस चरण कमल को प्रणाम करता हूँ, जो चरण कमल ध्यान करने योग्य हैं, जो दु:खों का नाश करने वाला है, जो इच्छित पदार्थों का देने वाला है, जिस में सभी तीर्थ टिके हुये हैं, शंकर और ब्रह्मा जिस को झुकते हैं, जो रक्षा करने वाला हैं, जो भक्तों के दु:खों का नाश करने वाला है, जो भवसागर से पार करने के लिए जहाज़ है।

त्यक्त्वा सुदुस्त्यज-सुरेप्सित-राज्यलक्ष्मीं
धर्मिष्ठ-आर्य-वचसा यत्-अगात्-अरण्यम्।
मायामृगं दयित-येप्सितं-अनुधावत्
वन्दे महापुरुष ! ते चरणारबिन्दम्।। 2।।

धर्मिष्ट *= धर्मात्मा,* ***आर्य*** *= श्रेष्ठ राजा दशरथ के कहने से,* ***सुदुस्त्यज*** *= जिस का त्याग करना बहुत ही कठिन है,* ***सुरेप्सित*** *= देवता जिस को चाहते हैं,* ***ऐसी राज्यलक्ष्मीं*** *= राज्यपाठ को,* ***त्यवत्वा*** *= छोड कर,* ***यत्*** *= जो (चरणकमल)* ***अरण्यं*** *= जंगल को,* ***अगात्*** *= गया,* ***मायामृगं*** *= माया शरीरधारी,* ***मृगं*** *= हिरण को,* ***दयितयेप्सितं*** *= सीता से चाहा हुआ,* ***अनुधावत्*** *= पीछे दौड़ पड़ा।*

अर्थ–धर्मात्मा राजा दशरथ के कहने से (ऐसी राज्य लक्ष्मी) ऐसा राजपाठ जिस का त्याग करना बहुत ही कठिन

है, जिस को देवता चाहते हैं–ऐसे राज्यपाठ को छोडकर (ठुकराकर) जो चरणार-बिन्द जंगल में गया, सीता से चाहे हुये, माया शरीरधारी मृग के पीछे जो चरण कमल दौड पडा, ऐसे ही प्रशंसनीय कार्य रामावतार में जिस चरणकमल ने किया था उसको मैं नमस्कार करता हूँ।

श्रीमत्–सरोरुह–यवाँकुश–चक्रचाप
मत्स्या–ङ्कितं नव–विल्लोहित–पल्लवाभम्
लक्ष्म्यालयं परममंगलं–आत्मरूपं
वन्दे महापुरुष! ते–चरणारबिन्दम्।। 3।।

अन्वय-शब्दार्थ

श्रीमत् = *शोभायमान,* ***सरोरुह*** = *कमल,* ***यव*** = *जव,* ***अंकुश*** = *लोहे की वह छड़ी जिस से हाथी हाँका जाता है (काश्मीरी में टोंग)* ***चक्र*** = *गोलाकार चिह्न,* ***चाप***= *धनुष,* ***मत्स्य*** = *मछली (इन सामुद्रिक चिह्नों से)* ***अंकितं*** = *निशानवाला,* ***नव*** = *नये,* ***विल्लोहित*** = *लाल,* ***पल्लव*** = *बाल पत्र की,* ***आभम्*** = *शोभावाला,* ***लक्ष्म्यालयं*** = *लक्ष्मी का घर,* ***परमंगलं*** = *अधिक मंगलदायक,* ***आत्मरूपं*** = *परमात्मा का ही प्रत्यक्षरूप,* ***ते*** = *आपके,* ***चरणारबिन्दं*** = *चरण कमल को,* ***वन्दे*** = *प्रणाम करता हूँ।*

अर्थ–मैं आप के उस चरण कमल को प्रणाम करता हूँ, जो शोभायुक्त है, जो चरणारबिन्द कमल, जव, अंकुश, चक्र, धनु, मछली इन सामुद्रिक राज योग ाले चिह्नों से युक्त हैं जो लाल बालपत्र की जैसा शोभावाला है जो लक्ष्मी का घर है, जो परम-मंगलदायक है, जो रमात्मा का ही प्रत्यक्षरूप है।

वृन्दावनान्तरं-अगात्-अनुगोकुलानां
संचार्य सर्वपशुभिः स्वविवृद्ध-कामी।
संचिन्तयत्-अगगुरो-मृगपक्षिणां यत्
वन्दे महापुरुष! ते चरणार बिन्दम्।।4।।

अन्वय-शब्दार्थ

स्वविवृद्धकामी = *अपने गोकुल की वृद्धि का इच्छुक (भगवान् कृष्ण)* ***गोकुलानां-अनु*** = *गोकुल के पश्चात्,* ***वृन्दावनान्तरं*** = *वृन्दावन में,* ***अगात्*** = *गया,* ***सर्वपशुभिः*** = *सभी गोकुल के पशुओं के साथ,* ***संचार्य*** = *दौड़धूप करके अथवा (घूमघाम कर)* ***यत्*** = *जिस चरणकमल ने,* ***मृगपक्षिणां*** = *मृगपक्षी गोओं को,* ***अगगुरोः*** = *गोर्वधन पर्वत के नीचे,* ***संचिन्तयत्*** = *एकत्रित किया,* ***ते*** = *आप के,* ***तत् चरणारबिन्दं*** = *उस चरणकमल को* ***वन्दे*** = *मैं नमस्कार करता हूँ।*

अर्थ–जो भगवान् कृष्ण अपने कुल की वृद्धि का इच्छुक था, गोकुल के सभी पशुओं के साथ दोड़धूप करके जो चरण कमल वृन्दावन में गया, जिस चरणारबिन्द ने सभी मृगपक्षी गोओं को गोवर्धन पर्वत के नीचे एकत्रित किया था, हे महापुरुष भगवान् आप के उसी चरणारबिन्द को मैं प्रणाम करता हूँ।

यत्–गोपिका–विरह–जाग्नि परीतदेहाः
तप्तस्तनेषु विजहुः परिरभ्य तापम्।
रासे तदीय कुच–कुँकुम–पङ्कलिप्तं
वन्दे महापुरुष! ते चरणार–बिन्दम्।। 5।।

अन्वय शब्दार्थ

गोपिका = *गोपिकाओं के,* **विरहजा** = *विरह से उत्पन्न हुये,* **अग्निपरीत** = *अग्नि से घेरे हुये,* **देहाः** = शरीरवाली, **तपस्तनेषु** = *जलन से पीडित स्तनों में,* **यत्** = *जिस चरणबिन्द को,* **परिरभ्य** = *स्पर्श करके,* **तापं** = *जलन,* **विजहुः** = *समाप्त हुई* **रासे** = *रास लीला में,* **तदीय** = *उन गोपिकाओं के,* **कुच** = *स्तनों पर जो,* **कुँकुम** = **पङ्कलिप्तं** = *केसर का लेप था उस से लिप्त,* **ते–चरणार–बिन्दम्** = *आप के चरणाकमल को* **वन्दे** = *प्रणाम करता हूँ।।*

अर्थ–रासलीला में गोपिकाओं के स्तनों के केसरलेप से लिप्त जिस चरणारबिन्द को (आलिंगन) स्पर्श करके, विरह

की अग्नि से घेरे हुये गोपिकाओं के जलन से पीडित स्तनों का ताप दूर हुआ था हे महा पुरुष कृष्ण! मैं उस चरणारबिन्द को प्रणाम करता हूँ।।

कालीय-मस्तक-विघटन-दक्षम्-अस्य
मोक्षेप्सुभि-र्विरहदीन-मुखाभिर्-आरात्।
तत्-पत्निभिः स्तुतम्-शेष-निकामरूपं
वन्दे महापुरुष! ते चरणार-बिन्दम्।।6।।

अन्वय शब्दार्थ

कालीय = *कालीनाग के,* ***मस्तक*** = *सिर के,* ***विघटन*** = *नष्ट करने में (फोडने में)* ***दक्षं*** = *निपुण,* ***तत् - पत्निभिः*** = *उस कालीनाग की पत्नियों ने,* ***मोक्षेप्सुभिः*** = *मोक्ष की इच्छावाली,* ***विरह-दीन-मुखाभिः*** = *कालीनाग के विरह से दीन मुखवाली,* ***आरात्*** = *समीप में बैठी हुई,* ***अशेष-निकाम-रूपं*** = *अत्यन्तश्रद्धासे,* ***स्तुतम्*** = *स्तुति किया हुआ,* ***ते*** = *आपके* ***चरणारबिन्दं*** = *चरण कमल को,* ***वन्दैं*** = *नमस्कार करता हूँ।*

अर्थ–पति के विरह से दु:खित, पंति के मुक्ति की इच्छावाली, कालीनाग की स्त्रियों ने, कालीनाग के समीप बैठकर जिस चरणारबिन्द की–अनन्य भक्ति से स्तुति की थी, जो चरणारबिन्द कालीनाग के मस्तक फोडने में (नष्ट करने

में) निपुण था, हे महापुरुष, मैं आप के उस चरणारबिन्द को नमस्कार करता हूँ।

ज्ञानालयं श्रुतिविमृग्यं-अनादिम्-अर्च्यम्
ब्रह्मादिभि र्हृदि-विचन्त्यं-अगाध-बोधैः।
संसार-कूप-पतितो-त्तरणाव-लम्बम्
वन्दे महापुरुष! ते चरणारबिन्दम्।।7।।

अन्वय-शब्दार्थ

ज्ञानालयं = *जो ज्ञान का घर है,* ***श्रुति-विमृग्यं*** = *वेद जिस को ढूँढते हैं,* ***अनादिम्*** = *जिस का आद्य नहीं है,* ***अर्च्यं*** =*जो पूजा के योग्य है,* ***ब्रह्मादिभिः*** = *ब्रह्मादि देवता,* ***हृदि*** = *हृदय में,* ***विचन्त्यम्*** = *जिस का चिन्तन करते हैं,* ***अगाध बोधैः*** = *अधिक ज्ञानी (ज्ञान के भण्डार)* ***संसार कूप*** = *संसार के कुयें में,* ***पतितं*** = *घिरे हुओं को,* ***उत्तरण*** = *पारलेने में,* ***अवलम्बं*** = *सहारा बने हुये।*

अर्थ–जो ज्ञान का घर है, वेद जिस को ढूँढते हैं, जो आद्यन्त रहित है, जो पूजा के योग्य है, जो ज्ञान का भण्डार है। ब्रह्मादि देवता हृदय में जिस का चिन्तन करते हैं, संसाररूपी कुएँ में गिरे हुओं को पार करने में जो सहारा बना है, हे महापुरुष मैं आपके उस चरणारबिन्द को नमस्कार करता हूँ।

येनाङ्क-बालवपुषः स्तनपान-बुद्धेः
त्वत्-अँघ्रिणा-हृतमऽनो विपरीत चक्रम्।
विध्वस्त-भाण्डम्-अपतत् भुवि गोपमूर्तेः
वन्दे महापुरुष! ते चरणारबिन्दम्।।7।।

अन्वय-शब्दार्थ

येन = जिस कृष्ण ने, **अङ्कबालवुपुषः** = गोद में उठाने योग्य छोटे शरीर वाले, **स्तन पानबुद्धेः** = दूध पीने की इच्छा वाले, **त्वत्** = आप के, **अंघ्रिणा** = पावों से, **हृतम्** = लात मारा हुआ, **विध्वस्तभाण्डम्** = तोडे हुये बर्तनों से युक्त, **विपरीतचक्रम्** = उल्टा दिया हुआ, **अनः** = छकडा, **गोपमूर्तेः भुवि** = नन्दगोप के अँगान में, **अपतत्** = जिस चरणारबिन्द से गिरा, उस, **ते** = आपके, **चरणारबिन्दं** = चरण कमल को, **वन्दे** = नमस्कार करता हूँ।

अर्थ–गोद में उठाने योग्य छोटे शरीरवाले, दूध पीने के इच्छुक श्रीकृष्ण के पाँवों से लात मारा हुआ, तोडे हुये दूध के बर्तनों से भरा हुआ उल्टा दिया हुआ छकडा नन्दगोप के आँगन में जिस चरणारबिन्द ने गिराया उस आपके चरण कमल को हे महापुरुष मैं नमस्कार करता हूँ।

इत्यष्टकं पठति यः परमस्य पुंसो
नारायणस्य निरयार्णव-तारणस्य
सर्वाप्तिमाशु-हृदये कुरुते मनुष्यः
संप्राप्य-देहविलयं लभते च मोक्षम्।।8।।

अन्वय-शब्दार्थ

नारायणस्य = *सृष्टि का बनाने वाला तथा लय करने वाला,* ***निरयार्णव*** = *कष्ठों से भरे सागर से-****तारणस्य*** = *पार करने वाले,* ***परमस्य पुंसः*** = *भगवान कृष्ण के,* ***इति*** = *ऐसे ही,* ***अष्टकं*** = *यह आठ श्लोक,* ***यः मनुष्यः*** = *जो मनुष्य,* ***आशु*** = *विना विलम्ब के,* ***हृदये*** = *हृदय में,* ***कुरुते*** = *धारण करता है,* ***सर्वाप्तिम्-संप्राप्य*** = *सभी सुख ऐश्वर्य प्राप्त करके,* ***देह विलयं लभते*** = *आवागवन से मुक्त हो जाता है*

अर्थ–सृष्टि के बनाने तथा लय करने वाले, कष्टों से भरे सागर से पार करने वाले, भगवान कृष्ण के यह आठ श्लोक जो मनुष्य हृदय में धारण करता है, भक्ति से पढता है, वह मनुष्य सभी ऐश्वर्य प्राप्त करके, आवागमन के चक्र से मुक्त हो जाता है।

प्रातः स्मरण मंगलस्तोत्रम्

उत्तिष्ठो-त्तिष्ठ गोविन्द, उत्तिष्ठ गरुड़-ध्वज,
उत्तिष्ठ-कमलाकान्त, त्रैलोक्ये मंगलं कुरु।। 1 ।।

मंगलं भगवान् विष्णु:, मंगलं गरुड-ध्वज:,
मंगलं पुण्डरीकाक्ष: मंगलायतनं हरि:।। 2 ।।

मूकं करोति वाचालं, पंगुं लंघयते गिरिम्
यत् कृपा तम्-अहं वन्दे, परमानन्द-माधवम्।। 3 ।।

नमो ब्रह्मण्य-देवाय, ग्रोब्रह्मण-हिताय च
जगत्-हिताय कृष्णाय, गोविन्दाय नमोनम:।। 4 ।।

कृष्णाय वासुदेवाय, देवकी-नन्दनाय च
नन्द-गोपकुमाराय, गोविन्दाय नमो नमः।। 5 ।।
त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वम्-एव,
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव।। 6 ।।

एक-श्लोकी-नवग्रहस्तोत्रम्

ब्रह्मा-मुरारिः-त्रिपुरान्त-कारी, भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च,
गुरुश्च शुक्रःशनि-राहु केतवः कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्।।

इस एकश्लोकी नवग्रह स्तोत्र के नित्यपाठ से नवग्रहों की शान्ति होती है।

एकश्लोकी रामायण

आदौ राम-तपोवनादि-गमनं, हत्वा मृगं कांचनं
वैदेही-हरणं जटायु-मरणं, सुग्रीव सम्भाषणम्।
वाली निर्दलनं समुद्र तरणं, लंकापुरी-दाहनं
पश्चात् रावण कुम्भकर्ण-हननं, चैतत्-हि-रामायणम्।। 1।।

श्रीरामस्तुतिः

श्रीरामचन्द्रं सततं नमामि

सुग्रीवमित्रं परमं पवित्रं, सीताकलत्रं नवमेघ-गात्रम्।

कारुण्य-पात्रं शतपत्र-नेत्रं, श्रीराम-चन्द्रं सततं नमामि। 1 ।

अर्थः- सुग्रीव के मित्र, परमपावन, सीता के पति नवीन मेघ के समान शरीर वाले। करुणा के सिन्धु, कमल के समान नेत्रवाले श्रीरामचन्द्र की मैं निरन्तर वन्दना करता हूँ।

संसार-सारं निगम-प्रचारं-धर्मावतारं हृतभूमि-भारम्।
सदाविकारं सुखसिन्धु-सारं-श्रीराम-चन्द्रं सततंनमामि।। 2 ।।

अर्थः- असार संसार का सारवस्तु, वेदों का प्रचार करने वाले, धर्म के अवतार, भू-भार हरण करने वाले, सदा विकार रहित, आनन्द सिन्धु के सारभूत, श्रीरामचन्द्र की मैं निरन्तर वन्दना करता हूँ।।

लक्ष्मी-विलासं जगतां निवासं-लंकाविनाशं भुवन-प्रकाशम्।
भू-देव-वासं शरत्-इन्दुहासं-श्रीरामचन्द्रं सततं नमामि।। 3 ।।

अर्थः- लक्ष्मी से विलास करने वाला, जगत् का निवास, लंकानाश करने वाला, भुवनों को प्रकाशित करने वाला, ब्राह्मणों को शरण देने वाला, शरत् चन्द्र हास्यवाला, श्रीरामचन्द्र का मैं निरन्तर नमन करता हूँ।

मन्दार-मालं-वचने रसालं - गुणैर्विशालं हत-सप्त-तालम्
क्रव्याद-कालं सुर-लोकपालं- श्रीरामचन्द्रं सततं नमामि।। 4 ।।

अर्थः-मन्दारपुष्प माला वाले, रसीले वचन बोलने वाले, गुणों में महान्, साततात वृक्ष भेदने वाले, राक्षसों के काल, देवलोक पालक, श्रीरामचन्द्र की मैं निरन्तर वन्दना करता हूँ।।

वेदान्त-गानं सकलैः समानं - हतारि-मानं-त्रिदश-प्रधानम्।
गजेन्द्र-यानं विगतावसानं - श्रीरामचन्द्रं सततं नमामि।। 5 ।।

अर्थः-वेदान्त द्वारा गेय, सबके साथ एक जैसा, शत्रुओं का नाम मर्दन करने वाला, देवताओं में गजेन्द्र सवारी करने वाले, अन्त-रहित-श्रीरामचन्द्र की मैं निरन्तर वन्दना करता हूँ।

श्यामाभि-रामं नयना-भिरामं, गुणाभिरामं, वचनाभिरामम्।
विश्व-प्रणामं कृतभक्तकामं, श्रीरामचन्द्रं सततं नमामि।। 6 ।।

अर्थः- श्याम सुन्दर, नेत्रों को आनन्द देने वाला, गुणों से मनोहर, मधुर वचन बोलने वाले विश्व वन्दनीय, भक्तजनों की कामनायें पूर्ण करने वाले, श्रीरामचन्द्र की मैं निरन्तर वन्दना करता हूँ।

लीलाशरीरं रणरंगधीरं, विश्वैकसारं रघुवंश-हारम्।
गम्भीरनादं जितसर्व-वादं, श्रीरामचन्द्रं सततं नमामि।। 7 ।।

अर्थः- लीला के लिये शरीर धारण करने बाले रणस्थली में धीर, विश्व के सार, रघुवंश में श्रेष्ठ, गम्भीरवाणी बोलने वाले, समस्तवादों को जीतने वाले, श्रीरामचन्द्र को मैं प्रतिक्षण प्रणाम करता हूँ।

खले कृतान्तं स्वजने विनीतं - सामोपगीतं मनसाऽप्रीततम्।
रागेणगीतं वचनात्-अतीतं - श्रीराम चन्द्रं सततं नमामि।। 8 ।।

अर्थः- दुष्टों के लिये मृत्युरूप, अपने भक्तों के लिये नम्रभाव वाले, सामवेद के द्वारा स्तुत, मन के अगोचर प्रेम से गान करने वाले योग्य, वचनों से अग्राह्य, श्रीरामचन्द्र को मैं सर्वदा नमस्कार करता हूँ।

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।

।।कलिसन्तरणोपनिषद्"

नवग्रहपीडाहरस्तोत्रम्

सूर्य ग्रहाणाम्-आदिर्-आदित्यो-लोकरक्षण-कारकः
विषमस्थान-सम्भूतां-पीडां-हरतु-मे रविः। 1 ।

चन्द्र रोहिणीशः सुधामूर्तिः सुधागात्रः सुधाशनः
विषम-स्थान सम्भूतां पीडां हरतु मे विधुः। 2 ।

भौम भूमिपुत्रो महातेजो जगतां भयकृत् सदा
वृष्टिकृद्-वृष्टि-हर्ता च पीडां हरतु मे कुजः। 3 ।

बुध उत्पातरूपो जगतां चन्द्र पुत्रो महाद्युतिः
सूर्यप्रिय करो विद्वान्, पीडां हरतु मे बुधः। 4 ।

बृहस्पति देवमन्त्री विशालाक्षः सदा लोकहिते रतः
अनेक शिष्यसम्पूर्णः पीडां हरतु मे गुरुः। 5 ।

शुक्र दैत्यमन्त्री गुरुस्तेषां प्राणदश्च महामतिः
प्रभुस्तारा ग्रहाणां च पीडां हरतु मे भृगुः। 6 ।

शनि सूर्यपुत्रो दीर्घदेहो विशालाक्षः शिवप्रियः
मन्दाचारः प्रसन्नात्मा पीडां हरतु मे शनिः। 7 ।

राहु महाशिरो महावक्त्रो दीर्घदंष्ट्रो महाबलः
अतनुश्चोर्ध्वकेशश्च पीडां हरतु मे शिखी। 8 ।

केतु अनेक-रूप-वर्णश्च शतशोथ सहस्त्रशः
उत्पादरूपो जगतां पीडां हरतु मे तमः। 9 ।

श्रीगणेशस्तुतिः

हेमजा-सुतं भजे गणेशं ईशनन्दनम्

एकदन्त-वक्रतुण्ड, नागयज्ञ-सूत्रकम्। रक्तगात्र-धूम्रनेत्र, शुक्लवस्त्र-मण्डितम्। कल्पवृक्ष-भक्त रक्ष, नमोस्तु ते गजाननम्।।1।

पाशपाणि-चक्रपाणि, मूषकादि-रोहिणम्। अग्निकोटि, सूर्य-ज्योति, वज्र-कोटि्निर्मलम्, चित्र-भाल-भक्तिजाल, भालचन्द्र-शोभितम्। कल्पवृक्ष भक्तरक्ष, नमोस्तु ते गजाननम् ।। 2 ।।

भूतभव्य, हव्यकव्य-भृगु-भार्गवा-र्चितम्। दिव्य-वह्नि कालजाल-लोकपाल वन्दितम् पूर्णब्रह्म-सूर्यवर्ण पूरुषं पुरान्तकम्। कल्पवृक्ष, भक्तरक्ष, नमोस्तु ते गजाननम्।। 3 ।।

विश्ववीर्य, विश्व-सूर्य, विश्वकर्म निर्मलम्। विश्वहर्ता, विश्वकर्ता यत्र तत्र पूजितम्। चतुर्मुखं चतुर्भुजं सेवितं चतुर्युगम्। कल्पवृक्ष, भक्तरक्ष, नमोस्तु ते गजाननम्।। 4 ।।

ऋद्धि बुद्धि अष्ट सिद्धि नवनिधान दायकम्। यज्ञ-कर्म-सर्वधर्म सर्ववर्ण अर्चतिम्। पूत धूम्र-दुष्ट-मुष्ट-दायकं विनायकम्। कल्पवृक्ष, भक्तरक्ष, नमोस्तु ते गजाननम्।। 5 ।।

आसय शरण करतम-दया

ॐ श्रीगणेशाय नमः। यज्ञस जपस व्यवहार-सूय, ग्वड छिय सुरान प्रथ कार-सूय, कारस अनान छुक चय जमाह, ॐ श्री गणेशाय नमः। मूषक च्य़ वाहन शूभवुन, त्र्यन-लोकन-मंज़ फेरूवुन मदतस रोज़तम प्रथदमा, ॐ श्री गणेशाय नमः। चूय

छुक ज़गतुक आदि देव-चूय़ छुक लछ बद कामदेव, सिद्ध कर वुन्य म्यनि कामना ॐ श्री गणेशाय नमः। प्रारान छुस बह डेडि तल, आलव म्योन गुय ना कनन, कनथाव वननुक छुम तमाह, ॐ श्री गणेशाय नमः।। आसय शरण करतम क्षमा ॐ श्री गणेशाय नमः। गणपत-गणेश्वर हे प्रभु, कलि रा ज़ह राज़न हुन्द विभु, पज़ि लोल पादन तल न्यमा ॐ श्री गणेशाय नमः। गोडन्युक च्ये छुय आधिकार कलि कालकुय छुक ताजदार, राज़स परन पादन प्यमा ॐ श्री गणेशाय नमः। बाहनाव सुन्दर शूभवून्य, त्र्य लूकि मंज-तिम आसवन्य, पूर्ण करुम पूर्ण कृपा ॐ श्री गणेशाय नमः।

देवी प्रार्थना

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिम्-अशेषजन्तोः, स्वस्थैः स्मृता मतिम्-अतीव शुभां दधासि।
दारिद्रय-दुःखभय-हारिणि का त्वत्-अन्या, सर्वोपकार-करणाय दयार्द्रचित्ता।।

देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद, प्रसीद मात-र्जगतोखिलस्य।
प्रसीद विश्वेश्वारि पाहि विश्वं त्वं-ईश्वरी देवि चराचरस्य।
पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहवः सन्ति सरलाः, परं तेषां मध्ये विरलतरलोहं तव सुतः।
मदीयोयं त्यागः समुचितम्-इदं नो तव शिवे, कुपुत्रो जायेत क्वचित्-अपि कुमाता न भवति।।
जगत्-मातर्-मातः तव चरणसेवा न रचिता, न वा दत्तं देवि द्रविणम्-अपि भूयस्तव मया।
तथापि त्वं स्नेहं मयि निर्-उपमं यत्-प्रकुरुषे, कुपुत्रो जायेत क्वचित्-अपि कुमाता न भवति।।
शरणागत-दीनार्त-परित्राण-परायाणे, सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोस्तु ते।
या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तयै नमोनमः।
या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्य-भिधीयते, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।
या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु क्षुधारूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।
या देवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।

या देवी सर्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु लज्जारूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।
या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।
या देवी सर्वभूतेषु कान्तिरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण, संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।
या देवी सर्वभूतिषु स्मृतिरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।
या देवी सर्वभूतेषु तुष्टिरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।
या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।
या देवी सर्वभूतेषु भ्रांतिरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।

आनन्दसुन्दर-पुरन्द्र-मुक्तमाल्यं, मौलौ हठेन निहितं महिषासुरस्य
पादाम्बुजं भवतु मे विजयाय मञ्जु, मञ्जीर-शञ्जित-मनोहरम्-अम्बिकायाः
उत्तप्त-हेमरुचिरे त्रिपुरे पुनीहि, चेत्तश्चि-रन्तनम्-अघौघवनं लुनीहि,

कारागृहे निगड-बन्धन-पीड़ितस्य, त्वत्संस्मृतौ झट्-इति मे निगडा-स्त्रुट्यन्तु माया कुण्डलिनी, क्रिया-मधुमती, कालीकला-मालिनी मातंगी विजया जया भगवती देवी शिवा शाम्भवी शक्ति शंकर-वल्लभा त्रिनयना वाक्वादिनी भैरवी, ह्रींकारी त्रिपुरा परा परमयी माता-कुमारीत्यसि। महाबले महोत्साहे, महाभय-विनाशिनि। त्राहि मां देवि दुष्प्रेक्ष्ये, शत्रूणां भयवर्धिनि। सर्वमंगल-मंगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके, शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोस्तुते।।

शंकर प्रार्थना

प्रणतोस्मि महादेव, प्रपन्नोस्मि सदाशिव, निवारय महामृत्युं, मृत्युंजय नमोस्तुते। मृत्युंजय महादेव, पाहि मां शरणागतम्, जन्ममृत्यु-जरारोगैः, पीडितं भवबन्धनात्।

कर्पूर-गौरं करुणावतारं, संसार-सारं भुजगेन्द्र-हारम्।
सदा रमन्तं ह्दयारबिन्दे, भवं भवानी सहितं नमामि।।

हर शम्भो महादेव, विश्वेशामरवल्लभ। शिव शंकर सर्वात्मन्, नीलकण्ठ नमोस्तुते।

तव तत्त्वं न जानामि, कीदृशोसि महेश्वर, यादृशोसि महादेव, तादृशाय नमो नमः।
आधीनाम्-अगदं दिव्यं व्याधीनां मूलकृन्तनम् उपद्रवाणां दलनं महादेवम्-उपास्महे।।
आत्मा त्वं गिरजा मतिः, परिजनाः प्राणाः शरीरं गृहं, पूजा ते विषयो-पभोगरचना,
निद्रा समाधिस्थितिः। संचारोऽपि परिक्रमः पशुपते, स्तोत्राणि सर्वा गिरो, यत्यत्
कर्म करोमि देव भगवन्, तत् तत् तवाराधनम्।

नागेन्द्र-हाराय त्रि-लोचनाय, भस्मांग-रागाय महेश्वराय।
देवाधि-देवाय दिगम्बराय, तस्मै नकाराय नमः शिवाय।।
मातंग-चरमाम्बर-भूषणाय, समस्त-गीर्वाण-गणा-र्चिताय,
त्रैलोक्य-नाथाय पुरान्तकाय, तस्मै मकाराय नमः शिवाय।
शिवा-मुखाम्भोज-विकासनाय, दक्षस्य यज्ञस्य विनाशकाय
चन्द्रार्क-वैश्वानर-लोचनाय, तस्मै-शिकाराय नमः शिवाय।।
वशिष्ठ-कुम्भोत्भव-गौतमादि, मुनीन्द्र-वन्द्याय गिरीश्वराय।

श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय, तस्मै वकाराय नमः शिवाय।।
यज्ञ-स्वरूपाय जटाधराय, पिनाक-हस्ताय सनातनाय,
नित्याय शुद्धाय निरंजनाय, तस्मै यकाराय नमः शिवाय।
वपुष्प्रादुर्भावात् अनुमितम्-इदं-जन्मनि पुरा।
पुरारे नैवाहं क्वचित्-अपि भवन्तं प्रणतवान्।।
नमन्मुक्तः सम्प्र-त्यतनुर्-अहम्-अग्रे प्यनतिमान्, महेश क्षन्तव्यं तत्-इदम्-अपराध-द्वयम्-अपि ।। करचरणकृतं वाक्-कायजं कर्मजं वा, श्रवण-नयनजं वा, मानसं वाऽ पराधम्।
विदितम्-अविदितं-वा, सर्वम्-एतत्-क्षमस्व, जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो।।

शिवाय नमः ओं नमः शिवाय

आधार ज़गतुक कुनुय छु मन्त्र शिवाय नमः ओं नमः शिवाये।।
त्रिपंच नयनो ही आदि दीवो, जटा मुकट छुय गंडिथ च्य़ दीवो
चन्द्र-अर्द्ध शेखर, त्रिलोचनाय, शिवाय नमः ओं, नमः शिवाय।।
च्य़ नील कंठो जटन छय-गंगा, च मोक्षदायक गुसोञ्य नंगा
अलक्ष अगोचर छ्यपन गुफाये, शिवाय नमः ओं नमः शिवाय।।
बिहिथ छय गौरी च्य सूत्य नालय, वलिथ छुय सर्पन हुंदुय दुशालै
सहस्त्र सूर्यि तीज़ च्य़ मंज़ जटाये, शिवाय नमः ओं नमः शिवाय।।
अथस च्य़ डाबर चू बीन वायान, कपाल-माल त्रिशूल धारान
भक्तयन अभय छुख दिवान यछ़ाये, शिवाय नमः ओं नमः शिवाय।।

रटिथ चू अंकुश खडगधारिथ, धनुर धनन मंज पिनाक चारथि
वुदनि बू डंड्वथ करय हा माये, शिवाय नमः ओं नमः शिवाय।।
भवाय दीवो शर्वाय दीवो, भस्माय दीवो सुरान च्य़ ज़ीवो
च्य़ जीव पूज़ान छिय भावनाये, शिवाय नमः ओं नमः शिवाये।।
संसार सुदरस, म्य तार तारुम, अमर बनावुम शिव मार्ग हावुम
वोलुस कुकर्मव कुवासनाये, शिवाय नमः ओं नमः शिवाय।।
अनाथ बन्धो दयायि सागर, संसार की दुःख म्य यिम छि तिम च़ठ
ज़गतस दया कर च ह्यथ ओमाये, शिवाय नमः ओं नमः शिवाय।

हरे राम हरे राम, राम राम हरे हरे
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे

लिंगाष्टकम्

ब्रह्मा मुरारिःसुरार्चित लिंगं, निर्मल-भासित-शोभित-लिंगम्।
जन्मज-दुःख-विनाशक-लिंगं, तत्प्रणमामि सदा शिव-लिंगम्।। 1 ।।

देव-मुनि-प्रवरा-र्चितलिंगं, कामदहं करुणाकर-लिंगम्।।
रावण-दर्प-विनाशित-लिंगं, तत्प्रणमामि सदाशिवलिंगम्।। 2 ।।

सर्व-सुगन्धि सुलेपित-लिंगं, बुद्धिविवर्धन-कारण-लिंगम्।।
सिद्ध-सुरासर-वंदित-लिंगं, तत्प्रणमामि सदाशिव-लिंगम्।। 3 ।।

कनक-महामणि-भूषित-लिंगं, फणिपति-वेष्टित-शोभित-लिंगम्।।
दक्ष-सुयज्ञ-विनाशक लिंगं, तत्प्रणमामि सदाशिव-लिंगम्।। 4 ।।

कुंकम-चंदन-लेपितलिंगं, पंकज-हार-सुशोभित-लिंगम्।।
संचित-पाप-विनाशन-लिंगं, तत्प्रणमामि-सदाशिव लिंगम्।। 5 ।।
देव-गणार्चित सेवित लिंगम्, भावेर्भक्तिभिरेव च लिंगम्।।
दिन-कर-कोटि-प्रभा-कर लिंगम् तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम्।। 6 ।।
अष्ट-दलोपरि वेष्टित-लिंगं, सर्व-समुद्-भव-कारण-लिंगम्।।
अष्ट-दरिद्र-विनाशित-लिंगं, तत्प्रणमामि सदाशिवलिंगम्।। 7 ।।
सुरगुरू-सुरवर-पूजित-लिंगम्, सुरवन-पुष्प-सदा-र्चित-लिंगम्।।
परात्परं-परमात्मक-लिंगम्, तत्प्रणमामि सदाशिव-लिंगम्।। 8 ।।

लिंगष्टकमिदं पुण्यं यः पठेत्-शिव-सन्निधौ
शिवलोक मवाप्नोति शिवेन सह मोदते।

(इति लिंगाष्टकस्तोत्रं सम्पूर्णमं)

शिवोऽहं शिवोऽहं शिवोऽहं शिवोऽहं

मनो बुद्ध्य-हंकार-चित्तानि नाहं, नच श्रोत्र-जिह्वे नच घ्राण-नेत्रे।
नच व्योम-भूमि-र्न तेजो न वायुः, चिदानन्द-रूपः शिवोऽहं शिवोऽहं।1।
नच प्राण-संज्ञो न वे पंचवायुः, न-वा सप्त-धातु-र्न वा पंचकोशः
व वाक्-पाणिपादं न चोपस्थ-पायुः, चिदानन्द-रूपः शिवोहं शिवोहम्। 2 ।
नमे द्वेषरागौ न मे लोभ मोहौ, मदो नैव मे नैव मात्सर्य-भावः
न धर्मो न चार्थो न कामो न मोक्षः, चिदानन्द रूपः शिवोहं शिवोहम्। 3 ।
न पुण्यं न पापं न सौख्यं न दुःखं, न मन्त्रो न तीर्थं न वेदा न यज्ञः
अहं भोजनं नैव भोज्यं न भोक्ता चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम्। 4 ।
न मृत्यु-र्न शंका न मे जातिभेदः पिता नैव मे नैवा माता च जन्म।

न बन्धु-र्न मित्रं गुरु-नैव शिष्यः चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम् 5।
अहं निर्विकल्पी निराकाररूपो लघुत्वात्-च सर्वत्र सर्वेन्द्रियाणाम्
न चा संगतं नैव मुक्ति-र्न मेयः चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम्। 6 ।

इति-श्रीमत्-शंकराचार्य-विरिचितं निर्वाणषटक् सम्पूर्णम्

विष्णुस्तुतिः

जय नारायण, जय पुरुषोत्तम, जय वामन कंसारे।
उद्धर मामसुरेशविनाशिन् पतितोहं संसारे।।
घोरं हर मम नरकरिपो, केशव कल्मषाभारं।
माम्-अनुकम्पय दीनम्-अनाथं, कुरु भव-सागरपारम्।। घोरं हर मम०।। 1।।
जय जय देव जया-सुरसूदन, जय केशव जय विष्णो।
जय लक्ष्मीमुख-कमल-मधुव्रत, जय दशकन्धर जिष्णो। घोरं हर मम०।। 2 ।।

यद्यपि सकलम्-अहं कलयामि हरे नहि किम्-अपि स सत्वम्।
तत्-अपि न मुञ्चति माम्-इदम्-अच्युत, पुत्रकलत्र-ममत्वं। घोरं हर मम०।। 3।।
पुनर्-अपि जननं पुनर्-अपि मरणं, पुनर्-अपि गर्भ-निवासम्।
सोढुम्-अलं-पुनर्-अस्मिन्-माधव, माम्-उद्धर निजदासम्। घोरं हर मम०।। 4 ।।
त्वं जननी जनकः प्रभुर्-अच्युत, त्वं सुहृत्-कुलमित्रम्।
त्वं शरणं शरणा-गतवत्सल, त्वं भव-जलधि-वहित्रं।। घोरं हर मम०।। 5 ।।
जनक-सुता-पति-चरण-परायण, शंकर-मुनिवर-गीतं।
धारय मनसि कृष्ण-पुरुषोतम, वारय संसृति-भीतिम्।। घोर हर मम०।। 6 ।।

नारायणस्तुतिः

अच्युतं केशवं रामनारायणं, कृष्णदामोदरं वासुदेवं हरिम्।।
श्रीधरं माधवं गोपिकावल्लभं जानकीनायकं राम चन्द्रं भजे।।

सूरजं शैशवं सत्यभा-माधवं, श्रीधरं श्रीपतिं-राधिका-राधितम्।
इन्दिरा-मन्दिरम् चेतसा सुन्दरं, देवकीनन्दनं नन्दजं संभजे।।
अँगनाम्-अँगनाम्-अन्तरे माधवो, माधवं माधवं चान्तरे-णांगना।
सत्यभा-कल्पिते मण्डले मध्यगः, सञ्जगौ वेणुना देवकीनन्दनः।।
बालिका-बालिका बाललीला-लयः, संग-सन्दर्शित-भ्रू-लता-विभ्रमः।
गोपिका गीत-दत्ता-वदानः स्वयं, संजगौ वेणुना देवकी-नन्दनः।।
जयतु जयतु देवो देवकीनन्दनोयं, जयतु जयतु कृष्णो, वृष्णिवंश-प्रदीपः।
जयतु जयतु मेघ, श्यामलः कोमलांगो, जयतु जयतु पृथ्वी-भारनाशो मकुन्दः।।
शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम्
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्।।

गुरुस्तुतिः

वन्देहं सच्चिदानन्दं भेदातीतं जगद् गुरुम्
नित्यं पूर्णं निराकारं निर्गुणं सर्व-संस्थितम्। 1 ।
परात्परतरं ध्येयं नित्यम्-आनन्दकारणम्
हृदयाकाश-मध्यस्थं शुद्धस्फटिक-सन्निभम्। 2 ।
नमामि सद् गुरुं शान्तं प्रत्यक्षं शिवरूपिणम्
शिरसा योगपीठस्थं धर्मकार्मार्थ-सिद्धये। 3 ।
अखण्ड-मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुर-वे नमः। 4 ।
अज्ञानतिमरान्धस्य ज्ञानञ्जन-शलाकया
चक्षुर्-उन्मीलितं येन तस्मै श्री-गुरवे नमः। 5 ।
हरौ रुष्टे गुरु-स्त्राता गुरौ रुष्टे न कश्चन
सर्वदेव-स्वरूपाय तस्मै श्री-गुर-वे नमः। 6 ।
चैतन्यं शाश्वतं शान्तं व्योमातीतं निरञ्जनम्
बिन्दु-नादकलातीतं तस्मै श्री-गुर-वे नमः। 7 ।
शिष्यानां मोक्षदानाय लीलया-देहधारिणे
सदेहेपि विदेहाय तस्मै श्री-गुर-वे नमः। 8 ।
ज्ञानिनां ज्ञानरूपाय प्रकाशाय प्रकाशिनाम्
विवेकिनां विवेकाय विमर्शाय विमर्शिनाम्। 9 ।
पुरस्तात्-पार्श्वयोः पृष्ठे नमस्कुर्याम्-उपर्यधः
सदामत्-चित्तिरूपेण विधेहि भवदासनम्। 10 ।

विष्णु प्रार्थना

शान्ताकारं भुजंगशयनं पद्मनाभं सुरेशं । विश्वाधारं गगनसद्रश्यं मेघवर्णं शुभाङ्गम्। लक्ष्मी कान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यान गम्यं। वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्। १ । यस्य हस्ते गदा चक्रं गुरुडो यस्य वाहनं। शंखः करतले यस्य स मे विष्णुः प्रसीदतु । २ । यद्बल्ये यश्च कौमारे यद्यौवने कृतं मया। वयः परिणतौ यश्च यक्ष्च जन्मान्तरेषुच। कर्मणा मनसा वाचा यापापं समुवार्जितं तन्नारायण गोविन्द क्षमस्व गुरुडध्वज। ३ । त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखस्त्मेव त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं ममदेव देव। ४ । तत्रैव गंगा यमुना चवेणी, गोदावरी सिंधु सरस्वती च सर्वाणि तीर्थानि वसंति तत्र, यत्राच्युतोदार कथा प्रसंगः। ५ । नमामि नारायण पादपंकजं करोमि नारायण पूजनं सदा। वदामि नारायण नाम निर्मलं, स्मरामि नारायण तत्वम व्ययम। ६ । गो कोटिदानं ग्रहणेषु, काशी, प्रयागं गंगाऽयुतकल्पवासः। यज्ञायतं मेरु सुवर्णदानं, गोविंदनाम्ना न कदापि तुल्यम्।। ध्येयः सदा सवितृमण्डल मध्यवर्ती नारायणः सरसिजासन- सन्निविष्ठः। केयूरवान-कनक- कुण्डलवान्-किरीटी हारी हिरण्य-वपुर्धृत शङ्खचक्रः। ८ । करार बिन्देन पदारबिन्दं मुखारबिन्दं विनिवेश्ययन्तं। अश्वत्थपत्रस्य पुटेयान, बालं मुकुन्दं मनसा स्मारामि। ९ । गोविन्द गोविन्द हरे मुरारे, गोविन्द गोविन्द रथांगपाणे। गोविन्द गोविन्द मुकुंद कृष्ण, गोविन्द गोविन्द नमो नमस्ते। १० ।

शिव-चामर-स्तुतिः

ॐ अतिभीषण कटुभाषण यमकिङ्कर पटली
कृत-ताडन-परिपीडन-मरणागम-समये।
उमया सह मम चेतसि यमशासन निवसन्
शिवशङ्कर शिवशङ्कर हर मे हर दुरितम्।। 1 ।।
अतिदुर्नय चटुलेन्द्रिय रिपु-सञ्चय दलिते
पविकर्कश कटुजल्पित खलगर्हण-चलिते।
शिवया सह ममचेतसि शशिशेखर निवसन्
शिवशङ्कर शिवशङ्कर हर में हर दुरितम्।। 2 ।।
भव भञ्जन सुर-रञ्जन खलवञ्चन पुरहन्
दनुजान्तक मदनान्तक रतिजान्तक भगवन्।
गिरिजावर करुणाकर परमेश्वर भयहन्
शिवशङ्कर शिव शङ्कर हर में हर दुरितम्।। 3 ।।
शक्रशासन कृतशासन चतुराश्रम विषये
कलिविग्रह भवदुर्ग्रह रिपुदुर्बल समये।
द्विज-क्षत्रिय-वनिता शिशुदर कम्पित हृदये
शिवशङ्कर शिवशङ्कर हर में हर दुरितम्।। 4 ।।
भवसम्भव विविधामय परिपी-डितवपुषं
दयितात्मज ममताभर-कलुषी-कृत-हृदयम्।
करु मां निजचरणार्चन निरतं भव सततं
शिव शंकर शिवशंकर हर में हर दुरितम्।। 5 ।।

प्रार्थना

जब सौंप दिया इस जीवन का, सब भार तुम्हारे हाथों में।
है जीत तुम्हारे हाथों में, और हार तुम्हारे हाथों में।।
मेरा निश्चय बस एक यही, एक बार तुम्हें पा जाऊँ मैं।
अर्पण कर दूँ दुनिया भर का, सब प्यार तुम्हारे हाथों में।।
यदि जग में रहूँ तो ऐसे रहूँ, जैसे जल में कमल का फूल रहे।
मम अवगुण दोष समर्पित हों, भगवान् तुम्हारे हाथों में।।
यदि मानुष का मुझे जन्म मिले, तव चरणों का मैं भक्त बनूँ।
इस भक्त की तनमन का, रहे तार तुंम्हारे हाथों में।।
जब-जब संसार का कैदी बनूँ, निष्काम भाव से काम करूँ।
फिर अन्त समय में प्राण तजूँ - निराकार तुम्हारे हाथों में।।
मुझ में तुझ में बस भेद यही, मैं नर हूँ तुम नारायण हो।
मैं हूँ संसार के हाथों में, संसार तुम्हारे हाथों में।।

गायत्री मन्त्र का महत्व

गायत्री की महिमा सभी वेदों तथा पुराणशास्त्रों में सविस्तार दर्ज है- अथर्व-वेद में स्वयं वेदभगवान् का कहना है-"**स्तुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्तां पावमानी द्विजानाम्, आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसम्**" **अर्थः**-मेरे द्वारा स्तुति की गई द्विजों को पवित्र करने वाली वेदमाता गायत्री आयु प्राण सन्तति पशु कीर्ति धन ब्रह्मतेज देने वाली है।

"गायत्री मन्त्र"

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्-सवितुर् वरेण्यं, भर्गो-देवस्य धीमहि, धियो यो-नः प्रचोदयात्

अर्थः- में उस शक्ति का चिन्तन करता हूँ जो शक्ति **ॐ** ब्रह्मरूप हैं, **भूर्भुवः स्वः** जो शक्ति तीनों लोकों में व्याप्त है, **तत्**-जिस को वेदों ने तत् नाम से पुकारा है **सविता**-जो शक्ति इस सृष्टि को बनाती है, पालन करती है, नाश करती है, "**वरेण्यम्**" जो वरण करने के योग्य है, **भर्गः**- जो तेजो रूप है, **देवः** जो द्योतनशील है, अथवा ऐश्वर्यवाली है, ऐसी उस महान् शक्ति का **धीमहि**- चिन्तन करता हूँ, वह शक्ति **'धियः'** मेरी बुद्धि को, **प्रचोदयात्**- सत् कर्मो में प्रेरित करे।

मैं उस शक्ति का चिन्तन करता हूँ, जो ब्रह्मरूप हैं, जो शक्ति तीनों लोकों में व्याप्त है, जिस को वेद "तत्" नाम से पुकारते हैं, जो शक्ति इस सृष्टि को बनाती, पालन तथा संहार करती है, जो वरण करने (अपनाने) के योग्य है, जो तेजोरूप है, जो ऐश्वर्य देने वाली है ऐसी ही उस महान् शक्ति का मैं चिन्तन करता हूँ, वह शक्ति मेरी बुद्धि को सत्कर्मो में लगाये।

गायत्री मन्त्र का महत्व क्यों ?

शब्दनित्य है **(शब्द ब्रह्म)** वर्तमान विज्ञान भी यही मानता है, आज जो बातें हम करते हैं, अथवा हमारे मन की लहरें आकाश में अथवा सृष्टि के अन्तराल में किसी न किसी रूप में विद्यमान रहती है, सृष्टि के आरम्भ से ही ऋषि मुनि साधक गायत्री मन्त्र के अनुष्ठान करते आये हैं, उन ऋषियों मुनियों साधकों की साधनायें भावनायें तपश्चर्यायें इस छोटे से गायत्री मन्त्र के पीछे तेजोपुंज के रूप में एकत्रित है, जो व्यक्ति इस गायत्री मन्त्र का उच्चारण अथवा जप करता है उस साधक की सफलता में वह तेजोपुंज अवश्य सहायक बनता है, साधक ज्यों ही इस मन्त्रराज का जप अथवा उच्चारण करने लगता है तो उसी क्षण में इस मंत्र के प्रभाव का अनुभव करने लगता है, यही है इस गायत्री मन्त्र के महत्व का रहस्य।

गायत्री जपविधिः-

शुद्ध आसन पर पद्मासन पर पूर्व की ओर मुख कर के पानी का एक लौटा और एक थाली तर्पण

के लिये रख कर नमस्कार करते हुये पढ़े (यदि नदी के तट पर करना हो तो थाली की आवश्यकता नहीं):-
प्रणवस्य ऋषि ब्रह्मा गायत्रं छन्द एवच, देवोग्नि-र्व्याहृतिषु च विनियोगः प्रकीर्तितः, प्रजापते-र्व्याहृतयः पूर्वस्य परमेष्ठिनः। व्यस्ताश्चैव समस्ताश्च ब्राह्मम्-अक्षरम्-ओम्-इति। व्याहृतीनां समस्तानां दैवतं तु प्रजापतिः, व्यस्तानाम्-अयम्-अग्निश्च वायुः सूर्यश्च-देवताः। छन्दश्च व्यहृतीनाम्-एकाक्षराणम्-उक्ताख्यम्-द्वयक्षराणाम्-अत्युक्-ताख्यम्। विश्वामित्र-ऋषि-श्छन्दो, गायत्रं सविता तथा, देवतो-पनये जप्ये गायत्र्या योग उच्यते आवाहयामि गायत्रीं, सर्व-पाप-प्रणाशि-नीम्। न गायत्र्याः परं जप्यं, नव्याहृति-समं हुतम्, आगच्छ वरदे देवि, जप्ये मे सन्निधौ भव। गायन्तं त्रायसे यस्मात्-गायत्री त्वं ततः स्मृता, अग्नि-र्वायुश्च सूर्यश्च, बृहस्पत्याप-एव-च, इन्द्रश्च-विश्वे-देवाश्च देवताः सम्-उदाहृताः। एवम्-आर्ष-छन्दो दैवतं विनियोगं चानुस्मृत्य। गायत्र्या शिखाम्-अबद्ध्य गायत्र्यैव समन्ततः, आत्मन-श्चापः परिक्षिप्य, प्राणायामं कुर्यात्, ओजोसीति गायत्रीम्-आवह्य देवानाम्-आर्षम् (अपने आप को छिडकें अंजलि धारण करते हुये पढ़ेः-**ओजोसि सहोसि बलम्-असि भ्राजोसि देवानां धाम नामासि, विश्वम्-असि-विश्वायुः, सर्वम्-असि-सर्वायुः, अभि-भूः- अंगन्यास-कीजिये**-दोनों हाथों की ऊँगलियों से स्पर्श करते हुये पढ़ें: **"अ" नाभौ** (नाभिको) **"उ" हृदि** (हृदय को) **"म" शिरसि** (सिरको)।। **ॐ"भूः"-अंगुष्ठाभ्यां नमः** (दोनों अंगूठों को) **"भुवः तर्जनीभ्यां नमः** (अंगूठे के साथ वाली ऊँगलियों को), **"स्वः" मध्यमाभ्यां नमः** (बीचवाली ऊँगलियों को) **"महः" अनामिकाभ्यां नमः**, (सब से छोटी अंगुली की साथ वाली ऊँगलियों को **"जनः" कनिष्ठकाभ्यां नमः**

(छोटी ऊँगलियों को **"तपः सत्यं"** **करतल पृष्ठाभ्यां नमः** (दोनो हाथ के तलवों को आपस में स्पर्श करें। **"भू." पादयोः** (पावों को) **"भुवः" जान्वोः** (गुठनों को) **"स्वः" गुह्ये** (गुह्यस्थान को) **"महःनाभौ** (नाभि को) **"जनः" हृदि** (हृदय को) **"तपः" कण्ठे** (गले को) **"सत्यं" शिरसि** (सिर को), **ॐ "भूः" हृदयाय नमः "भुवः" शिरसि स्वाहा, "स्वः" शिखायै वौषट्** (चोटी को) **महःकवचाय हूँ,** (वस्त्रों को) **जनः नेत्राभ्यां वौषट्** (नेत्रों को) **"तपः सत्यम्-अस्त्राय फट्"** चुटकी मारे।। **"तत्-सवितुर्" अंगुष्ठाभ्यां नमः, "वरेण्यं" तर्जनीभ्यां नमः, "भर्गो-देवस्य मध्यमाभ्यां नमः, "धीमहि" अनामिकाभ्यां नमः, "धियो योनः" कनिष्ठकाभ्यां नमः, "प्रचोदयात्" करतल करपृष्ठाभ्यां नमः तत् "पादयोः सवितुर्" जान्वोः** (गुठनों को) **"वरेण्यं" कट्यां** कमर को, **भर्गो नाभौ "देवस्य"** हृदये **"धीमहि"** कण्ठे **"धियोः,"नासिकायां "यो" चक्षुषोः** (नेत्रों को) **"नः ललाटे** (माथे को) **"प्रचोदयात्" शिरसि,।। "तत् सवितुर्" हृदयाय नमः "वरेण्यं" शिर-से स्वाहा, "भर्गो देवः" शिखायै वौषट् 'धीमहि' कवचाय हूँ** (वस्त्रों को **"धियो योनः "नेत्राभ्यां वौषट् 'प्रचोदयात् अस्त्रायाय फट्** (चुटकी मारिये) **"आपः" स्तनयोः (स्तनों को) "ज्योतिः" नेत्रयोः, "रसो" मुखे "अमृतं" ललाटे "ब्रह्म-भूभुर्वः स्वरों"** (शिसि) प्राणायाम करके तर्पण कीजियेः-

ॐ अस्य गायत्री शापविमोचन-मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषि गायत्री च्छन्दः वरुणो देवता ब्रह्मशाप-विमोचने विनियोगः। (तर्पण करते रहिये)

शापविमोचन

ओ३म्-यत्-ब्रह्मेति ब्रह्मविदो विदुः-त्वां पश्यन्ति धीराः।
सुमनसो-वा गायत्री त्वं ब्रह्मशापात्-विमुक्ता भव ।। 1 ।।
ओ३म्-अर्क-ज्योतिर् अहं ब्रह्मा ब्रह्म ज्योतिर्-अहं शिवः
शिव-ज्योतिर्-अहं विष्णुः शिव-ज्योतिः शिवः परम्।। 2 ।।
गायत्री त्वं वशिष्ठ शापात्-विमुक्ता भव।
ॐ अहो देवि महादेवि दिव्ये सन्ध्ये सरस्वति।
अजरे अमरे चैव ब्रह्मयोनि नमोस्तुते।
गायत्रि त्वं विश्वामित्र-शपात्-विमुक्ता भव।। 3 ।।

गायत्री का ध्यान करते हुये पढ़ेः-

मुक्ता-विद्रुम-हेम-नील-धवल, छायै-र्मूखैः-त्रीक्षणैः

युक्ताम्-इन्दु-निबद्ध-रत्न-मुकटां, तत्त्वात्म-वर्णात्मिकाम्
गायत्रीं वरदा-भया-ड्.कुश-करां शूलं कपालं गुणं
शंखं चक्रम्-अथार-बिन्दु-युगलं हस्तै-र्वहन्तीं भजे।। 1 ।।

आगच्छ वरदे देवि त्र्यक्षरे ब्रह्मवादिनि।
गायत्रि छन्दसां-मात-र्ब्रह्म-योने नमोस्तुते।। 2।।

यह मन्त्र तीन बार पढ़ कर-गायत्री मन्त्र का जप करें

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्-वेरण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ

यदि माला से जप करना है तो जप समाप्त करके माला सिर पर रख कर प्राणायाम करके तर्पण करते हुये पढ़ेः- **देवा-गातु-श्रोत्रियाः देवा गातुविदो, गातुं वित्वा-गातु-मित मनसस्-पत-इमं देवयज्ञं स्वाहा, वाचे स्वाहा वातेधाः** नमो धर्मनिधानाय नमः सुकृत-साक्षिणे। नमः प्रत्यक्षदेवाय भास्कराय नमो नमः

जप करने का स्थानः- घर के उस कमरे में जप करें जहां आप की एकाग्रता में किसी प्रकार का विघ्न न पड़े, नदी के तट पर जप करना अधिक लाभदायक रहता है। जप की विधि आसन प्राणायाम आदि की जानकारी इसी जन्त्री के जपप्रकरण में देखिये।

क्या महिलाओं को गायत्री साधना जप अनुष्ठान आदि करने का अधिकार है ?

वेदों शास्त्रों पुराणों के स्वाध्याय से यह स्पष्ट होता है कि पुरुष हो या स्त्री दोनों गायत्री उपासना के अधिकारी हैं, प्राचीनकाल में गार्गी, मैत्रेयी देवयानी, लोपामुद्रा आदि महिलाओं ने गायत्री शक्ति की उपासना से ही आत्मा को समुन्नत बनाया था सावित्री ने एक वर्ष तक गायत्री की साधना की थी जिस साधना से ही वह अपने पति को यमराज से लौटा सकी। स्त्री और पुरुष दोनों ही गायत्री माता की सन्तान है, स्त्री सधवा हो या विधवा अपने जीवन को सफल बनाने के लिये गायत्री मन्त्र का जप किया करें।

धर्मशास्त्र

धार्मिक रीति रिवाज भी संस्कृति के ही अंग माने जाते हैं, परंतु जब वे रीति रिवाज धर्मशास्त्र के आधार पर हूँ, कहीं कहीं धर्मशास्त्रों में मतभेद पाया जाता है, ऐसी दशा में देशाचार की भी प्रामाण्यता होती है- इन बातों को ध्यान में रखकर ही धर्मशास्त्र की चन्दबाते समय समय पर काम आने वाली निम्नलिखित हैं।

सगोत्रः- जिन का आपस में एक ही गोत्र हो सगोत्री कहलाते हैं- सगोत्रियों का आपस में विवाह

करना निषेध हैं, मातृपक्ष से पांच पीढी तक पितृपक्ष से सात पीढी तक विवाह नहीं कर सकते हैं।

दत्तकः- (मंगत लाना) अपने खानदान से दत्तक लाना धर्मशास्त्र के अनुसार उत्तम माना जाता है, दूसरे वंश का भी दत्तक लाया जा सकता है, साला (पत्नी का भाई) दत्तक लाना धर्मशास्त्र से निषेध है।

मुण्डनः- माता अथवा पिता के मरने पर मुण्डन करना पुत्र के लिये आवश्यक है, यदि बड़ा लड़का घर में न हो अथवा किसी कारण से क्रिया कर्म दाह संस्कार आदि न कर सके तो कोई भी पुत्र कर सकता है।

क्रिया कर्म का अधिकारी पुत्र, दाह संस्कार पर घर में न होने पर बारवें दिन तक जिस दिन भी घर पहुँचे उस दिन से ही व्रतधारी रह कर क्रिया कर्म कर सकता है, परन्तु क्रिया कर्म आरम्भ करने से पहले मुण्डन करना आवश्यक है।

अशौचः- दो प्रकार का होता है, जन्म का अशौच जिसे सूतक कहते हैं और दूसरा मरने का अशौच, जिस को मृतक कहते हैं, ब्राह्मणों को दस दिन, क्षत्रियों को 12 दिन और शूद्र को 30 दिन का अशौच होता है, बिना विवाह के कन्या का, पिता के घर में मृत्यु हो तो तीन दिन का अशौच होता है, विवाहित लड़की को 10 दिन के अन्दर जिस दिन भी माता पिता के मृत्यु का सन्देह मिले तो उस दिन से लड़की को तीन दिन का अशौच होता है।

दो अशौचः- एक साथ दो अशौच होने पर पहले अशौच के समाप्त होने पर ही दूसरे अशौच की

भी शुद्धि होती है, उदाहरण के रूप में, किसी के पिता की मृत्यु होती है उस के दसवें दिन से पहले किसी दिन (पैतृव्य) चाचा की मृत्यु हो ऐसी दशा में जिस दिन पहला अशौच समाप्त होता उसी दिन दूसरा अशौच भी समाप्त होता है, यदि जन्म के अशौच पर मरने का अशौच पड़े तो मरने का अशौच समाप्त होने पर यदि दसवें दिन मरने के अशौच पर फिर से मरने का अशौच पड़े तो ही शुद्धि होती है, यदि दसवें दिन मरने के अशौच पर फिर से मरने का अशौच पड़े तो मरने का अशौच समाप्त होने पर ही शुद्धि होती है, ऐसी स्थिति में दूसरा अशौच समाप्त होने पर दो दिन के लिये अधिक अशौच रहता है, यदि 11 वें दिन मरने के अशौच पर फिर से मरने का अशौच पड़े तो अशौच समाप्त होने के बाद अधिक तीन दिन तक अशौच रहता है। सूतक का अशौच हो या मृतक का अशौच 11वां दिन करना आवश्यक है, 12वां दिन अशौच समाप्त होने के पश्चात् भी किया जाता है, षड्मासिक पर भी किया जा सकता है।

छलुनः- दसवें दिन तक छलुन आवश्यक है, यदि लड़की दसवें दिन तक छलुन का कार्य न करे तो उस को ग्यारवें बारबें दिन के क्रियाकर्म में सम्मिलित होने का अधिकार नहीं है, छलुन के लिये शुभवार होनी चाहिये, यह बात याद रखें हिन्दू संस्कृति के अनुसार सूर्योदय से सूर्योदय तक वार होती है 12 बजे रात से वार बदलती है ऐसा न मानिये, जिस समय छलुन करना हो उस समय शुभवार होनी चाहिये, शुभवार है सोमवार, बुधवार, शुक्रवार, परन्तु बृहस्पतिवार शुभवार होने पर भी छलुन के लिये निषेध है, पंचक भी छलुन के लिये निषेध है।

अस्थि संचयः- फूल प्रवाहित करना, मृत्यु के पश्चात् दस दिन के अन्दर ही गंगा में प्रवाहित करें यदि ऐसा न हो सके तो एक वर्ष के अन्दर किसी भी दिन प्रवाहित करें।

यदि बच्चा मरा हुआ उत्पन्न हो अथवा उत्पन्न होते ही मरे उस बच्चे को लट्ठे में लपेट कर पृथ्वी को अर्पण करें, घर से गोद में उठाकर गड्ढा खोदने तथा पृथ्वी में अर्पण करने के समय तक लगातार **"ॐ नमः शिवाय"** मन्त्र का बार-बार उच्चारण करें, दाँत निकलने तक जिस बच्चे का मृत्यु हो जाये उसका दाह संस्कार न करें अपितु उस को भी पृथ्वी अर्पण करें, दान्त निकलने के पश्चात् जो बच्चा मरे उस का दाह संस्कार करें, यज्ञोपवीत संस्कार के बिना कोई भी लड़का किसी भी आयु का हो उस की मृत्यु होने पर दाह संस्कार के पश्चात् दसवाँ दिन अवश्य करें, 11वां और बारवां दिन न करें, उस बालक के निमित आने वाले किसी शुभ वार पर बालकों को भी पूरी भोजनादि से तृप्त करें, उस मृतक बालक को जिन वस्तुओं पाठ्य पुस्तकों की ओर प्रवृत्ति हो किसी निर्धन-विद्यार्थी को ऐसी वस्तुयें पुस्तकें वस्त्रादि दानरूप में दीजिये, या कोई आर्थिक सहायता कीजिये ताकि उसकी पढ़ाई आगे चल सके। **श्रद्धया-देयम्-अश्रद्धया-देयम्"** देना ही शान्ति का मार्ग है।

श्राद्धः- श्राद्ध की जो तिथि हो, जन्त्री में उस मास की वह तिथि देखें, यदि उस तिथि के साथ "दिवा" "दि" का चिन्ह हो तो श्राद्ध एक दिन पहले होता है, यदि प्रविष्ठ "प्र" की निशानी हो तो श्राद्ध अपने ही दिन होगा, दिवा-प्रविष्ठ के आधार से जन्त्री में, श्राद्ध और मध्याह्न दर्ज है वहीं से देखिये।

मासिक श्राद्धः- मासवार की जो तिथि हो उस तिथि का मध्याह्न देखना आवश्यक है, मध्याह्न श्राद्ध किस दिन का कब होगा पंचाग में दर्ज है।

षट्-मासिक श्राद्ध (षडमोस):- मृतक के श्राद्ध की जो तिथि हो, मध्याह्न के आधार से उस तिथि का श्राद्ध कब होगा उस दिन एक दिन पहले षड्-मासिक श्राद्ध करें और निश्चित मध्याह्न के दिन मासवार करें।

वार्षिक श्राद्धः- वहरव्र श्राद्ध देखते समय इस बात का ख्याल रखें यदि आप हर श्राद्ध में मध्याह्न देखते हैं तो वार्षिक श्राद्ध की तिथि में भी मध्याह्न देखिये, यदि आप मध्याह्न देखते नहीं है तो निश्चित श्राद्ध की तिथि को "दिवा" "प्रविष्ठ" के आधार से देखिये-मध्याह्न के आधार से अथवा दिवा प्रविष्ठ के आधार से जिस दिन निश्चित तिथि का श्राद्ध आयेगा उस दिन से एक दिन पहले मासवार होगी।

श्राद्धः- के दिन अधिक भोजन न खायें, दिन को न सोयें, ब्रह्मचर्य का पालन करें, दूसरे घर में खाना न खाइये, मांस न खाइये शराब, अथवा किसी मादक द्रव्य का प्रयोग न कीजिये।

श्राद्ध करने न करने के सम्बन्ध में:- विवाह यज्ञोपवीत आदि संस्कार के पश्चात् छः मास तक श्राद्ध न करें, परन्तु इस बात को भूलिये मत, यह धर्मशास्त्र की आज्ञा माता पिता के श्राद्ध पर लागू नहीं हैं, बल्कि माता पिता का श्राद्ध अवश्य करना चाहिये, यदि किसी पितर का श्राद्ध करना हो परन्तु तिथि मास का ज्ञान न हो तो ऐसी स्थिति में मार्गकृष्णपक्ष अमावसी के दिन श्राद्ध करें, यदि श्राद्ध करने में आप

असमर्थ है तो विध्यनुसार संकल्प करें, किसी योग्यपात्र को भोजन दक्षिणा आदि से तृप्त करें और स्वंय व्रतधारी रहिये, एक समय शुद्ध भोजन खाईये, श्राद्ध के दिन मांस का प्रयोग न करें, भगवान् व्यास का कहना है **"देवयज्ञे पितृश्राद्धे तथा मांगल्य कर्मणे, तस्यैव नरके वासो यो कुर्यात् जीवघातनम्"** जो गृहस्थी पितृश्राद्ध विवाहादि मंगल कर्म में जन्मोत्सव आदि में मांस का प्रयोग करता है, वह नरक में जाता है।

श्राद्ध संकल्प विधिः

पितृऋण चुकाने के निमित्त श्राद्ध अवश्य करें, यदि आप श्राद्ध करने में असमर्थ है तो संकल्प करें, ऐसी धर्मशास्त्र की आज्ञा है। श्राद्ध संकल्प के लिये पहले सामग्री एकत्रित करें, एक थाली में चावल थोड़ा सा नमक फल दक्षिणा आदि रखें, थोड़ा सा तिल धूप दीप फूल अर्ध पवित्र तिलक, केसर या चन्दन का तिलक जिस पितर का श्राद्ध हो उस का फोटो तिलक फूल की मालादि से सजा कर सामने रखें, यदि फोटो न हो तो भगवान् विष्णु का, अथवा भगवान् कृष्ण का फोटो रखें। पद्मासन में शुद्ध आसन पर पूर्व की ओर मुख करके बैठिये, संकल्प करने से पहले श्रीमद्भगवद्गीता का कम से कम एक अध्याय का पाठ करें, यदि ऐसा न हो सके, तो जन्त्री के पाठ प्रकरण से अष्टादशश्लोकी गीता का पाठ अवश्य करें, उस के पश्चात् दीप धूप करें जैसा कि "कर्मकाण्डदीपक" में दर्ज है, दीपो नमः धूपो नमः तक पढ़कर पढ़ें-

ॐ तत्-सत्-ब्रह्म, अद्य-तावत्-तिथौ-अद्य (मास पक्षवार का नाम लेकर) जैसे वैशाख-मासस्य कृष्णपक्षस्य, (अथवा) शुक्लपक्षस्य तृतीस्यां तिथौ-भौम-वासरा-न्वितायां-विष्णु-प्रीत्यर्थम्-दीप-धूप संकल्पात् सिद्धिर्-अस्तु-दीपो नमः धूपोनमः।

बांयाँ यज्ञोपवीत रख कर तिल सहित जल से तर्पण करते हुये पढ़ेः- **नमः पितृभ्यः- प्रेतेभ्यः, नमो धर्माय विष्णवे नमो यमाय रुद्राय कान्तार पतये नमः।**

ॐ तत् सत्-ब्रह्म-अद्य-तावत्-तिथौ-अद्य (मास-पक्ष तिथि वार का नाम लेकर) पित्रे.... प्रपिताम-हाय। मात्रे पिता-मह्यै प्रपितामह्यै। माता महाय, प्रमाता-महाय, वृद्ध प्रमाता-महाय, प्रमातामह्यै वृद्ध-प्रमातामह्यै समस्तमाता-पित्भ्यो द्वादश-दैवतेभ्यः पितृभ्यः नित्यकर्म निमितं दीपः स्वधः, धूपः स्वधः, जिस पितर का श्राद्ध हो उसी का नाम गोत्रसहित लेकर संकल्प का पानी जो आपने हाथ में लिया होगा चावल आदि पर छिड़कते हुये पढ़े-ॐ तत्-सत्-ब्रह्म-अद्य-तावत्-तिथौ अद्य मास-पक्ष-तिथि-वार का नाम लेकर पढ़े :- सांवत्सरिके श्राद्धे (यदि काम्बर पछ (पितृपक्ष) का श्राद्ध हो) कर्न्याकगत आपरि-पाके श्राद्धे परलोके वैकुण्ठ पदवीप्राप्त्यर्थं आत्मनः पुण्य वृद्धयर्थं इदं-अन्नं दक्षिणा सहितं-फल-मूलवस्त्रादि-सहितं संकल्पयामि संकल्पयमि संकल्पयामि (दायाँ यज्ञोपवीत) रखकर फिर से तर्पण करते हुये पढ़ेः-

नमो-ब्रह्मणे-नमो-अस्तु-अग्नये-नमः पृथिव्यै-नमः औषधीभ्यः नमो वाचस्पतये-नमो-विष्णवे-बृहते कणोमि। इति-एतासाम्-एव-देवतानां-सारिष्टिं-सायुज्यं सलोकतां सामीप्यम्-आप्नोति य एवं विद्वान्-स्वाध्यायम्-अधीते ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

जन्म दिन पूजा

पूजा आरम्भ करने से पहले यज्ञोपवीत धारण करें और थाल में नारीवण को रखकर नमस्कार करते हुये पढ़े।

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशि-वर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्याये सर्व-विघ्नोपशान्तये।। अभिप्रेतार्थ-सिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरैर्-अपि। सर्व-विघ्नच्छिदे तस्मै गणधिपतये नमः। 1 ।

हृदय और मुख को जल छिड़कते हुए पढें।

तीर्थे स्नेयं तीर्थ-मेव समानानां भवति। मा नः शंस्योर्-अरुरुषो धूर्तिः प्राणङ्.मर्त्यस्य रक्षा-णो बह्मणस्पते ।।

अनामिका उंगली में पवित्र धारण करके अपने आप को तिलक, अर्घ, फूल लगाते हुये पढें।

परमात्मने पुरुषोत्तमाय पंचभूतात्मकाय विश्वात्मने मंत्रनाथाय आत्मने नारायणाय आधारशक्त्यै समालभनं गन्धो नमः अर्घो नमः पुष्पं नमः।।

रत्नीदीप धूप को तिलक, अर्घ, पुष्प अपर्ण करके सूर्य भगवान् को थाली में तिलक तथा अर्घ, पुष्प अर्पण करते हुये पढें:-

नमो धर्म-निधानाय नमः स्वकृतसाक्षिणे। नमः प्रत्यक्षदेवाय भास्कराय नमो नमः।।

खोसू से थाली में रखे हुये नारीवण के ऊपर अर्घ सहित जल की धारा डालते हुये पढें:-

यत्रास्ति-माता न पिता न बन्धु-र्भ्रातापि नो यत्र सुहृत्-ज्जनश्च न ज्ञायते यत्र दिनं न रात्रि-स्तत्रात्मदीपं शरणं प्रपद्ये। आत्मने नारायणाय-आधारशक्त्यै धूपदीपसङ्.-कल्पात् सिद्धिर्-अस्तु धूपो नमः दीपो नमः।।

जलसहित खोसू में थोड़ा सा तिलक और तीन पुष्प डालते हुये पढें:-

सं वः सृजामि हृदयं संसृष्टं मनो अस्तु वः। संसृष्टास्तन्वः सन्तु वः संसृष्टः प्राणो अस्तु वः, संयावः प्रियास्तन्वः, सं प्रिया, हृदयानि वः। आत्मा वो अस्तु, सं प्रियः सं प्रियस्तन्वो मम।

इसी जल की धारा को नारीवण पर डालते हुये पढें-

अश्विनोः प्राणस्तौ ते प्राणं दत्तां तेन जीव। मित्रा-वरुणयोः प्राणस्तौ ते प्राणं दत्तां तेन जीव। बृहस्पतेः प्राणः सं ते प्राणं ददातु तेन जीव, जन्मोत्सव-देताभ्यो जीवादानं परिकल्पयामि नमः।

चावल सहित दो दर्भ सीधे हाथ में लेकर तीन बार गायत्री मन्त्र पढें:-

ॐ भूर्भुवःस्वः तत्सवितुर्-वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि, धियो योनः प्रचोदयात् '3' जन्मोत्सव-देक्तानां-अर्चाम्-अहं करिष्ये ॐ कुरुष्व।।

इसी मंत्र से हाथ में पकडें हुये दो दर्भ निमाल में डालकर फिर से दो दर्भ आसन के रूप में नारीवण

के सामने डालते हुये पढें:- **सप्त-जन्मोत्सव देवतानां आसनं नमः।** चावल सहित दो दर्भ हाथ में पकड कर केवल चावल को कन्धों से फैकते हुये पढें:- **सप्त-जन्मोत्सवदेताभ्यः युष्मान्-पूजयामि। ओं-पूजय।।** दो दर्भ इसी तरह पकड़ते हुये पढें:- **सहस्नशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात्। सभूमिं विश्वतो वृत्वा-त्यतिष्ठत्-दशांगुलम्। जन्मोत्सवदेवता आवाहयिष्यामि। ओं-आवाहय।।**

पहले पकडे हुए दो दर्भ निर्माल में ढालक कर तीन बार फूल नारीवण पर डालते हुए पढें:-

भगवन्! पुण्डरीकाक्ष! भक्तानु-ग्रहकारक-अस्मत् दयानु-रोधेन सन्निधानं कुरु प्रभो।।3।।

दोनों कन्धों के ऊपर चावल फैंक कर प्राणायाम करके खोसू में जल डालते हुये पढें:-

पाद्यार्थम्-उदकं नमः । शन्नो देवीरभिष्टय-आपो भवन्तु पीतये। शंयोर्-अभिस्नवन्तु नः।

लाय, केसर, सर्वौषधि, दर्भ, जल, सब चीजें खोसू में डालकर नारीवण पर जल छोडते हुए पढें।

अश्व-त्थामने, बलये, व्यासाय, हनुमते, कृपाचार्याय, मार्काण्डेयाय, परशुरामाय, सप्तचिरजीवेम्यः पाद्यं नमः।।

पाद्य का बचा हुआ पानी निर्माल में डालकर फिर से खोसू में पानी डालते हुये पढें:-

शन्नो देवीर्-अभीष्टये-आपो भवन्तु पीतये। शंयोर्-अभिस्त्रवन्तु नः।

जल, दर्भ, घी, चावल, जौ, सर्वोषधि, दूध ये आठ चीजें खोसू में डालकर नारीवण पर डालते हुये पढें:-

अश्वत्थामन्, बले, व्यास, हनुमन्, कृपाचार्य, मार्काण्डेय, परशुराम, सप्त-चिर, जीव इदं वो ऽर्घ्यं नमः । शुद्ध जल डालते हुये पढें:- **प्रजापति-जन्मोत्सवदेवताभ्यः आचमनीयं नमः।** दूध वगैरह जल डालते हुये पढें:-

तद्विष्णोः परम पदं सदा पश्यन्ति सूरयः। दिवीव चक्षुराततं तद्विप्रासो विपण्यवो जागृवांसः समिन्धते विष्णो-र्यत्परमं पदम्। प्रजापति जन्मोत्सवदेवताभ्यः स्नानं नमः।।

किसी कटोरी में फूलों का आसन बनाते हुये पढें:-

आसनाय नमः गरुडासनाय नमः पद्मा-सनाय नमः शतदल-पद्मा-सनाय नमः, सहस्त्रदल-पद्मासनाय नमः। किमासनं ते गरुढासनाय, किं भूषणं कौस्तुभ-भूषणाय, लक्ष्मीकलत्राय, किम्-अस्ति, देयं-वागीश किं ते वचनीयम्-अस्ति।।

नारीवण को आसन पर बिठाते हुये पढें:- **उत्तिष्ठ भगवन् विष्णो उत्तिष्ठ कमलापते! उत्तिष्ठ त्रिजगन्नाथ! त्रैलोकी मंगलं कुरु।।**

नारीवण को सात तिलक लगाते हुये पढें:-

अश्वत्थाम्ने, बलये, व्यासाय, हनुमते, कृपाचार्याय मार्काण्डेयाय परशुरामाय सप्तचिर-जीवेभ्यः समालभनं गन्धो नमः।

इन्हीं सात नामों का उच्चारण करते हुये नारीवण पर अर्घ और पुष्प चढाते हुये पढें:-

अश्वत्थाम्ने, बलये (इत्यादि) नाम्ना अर्घो नमः पुष्पं नमः।। धूप रत्नीदीप, कपूर उठकर घुमायें। यह मंत्र पढें:-

तेजसो शुक्रमसि ज्योतिर्ऽसि धामासि, प्रियं देवानामंऽनादृष्टं देवयजनं देवताभ्यस्त्वा देवताभ्यो गृहणामि, यज्ञेभ्यस्त्वा यज्ञिभ्यो, गृहणामि, जन्मोत्सवदेवताभ्यः धूपं रत्नदीपं कर्पूरं च परिकल्पयामि नमः।

नमस्कार करते हुये पढें:-

जय नारायण, जय पुरुषोत्तम, जय वामन कंसारे। उद्धर मामऽसुरेश-विनाशन्, पति-तोऽहं संसारे। घोरं हर मम नरकरिपो, केशव कल्मषभारम्। माम्-अनुकम्पय दीनम्-अनाथं कुरु भवसागरपारम्। भगवते वासुदेवाय लक्ष्मीसहिताय नारायणाय। सप्त-जन्मोत्सव-देवताभ्यः चामरं छत्रं परिकल्पयामि नमः।

फूल चढाते हुये पढें:-

ध्येयं सदा परिभवघ्नमऽभीष्टदोहं तीर्थास्पदं शिव-विरिंच-नुतं शरण्यम्। भृत्यार्तिहं प्रणतपाल भवाब्धिपोतं वन्दे महापुरुष ते चरणार-बिन्दम्।।

नमस्कार करते हुये पढ़ें:-

उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा उरसा वचसा च अष्टांग-नमस्कारं करोमि नमः।

कटोरी में थौड़ा दूध, शहद, या क्षीर रख कर अर्पण करते हुये पढें:-

वासुदेवाय लक्ष्मीसहिताय नारायणाय प्रजापति-जन्मोत्सवदेवताभ्यः मात्रामधुपर्क ॐ नमो नैवेद्यं निवेदयामि नमः।

दक्षिणा डालते हुये पढें:- जन्मोत्सव-देवताभ्यः दक्षिणायै तिल-हिरण्य रजत निष्कर्ण ददानि।

फिर से दक्षिणा अर्पण करते हुये पढें:-

एता देवताः सदक्षिणान्नेन प्रीयन्तां प्रीताः सन्तु।।

फूल चढाते हुये पढें:-

ॐ तद्विष्णोः परम पदं सदापश्यन्ति-सूरयः दिवीव चक्षुर्-आततम्। तद्विप्रासो विपण्यवो जागृवांसः समिन्धते विष्णोर्यत्परमं पदम्।

अब नैवेद्य तहर या क्षीर थाली में लाकर एक पात्र में अलग चट्टू और पांच म्यचियाँ रखें, नैवेद्य के साथ ही मिसरी भी रखें। नैवेद्य की थाली को दोनों हाथों से पकड़कर सारा प्रोप्युन पढ़े।

आज्ञा मांगते हुये पढें:-

आज्ञ मे दीयतां नाथ नैवेद्यस्यास्य भक्षणे। शरीरयात्रा सिद्धयर्थं भगवन् क्षन्तुम्-अर्हसि।।

पुष्प चढ़ाते हुये पढे:-

आपन्नोस्मि शरण्योसि सर्वावस्थासु सर्वदा। भगवंस्त्वां प्रपन्नोस्मि रक्ष मां शरणा-गतम्।

पवित्र निकालकर, हाथ में नारीवण वांधकर, चट्टू कहीं बाहर रखकर, निर्माल नदी में डालकर नैवेद्य के साथ शकर दायें हथेली में रखकर मुहं में डालते हुये पढें:-

माकार्डण्डेय नमस्तुभ्यं सप्तकल्पान्त जीवन, आयुर्-अरोग्यं सिद्ध्र्यथं प्रसीद भगवन्मुने। मार्काण्डेय महाभाग सप्तकल्पान्त-जीवन, चिरञ्जीवी यथा त्वं तु मुनीनां प्रवरद्विज, कुरुष्व मुनिशार्दूल, तथा मां चिरजीविनम्।।

मानसिक शान्ति देने वाला मन्त्र

ॐ नमः शम्भवाय च मयो भवाय च
नमः शंकराय च मयस्कराय च
नमः शिवाय च शिवतराय च।

We offer our salutations to Thee — the Giver of Happiness. We offer our Salutations to Thee — the

प्रेप्युन (नैवद्यमन्त्र)

(नैवेद्य को दोनों हाथों से पकड़ते हुये पढें)

अमृतेश-मुद्रया-अमृतीकृत्य अमृतम्-अस्तु अमृतायतां नैवेद्यम्। सावित्राणि सावित्रस्य देवस्यत्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनो-र्बाहुभ्यां-पूष्णो हस्ताभ्याम्-आददे।। महागणपतये कुमाराय श्रियै सरस्वत्यै लक्ष्म्यै विश्वकर्मणे द्वार्देवताभ्यः प्रजापतये ब्रह्मणे कलश-देवताभ्यः ब्रह्मविष्णु महेश्वर-देवताभ्यः चतुर्वेदेश्वराय सानुचराय ॠतु-पतये नारायणाय दुर्गायै त्रयम्बकाय वरूणाय यज्ञपुरुषाय अग्नि-ष्वात्तादिभ्यः पितृ...गणदेवताभ्भ्यः। भगवते वासुदेवाय सङ्.-कर्षणाय प्रद्युम्नाय अनिरुद्धाय सत्याय-पुरुषाय अच्युताय माधवाय गोविन्दाय-सहस्त्रनाम्ने विष्णवे लक्ष्मीसिहताय नारायणाय भवायदेवाय-शर्वाय-देवाय-रुद्राय़-देवाय पशुपतये देवाय उग्राय-देवाय भीमायदेवाय महा-देवाय ईशानाय-देवाय ईश्वराय-देवाय उमासहिताय शिवाय पार्वती सहिताय परमेशराय़ विनायकाय एकदन्ताय कृष्णपिंगलाय गजाननाय

लम्बोदराय भालचन्द्राय हेरम्बाय आखुरथाय विघ्नेशाय विघ्नभक्षाय वल्लभा-सहिताय श्रीमहागणेशाय। क्लीं कां कुमाराय षण्मुखाय मयूरवाहनाय सेनाधिपतये कुमाराय। भगवते ह्मँ ह्रीं सः सूर्याय सप्ताश्वाय अनश्वाय एकाश्वाय नीलाश्वाय प्रत्यक्षदेवाय परमार्थ-साराय तेजोरूपाय प्रभासहिताय आदित्याय। भगवत्यै अमायै कामायै चार्वङ्. ग्यै टंकधारिण्यै तारायै पार्वत्यै यक्षिण्यै श्री शारिका-भगवत्यै श्री शारदा-भगवत्यै श्री महाराज्ञीभगवत्यै श्री ज्वाला भगवत्यै व्रीडाभगवत्यै वैखरीभगवत्यै वितस्ताभगवत्यै गंगाभगवत्यै यमुनाभगवत्यै कालिकाभगवत्यै सिद्धलक्ष्म्यै महालक्ष्म्यै महात्रिपुरसुन्दर्यै सहस्त्रननाम्न्यै देव्यै भवान्यै अभयंकरीदेव्यै क्षेमंकरीभगवत्यै सर्वशत्रुघातिण्यै इहराष्ट्र्धिपतये इन्द्राय वज्रहस्ताय अग्नये शक्तिहस्ताय यमाय दण्डहस्ताय नैऋतये खड्ग-हस्ताय वरुणाय पाशहस्ताय वायवे ध्वजहस्ताय कुवेराय-गदा-हस्ताय विष्णवे-चक्रहस्ताय. अनन्तदिभ्योऽष्टाभ्यः कुलनागदेवताभ्यः अग्न्या-दित्याभ्यां वरुण-चन्द्रमोभ्यां कुमार-भौमाभ्यां विष्णु-बुधाभ्यां इन्द्रा-बृहस्पतिभ्यां सरस्वती-शुक्राभ्यां, प्रजापति-शनैश्चराभ्यां गणपति-राहुभ्यां, रुद्रकेतुभ्यां ब्रह्मध्रुवाभ्यां, अनन्ता-गस्त्याभ्यां ब्रह्मणे कूर्माय ध्रुवाय अनन्ताय हरये लक्ष्म्यै कमलायै शिरव्यादिभ्यः

पंच-चत्वारिंशत्-वास्तोष्पति-याग-देवताभ्यः ब्राह्मादिभ्यो मातृभ्यः गौर्यादिभ्यो मातृभ्यः ललितादिभ्यो मातृभ्यः दुर्गा-क्षेत्र-गणेश्वर-देवताभ्यः राकादेवताभ्यः त्रिका-देवताभ्यः सिनीवाली-देवताभ्यः यामी-देवताभ्यः रौद्री-देवताभ्यः वारुणी-देवताभ्यः बार्हस्पत्य-देवताभ्यः ॐ भूर्देवताभ्यः ॐ भुवोदेवताभ्यः ॐ स्वर्देवताभ्यः ॐ भूर्भुवः-स्वर्देवताभ्यः अखण्ड-ब्रह्माण्ड-यागदेवताभ्यः धूर्भ्यः उपधूर्भ्यः महागायत्र्यै सावित्र्यै-सरस्वत्यै हेरकादिभ्यो वदुकादिभ्यः, उत्पन्नम्-अमृतं दिव्यं प्राक्-क्षीरो-दधि-मन्थनात्-अन्नम्-अमृतरूपेण नैवेद्यं प्रति-गृह्यताम्

(ईष्टदेवता का ध्यान करते हुये पढेः- **ओं तत्सत् - ब्रह्म - अद्य** तावत् तिथौ अद्य -मासस्य-पक्षस्य-तिथौ- आत्मनो वाड्.मनः कार्योपार्जित-पापनि-**वारणार्थम, ओं नमो नैवेद्यं निवेदयामि नमः।** "चुटू" को स्पर्श करते हुये पढ़ेः- **या काचित् - योगिनी- रौद्रा - सोम्या घोरतरा परा। खेचरी भूचरी रामा तुष्टा भवन्तु मे सदा।** चुटू को अंगूठे से तिलक लगाकर अर्घफूल डालते हुये पढेः- **आकाशमातृभ्योऽन्नं नमः, आकाशमातृभ्यः समालभनं गन्धो नमः, अर्घो नमः पुष्पं नमः।** प्रेप्युन की थाली चुटू के साथ सात (7) म्यचियां अथवा सात छोटे प्रसाद के भाग रखे हुये होते हैं- पहली म्यची को स्पर्श करते हुये पढ़े- **भगवते वासुदेवाय**

अन्नं क्षीरं मोदकादीन् समर्पयामि नमः। (2) दूसरी को स्पर्श करते हुये पढ़ेः- **भगवते भवाय देवाय अन्नं समर्पयामि नमः (3) भगवते विनायकाय अन्नंसमर्पयामि नमः (4) ह्राँ ह्रीं सूर्याय अन्नं समर्पयामि नमः (5) इष्टदेवी भगवत्यै अन्नं मोदकान्-मिष्ठानं-क्षीरं समर्पयामि नमः।**

अंतिम दो भागों या दो म्यचियों पर अर्घ पानी डालते हुये पढें- **यस्मिन्-निवसति क्षेत्रे क्षेत्रपालाः सकिंकराः। तस्मै नि-वेदयाम्यद्य बलिं पानीय संयुतम्, क्षां-क्षेत्राधिपतये अन्नं नमः रां राष्ट्राधिपतये अन्नं नमः-सर्वाभय-वरप्रदो मयि पुष्टिं पुष्टिपति-र्दधातु।** दोनों हाथ में फूल लेते हुये प्रणाम करते हुये पढ़ें- **आपन्नोस्मि शरण्योसि सर्वावस्थासु सर्वदा। भगवन्-त्वां-प्रपन्नोस्मि रक्ष मां शरणागतम्। उभाम्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा वचसा चोरसा मनसा च नमस्कारं करोमि नमः।**

तर्पणः- सीधा हाथ रखते हुये पढ़े- **नमो ब्रह्मणे, नमो अस्त्वग्नये, नमः पृथिव्यै, नमः औषिधिम्यः, नमो वाचे नमो वाचस्पतये, नमो विष्णवे, बृहते, कृणोमि, इत्येतासाम्-एव-देवतानां-सा-रि-ष्टिं-सायुज्यं सलोकतां सामीप्यम्-आप्नोति-य एवं विद्वान् - स्वाध्यायम्-अधीते। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।**

इन्द्राक्षी

अस्य श्री इंद्राक्षी स्तोत्रमन्त्रस्य, पुरंदर-ऋृषिः, अनुष्टप्-छन्दः, इन्द्राक्षी देवता, ह्रीं बीजम्, श्रीं. शक्तिः, क्लीं कीलकम्। सकलकामना-सिद्ध्यर्थे पाठे विनियोगः।

अथ-ध्यानम्।

इन्द्राक्षीं द्विभुजां देवीं पीत-वस्त्रधरां शुभाम् वामे हस्ते वज्रधरां दक्षिणे चाभय-प्रदाम्।1। सहस्त्र नेत्रां सूर्याभां नानालंकार-भूषिताम्, प्रसन्न वदनां नित्यम्-अप्सरो-गणसेविताम्।2। श्री-दुर्गा सौम्य-वदनां पाशांकुशधरां परां, त्रैलोक्य-मोहिनीं देवीं भवानीं प्रणमाम्यहम्।3। ॐ ह्रीं श्रीं इन्द्राक्षीं श्रीं प्रीं स्वाहा।

इन्द्र-उवाज-

इन्द्राक्षी नाम सा देवी देवतैः समुदाहृता, गौरी शाकंभरी देवी दुर्गा-नाम्नीति-विश्रुता।1।

कात्यायनी महादेवी चन्द्र-घण्टा-महातपः, गायत्री सा च सावित्री बह्माणी ब्रह्मवादिनी ।2। नारायणी भद्रकाली रुद्राणी कृष्णपिंगला, अग्निज्वाला रौद्रमुखी कालरात्री-स्तपस्विनी ।3। मेघ-श्यामा सहस्त्राक्षी, विष्णुमाया जलोदरी, महोदरी मुक्त-केशी घोररूपा महाबला ।4। आनन्दा-भद्रजा नंदा रोगहंत्री शिवप्रिया, शिवदूती कराली च प्रत्यक्षा परमेश्वरी ।5। इन्द्राणी चन्द्ररूपा च इन्द्र-शक्ति-परायणा, महिषा-सुर-संहर्त्री चामुण्डा गर्भदेवता ।6। वाराही नारसिंही च भीमा भैरव नादिनी, श्रुतिः स्मृति-धृति-मेधा विद्या लक्ष्मीः सरस्वती ।7। आनंदा विजया पूर्णा मानस्तोकाऽ पराजिता, भवानी पार्वती दुर्गा हैमवत्यंबिका शिवा ।8। शिवा भवानी रुद्राणी शंकरार्ध-शरीरिणी, एतै-र्नाम-पदै-र्दिव्यैः स्तुता शक्रेण धीमता ।9। आयुर्-आरोग्यम्-ऐश्वर्य सुख-संपत्तिकारकम्, क्षय-पस्मार-कुष्ठादि-ताप-ज्वर-निवारणम् ।10।

आरती

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे,
भक्तजनों के संकट क्षण में दूर करे, ॐ।
जो ध्यावे फल पावे दुःखविनशे मन का
सुख सम्पत्ति घर आये कष्ट मिटे तन का, ॐ।
मात पिता तुम मेरे शरण पड़ों किसकी
तुम बिन और न दूजा आस करूँ जिसकी।। ॐ
तुम-पूरण-परमात्मा तुम अन्तर्यामी
पारब्रह्म परमेश्वर तुम सबके स्वामी। ॐ
तुम-करुणा के सागर तुम पालन कर्त्ता
मैं सेवक तुम स्वामी कृपा करो भर्त्ता। ॐ।
तुम हो एक अगोचर सबके प्राणपति
किस विधि मिलों दयामय तुमको मैं कुमति। ॐ।
दीन बन्धु दुःख हर्ता रक्षक तुम मेरे
अपने चरण लगावो द्वार पड़ा तेरे। ॐ।
विषय विकार मिटाओ पाप हरो देवा
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ सन्तन की सेवा। ॐ।

जातक मिलाप-प्रकरण

बल देखने की विधि :–लग्न और चन्द्रमा से वर वधू की जन्मकुण्डली के पहले चौथे, 7वें, 8वें, 12वें घर में जितने पापग्रह होंगे उतने बल मानिये, एक पापग्रह का एक बल माना जाता है। बृहस्पति और शुक्र एक घर में इकट्ठे हों तो उसका भी एक बल मानिये यदि लड़के के जन्म कुण्डली में शुक्र से चौथे, 8वें, घर में कोई पापग्रह हों तो उतने बल लड़के के और मान लीजिए, राक्षस जाति का भी एक बल मानिये।

नक्षत्र नाम –अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु तिष्या आश्लेषा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा अनुराधा ज्येष्ठ, मूल, पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषक् पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद् रेवती।

षष्टाष्टक नवपंचक द्विर्द्वादशी

लड़के अथवा लड़की की राशि से गिनने पर आठवीं और छटी राशि षष्टाष्टक कहलाती है, ऐसे ही एक की राशि से दूसरे की राशि तक गिनने पर नवीं और पाँचवी राशि **नवपंचक** कहलाती है, दूसरी और बारवीं राशि **द्वि-र्द्वादशी** कहलाती है, जैसे लड़के या लड़की की राशि मेष और वृश्चिक, मिथुन और मकर हो तो आपस में **मित्र षष्टाष्टक** होगी–आप निम्नलिखित चक्र में देखिए :–

राशि कूट चक्र

मित्र षष्टाष्टक	मेष + वृश्चिक	मिथुन + मकर	सिंह + मीन	तुला + वृष	धनु + कर्क	कुम्भ + कन्या
शत्रु षष्टाष्टक	वृष + धनु	कर्क + कुम्भ,	कन्या + मेष	वृश्चिक + मिथुन	मकर + सिंह	मीन + तुला
मित्रनवपंचक	मेष + सिंह	मिथुन + तुला	सिंह + धनु	तुला + कुम्भ	धनु + मेष	कुम्भ + मिथुन
शत्रुनपंचक	वृष + कन्या	कर्क + वृश्चिक	कन्या + मकर	वृश्चिक + मीन	मकर + वृष	मीन + कर्क
मित्रद्विर्द्वादशी	मेष + मीन	मिथुन + वृष	सिंह + कर्क	तुला + कन्या	धनु + वृश्चिक	कुम्भ + मकर
शत्रुद्विर्द्वादशी	वृष + मेष	कर्क + मिथुन	कन्या + सिंह	वृश्चिक + तुला	मकर + धनु	मीन + कुम्भ

देखने की विधि :—मेप राशि की वृश्चिक राशि के साथ मित्र पप्टाप्टक है जो शुभ है इसी प्रकार वृप राशि का धनु राशि के साथ शत्रु पप्टाप्टक है जो मिलाप के लिए अशुभ है।

नोट :—मित्रपप्टाप्टक, मित्रनवपंचक, मित्रद्विर्द्वादशी निपेध नहीं—अपितु, शुभफलदायक है।

नाडी देखने का चित्र

आद्य नाड़ी	अश्वि	आर्द्रा	पुन	उफा	हस्त	ज्येष्ठा	मूला	शत	पूभा
मध्य नाडी	भर	मृग	तिष्या	पूफा	चित्रा	अनु	पूषा	धनि	उभा
अन्त्य नाडी	कृति	रोहि	अश्ले	मघा	स्वाति	विशा	उषा	श्रव	रेव

नाड़ी देखने की विधि :–जन्मपत्री मिलाने के लिए दोनों वधूवर का नक्षत्र अवश्य मालूम होना चाहिए यदि दोनों का नक्षत्र आद्य नाडी की पंक्ति में हो तो **आद्य नाड़ी दोष** होता है, ऐसे ही यदि दोनों का नक्षत्र मध्यनाड़ी की पंक्ति में हो तो **मध्यनाडी दोष** होता है, यदि दोनों वरवधू का नक्षत्र अन्त्य नाडी की पंक्ति में हो तो **अन्त्य नाडी दोष** होता है। मध्यनाडी दोष विशेष हानिकारक माना जाता है।

जाती देखने का चित्र

देव जाति :–	अनु	मृग	श्रवण	पुनर्व.	रेवती	स्वाति	हस्त तिष्या	अश्वि	
मनुष्य जाति	पूषा	पूफा.	पूभा.	उफा.	उषा	रोहि	भर	आद्रा	उभा
राक्षस जाति	मघा	अश्ले	धनि	कृति	ज्येष्ठा	मूला	शत	चित्रा	विशा

देखने की विधि :–अनुराधा नक्षत्र होने पर देवजाति, ऐसे ही पूर्व फाल्गुणी नक्षत्र के लिए मनुष्य जाति, मघा नक्षत्र की राक्षस जाति :–

देवजाति + राक्षस जाति = मध्यम
राक्षस जाति + देव जाति = मध्यम
राक्षस जाति + मनुष्य जाति = अशुभ

मनुष्यजाति + देव जाति = शुभ
देव जाति + मनुष्य जाति = शुभ
मनुष्य जाति + राक्षस जाति = अशुभ

दोनों लड़के तथा लड़की की एक ही जाति का होना शुभफल होता है, विशेषतया यदि लड़की की जाति राक्षस हो और लड़के की मनुष्य जाति, तो विशेष हानिकारक होती है।

वधूवर मिलाप सारिणी देखने की विधि

जन्मपत्री मिलान के लिये वर्ण, वश्य, तारा, योनि, ग्रहमैत्र, गण, भकूट, नाडी यह आठ मानिये पर्चे होते हैं, यदि वर्ण आपस में (वधू वर का) मिले तो एक गुण (मानिये 1 अंक मिलता है, जब वश्य का आपस में मिलान होगा, तो उस के दो अंक यानी 2 गुण मिलते है ऐसे ही क्रमशः तारा के मिलान में 3 गुण, योनि के मिलान में 4 गुण होते हैं– यानि 8 पर्चों में क्रमशः 1+2+3+4+5+6+7+8 गुण कुल मिलाकर 36 गुण होते हैं, वधूवर के मिलान में 36 में से 18 गुण मिले तो विवाह शुभफलदायक होगा ।

सारिणी देखने की विधि : सारिणी देखने के लिये दोनों (वरवधू) लडके, लडकी की जन्मराशि का ज्ञान होना आवश्यक है, मानिये लडके की राशि है मेष और लड़की की राशि है मिथुन । मेष राशि वाले का नक्षत्र होगा अश्विनी, भरणी अथवा कृतिका, ओर मिथुन राशि वाले का नक्षत्र होगा मृगशिर, आद्री पुनर्वसु, **सारिणी में देखिये** – हर राशि के नीचे नक्षत्र लिखा है ।। उदाहरण के रूप में मानिये लड़के की राशि है मेष और लड़की की राशि है मिथुन । मेष राशि वाले का नक्षत्र होगा अश्विनी, भरणी अथवा कृतिका और मिथुन राशि वाले का नक्षत्र होगा मृगशिर, आद्री पुनर्वसु, सारिणी में देखिये – हर राशि के नीचे नक्षत्र लिखे है । **उदाहरण :** के रूप में मानिये लडके की राशि है मेष और नक्षत्र है भरणी, ऐसे ही लड़की की राशि है मिथुन मानिये नक्षत्र है मृगशिर– सारिणी में देखिये :– भरणी

नक्षत्र की खड़ी पंक्ति और मृगशिर की पड़ी पंक्ति जहाँ आपस में मिलती हैं वहाँ सारिणी में 18 इस चिन्ह में 18 दर्ज है, यानी वधूवर के मिलान में 18 गुण हैं, इसलिये यह मिलान शुभ है । **दूसरा उदाहरण** देखिये, लडके की राशि है सिंह और नक्षत्र है मघा, लड़की की राशि है कन्या और नक्षत्र है "हस्त" सारिणी में देखिये "मघा" नक्षत्र की खड़ी पंक्ति और हस्त की पड़ी पंक्ति का मिलान 16 इस निशान पर है वहाँ केवल 16 गुण मिलते हैं अतः मिलाप शुभ नहीं होगा ।

मंगल दोष विचार

1. शनि भौमोथवा कश्चित् पापोवा तादृशोभवेत् तेष्वेव भवनेषु भौम दोष विनाशकृत्।।

जिस जन्म कुण्डली में वह लड़की की हो या लड़की की 1, 4, 7, 8, 12 वें घर में यदि मंगल हो उसे के जवाब में, जन्मचक्र से अथवा राशि चक्र से कोई क्रूरग्रह (यह आवश्यक नही मंगल ही हो) सूर्य, भौम, शनि राहु, इन्ही घरों में यानी 1, 4, 7, 8, 12 वाँ हो तो मंगल का दोष नही होता है ।

2. "अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके कुजे, द्यूने मृगे कर्किचाष्टे भौम दोषो न विद्यते ।।"

लडके अथवा लड़की की कुण्डली में, लग्न में मेष राशि का मंगल हो, वृश्चिक का मंगल चौथा हो, मकर राशि में सातवाँ हो, कर्क का आठवाँ हो, धनु राशि का बारवाँ हो तो भौम का यानी मंगल का दोष नहीं होता है ।

3. सप्तमस्थो यदा भौमो गुरुणा च निरीक्षितः तदातु सर्वसौरण्यं स्यात् मंगलीदोष नाशकृत्।
यदि सातवाँ मंगल हो, उस पर बृहस्पति की दृष्टि हो तो मंगल का दोष नहीं होता है ।

4. भौम यदि वक्री, नीच, अस्त अथवा शत्रु के घर में हो तो मंगल का दोष नही होता है ।

नाडी दोष अपवाद

1. लड़के अथवा लडकी का नक्षत्र यदि रोहिणी मृगशिर तिष्या कृतिका, उत्तराभाद्रपद्, श्रवण, आद्री तथा ज्येष्ठा हो तो नाड़ी दोष नही होता है ।

2. यदि लडके लड़की में से एक की राशि कन्या और दूसरे की मिथुन, एक की धनु दूसरे की मीन, एक की तुला, दूसरे की राशि वृष हो तो नाड़ी दोष नही होता है ।

3. वर तथा कन्या की राशि एक हो परन्तु नक्षत्र अलग हो तो नाड़ी दोष नही होता है ।

4. नाड़ी दोष होने पर यदि पाद भेद हो तो भी नाड़ी दोष नहीं होता है ।

5. वर और वधू के राशि स्वामियों अथवा नवांश स्वामियों की यदि आपस में मित्रता हो– तो राक्षस जाति तथा षष्ठाष्टक आदि का दोष नही होता है ।।

जातक मिलाप सारिणी

लड़की	लड़का	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		अश्वि	भर	कृति	कृति	रोहि	मृगा	मृग	आर्द्रा	पुन	पुन	तिष्या	आश्ले	मघा	पूफा	उफा	उफा	हस्त	चित्रा
मेष	अश्वि	28	33	28	18	24	23	26	17	18	23	31	27	20	24	15	11	11	13
	भर	33	28	29	18	27	15	18	26	26	31	24	25	19	17	24	19	19	6
	कृति	27	28	28	18	10	17	20	20	20	25	27	23	16	19	20	15	15	19
वृष	कृति	19	19	19	28	19	27	17	17	17	21	23	19	19	22	22	20	21	23
	रोहि	24	24	11	20	28	36	27	23	22	26	27	13	11	25	27	26	26	19
	मृगा	24	15	19	27	35	29	19	24	23	26	19	21	20	16	25	23	26	12
मिथुन	मृगा	27	18	23	19	26	20	28	33	31	20	11	15	24	21	29	31	34	20
	आर्द्रा	19	27	22	19	25	26	34	28	25	12	21	13	22	28	21	25	25	27
	पुन	19	26	22	19	22	23	32	24	28	14	21	16	22	26	20	24	25	27
कर्क	पुन	22	29	25	21	24	25	18	10	13	28	34	29	17	21	15	17	18	20
	तिष्या	30	21	27	23	25	18	11	19	24	34	28	29	19	15	24	26	26	12
	आश्ले	25	23	22	19	12	21	13	12	15	29	29	28	15	16	18	21	20	26
सिंह	मघा	19	19	16	17	11	18	21	21	20	17	19	16	28	30	27	15	15	20
	पूफा	25	17	19	20	24	16	19	27	26	23	17	17	30	28	34	24	21	6
	उफा	19	27	22	23	27	26	29	22	22	17	26	20	27	34	28	18	17	15
कन्या	उफा	11	21	16	21	26	24	32	22	24	18	28	21	16	23	17	28	27	25
	हस्त	11	19	16	21	24	25	32	19	24	18	27	22	16	21	15	26	28	28
	चित्रा	13	5	19	23	19	11	19	26	25	20	12	26	22	7	14	25	27	28

जातक मिलनावनच सारण

लड़की	लड़का	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुंभ			मीन		
		चित्रा	स्वाति	विशा	विशा	अनु	ज्येष्ठा	मूला	पूषा	उषा	उषा	श्रव	धनि	धनि	शत	पूभा	पूभा	उभा	रेव
मेष	अश्वि	23	27	22	19	25	15	13	25	23	25	26	21	21	15	16	15	24	26
	भर	15	28	21	19	18	20	20	18	26	28	26	10	10	20	24	23	17	26
	कृति	28	14	19	17	20	26	25	19	12	14	14	25	25	26	18	18	20	13
वृष	कृति	22	9	14	22	25	30	22	15	7	12	11	25	29	30	23	20	22	13
	रोहि	18	15	8	15	30	24	14	20	11	16	18	19	25	24	29	26	27	19
	मृग	11	25	17	24	22	25	15	11	17	22	26	12	18	26	28	25	18	27
मिथुन	मृग	13	27	20	13	13	14	23	19	25	20	24	10	12	21	23	24	17	26
	आर्द्रा	20	27	20	14	19	5	15	28	27	22	23	17	19	12	17	19	26	26
	पुन	20	27	21	15	21	6	14	27	27	22	23	17	19	13	16	18	27	26
कर्क	पुन	19	27	21	19	25	11	8	21	21	26	27	21	12	6	10	16	25	25
	तिष्या	11	25	21	19	17	21	18	13	21	26	27	13	4	13	18	26	18	26
	आश्ले	26	12	17	16	19	26	23	16	8	13	13	26	17	18	11	18	20	12
सिंह	मघा	24	11	16	25	25	32	24	19	9	4	5	18	24	25	18	18	19	12
	पूफा	10	25	18	24	23	25	20	17	24	19	19	6	11	19	24	24	17	25
	उफा	18	27	18	25	31	17	9	25	25	20	20	12	18	11	16	16	27	25
कन्या	उफा	17	26	17	18	26	12	14	30	30	24	24	24	17	10	15	17	28	26
	हस्त	20	27	19	20	26	14	15	27	29	23	24	20	19	11	14	16	26	26
	चित्रा	19	19	26	27	11	25	27	13	21	16	17	16	16	24	17	19	10	19

116

जातक मिलनावनच सारण

लड़की	लड़का	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		अश्वि	भर	कृति	कृति	रोहि	मृग	मृग	आर्द्रा	पुन	पुन	तिष्या	आश्ले	मघा	पूफा	उफा	उफा	हस्त	चित्रा
तुला	चित्रा	22	14	28	23	19	11	12	20	19	19	11	25	25	11	18	18	20	20
	स्वाति	28	30	18	13	17	27	27	26	27	28	28	16	14	26	26	26	28	21
	विशा	21	22	20	15	9	17	19	20	20	21	21	17	17	19	18	18	19	26
वृश्चिक	विशा	17	17	15	20	14	22	11	13	13	18	18	15	25	23	22	17	18	26
	अनु	24	15	19	24	28	21	10	15	20	25	17	20	25	21	29	24	25	11
	ज्येष्ठा	10	18	23	29	23	30	12	2	4	10	20	25	31	24	16	11	11	24
धनु	मूला	12	19	25	20	13	13	21	14	12	8	18	23	24	18	20	13	13	26
	पूषा	26	19	18	13	19	11	19	27	27	23	15	17	19	17	25	29	27	12
	उषा	24	26	12	6	10	17	25	26	27	23	23	9	9	24	25	29	29	20
मकर	उषा	27	29	15	12	16	23	19	25	22	28	28	14	5	20	21	24	24	16
	श्रव	28	27	15	12	17	26	23	20	22	28	28	14	6	19	20	23	24	17
	धनि	20	11	26	24	19	11	8	16	15	21	13	27	19	5	11	16	17	15
कुंभ	धनि	20	11	25	30	26	18	11	18	17	12	4	18	25	11	19	18	19	17
	शत	15	21	27	31	25	27	20	12	12	7	13	19	26	20	12	11	11	25
	पूभा	18	25	20	24	30	30	24	17	17	12	20	12	19	25	17	16	16	18
मीन	पूभा	15	21	17	19	26	26	24	18	18	17	25	18	17	23	15	16	16	18
	उभा	24	16	19	21	26	18	17	25	27	26	19	20	18	15	26	27	26	9
	रेव	25	26	11	13	17	26	25	24	25	25	26	13	12	23	23	24	25	19

जातक मिलाप सारिणी

लड़की	लड़का	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुंभ			मीन		
		चित्रा	स्वाति	विशा	विशा	अनु	ज्येष्ठा	मूला	पूषा	उषा	उषा	श्रव	धनि	धनि	शत	पूभा	पूभा	उभा	रेव
तुला	चित्रा	28	27	34	23	7	21	27	13	21	24	25	23	18	26	19	12	3	12
	स्वाति	28	28	20	10	20	19	23	27	19	23	23	28	21	22	25	19	19	11
	विशा	34	19	28	18	18	22	28	21	13	16	16	30	26	26	30	14	13	4
वृश्चिक	विशा	27	7	15	28	27	32	22	16	8	11	11	25	24	26	20	29	18	10
	अनु	7	21	16	28	28	31	16	14	22	25	26	12	11	20	25	24	18	26
	ज्येष्ठा	20	15	19	32	30	28	14	17	17	20	20	25	26	19	10	10	20	20
धनु	मूला	26	21	26	23	17	16	28	28	26	14	15	19	29	22	15	17	15	26
	पूषा	12	27	20	17	16	18	27	28	34	22	23	6	15	24	29	30	23	31
	उषा	20	19	12	9	24	18	25	35	28	18	15	14	23	24	29	30	31	23
मकर	उषा	23	22	15	12	17	27	15	24	17	28	27	26	16	17	22	30	31	23
	श्रव	24	22	15	12	27	21	14	23	15	26	28	27	17	18	21	29	30	24
	धनि	29	24	29	26	12	26	21	7	15	26	27	28	17	23	18	25	15	23
कुंभ	धनि	18	20	25	25	11	25	30	16	25	17	18	18	28	33	28	17	7	14
	शत	26	21	21	27	20	18	25	25	25	17	18	24	23	28	29	8	15	16
	पूभा	19	26	20	21	27	11	15	30	30	23	23	18	27	29	28	16	22	20
मीन	पूभा	11	19	13	19	25	10	14	29	29	29	23	25	16	7	15	28	33	31
	उभा	2	19	12	18	18	20	24	22	30	30	30	15	6	15	21	33	28	33
	रेव	12	10	4	11	26	21	26	29	21	24	22	23	14	16	18	30	33	28

यात्रा प्रकरण

यात्रा के लिये उत्तम नक्षत्र

अश्विनी, पुनर्वसु, अनूराधा, तिष्या, मृशिर, रेवती हस्त, धनिष्ठा ।

यात्रा के लिये निषेध नक्षत्र

भरणी, कृतिका, आर्द्रा, अश्लेषा, मघा, चित्रा, स्वाति, विशाखा ।

यात्रा के लिये नक्षत्र मध्यम

रोहिणी, उत्तराफाल्गुण, उत्तराषाढ़ा, उत्तरभाद्रपद, पूर्वाफा, पूर्वाषा, ज्येष्ठा, मूला, शतभिषक् ।

यात्रा के लिये अशुभ योग

कालदण्डः, धौम्य ;, ध्वांक्षः, उन्मूलम्, मुमलम्, मुद्गरम्, काण्डः, क्षयः, शूलम् ।

यात्रा के लिये अशुभ चन्द्रमा

अपनी राशि से हानिकारक चन्द्रमा चौथा, आठवाँ, बारवाँ ।

यात्रा को जाना यदि आवश्यक हो

बृहस्पति, शुक्रवार, रविवार, को रात्रि में यात्रा को जाने में कोई दोष न मानिये , ऐसे ही सोमवार, शनिवार और मंगलवार – इन तीन वारों का दोष दिन को न मानिये ।

वार दोष निवारण के लिये

रविवार को पान खाकर यात्रा को जायें, सोमवार को दूध अथवा खीर, मंगलवार को आँवला अथवा कांजी खट्टी पदार्थ, बुधवार को मीठा, बृहस्पति बार को दही शुक्रवार को कच्चा दूध, शनिवार को उडद अथवा तहर ।

घातचन्द्र घातवार

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	राशि
1	5	9	2	6	10	3	7	4	8	11	12	चन्द्र
रवि	शनि	सोम	बुध	शनि	शनि	गुरु	शुक्र	शुक्र	भौम	गुरु	शुक्र	वार

मेष राशि वालों के लिए पहला चन्द्रमा घात चन्द्रमा है, ऐसे ही रविवार भी घातवार है, घातचन्द्रमा केवल यात्रा के लिये निषेध है ।

यात्रा के लिये उत्तम योगिनी तथा चन्द्रमा

दिशा	वार	बायें योगिनी	पीछे योगिनी	सन्मुख चन्द्रमा	दायां चन्द्रमा
पूर्व	रवि, भौम, बुध, गुरु, शुक्र,	द्वितीया दशमी,	षष्ठी चतुर्द	मेष, सिंह , धनु	मकर, कन्या, वृष ,
पश्चिम	सोम, बुध, गुरु, शनि	पंचमी, त्रयो.	प्रतिपदा, नवमी	मिथुन, तुला, कुंभ	कर्क, वृश्चि, मीन
दक्षिण	सोम, भौम, बुध, शुक्र,	प्रतिपद नवमी	द्वितीया, दशमी	मकर, कन्या, वृष,	मिथुन, तुला, कुम्भ
उत्तर	सोम, शुक्र, शनि, रवि,	षष्ठी, चतुर्द	पंचमी, त्रयोदशी	कर्क, वृश्चिक, मीन	मेष, सिंह, धनु

अवश्य पढ़िये

हमारे रस्म-रिवाज

हर एक जाति या सम्प्रदाय में भिन्न-भिन्न प्रकार के रस्मरिवाज होते हैं, भारत चूँ कि धर्म प्रधान देश है, इसलिये हमारे कई रस्म रिवाज धर्म से जुड़े हैं और कई रूढिवाद से, धर्म से जुड़े हुये रस्म रिवाजों की रक्षा करना जैसे हमारा फर्ज बनता है वैसे ही रूढिवाद से बोझ बने हुये रस्मरिवाजों को बदलते हुये समय के साथ-बदलना भी आवश्यक है ज्रो वेद की भी आज्ञा है।

"यान्यनवद्यानि कर्माणितानि त्वया सेव्यतव्यानि नो इतराणि"

रस्म-रिवाजों की श्रृङ्खला यद्यपि बहुत लम्बी है, परन्तु तो भी इस लेख में विवाह सम्बन्धित तथा मरण सम्बन्धित कुछ रस्म रिवाजों के बारे में कुछ लिख रहा हूँ।

विवाह प्रकरण की पहली कड़ी है, वाक्दान यानी गँडुन इस वाक्दान के बारे में वशिष्ठ का कहना है, दुल्हे में सात गुणों का विचार करके लड़की वाला दुल्हे के पिता को कहे, मैं तुम्हारे पुत्र के लिये अपनी कन्या देने का वचन देता हूँ-यही है धर्मशास्त्र के आधार से वाक्दान या गण्डुन।

दुल्हे में कौन सात गुण होने चाहिए : 1. कुल (खानदान), 2. चरित्र, (3) घर में माता-पिता या

बुजुर्गों का होना, (4) विद्या, (5) धन, (6) स्वास्थ्य, (7) आयु वर्तमान काल में भारत के नवयुवक विशेषतया बुद्धिजीवी काश्मीरी पण्डित लड़के पढ़ाई के लिये पश्चमीय देशों में जाते हैं, प्राय: वहाँ से ही विवाह करके भी आते हैं, यद्यपि वर्तमान काल में काश्मीरी पण्डित लड़कियाँ ऐसी हैं जो पढ़ाई में लड़कों से भी बढ़-चढ़ कर हैं, धार्मिक दृष्टि से विवाह का सारांश है अपने वंश की सन्तति को आगे आगे बढाना, जहाँ एक ओर से होगा वह काश्मीरी पण्डित लड़का जिस की रंगों में ॠर्षियों का खून भरा है जिन ॠर्षियों ने वेदों और उपनिषदों को जन्म दिया है और दूसरी ओर होगी वह लड़की **"श्री विवेकानन्द"** के शब्दों में जिस के रगों में हबशियों का खून भरा है, यह सम्बन्ध या रिश्ता ऐसा है जैसे गधे और घोड़ी के मिलाप का, जिनके संयोग से खच्चर आगे सन्तति बढ़ाने में असमर्थ होता है मानिये ऐसा विवाह करने से आप की वंश परम्परा समाप्त होगी।

दहेज

विवाह आठ प्रकार के हैं, जिन में श्रेष्ठ माना जाता है **'ब्रह्म विवाह'** काश्मीरी पण्डित सारस्वत ब्राह्मण होने के नाते 'ब्रह्म विवाह विधि' से विवाह करते हैं इस विवाह विधि में 'ग्रह्य सूत्र' के अनुसार पिता वेद मंत्रों के द्वारा दान के रूप में यथा शक्ति वस्त्रभूषणादि लड़की को दान देता है वह दान ग्रहण करते समय लड़की वेदमन्त्र पढ़ती है।

“क–इमं कस्मै–अदात् कामः कामाय कामोदाता...... इति” जिस का भावार्थ है, पिताजी ! यह अहं न करना मैं देता हूँ, यह धन आपको ईश्वर ने दिया है ईश्वर को ही अर्पण करते हो, क्या यह धन दूसरे का हक छीन कर आप ने दिया तो नहीं है **“मागृधः कस्य स्वित् धनम्”** (उपनिषद्) क्या आप ने अपने परिवार या समाज में देखा कोई ऐसा लड़की वाला तो नहीं जो धन के अभाव से लड़की का विवाह करने में असमर्थ है, क्या आप वह कर्त्तव्य पूरा करके मुझे यह दहेज दे रहे हो – क्या आप यह प्रतिज्ञा करते हो, एक हाथ से यह दहेज आप मुझे देते हैं दूसरे हाथ को मालूम न पड़े **“कामः समुद्रमाविशत्”** नेकी कर (दान कर) समुद्र में फैंक, ढँढूरा मत पिटाव – हे पिता इस रूप में दिया यह दहेज आप के लिये तारक बनेगा अगर इस के विपरीत यह दान मुझे दे रहे हो तो यह दहेज आप के लिये ही नहीं मेरे लिये भी घातक बनेगा – यदि यह दान ऊपर कही हुई तराज़ू पर पूरा उतरता है तो मैं हे पिताजी यह दान ग्रहण करती हूँ तब पिता तीन बार कहता है **“ददानि 3”** लड़की भी तीन बार कहती है **“प्रतिग्रह्णामि 3”** मैं ग्रहण करती हूँ।

विवाह के एक–दो दिन के पश्चात् ही बिना किसी आधार के काश्मीरी पण्डितों ने लड़की वालों से (जज़िया) ज़ालिमाना टेक्स प्राप्त करने के लिये भिन्न–भिन्न प्रकार के साधन बनाये हैं, जिनकी मोटी–मोटी–तालिका में लिख रहा हूँ 1. रोठ खबर, घर अचुन, दुरिबतह काहनेथर, हेरथ, जन्माष्टमी, लड़की के बच्चे का जन्म, उसका अन्नप्राशन, उस का स्कूल जाना आदि, ख्यचिमावस, गौर तृतीया, लड़के वाले के घर के किसी सदस्य या रिश्तेदार का जन्मदिन, मेखला विवाह आदि काश्मीरी पण्डितों के बुरे रस्मों तथा

सास आदि के कठोर व्यवहार को देख कर ही लल्लीश्वरी भगवती ने कहा है।

"केंचन छूनिथम, नली ब्रह्म ह्यचय, भगवान चानि गच नमस्कार" विवाह के दूसरे दिन ही अथवा लग्न के समाप्ति पर लड़की वाला प्रयश्चित करता है, मेरी यह ज़िम्मेदारी कुशलपूर्वक मुझ से पूरी हुई, इसी बात का समर्थन कवि सम्राट कालीदास जी करते हैं **"प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा"** जो मेरे पास धरोहर था (शकुन्तला) उस धरोहर को उस के वर सास तथा ससुर को अर्पण करके मैं शन्ति महसूस करता हूँ- अब यह जिम्मेदारी ललीश्विरी के शब्दों में **"ब्रहा हत्य"**-वर तथा उसके सास-ससुर को अर्पण करती है, यदि मेके वाले इस धरोहर को महालक्ष्मी मान कर आदर करेंगे तो उस घर में अष्टसिद्धियाँ दासी बन कर रहेंगी उस घर में सम्पदा प्रवेश करेगी यदि इस वधू को वर, सास या ससुर ललीश्वरी की भान्ति अनादर करेंगें तो मानिये ब्रह्म हत्या का दण्ड उन्होंने भुगतना होगा।

विवाह निश्चित समय (मुहूर्त) पर ही करना चाहिये।

मुहूर्त से मतलब है किसी काम के आरम्भ करने और समाप्त होने का निश्चित समय, संसार में बहुत से लोग ऐसे हैं जो मुहूर्त पर विश्वास करते ही नहीं, परन्तु देखते हैं कई साइन्स दानों ने कई ऐसे महान् काम करके दिखाए जिन्होंने कोई मुहूर्त देखा नहीं, पाठक! मुहूर्त का मतलब किसी कार्य को करने के लिये

दृढ संकल्प होना भी है, मुहूर्त काम करने वाले को कार्य की दृढ संकल्पता में सहायक बनता है – संक्षिप्त में आप मानिये दृढ संकल्प का होना ही मुहूर्त है ज्योतिष के आधार से वार, नक्षत्र, योग, लग्न आदि के संयोग से भी शुभाशुभ वातावरण अवश्य बनता है जिस की खोज ऋर्षियों ने करके रखी है, यह बात भी निश्चित है, हर काम की सिद्धि में बुज़ुर्गों का आर्शीवाद भी सहायक बनता है, अगर किसी ऋर्षि ने धर्म शास्त्र में लिखा है इस समय पर आप के कार्य सिद्धि के लिये अनुकूल समय है उस पर विश्वास करना भी कार्य करने के दृढ संकल्प में सहायक बनता है, यदि कोई बिना मुहूर्त के भी सफलता प्राप्त करता है, उस सफलता का राज़ भी दृढ संकल्प ही हैं।

काश्मीरी पण्डित मुहूर्तों पर दृढ विश्वास रखते हैं मुहूर्त न मिलने पर महीनों हर आवश्यक कार्य को भी करने से रोकते है, विशेषतया विवाह मुहूर्त न मिलने पर महीनों प्रतीक्षा करते है, या रुकते हैं परन्तु निश्चित विवाह मुहूर्त का दिन आने पर लड़के वाला बारातियों की प्रतीक्षा करते-करते निश्चित समय पर लड़की वाले के घर बरात लेकर पहुँचता नहीं है, यदि दैवयोग से पहुँचे भी तो वीड़ीओ आदि के चक्र में फँस कर लग्न के निश्चित समय से वञ्चित रहते हैं जब आप वर-वधू का फलना-फूलना देखना चाहते हैं, लग्न के लिये मुहूर्त के समय के पाबन्द रहें।

सम्पादक

जातस्य हि ध्रुवं मृत्यु ध्रुवं जन्म मृतस्य च

(भगवत्गीता)

जो जन्म लेता है उस का मरण निश्चित है, मरना ही जिन्दगी की परीक्षा है इसलिये हर एक मनुष्य की इच्छा है मेरा अन्त ईश्वर स्मरण में अथवा शान्त वातावरण में हो और यह भी इच्छा होती है मेरा अन्तिम संस्कार भी अच्छी विधि से हो। काश्मीरी पण्डित प्रायः पुरोहित अथवा अपने परिवार के जनों से मृतक का दाहसंस्कार अथवा अन्त्येष्ठ क्रिया करने से मानसिक शान्ति महसूस करते है। हम काश्मीरी पण्डित इस समय अखिल संसार में बिखरे पडे हैं किसी कोम को एक सूत्र में पिरोये रखने का माध्यम है रस्म रिवाज, बोलचाल आदि, इसी भावना को दृष्टि में रखकर विजयेश्वर कार्यालय ने **"अन्तिम संस्कार विधि"** एक छोटी सी पुस्तिका हिन्दी में छपाई है, जिस में मृतक के अन्तिम सांस से दाह संस्कार के अन्त तक की विधि ऐसे ढंग से लिखी है, जिस से हिन्दी का ज्ञान रखने वाला स्वयं सारी अन्तेष्ट क्रिया और दाह संस्कार विधि से कर सकता है-यदि आवश्यकता पड़े तो अन्तिम संस्कार कैस्ट से भी सहायता ले सकते हैं।

अन्तेष्टि क्रिया या दाह संस्कार के लिये असली घी का प्रयोग करें, डालडा नहीं, चित्ता भी घी से प्रज्वलित करना चाहिये, मिट्टी के तेल का हर्गिज़ प्रयोग न करें। जो काश्मीरी पण्डित ऐसे देशों में हैं जहाँ बिजली से मृतक के शरीर को भस्म बनाते हैं ऐसी विधि से भी मृतक शरीर को भस्म बनाना निषेध नहीं

है जब कि "अग्नियां तडित् (बिजली) पृथ्वी का प्रत्यक्षदेवता माना गया है "अग्नि: पृथ्वी स्थान" इसी कारण से हिन्दू अग्नि से ही शरीर को भस्म बनाना उत्तम समझते हैं।

इस शरीर के अन्त में तीन विकार हो सकते हैं **'कृमि विट् भस्म संज्ञित:'** जब इस शरीर को जमीन में गाढ़ते हैं, तो इसके कीड़े बन जाते हैं, पशु-पक्षियों के खाने से इस शरीर को विष्ठा बनता है, परन्तु अग्नि देवता या बिजली जो अग्नि का ही दूसरा रुप है, को अर्पण करने से भस्म बन जाता है, जिस भस्म में पर्यावरण में कोई विकार होता नहीं है, इसी कारण दूरदर्शी ऋर्षियों ने शरीर को भस्म बनाना ही उत्तम माना है परन्तु इस बात को भूलिये मत फूल गंगा में ही प्रवाहित करें या करवायें।

दाह संस्कार के दूसरे दिन प्रात: से नवें दिन के रात तक का कार्यक्रम :

दाह संस्कार के पश्चात् दूसरे दिन से ही आप के सम्बन्धी मित्रादि आप के दु:ख में सम्मिलित होने के लिये आना आरम्भ करेंगे, अत: घर में यथासम्भव एक कमरे को सुसज्जित रुप में रखें, एक शुद्ध चौकी पर भगवान् कृष्ण-हो सके तो मृतक का चित्र भी फूलों की मालाओं से सज़ा कर रखे, उस के सामने धूप, दीप अवश्य रखें, सभी सदस्यों को इस कमरे में अनुशासन से बैठना चाहिये फ़जूल बातें न करें, समाचार पत्रिका इस कमरें में न पढ़ें, सभी व्यक्ति जो इस कमरे में बैठा हो या प्रवेश करे उसको रामगीता हाथ में दीजिये ताकि हर एक सदस्य रामनाम की धुन में सम्मिलित हो जाये- हर रामगीता के श्लोक के साथ

सभी सामूहिक रूप में पढ़ते जायें **"हरे राम, हरे राम, राम राम, हरे हरे। हरे कृष्ण, हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे।"** यदि किसी व्यक्ति को पाठ के मध्य से ही निकलना हो उठने में कोई रुकावट नहीं, गीता की पुस्तक जो आप के हाथ में है भगवान् कृष्ण के सामने रख कर किसी से पूछे बिना आप सभ्यता पूर्वक जाईये। कर्ता अपनी इच्छानुसार प्रातः और सायं के कीर्तन का प्रोग्राम बनाये, यदि समय हो तो रात को गीता प्रवचन का (यानी गीता कथा का प्रोग्राम बनायें, यदि डियूटी पर या काम पर जाना हो उस में कोई प्रतिबन्ध नहीं, रोज धुले कपड़े पहनिये - बुधवार, शुक्रवार, सोमवार पर जल्दी ही दो तीन दिनों में प्रोग्राम छलुन का बनाये - घर में कम से कम छोटा बड़ा कोई कर्त्ता दिन भर उपस्थित होना चाहिये।

ऐसे शोक के अवसरों पर महिलायें अलग बैठती हैं-महिला वर्ग यदि मृतक के आत्मा की शान्ति चाहते है- तो राम नाम की धुन के साथ आप के रोने से मृतक के आत्मा को अवश्य शान्ति मिलेगी जब कि पुराणों में दर्ज है मृतक का सूक्ष्म शरीर 10 दिन तक अपने ही घर में घूमता रहता है।

रात को अवश्य जन्त्री से **"शिवोहं-शिवोहं"** तथा **'जय जगदीश हरे'** आरती अवश्य पढ़ें।

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।

यज्ञोपवीत कब ?

काश्मीरी पण्डित यज्ञोपवती को विशेष महत्वपूर्ण स्थान देते आये हैं जबकि काश्मीरी पण्डितों का गायत्रीमन्त्र सामूहिक गुरुमन्त्र है, यह संस्कार काश्मीरी पण्डितों की संस्कृति का अंग बन चुका है। धर्म शास्त्र की आज्ञा है यह संस्कार ब्राह्मण को 7वें वर्ष से 16 वर्ष तक करना चाहिये, प्राचीनकाल में यह संस्कार गुरुकुल में किया जाता था फिर तब से ब्रह्मचारी गुरुकुल में ही ठहरता था-चूँकि विद्यार्थी को गुरुकुल में वेदों का पठनपाठन तथा ब्रह्मचर्य का पालन 25 वर्ष तक करना पड़ता था इसलिये उन विद्यार्थियों को ब्रह्मचारी कहते थे, जब ब्रह्मचारी गुरुकुल से विद्या सम्पूर्ण करके घर वापस आता था उसको समावर्तन कहते थे-गर्भ से लेकर यज्ञोपवीत तक के 8 संस्कार बालक को घर में ही किये जाते थे-यज्ञोपवीत से लेकर 16 संस्कार काश्मीरी पण्डित ब्रह्मचारी को गुरुकुल में ही करते थे जो सभी संस्कार वेदों के पठन-पाठन से सम्बन्धित होते थे–"वेद" कहते हैं ज्ञान को, वह इँजीनरी हो या साईंस अथवा डाक्टरी आदि।

समय बदलता है तो समय के साथ मनुष्य को भी बदलने पर विवश होना पड़ता है-अब हम यज्ञोपवीत संस्कार गुरुकुल के बदले घर में ही करते हैं, केवल यज्ञोपवीत ही नहीं बल्कि गर्भ से लेकर समावर्तन तक के सभी 24 संस्कार एक ही दिन में यज्ञोपवीत के दिन ही करते हैं, मानिये अब यह संस्कार हम केवल अपनी प्राचीन संस्कृति को स्मारक रूप में जीवित रखने के लिये ही करते हैं।

आज के युग में गुरुकुलों का स्थान लिया है कालिजों और यूनिवर्सिटियों ने, वर्तमानकाल में जब तक एक विद्यार्थी वेदाभ्यास यानी ईन्जीनरी डाक्टरी साईंस आदि कोई ट्रेनिंग कर रहा है वह विद्यार्थि तब तक ब्रह्मचारी ही कहलायेगा यदि दैवयोग से किसी कारण वश इस अवस्था तक विद्यार्थी का यज्ञोपवीत न किया हो अवश्य कीजिये।

यज्ञोपवीत को ब्रह्मसूत्र भी कहते हैं

क्यों ?

ब्राह्मण को कपास के सूत्र का यज्ञोपवीत होना चाहिये, जब ब्रह्मचारी गुरुकुल में होता था तो वह खुद अपने हाथ से कपास का सूत्र कातता था, सूत्र कातते समय वह ब्रह्मचारी लगातार "ॐ" शब्द का उच्चारण करता था, "ॐ" चूँकि ब्रह्म का नाम है, इसलिये यज्ञोपवीत को ब्रह्मसूत्र भी कहते हैं।

हमारे समाज में एक नया बुरा रस्म चालू हुआ है, जब यज्ञोपवीत संस्कार पर कोई रिश्तेदार ब्रह्मचारी को सोने का यज्ञोपवीत पहनाते हैं-वह ब्रह्मसूत्र नहीं पहनाया जाता है बल्कि धनाभिमान सूत्र पहनाया जाता है। उर्दू में धन को कहते हैं "दोलत" दो + लत से मतलब है जो धन दो लातें मारता है जब धन आता है तो आगे से लात मारकर अभिमान का सिर खड़ा करता है परन्तु धन कहीं ठहरता नहीं जब धन जाता है तो कमर पर लात मारकर उस धनाढ़्य को ज़मीन पर सुला कर भाग जाता है। इसी कारण मैंने सोने के उस सूत्र का नाम धनाभिमान सूत्र लिखा है।

यदि मेरे पास धन है मैं सोने का यज्ञोपवीत या नारीवन ऐसे संस्कार पर दिखावे के लिये अर्पण करूँ तो जो निर्धन है वह भी देखा देखी में करना चाहता है परन्तु वह ऐसा कर नहीं सकता है बल्कि उसकी संर्द आहें उस ब्रह्मचारी के लिये शाप बनती हैं।

ब्राह्मण या पिता जब ब्रह्मचारी को यज्ञोपवीत डालता है तो पढ़ता है-**बलं-अस्तु-तेजः**। जिस का अर्थ है हे ब्रह्मचारी इस यज्ञोपवीत से तुम्हारा शरीर नीरोग हो परमात्मा तुम्हें तेज सत्बुद्धि दे-परन्तु निश्चय जानिये सोने का यज्ञोपवीत उस ब्रह्मचारी के लिये शाप बनेगा-

हे काश्मीरी पण्डित! हर बात में **"लोक संग्रह"** का ख्याल रखे।

लोक संग्रह क्या होता है ?

धन, हो बल हो, विद्या हो, ऐसे ढँग से खर्च कीजिये जिससे समाज पर कोई बुरा प्रभाव न पड़े-भगवत्गीता की तीसरी अध्याय में भगवान् अर्जुन से कहते हैं हे अर्जुन ! मेरे लिये कोई भी कर्म करना आवश्यक नहीं परन्तु तो भी लोक संग्रह के लिये मैं कर्म करता हूँ-ऐसे ही समाज में जिन पर लक्ष्मी माता की कृपा है उनको भी ऐसे रूप में धन खर्च करना चाहिये ताकि निर्धन जनता पर उसका बुरा प्रभाव न पड़े, क्योंकि जो बड़े आदमी करते हैं छोटे भी उसी का अनुकरण करते हैं इसे कहते **लोक संग्रह**

लडकी और लडके का विवाह कब ?

स्मृतियों में बाल विवाह के प्रमाण अवश्य मिलते हैं, परन्तु समय के अनुसार स्मृति प्रमाणों का खण्डन-मण्डन किया जा सकता है-परन्तु वेद प्रमाण का खण्डन नहीं किया जा सकता है जब कि वेदों की आज्ञा राजाज्ञा है-अथर्ववेद का प्रमाण पढ़िये-**"ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम्"** अर्थ-ब्रह्मचारिणी जवान कन्या, जवान लडके से विवाह करें, और गुरु ब्रह्मचारी को समावर्तन के समय यानी गुरुकुल से घर जाते समय उपदेश देता है-**"प्रजातन्तुं मा व्यवछत्सी:"** अर्थ-हे ब्रह्मचारी अब तुमने घर वापस जाना है-विवाह अवश्य करना सुदृढ़, और नीरोगी सन्तति को जन्म देना ताकि तुम पितृऋण चुकाने में समर्थ होंगे-सुश्रुत का कहना है मनुष्य की आयु 100 वर्ष है 25 वर्ष की अवस्था तक शरीर की वृद्धि की अवस्था है उस अवस्था के पश्चात् उत्पन्न हुई सन्तति नीरोग होती है।

लडकी के लिये विवाह से पहले मस मुचूरुन

(एक शुभशकुन)

काश्मीरी ज़बान में एक कहावत है

(मस छुस वस)

जिस का भावार्थ है एक लडकी अथवा महिला के लिये बाल एक खज़ाना है। एक अमूल्य दहेज है। लडके के लिये अथवा पुरुष के लिये समय-समय पर उस्तरे में बाल काटने की आज्ञा धर्मशास्त्रों में है–सामुद्रिक शास्त्रों के पण्डितों का कहना है, जिस पुरुष को मूछों, बालों की अधिक प्रवृत्ति हो, बार-बार बालों को संभालता रहता हो-वह लडका या पुरुष मन्द बुद्धि वाला, पठनपाठन में असफल, चंचल तथा कठोर हृदय वाला होता है।

जिस लडकी या महिला के बाल घने हो और नित्य-नियम से बालों को संभालती है, दो गुत्थों में (लठरू) बालों को रखती है, वह बालों के दो गुत्थे शिव शक्ति के रूप में उस लड़की अथवा महिला की रक्षा करते हैं, बालों के बीच में माँग यानी (सुम) रखना जीवन भर सुहागिन रहने का संकेत है–यह हमारी भारतीय संस्कृति है।

इन्द्राणी कैसे इन्द्राणी बनी वेद में दर्ज है **"क्षुर परिवर्ज वपन्"** इत्यादि (भावार्थ) जिसने कभी बालों के साथ उस्तरे का स्पर्श किया नहीं था-अपितु वह इन्द्राणी क्या करती थी **"इन्द्राणी चक्रे कंकतं ससीमन्तं विसर्पतु"** वह नित्य नियम से बालों को संभालती थी, जिससे वह इन्द्राणी बनी-यदि आप अपनी लडकी को महाराणी रूप में देखना चाहते हैं तो लडकी अथवा महिला के बाल मत काटिये, यह भारतीय संस्कृति है।। **"पश्चिमीय संस्कृति में मत डूबो अपनी संस्कृति को बचाओ।"**

संपादक

मांस खाना निषेध है

के सम्बन्ध में शास्त्र प्रमाण

सुरां मत्स्यान् मधु-मांसम्-आसवं कृत्सरौदनम् धूर्तै: प्रवर्तितं धर्मं नैतत् वेदेषु कल्पितम्।।

भगवान व्यास कहते हैं :- *शराब पीना, मच्छली खाना, माससहित तेल वाला बता (तहर चरवन आदि) खाना अथवा देवता को अर्पण करना यह धर्म है, यदि कहीं ऐसा दर्ज है- तो जानना चाहिये यह धर्म ठगों ने चलाया है - वेदों में मांस खाना विधि है कहीं दर्ज नहीं है।*

प्रमाणीकृत्य-शास्त्राणि यै र्वध: क्रियतेऽधमै: सह्यते परलेके तै श्वग्रे शूलाधिरोहणम्।।

अर्थ : *शास्त्रों के प्रमाण दे दे कर जो दुरात्मा पशुओं को मरवाते हैं उन्हें परलोक में शूली पर अवश्य चढ़ाया जायेगा।*

महाभारत - यदि चेत् खाद को न-स्यात् नतदा घतको भवेत् घातक: खाद-कार्थाय तत् घातयति वै नर:।।

अर्थ : *यदि मांस भक्षक न हो तो मारने वाला नहीं होगा अत: जो मांस खाता है वही पशु हिंसा का प्रेरक हैं।*

यत्र प्राणि-वधो धर्म: अधर्मस्तत्र कीदृश:, ब्राह्मणो यत्र मांसाशी चण्डालस्तत्र कीदृश:

याज्ञवल्क्य सर्वान् कामान् अवाप्नोति हयमेधफलं तथा, गृहेपि निवसन् विप्रो मुन्निमांस-विवर्जनात्

अर्थ - *जहाँ प्राणिहत्या धर्म माना जाता है, अधर्म के विषय में वहाँ क्या कहा जाए, जहाँ ब्राह्मण ही मांस खात हो, वहाँ च्रण्डाल कैसा होगा। ब्राह्मण मांस के न खाने से सब कामनाओं को सिद्ध करता है, घर पर निवास करने पर भी मांसत्यागी ब्राह्मण मुनि के समान हैं।*

किं-जाप होम-नियमै स्तीर्थस्नानैश्च भारत ! यदि खादिन्त मांसानि सर्वमेव निरर्थकम् ।।

अर्थ : *जप होम नियम पालन गंगादितीर्थों में स्नान करने से मांसभक्षण करने वालों को कोई लाभ नहीं बल्कि उनका वह जप नियमादि निरर्थक है ।।*

महाभारत - यावंति पशुरोमाणि पशुगात्रेषु-भारत तावत् वर्ष सहस्राणि पच्यते नरके नरा ।।

अर्थ : *हे भारत ! पशु के शरीर में जितने रोम है उतने हजार वर्ष के हिसाब से पापी मांसाहारी नरक में दुःख भोगता है ।।*

मधुमांसे प्राश्य-आलभ्य वा शरीरं पुनर्व्रतम्-आलभेथा:

अर्थ : *जो ब्राह्मण अथवा ब्रह्मचारी मांस खाये अथवा मांस का स्पर्श करे उसको नया यज्ञोपवीत संस्कार करना चाहिये ।*

उप निषद् - क्व त्रव मांस क्वास्ति वै भक्ति: क्व-मद्यं क्व शिवार्चनम् मद्यमांसानुरक्तानां दूरे तिष्ठति शंकर: ।

अर्थ : *कहाँ मांस खाना कहाँ भक्ति (पाठ पूजा करना) कहाँ शिवपूजा और कहाँ मांस और शराब का सेवन । मधु मांस खाने वालों से शंकर दूर भागता हैं ।*

महाभारत - सर्व-मांसानि यो राजन् । यावत् जीवं न भक्षयेत् । वर्गे स विपुलं स्थानं प्राप्नुयात् नात्र संशय: ।।

अर्थ : *हे राजन्- जो पुरुष जीवन भर मांस नहीं खाता है, निसदेह वह स्वर्ग की गति पाता हे और वहाँ भी ऊँचा स्थान प्राप्त करता है ।*

देवयज्ञे पितृश्राद्धे तथा मांगल्य कर्मणि तस्यैव नरके वासो यो कुर्यात् जीवघातनम्

अर्थ : *देवयज्ञ पर पितृश्राद्धं पर तथा किसी मंगल कर्म (जन्मदिन आदि पर) जो मांस का प्रयोग अथवा किसी प्रकार की हिंसा करता है, उसे नरक मिलता हैं ।*

भोजन खाने की विधि

जिस दिन आप का देवव्रत अथवा पितृव्रत हो "भोजन विधि" से भोजन करने पर ही आप का व्रत सही शब्दों में व्रत कहलायेगा। (व्रत या उपवास एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक होता हैं) पृथ्वी पर लेपन करके अथवा शुद्ध ऊर्ण के वस्त्र पर भोजन करना चाहिये, भोजन खाने के स्थान पर आते ही हाथ पाँवों धो लीजिये और मुख की भी शुद्धि कीजिये, अन्न ज्योंही आप के सामने आये तो हाथ जोड़कर प्रणाम करते हुयें पढ़े - **अन्नपते अन्नस्य नो देहि, अन्नमीवस्य शुष्मिण: प्रदातारं तारिषम्–ऊर्ज नोदेहि द्विपदे शं चतुष्पदे।।** *थाली से तीन म्यचियाँ निकाल कर थाली के दायें तरफ रखते हुये पढ़े -* **"ॐ भूपतये नम:, ॐ भुवन पतये नम:, ॐ भूतानां पतये नम:,** *अब आचमन करते हुये पढ़ें -* **अन्त: चरसि भूतेषु गुहायां विश्वतो मुख: त्वं यज्ञस्त्वं वषट् कार:, आपो ज्योति–रसोमृतं–ब्रह्म–भूभुर्व: स्वरोम्। ब्रह्मार्पणं ब्रह्म–हवि–र्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्–ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्म समाधिना, अमृतोपस्तरणम्–असि।** *भोजन के पहले पांच छोटे-छोटे ग्रास खाते हुए पढ़े-* **ॐ प्राणाय स्वाहा ॐ अपानाय स्वाहा ॐ समानाय स्वाहा ॐ उदानाय स्वाहा ॐ व्यानाय स्वाहा** - *भोजन खाकर भोजन की समाप्ति पर आचमन करते हुये फिर से पढ़ें-* **अमृतापिधानम्–असि** *मुख की शुद्धि के लिये गण्डूष (कुल कुच) दूसरे पात्र में या दूसरे स्थान पर उठ कर करें (थाली में कुल कूच न करें, हाथ आदि धो कर फिर से भोजन के स्थान पर बैठ कर विष्णु भगवान् का ध्यान करते हुये पढ़े-* **अहं वैश्वानरो भूत्वा प्राणिनां देहमा–श्रित: प्राणापान समायुक्त: पचाम्यन्नं चतुर्विधम्, राज्ञां शिवं चास्तु तथा द्विजानां, गवां शिवं चास्तु तथा प्रजानाम्। आतंकहीनं जगत् - अस्तु सर्वं, दोषा: प्रणाशं सकला: प्रयान्तु।।**

खग्रास चन्द्रग्रहण

यह ग्रहण भाद्र शुक्लपक्ष पूर्णिमा मंगलवार तदानुसार 16 तथा 17 सप्तम्बर की रात्रि में 10 बज कर 45 मिन्ट पर आरम्भ हो कर 1 बज कर 57 मिन्ट रात को समाप्त होगा इस ग्रहण का सूतक दिन के 1 बजकर 45 मिनट से आरम्भ होगा। भारत के अतिरिक्त यह ग्रहण ईरान, जापान, चीन, पाकिस्तान इत्यादि देशों में देखा जा सकता है। यह ग्रहण कुम्भ तथा मीन राशि वालों के लिए विशेष हानिकारक है इस कारण कुम्भ तथा मीन राशि वालों को चाहिये कि ग्रहण के सूतक समय से ग्रहण के समाप्ति तक किसी प्रकार का आहार न करें तथा गायत्री मन्त्र का उच्चारण करें, ग्रहण की समाप्ति पर यथा शक्तिदान करें।

नोट :- अक्षांश भेद तथा चन्द्धोदय भेद के कारण ग्रहण के आरम्भ तथा समाप्ति काल में कुछ मिन्टों का अन्तर पड़ सकता है।

हर शुभ काम के लिये निषेध

समय 1997--98

शुक्रोदय	28 अप्रैल
स्यंघ (सिंह में सूर्य)	16 अगस्त से 16 सप्तम्बर
पितृ पक्ष (श्राद्ध)	17 सप्तम्बर से 1 अक्टूबर
पौह (धनु में सूर्य)	15 दसम्बर से 14 जनवरी
शुक्रास्त	14 जनवरी (1998)
शुक्रोदय	19 जनवरी
गुरोऽस्त	12 फरवरी
गुरु उदय	16 मार्च
चैत्र कृष्णा पक्ष	14 मार्च से 28 मार्च

नोट : अक्षांश वेद के कारण गुरु, शुक्रास्तोदय में एक दो दिन का अन्तर रहता हैं।

आमदनी खर्च का चित्र

	मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृं	धं	म	कुं	मी
आमदन	2	11	2	11	14	2	11	2	14	8	8	14
खर्च	14	5	5	14	11	5	5	14	2	5	5	2

नोट: आमदनी और खर्च के अंकों के जोड़ से एक कम करके आठ से भाग देने पर फल निम्नलिखित हैं।

एक बाकी बचे – तो यह वर्ष सुख शान्ति के वातावरण में आदरमान से व्यतीत होगा, यदि आप नौकरी करते हैं तो अचानक तर्की की सम्भावना है यदि आप नौकरी की तलाश में है तो प्रयत्न करने पर अवश्य सफलता होगी, यदि आप तिजारत करते हैं तो आपके कारोबार को विशाल बनाने के निमित यह वर्ष रिकार्ड होगा, कारोबार सम्बन्धित प्रत्येक काम में आपको लाभ रहेगा, विद्यार्थी वर्ग के लिये भी यह वर्ष अनुकूल है आप प्रयत्न कीजिये आशा से अधिक सफलता होगी।

दो बाकी बचे – जिन तर्की की आशाओं को लेकर आप बहुत समय से प्रतीक्षा कर रहे है प्राय: सभी आशायें पूर्ण होंगी हर आरम्भ किये हुए कार्य में सफलता निश्चित रूप से होगी, सफलता के साथ-साथ आदरमान की दृष्टि से भी यह वर्ष उत्तम रहेगा, आप परिश्रम कीजिये ग्रह आपके सहायक हैं यदि आप कपडें से सम्बन्धित व्यापार करते है तो लाभ की आशा न रखें, किरयाना लोहा मश्निरी सम्बन्धित काम करने वाले व्यापारी लाभ में रहेंगे, यदि आपका

काम फलों बागों से सम्बन्धित है तो दौड़ धूप अधिक परन्तु अन्त में जाकर आपने खसारा में ही रहना होगा, नौकरी पेशा होने पर नौकरी सम्बधित कोई समस्या क्यो न हो जरा सी सावधानी से कदम उठाने पर ही समस्या का समाधान होगा, हर पहलू से उत्तम समय होने पर भी शरीर के विषय में सावधान रहना चाहिये, शरीर को स्वस्थ रखने के लिए उपाय के रूप में किसी भी मादक द्रव्य का सेवन न करें, रविवार को निश्चित रूप से वैष्णव रहें।

तीन बाकी बचे - तो वह वर्ष संघर्ष का होगा, कोई भी कार्य उलझनों व रूकावटों का सामना किये बिना सफल नहीं होगा, घरेलू परेशानियां भी आपको घेरे रखेंगी केवल परिवार में सन्तान पक्ष से शान्ति रहेगी, घर में कोई महोत्सव रचाने का प्रोग्राम बनेगा जिसमें अधिक से अधिक धन राशि का व्यय होगा शरीर के विषय में सावधान रहिए चोट आदि लगने का भी अन्देशा है, किसी रिश्तेदार मित्र अथवा किसी विश्वासपात्र से धोखा लगने का योग है, उपाय के रूप में हनुमान चालीस अथवा बहुरूपगर्भ का पाठ नियम से करें किसी दिन नागा न करें, यदि किसी दिन पाठ न कर सकोगे तो दूसरे दिन उस पाठ को करें, यदि आप विद्यार्थी है आपको इस वर्ष सावधान रहना चाहिये रात दिन परिश्रम करने पर ही सफलता की आशा रखें, वह सफलता भी इच्छानुसार नहीं होगी, यदि आप इस वर्ष सफलता चाहते हैं तो नियम से घर से किसी वृद्ध सदस्य अथवा माता-पिता के चरणों को प्रात: प्रणाम करके नित्य उनसे आर्शीवाद प्राप्त करें।

चार बाकी बचे- तो यह वर्ष संघर्ष तथा दौड़धूप में ही गुजरेगा हर एक कार्य में कोई न कोई उलझन खड़ी होगी, यदि आप नौकरी पेशा है तो मर्जी से उलट तबदीली होगी, गृहस्थी होने पर घरेलू परेशानियों का सामना करना पड़ेगा परन्तु खर्च के नये-नये रास्ते निकल आयेंगे यदि आप व्यापारी हैं, तो लेन देन के विषय में सावधान

रहे अचानक धोखा लगने का अन्देशा है, लेन-देन अथवा धन के सम्बन्ध में किसी गैर का विश्वास न किजिए बाद में पछताना पड़ेगा, जायदाद सम्बन्धित कोई झगड़ा खड़ा होने का अन्देशा है, जायदाद सम्बन्धित किसी झगड़े का आरंभ दिख पड़ते ही आपसी सुलह करने में दिलचस्पी रखें, उपाय के रूप में नित्य प्रात:काल उठ कर किसी बुजुर्ग अथवा माता-पिता के चरणों का स्पर्श करके आर्शीवाद प्राप्त करें निश्चय रखिये वह आर्शीवाद रामबाण का काम करेगा।

पांच बाकी बचे - तो वर्ष भर मानसिक अशान्ति बनी रहेगी, कोई भी कार्य बिना रुकावट के सफल नहीं होगा, वर्ष भर घरेलू परेशानियों से छुटकारा नहीं मिलेगा, धन की दशा भी डावांडोल रहेगी, कभी धन आवश्यकता अनुसार मिलता रहेगा कभी तंगदस्ती से दुचार होगा, कभी अचानक लाभ की सम्भावना है, उस लाभ की आशा में अधिक विश्वास न रखें, उपाय के रूप में घर में कोई महोत्सव या मकान आदि बनाने का प्रोग्राम बनायें ऐसे शुभ कामों में लगे रहना आपके लिये शान्ति का कारण बनेगा, यदि यात्रा का प्रोग्राम बने अवश्य बनायें घर की अपेक्षा आप यात्र में सुखी रहेंगे, विद्यार्थी वर्ग को चेतावनी है कि आप पढ़ाई में आलस्य न करें परिश्रम करने पर आप अच्छी पुजीशन में सफल होंगे।

छ: बाकी बचे - तो आपके घर में शान्ति की सूचना है, आपको किसी महापुरूष से संयोग होगा जो आपकी मानसिक शान्ति का कारण बनेगा, कोई भी कार्य आप हाथ में लेंगे, उसमें अवश्य सफलता होगी अर्थिक स्थिति में वृद्धि होगी, मान की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा, सामाजिक तथा धार्मिक कामों में दिलचस्पी बनी रहेंगी, नौकरी पेशा वालों के लिए यद्यापि यह वर्ष दौड़धूप तथा संघर्ष का ही होगा परन्तु मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, व्यापारी

वर्ग भी लाभ में रहेगा, विद्यार्थियों के लिये, यह वर्ष सफलता का है, धन लाभ के साथ-साथ खर्च का योग भी बलवान है, प्रातः खर्च शुभ कामों में ही होगा घर में विवाह आदि महोत्सव रचाने का प्रोग्राम बनेगा।

सात बाकी बचे – तो इस वर्ष आपका भाग्योदय होगा, आप केवल प्रोग्राम ही न बनायें अपितु हर प्रोग्राम को अमली रूप देने का प्रयत्न कीजिए, इस वर्ष ग्रह अनुकूल हैं आपके कठिन से कठिन काम को सफल बनाने में सहायक होंगे, यदि आप गृहस्थी हैं तो घर में कोई महोत्सव रचाने का प्रोग्राम अवश्य बनेगा, यदि आप मकान या जायदाद बनाने का विचार रखते हैं तो इस वर्ष इस शुभ अवसर को हाथ से न जाने दें यदि आप व्यापार करते हैं या नौकरी अथवा विद्यार्थी हैं तो आप का हर काम जरा सा ध्यान देने सफल होगा आपको यात्रा का प्रोग्राम बने जिसमें संतोषजनक सफलता होगी, आपका स्वास्थ्य भी इस वर्ष ठीक रहेगा, धन लाभ के साथ-साथ खर्च का योग है।

आठ बाकी बचे – तो वर्ष भर के लिये संघर्ष तथा दौड़धूप का सूचक है, गृहस्थी होने पर घरेलू परेशानियाँ आपका पीछा छोड़ेंगी नहीं, यदि आप नौकरी करते हैं तो दफ्तर में प्रायः मन अशान्त रहेगा, सम्बन्धित अफसरों से अनबन रहेगी, नौकरी सम्बन्धित यदि तरक्की की काई आशा है, हर एक कार्य ज्यों का त्यों लटकता रहेगा, यदि आप व्यापार करते हैं परिश्रम बहुत करना होगा परन्तु पल्ले कुछ नहीं पड़ेगा, यदि आप विद्यार्थी हैं तो तो परिश्रम करने पर भी संतोषजनक सफलता नहीं होगी, यद्यपि यह वर्ष हर पहलू से ढीला ही रहेगा ऐसा होने पर भी धार्मिक प्रवृत्ति, सामाजिक कामों में दिलचस्पी बनी रहेगी, उपाय के रूप में आप हर सोमवार को भगवान शंकर पर जल चढाया करें।

काश्मीर के महात्माओं की जयन्तियां
श्राद्ध अथवा यज्ञ

(नोट :–नीचे लिखे गए श्राद्धों में 'दि' 'प्र' के आधार से एक दिन की तिथि आगे पीछे भी होसकती है स्वयं ठीक कीजिए।

चण्डीगाम महात्मा यज्ञ	चैत्र शुक्ल पक्ष सप्तमी	14 अप्रेल
स्वामी भाई टोठ जी महाराज	चैत्र शुक्ल पक्ष दशमी	17 अप्रेल
स्वामी कुमार जी जयन्ती	चैत्र शुक्ल पक्ष द्वादशी	19 अप्रेल
जानकीनाथ साहिव दर जयन्ती	वैशाख कृष्ण पक्ष सप्तमी	29 अप्रेल
श्री महादेव काक भान यज्ञ	वैशाख कृष्ण पक्ष सप्तमी	29 अप्रेल
श्री स्वामी लक्ष्मण जी जयन्ती	वैशाख कृष्ण पक्ष द्वादशी	4 मई
श्री शकर साहिब यज्ञ	वैशाख शुक्ल पक्ष द्वितीया	8 मई
योगिराज धर्मदास जी यज्ञ	वैशाख शुक्ल पक्ष तृतीया	9 मई
श्री काक जी यज्ञ	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष द्वितीया	24 मई
भगवान् गोपी नाथ यज्ञ	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष द्वितीया	7 जून
श्री सिद्ध बब जयन्ती	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष नवमी	14 जून
श्री मोहनलालजी जयन्ती	आषाढ पक्ष तृतीया	23 जून
स्वामी आनन्द जी विलगाम	आषाढ शुक्ल पक्ष सप्तमी	12 जुलाई
भगवान् गोपीनाथ जयन्ती	आषाढ शुक्लपक्ष द्वादशी	17 जुलाई
स्वामी विद्याधर जी जयन्ती	आषाढ शुक्लपक्ष त्रयोदशी	18 जुलाई
स्वामी लाल जी यज्ञ	श्रावण कृष्ण पक्ष तृतीया	22 जुलाई
ग्रट बब दिवस	श्रावण कृष्ण पक्ष द्वादशी	31 जुलाई
जानकी नाथ साहिब दर यज्ञ	श्रावण शुक्ल पक्ष अष्टमी	11 अगस्त
स्वामी गणकाक यज्ञ	श्रावण शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	18 अगस्त
स्वामी परमानन्दजी यज्ञ	भाद्र शुक्लपक्ष चतुर्थी	6 सितम्बर

उमानगरी यज्ञ	भाद्र शुक्लपक्ष अष्टमी	10 सितम्बर	स्वामी काशीनाथ यज्ञ (हुगामा)	मार्ग कृष्ण पक्ष पंचमी	19 नवम्बर
ललेश्वरी जयन्ती	भाद्र शुक्लपक्ष अष्टमी	10 सितम्बर	स्वामी सर्वानन्द जी यज्ञ	मार्ग कृष्ण पक्ष त्रयोदशी	27 नवम्बर
श्री शकर साहब यज्ञ	आश्विन कृष्ण पक्ष द्वितीया	18 सितम्बर	शारिका जी जयन्ती	मार्ग शुक्ल पक्ष द्वितीया	1 दिसम्बर
स्वामीलक्ष्मण जी यज्ञ	आश्विन कृष्ण पक्ष चतुर्थी	20 सितम्बर	स्वामी विद्याधर जी जयन्ती	मार्ग शुक्ल पक्ष तृतीया	2 दिसम्बर
स्वामी हरकाक यज्ञ	आश्विन कृष्ण पक्ष त्रयोदशी	29 सितम्बर	स्वामी राम जी जयन्ती	पौष कृष्ण पक्ष द्वादशी	26 दिसम्बर
स्वामी क्रालबव यज्ञ	आश्विन कृष्ण पक्ष चतुर्दशी	30 सितम्बर	श्री अशोकानन्द यज्ञ	पौष कृष्ण पक्ष अमावसी	29 दिसम्बर
स्वामी हरिकृष्ण यज्ञ	आश्विन शुक्ल पक्ष द्वितीया	3 अक्टूबर	मथुरा देवी यज्ञ	पौष शुक्ल पक्ष चतुर्दशी	11 जनवरी
स्वामी आनन्द जी विलगाम	आश्विन शुक्ल पक्ष सप्तम्यां	8 अक्टूबर	श्री आप्ताभ राम यज्ञ	माघ कृष्ण पक्ष चतुर्थी	16 जनवरी
श्री नन्दलाल साहिब यज्ञ	आश्विन शुक्ल पक्ष त्रयोदशी	14 अक्टूबर	स्वामी राम जी यज्ञ	माघ शुक्ल पक्ष चतुर्दशी	27 जनवरी
श्री सिद्ध बब यज्ञ	कार्तिक कृष्ण पक्ष द्वितीया	17 अक्टूबर	श्री नन्द लाल जी यज्ञ	माघ शुक्ल पक्ष तृतीया	30 जनवरी
ज्योतिषी आप्ताभ शर्मा यज्ञ	कार्तिक कृष्ण पक्ष चतुर्थी	19 अक्टूबर	शारिका जी यज्ञ	फाल्गुण कृष्ण पक्ष तृतीया	14 फरवरी
महादेव काक जयन्ती	कार्तिक कृष्ण पक्ष नवमी	24 अक्टूबर	स्वामी महताब काक जी यज्ञ	फाल्गुण पक्ष द्वितीया	28 फरवरी
स्वामी महताब काक जी जयन्ती	कार्तिक शुक्ल पक्ष चतुर्थी	4 नवम्बर	श्री नन्दलाल जी जयन्ती	फाल्गुण शुक्ल पक्ष अष्टमी	5 मार्च
श्री गोकुलनाथ जयन्ती	कार्तिक शुक्लपक्ष सप्तमी	7 नवम्बर	श्री क्रालबब यज्ञ	फाल्गुण शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	13 मार्च
श्री महादेव काक यज्ञ	कार्तिक शुक्ल पक्ष अष्टमी	8 नवम्बर	श्री किशकाक वडीपोरा यज्ञ	चैत्र कृष्ण पक्ष नवमी	22 मार्च
स्वामी आत्माराम यज्ञ	कार्तिक शुक्ल पक्ष एकादशी	11 नवम्बर-	ब्रह्मचार्य अर्जुनदेव यज्ञ	चैत्र कृष्ण पक्ष दशामी	23 मार्च
चण्डीगाम महात्मा जयन्ती	कार्तिक शुक्ल पक्ष पूर्णिमा	14 नवम्बर	श्री गाश काक यज्ञ	चैत्र कृष्ण पक्ष अमावसी	28 मार्च

महापुरुषों की जयन्तियां				पितृ पक्ष में श्राद्ध कब 2054 के लिये	
डा० अम्बेडकर	14 अप्रेल	श्री महात्मा गांधी	2 अक्टूबर	प्रतिपदा का श्राद्ध	17 सप्तम्बर बुधवार
श्री महावीर	20 अप्रेल	श्री स्वामी रामतीर्थ	1 नवम्बर	द्वितीया का श्राद्ध	18 सप्तम्बर गुरुवार
श्री वल्लभाचार्य	3 मई	श्री गुरू नानक जी	14 नवम्बर	तृतीया का श्राद्ध	18 सप्तम्बर गुरुवार
श्री रविन्द्र नाथ टैगोर	7 मई	सत्य श्री साई बाबा	23 नवम्बर	चतुर्थी का श्राद्ध	19 सप्तम्बर शुक्रवार
श्री छत्रपति शिवाजी	8 मई	डा० राजेन्द्र प्रसाद	3 दिसम्बर	पचमी का श्राद्ध	20 सप्तम्बर शनिवार
परशुराम जयन्ती	9 मई	श्री दत्तात्रेय जी	13 दिसम्बर	षष्ठी का श्राद्ध	21 सप्तम्बर रविवार
श्री आद्यशंकराचार्य जी	11 मई	श्री गुरू गोविन्द सिंह जी	5 जनवरी	सप्तमी का श्राद्ध	22 सप्तम्बर सोमवार
श्री रामानुजाचार्य जी	12 मई	श्री स्वामी विवेकानन्द जी	12 जनवरी	अष्टमी का श्राद्ध	23 सप्तम्बर मंगलवार
श्री महाराणा प्रताप	8 जून	श्री नेताजी सुभाष चन्द्र जी	23 जनवरी	नवमी का श्राद्ध	24 सप्तम्बर बुधवार
श्री कबीर दास जी	20 जून	श्री लाला लाजपतराय जी	28 जनवरी	दशमी का श्राद्ध	25 सप्तम्बर गुरुवार
श्री वेद व्यास जी	20 जुलाई	श्री गुरु रविदास जी	11 फरवरी	एकादशी का श्राद्ध	26 सप्तम्बर शुक्रवार
श्री बाल गंगाधर तिलक	23 अगस्त	श्री गुरु रामदास जी	21 फरवरी	द्वादशी का श्राद्ध	27 सप्तम्बर शनिवार
श्री गोस्वामी तुलसीदास	10 अगस्त	श्री स्वामी दयानन्द जी	24 फरवरी	त्रयोदशी का श्राद्ध	28 सप्तम्बर रविवार
श्री लाल बहादुर शास्त्री	2 अक्टूबर	श्री परमहंस राम कृष्ण जी	28 फरवरी	चतुर्दशी का श्राद्ध	30 सप्तम्बर मंगलवार
				अमावसी का श्राद्ध	1 अक्टूबर बुधवार

हमारे पर्व और त्यौहार 2054 के लिए

नवरेह	8 अप्रेल	श्रावण पूर्णिमा	18 अगस्त	नवदुर्गारम्भ	2 अक्टूबर	वसन्त पंचम	1 फरवरी
जंग त्रय	10 अप्रेल	नवदल यात्रा	21 अगस्त	दुर्गाष्टमी	9 अक्टूबर	सूर्य सतम	3 फरवरी
वैशाखी	13 अप्रेल	चन्दन षष्ठी	23 अगस्त	महानवमी	10 अक्टूबर	भीष्म अठम	4 फरवरी
दुर्गाष्टमी	15 अप्रेल	जन्माष्टमी	24 अगस्त	दसेरा	11 अक्टूबर	काव-पूर्णिमा	11 फरवरी
रामनवमी	16 अप्रेल	विनायक चोरम	6 सितम्बर	दीपमाला	30 अक्टूबर	हुरि अठम	20 फरवरी
ऋषि पीरश्राद्ध	28 अप्रेल	वराह पंचमी	7 सितम्बर	मुंजहतहर	14 दिसम्बर	हेरथ (शिवरात्रि)	24 फरवरी
वेताल षष्ठी	28 अप्रेल	गंग अठम	10 सितम्बर	क्ष्यचरिमावसी	29 दिसम्बर	शिवचतुर्दशी	25 फरवरी
अच्छिन त्रय	9 मई	शारदाष्टमी		शिशर संक्रान्ति	14 जनवरी	डून्यमावसी	
गणेश चुदाह	21 मई	काश्मीरी पण्डितों		साहिब सतम	19 जनवरी	वटुक परमुजुन	26 फरवरी
ज्येष्ठाष्टमी	13 जून	का बलिदान दिवस	14 सितम्बर	काश्मीरी पण्डितों		तैलाष्टमी	5 मार्च
हार सतम	12 जुलाई	व्यथ त्रवाह		का जन्म भूमि		होलिका दहन	12 मार्च
हार अठम	13 जुलाई	अनन्त चुदाह	15 सितम्बर	निष्कासन दिवस	19 जनवरी	होली	
हार नवम	14 जुलाई	काम्बर पक्ष	17 सितम्बर	शिवचतुर्दशी	26 जनवरी	थालसरुन	13 मार्च
ज्वाला चुदाह	19 जुलाई	साहिब सप्तमी	22 सितम्बर	गौरी तृतीया	30 जनवरी	सोन्थ	14 मार्च
श्रावण बाह	15 अगस्त	पित्रामावसी	1 अक्टूबर	त्रिपुरा चोरम	31 जनवरी	चित्र चुदाह	27 मार्च

व्रतों की सूची 2054 के लिए

संक्रान्ति व्रत

वैशाख	13 अप्रेल	रविवार
ज्येष्ठ	14 मई	बुधवार
हार	15 जून	रविवार
श्रावण	16 जुलाई	बुधवार
भाद्र	16 अगस्त	शनिवार
असोज	16 सितम्बर	भौमवार
कार्तिक	17 अक्टूबर	शुक्रवार
मगर	16 नवम्बर	रविवार
पौष	16 दिसम्बर	भौमवार
माघ	14 जनवरी	बुधवार
फाल्गुण	12 फरवरी	गुरुवार
चैत्र	14 मार्च	शनिवार

अमावसी व्रत

वैशाख	6 मई	भौमवार
ज्येष्ठ	5 जून	गुरुवार
हार	4 जुलाई	शुक्रवार
श्रावण	3 अगस्त	रविवार
भाद्र	1 सितम्बर	सोमवार
असोज	1 अक्टूबर	बुधवार
कार्तिक	31 अक्टूबर	शुक्रवार
मगर	30 नवम्बर	रविवार
पौष	29 दिसम्बर	सोमवार
माघ	28 जनवरी	बुधवार
फाल्गुण	26 फरवरी	गुरुवार
चैत्र	28 मार्च	शनिवार

पूर्णिमा व्रत

चैत्र	22 अप्रेल	भौमवार
वैशाख	22 मई	गुरुवार
ज्येष्ठ	20 जून	शुक्रवार
हार	20 जुलाई	रविवार
श्रावण	18 अगस्त	सोमवार
भाद्र	16 सितम्बर	भौमवार
असोज	16 अक्टूबर	गुरुवार
कार्तिक	14 नवम्बर	शुक्रवार
मगर	14 दिसम्बर	रविवार
पौष	12 जनवरी	सोमवार
माघ	11 फरवरी	बुधवार
फाल्गुण	13 मार्च	शुक्रवार

अष्टमी व्रत

चैत्र	15 अप्रेल	भौमवार
वैशाख	15 मई	गुरुवार
ज्येष्ठ	13 जून	शुक्रवार
हार	13 जुलाई	रविवार
श्रावण	12 अगस्त	भौमवार
भाद्र	10 सितम्बर	बुधवार
असोज	9 अक्टूबर	गुरुवार
कार्तिक	8 नवम्बर	शनिवार
मगर	7 दिसम्बर	रविवार
पौष	5 जनवरी	सोमवार
माघ	4 फरवरी	बुधवार
फाल्गुण	5 मार्च	गुरुवार

संकट चतुर्थी

वैशाख	26 अप्रेल	शनिवार
ज्येष्ठ	25 मई	रविवार
हार	23 जून	सोमवार
श्रावण	23 जुलाई	बुधवार
भाद्र	21 अगस्त	गुरुवार
असोज	19 सितम्बर	शुक्रवार
कतक	19 अक्टूबर	रविवार
मगर	17 नवम्बर	सोमवार
पौष	18 दिसम्बर	गुरुवार
माघ	16 जनवरी	शुक्रवार
फाल्गुण	15 फरवरी	रविवार
चैत्र	16 मार्च	सोमवार

कुमार षष्ठी

चैत्र	12 अप्रेल	शनिवार
वैशाख	12 मई	सोमवार
ज्येष्ठ	10 जून	भौमवार
हार	10 जुलाई	गुरुवार
श्रावण	9 अगस्त	शनिवार
भाद्र	7 सितम्बर	रविवार
असोज	7 अक्टूबर	भौमवार
कतक	6 नवम्बर	गुरुवार
मगर	5 दिसम्बर	शुक्रवार
पौष	3 जनवरी	शनिवार
माघ	2 फरवरी	सोमवार
फाल्गुण	3 मार्च	भौमवार

हरे राम, हरे राम, राम राम, हरे-हरे
हरे कृष्ण, हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे

एकादशी व्रत

18 अप्रेल	कामदा काह
18 मई	नारद काह
16 जून	निर्जला काह
16 जुलाई	देवश्यनी काह
14 अगस्त	पवित्रा काह
13 सितम्बर	नारायणी काह
12 अक्टूबर	पापांकुशा काह
11 नवम्बर	हरिबोधिनी काह
10 दिसम्बर	मोक्षदा काह
8 जनवरी	पुत्रदा काह
7 फरवरी	{ ज़या काह भीमसेन काह
8 मार्च	अमला काह

पंचक आरम्भ

1 मई	7 बजे 55 प्रात:
28 मई	1 बजे 19 दिन
24 जून	7 बजे 22 शां
21 जुलाई	3 बजे 31 रात
18 अगस्त	1 बजे 43 दिन
14 सितम्बर	12 बजे 37 रात
12 अक्टूबर	10 बजे 18 दिन
8 नवम्बर	5 बजे 32 शां
5 दिसम्बर	10 बजे 58 रात
2 जनवरी	4 बजे 59 प्रात:
29 जनवरी	1 बजे 31 दिन
25 फरवरी	12 बजे 12 रात
25 मार्च	11 बजे 3 दिन

पंचक समाप्त

5 मई	12 बजे 12 दिन
1 जून	7 बजे 31 शां
28 जून	1 बजे 7 रात
26 जुलाई	6 बजे 44 प्रात:
22 अगस्त	2 बजे 8 दिन
18 सितम्बर	11 बजे 51 रात
16 अक्टूबर	10 बजे 52 दिन
12 नवम्बर	9 बजे 12 रात
10 दिसम्बर	5 बजे 7 प्रात:
6 जनवरी	10 बजे 48 दिन
2 फरवरी	4 बजे 30 दिन
1 मार्च	12 बजे 28 रात

गडाण्त आरम्भ	गडाण्त समाप्त	गडाण्त आरम्भ	गडाण्त आरम्भ
16 अप्रेल 2 बजे 2 रात	17 अप्रेल 3 बजे 45 दिन	13 अगस्त 4 बजे 46 रात	14 अगस्त 4 बजे 8 दिन
26 अप्रेल 6 बजे 2 शां	27 अप्रेल 6 बजे प्रात:	22 अगस्त 8 बजे 38 दिन	22 अगस्त 7 बजे 47 शां
5 मई 6 बजे 40 प्रात:	5 मई 6 बजे 3 शां	31 अगस्त 2 बजे 45 दिन	31 अगस्त 4 बजे 13 रात
14 मई 9 बजे 56 दिन	14 मई 11 बजे 25 रात	10 सितम्बर 12 बजे 38 दिन	10 सितम्बर 2 बजे 30 रात
23 मई 12 बजे 44 रात	24 मई 12 बजे 15 दिन	18 सितम्बर 6 बजे 30 शां	19 सितम्बर 5 बजे 12 प्रात:
1 जून 1 बजे 57 दिन	1 जून 1 बजे 15 रात	27 सितम्बर 8 बजे 43 रात	28 सितम्बर 10 बजे 11 दिन
10 जून 6 बजे 2 शां	11 जून 7 बजे 25 प्रात:	7 अक्टूबर 7 बजे 9 शां	8 अक्टूबर 7 बजे 20 प्रात:
20 जून 9 बजे 11 दिन	20 जून 8 बजे 39 रात	16 अक्टूबर 5 बजे 32 प्रात:	16 अक्टूबर 4 बजे 5 दिन
28 जून 7 बजे 15 शां	29 जून 6 बजे 56 प्रात:	25 अक्टूबर 3 बजे 20 प्रात:	25 अक्टूबर 4 बजे 47 दिन
7 जुलाई 1 बजे 46 रात	8 जुलाई 3 बजे 10 दिन	3 नवम्बर 12 बजे 23 रात	4 नवम्बर 12 बजे 50 दिन
17 जुलाई 7 बजे शां	18 जुलाई 6 बजे 19 प्रात:	12 नवम्बर 3 बजे 34 दिन	12 नवम्बर 2 बजे 17 रात
25 जुलाई 1 बजे 3 रात	26 जुलाई 12 बजे 30 दिन	21 नवम्बर 11 बजे 7 दिन	21 नवम्बर 12 बजे 25 रात
4 अगस्त 8 बजे 36 प्रात:	4 अगस्त 9 बजे रात	1 दिसम्बर 5 बजे 38 प्रात:	1 दिसम्बर 6 बजे 58 शां

गडाण्त आरम्भ	गडाण्त समाप्त	गडाण्त आरम्भ	गडाण्त आरम्भ
9 दिसम्बर 11 बजे 30 रात	10 दिसम्बर 10 बजे 45 दिन	2 फरवरी 11 बजे 4 दिन	2 फरवरी 10 बजे 5 रात
18 दिसम्बर 7 बजे 50 शां	19 दिसम्बर 8 बजे 57 प्रातः	11 फरवरी 12 बजे 1 दिन	11 फरवरी 1 बजे 5 रात
28 दिसम्बर 3 बजे 15 दिन	28 दिसम्बर 3 बजे 15 रात	21 फरवरी 10 बजे 27 दिन	21 फरवरी 10 बजे 45 रात
6 जनवरी 5 बजे 5 प्रातः	6 जनवरी 4 बजे 55 दिन	1 मार्च 7 बजे 5 शां	2 मार्च 5 बजे 54 प्रातः
15 जनवरी 4 बजे 28 प्रातः	15 जनवरी 5 बजे 30 दिन	10 मार्च 6 बजे 12 शां	11 मार्च 7 बजे 26 प्रातः
24 जनवरी 1 बजे रात	25 जनवरी 1 बजे 4 दिन	20 मार्च 6 बजे 14 शां	21 मार्च 6 बजे 49 प्रातः

156 पृष्ठ का शेष →

30 अक्टूबर धनु मेंशुक्र
2 दिसम्बर मकर में शुक्र
20 जनवरी धनु में वक्री शुक्र
23 फरवरी मकर में शुक्र

शनि

मीन राशि में शनि

राहु

24 जून सिंह में राहु

केतु

24 जून कुम्भ में केतु

भगवान् कृष्ण कहते हैं

जो व्यक्ति श्रद्धा से यह गीतासंवाद (गीता प्रवचन) सिर्फ सुनेगा ही वह मुक्त होकर, पुण्यात्मा जहाँ पहुँचते हैं उन शुभलोकों को वह भी पावेगा।

अध्याय 18 श्लोक 71

ग्रह संचार 2054 के लिए

सूर्य

13 अप्रेल मेष में सूर्य
14 मई वृष में सूर्य
14 जून मिथुन में सूर्य
16 जुलाई कर्क में सूर्य
16 अगस्त सिंह में सूर्य
16 सितम्बर कन्या में सूर्य
17 अक्टूबर तुला में सूर्य
16 नवम्बर वृश्चिक में सूर्य
15 दिसम्बर धनु में सूर्य
14 जनवरी मकर में सूर्य
12 फरवरी कुम्भ में सूर्य
14 मार्च मीन में सूर्य

भौम

3 जून कन्या में भौम
4 अगस्त तुला में भौम
20 सितम्बर वृश्चिक में भौम
1 नवम्बर धनु में भौम
10 दिसम्बर मकर में भौम
17 जनवरी कुम्भ में भौम
24 फरवरी मीन में भौम

बुध

5 जून वृष में बुध
21 जून मिथुन में बुध
5 जुलाई कर्क में बुध
22 जुलाई सिंह में बुध
28 सितम्बर कन्या में बुध
15 अक्टूबर तुला में बुध
3 नवम्बर वृश्चिक में बुध
24 नवम्बर धनु में बुध
18 दिसम्बर वृश्चिक में वक्री बुध
7 जनवरी धनु में बुध
29 जनवरी मकर में बुध
17 फरवरी कुम्भ में बुध
5 मार्च मीन में बुध

बृहस्पति

8 जनवरी 98 कुम्भ में बृहस्पति

शुक्र

11 अप्रेल मेष में शुक्र
5 मई वृष में शुक्र
30 मई मिथुन में शुक्र
23 जून कर्क में शुक्र
18 जुलाई सिंह में शुक्र
12 अगस्त कन्या में शुक्र
6 सितम्बर तुला में शुक्र
2 अक्टूबर वृश्चिक में शुक्र

मूल नक्षत्र देखने का चित्र 2054 के लिए

पक्ष	तारीख	तिथि	आरम्भ	तिथि	पहला पाद	तिथि	दूसरा पाद	तिथि	तीसरा पाद	तिथि	चौथा पाद	तारीख
वैशाख कृष्ण पक्ष	26 अप्रे.	चतु.	12-4 रात	पंच	6.00 प्रात	पंच	11-56 दिन	पंच	5-50 शां	पंच	11-39 रात	27 अप्रे.
ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	24 मई	द्विती.	6-36 प्रात:	द्विती	12.22 दिन	द्विती	6-8 शां	द्विती	11.54 रात	तृती	5-43 प्रात:	25 मई
ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	20 जून	पूर्णि	2-59 दिन	पूर्णि	8.39 शां	पूर्णि	2-19 रात	प्रति	7.59 प्रात:	प्रति	1-40 दिन	21 जून
आपाढ शुक्ल पक्ष	17 जुला.	द्वाद.	12.42 रात	त्रयो	6-21 प्रात:	त्रयो.	12-00 दिन	त्रयो.	5-39 शां	त्रयो.	11-20 रात	18 जुला.
श्रावण शुक्ल पक्ष	14 अग.	दश.	10-26 दिन	दश.	4-12 दिन	दश.	9-58 शां	दश.	3-44 रात	द्वाद.	9-29 दिन	15 अग.
भाद्र शुक्ल पक्ष	10 सप्त.	अष्ट.	6-42 शां	अष्ट	12-40 रात	नव.	6-38 प्रात:	नव.	12-36 दिन	नव.	6-34 शां	11 सप्त.
अश्विन शुक्ल पक्ष	7 अक्टू.	षष्ठी	1-11 रात	षष्ठी.	7-17 प्रात:	षष्ठी	1-23 दिन	षष्ठी	7-29 शां	षष्ठी	1-35 रात	8 अक्टू
कार्तिक शुक्ल पक्ष	4 नव.	चतु.	6-38 प्रात:	चतु.	12-45 दिन	चतु.	6-52 शां	चतु.	12-59 रात	पंच.	7-6 प्रात:	5 नव.
मार्ग शुक्ल पक्ष	1 दस.	प्रति.	12-58 दिन	प्रति	6-58 शां	प्रति.	12-58 रात	द्विती.	6-58 प्रात:	द्विती.	1.00 दिन	2 दस.
पौष कृष्ण पक्ष	28 दस.	चर्तु.	9-18 रात	चर्तु.	3-13 रात	अमा.	9-8 प्रात:	अमा.	3-3 दिन	अमा.	8-57 रात	29 दस.
माघ कृष्ण पक्ष	25 जन.	द्वाद.	7-6 प्रात:	द्वाद.	1-1 दिन	द्वाद.	6-56 शां	द्वाद	12-51 रात	त्रयो.	6-48 प्रात :	26 जन.
फाल्गुण कृष्ण पक्ष	21 फर.	नव.	4-40 दिन	नव.	10-44 रात	नव.	4-48 रात	दश.	10-52 दिन	दश.	4-55 दिन	22 फर.
चैत्र कृष्ण पक्ष	20 मार्च	सप्त.	12-36 रात	अष्ट.	6-50 प्रात:	अष्ट.	1-4 दिन	अष्ट.	7-18 शां	अष्ट.	1-32 रात	21 मार्च

आश्लेषा नक्षत्र देखने का चित्र 2054 के लिए

पक्ष	तारीख	तिथि	आरम्भ	तिथि	पहला पाद	तिथि	दूसरा पाद	तिथि	तीसरा पाद	तिथि	चौथा पाद	तारीख
चैत्र शुक्ल पक्ष	16 अप्रे.	नव.	5-55 प्रातः	नव.	12-40 दिन	नव.	7-25 शां	नव.	2-10 रात	दश.	8-56 प्रातः	17 अप्रेल
वैशाख शुकल पक्ष	13 मई	सप्त.	1-51 दिन	सप्त.	8-33 शां	सप्त.	3-15 रात	अष्ट.	9-57 दिन	अष्ट	4-41 शां	14 मई
ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	9 जून	चतु.	10-5 रात	चतु.	4-45 रात	पंच.	11-25 दिन	पंच.	6-5 शां	पंच	12-44 रात	10 जून
आपाढ शुक्ल पक्ष	7 जुला.	तृती.	5-50 प्रातः	तृती.	12-29 दिन	तृती.	7-8 शां	तृती.	1-47 रात	चतु.	8-25 प्रातः	8 जुला.
श्रावण कृष्ण पक्ष	3 अग.	अमा.	12-39 दिन	अमा.	7-19 शां	अमा.	1-59 रात	प्रति.	8-39 प्रातः	प्रति.	3-18 दिन	4 अग.
भाद्र कृष्ण पक्ष	30 अग.	त्रयो.	6.40 शां	त्रयो	1-22 रात	चर्तु	8-2 प्रातः	चर्तु	2-42 दिन	चर्तु.	9-27 रात	31 अग.
आश्विन कृष्ण पक्ष	26 सप्त.	दश.	12-34 रात	एका.	7-17 प्रातः	एका.	2-00 दिन	एका	8-43 शां	एका.	3-26 रात	27 सप्त.
कार्तिक कृष्ण पक्ष	24 अक्टू.	नव.	7-17 प्रातः	नव.	1-57 दिन	नव.	8-37 शां	नव.	3-17 रात	दश.	9-59 दिन	25 अक्टू.
मार्ग कृष्ण पक्ष	20 नव.	षष्ठी	3-21 दिन	षष्ठी	9-55 रात	षष्ठी	4-29 रात	सप्त.	11-3 दिन	सप्त.	5-40 शां	21 नवं.
पौष कृष्ण पक्ष	17 दस.	तृती.	12-22 रात	चतु.	6-51 प्रातः	चतु.	1-20 दिन	चतु.	7-49 शां	चतु.	2-17 रात	18 दिस.
माघ कृष्ण पक्ष	14 जन.	द्वि.	9-8 दिन	द्वि.	3-32 दिन	द्वि.	9-56 रात	द्वि.	4-20 रात	तृती.	10-54 दिन	15 जन.
माघ शुक्ल पक्ष	10 फर.	चर्तु.	4-34 दिन	चर्तु.	11-3 रात	पूर्णि.	5-32 प्रातः	पूर्णि	12-1 दिन	पूर्णि	6-31 शां	11 फर.
फाल्गुण शुक्ल पक्ष.	9 मार्च	द्वा.	10-36 रात	त्रयो.	5-9 प्रातः	त्रयो.	11-42 दिन	त्रयो	6-15 शां	त्रयो	12-50 रात	10 मार्च

सूचना : इस वर्ष के पंचांग में जनता की सुविधा के लिये हमने अगले वर्ष 1998-89 के पहले दो महिनों (अप्रेल-मई) के यज्ञोपवीत मुहूर्त तथा विवाह मुहूर्त दर्ज किये हैं। 2055 विक्रमी

यज्ञोपवीत मुहूर्त 1998 के लिये

चैत्र शुक्ल पक्ष

1 अप्रेल पंचमी बुधवार
2 अप्रेल षष्ठी गुरुवार

बैशाख कृष्ण पक्ष

16 अप्रेल चतुर्थी गुरुवार

बैशाख शुक्ल पक्ष

29 अप्रेल तृतीया बुधवार
30 अप्रेल पंचमी गुरुवार
1 मई षष्ठी शुक्रवार
7 मई एकादशी गुरुवार
8 मई द्वादशी शुक्रवार

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

13 मई द्वितीया बुधवार

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

27 मई द्वितीया बुधवार

विवाह मुहूर्त 1998 के लिये

2055 विक्रमी

बैशाख कृष्ण पक्ष

15 अप्रेल तृतीया बुधवार रात
17 अप्रेल पंचमी शुक्रवार दिन-रात
18 अप्रेल षष्ठी शनिवार दिन
19 अप्रेल सप्तमी रविवार दिन-रात
20 अप्रेल अष्टमी सोमवार दिन-रात
23 अप्रेल एकादशी गुरुवार रात
24 अप्रेल त्र्योदशी शुक्रवार दिन-रात
25 अप्रेल चतुदर्शी शनिवार दिन

बैशाख शुक्ल पक्ष

29 अप्रेल तृती बुधवार दिन-रात
30 अप्रेल पंचमी गुरुवार दिन
7 मई एका० गुरुवार दिन-रात
8 मई द्वाद० शुक्रवार दिन-रात
9 मई त्रयो० शनिवार दिन-रात

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

13 मई द्विती० बुधवार दिन
15 मई चतुर्थी शुक्रवार दिन
16 मई पंचमी शनिवार रात-दिन
17 मई षष्ठी रविवार दिन
18 मई सप्तमी सोमवार रात
21 मई दशमी गुरुवार दिन-रात
22 मई एका०शुक्रवार दिन-रात

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

27 मई द्विती० बुधवार दिन

नोट : ऊपर लिखित विवाह मुहूर्तो के साथ 'दिन' तथा 'दिन-रात' लिखा हुआ हैं। 'दिन' अर्थात् दिन का लग्न 'दिन-रात' अर्थात् दिन और रात्रि का लग्न

साथ स्टुन

विक्रमी 2055 1998 (अप्रैल, मई के लिये)

(विवाह, यज्ञोपवीत शुभ मुहूर्तों के लिये वस्त्र, मसाला, अग्निवत्र, लिवुन, महेन्दी लगानी, मसमुचरून, दपनि नेरून इत्यादि)

चैत्र शुक्लपक्ष

30 मार्च तृतीया सोमवार

वैशाख कृष्णपक्ष

12 अप्रैल प्रतिपदि रविवार

17 अप्रैल पंचमी शुक्रवार

19 अप्रैल सप्तमी रविवार

23 अप्रैल एकादशी गुरुवार

वैशाख शुक्लपक्ष

29 अप्रैल तृतीया बुधवार

3 मई अष्टमी रविवार

8 मई द्वादशी शुक्रवार

ज्येष्ठ कृष्णपक्ष

13 मई द्वितीया बुधवार

18 मई सप्तमी सोमवार

आपकी नाम राशि

मेष	चू, चे चो, ला, लि, ली, ले, लो, अ,
वृष	ई, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो,
मिथुन	का, की, कु, घ, ङ, छ, के, को, ह,
कर्क	हि, हु, हे, हो, डा, डी, डु, डे, डो,
सिंह	मा, मी, मु, मे, मो, टा, टी, टो, टू
कन्या	टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो,
तुला	रा, री, रु, रे, रो, ता, ती, तू, ते,
वृश्चिक	तो, ना, नी, नू, ने, नो, य, यी, यू,
धनु	ये, यो, भा, भी, भू, ध, फ, ढ, भे,
मकर	भो, जा, जी, जू, जे, खा, ग, गी,
कुम्भ	गा, गे, गो, सा, सी, सू, से सो, दा,
मीन	दि, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची,

देखने की विधि :- अपने नाम का पहला अक्षर ऊपर की पंक्तियों में देखिये जिस राशि की पंक्ति में मिले वह आपकी नामराशि कहलायेगी । जैसे कृष्ण की राशि "मिथुन"

हर मास का सूर्योदय तथा सूर्यास्त (1 तारीख से 16 तारीख तक)

अंग्रेज़ी	1		2		3		4		5		6		7		8	
	सूर्य उदय	सूर्य अस्त	सूर्य उदय	सूर्य अस्त	सूर्य उदय	सूर्य अस्त	सूर्य उदय	सूर्य अस्त	सूर्य उदय	सूर्य अस्त	सूर्य उदय	सूर्य अस्त	सूर्य उदय	सूर्य अस्त	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
जन.	7 37	5 30	7 37	5 30	7 35	5 31	7 37	5 32	7 38	5 33	7 38	5 33	7 38	5 34	7 38	5 35
फर.	7 31	5 57	7 29	5 58	7 29	5 59	7 28	6 0	7 28	6 1	7 27	6 2	7 26	6 3	7 25	6 4
मार्च.	7 3	6 21	7 2	6 23	7 1	6 23	7 0	6 24	6 59	6 25	6 58	6 26	6 57	6 27	6 55	6 28
अप्रै.	6 23	6 45	6 22	6 46	6 21	6 47	6 20	6 47	6 18	6 48	6 17	6 49	6 16	6 50	6 15	6 50
मई	5 47	7 7	5 46	7 8	5 45	7 9	5 45	7 10	5 44	7 10	5 43	7 10	5 42	7 11	5 41	7 12
जून	5 26	7 28	5 26	7 29	5 25	7 30	5 25	7 31	5 25	7 31	5 25	7 32	5 25	7 32	5 25	7 33
जुला.	5 27	7 39	5 28	7 39	5 28	7 39	5 29	7 38	5 29	7 38	5 30	7 37	5 30	7 37	5 31	7 37
अग.	5 46	7 26	5 47	7 24	5 48	7 24	5 48	7 23	5 49	7 22	5 50	7 21	5 51	7 20	5 51	7 19
सित.	6 6	6 53	6 8	6 51	6 10	6 50	6 11	6 48	6 12	6 47	6 13	6 46	6 15	6 44	6 12	6 43
अक्टू.	6 27	6 12	6 28	6 11	6 28	6 10	6 29	6 8	6 30	6 7	6 31	6 6	6 31	6 5	6 32	6 3
नव.	6 51	5 36	6 52	5 35	6 53	5 34	6 54	5 33	6 55	5 32	6 56	5 31	6 57	5 30	6 57	5 29
दिस.	7 19	5 19	7 19	5 19	7 20	5 19	7 21	5 19	7 22	5 19	7 22	5 19	7 [illegible]	5 [illegible]	7 [illegible]	5 [illegible]

अंग्रेज़ी	9		10		11		12		13		14		15		16	
	सूर्य उदय	सूर्य अस्त	सूर्य उदय	सूर्य अस्त	सूर्य उदय	सूर्य अस्त	सूर्य उदय	सूर्य अस्त	सूर्य उदय	सूर्य अस्त	सूर्य उदय	सूर्य अस्त	सूर्य उदय	सूर्य अस्त	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
जन.	7 38	5 36	7 38	5 36	7 38	5 37	7 38	5 38	7 38	5 39	7 38	5 40	7 38	5 41	7 38	5 42
फर.	7 24	6 5	7 23	6 6	7 23	6 7	7 22	6 8	7 21	6 8	7 20	6 9	7 19	6 10	7 18	6 11
मार्च.	6 54	6 28	6 52	6 29	6 51	6 30	6 50	6 31	6 49	6 31	6 48	6 32	6 46	6 33	6 45	6 34
अप्रै.	6 13	6 51	6 12	6 51	6 11	6 52	6 10	6 53	6 8	6 54	6 7	6 55	6 6	6 56	6 4	6 56
मई	5 40	7 13	5 39	7 14	5 38	7 15	5 37	7 16	5 37	7 16	5 36	7 17	5 35	7 18	5 35	7 18
जून	5 24	7 33	5 24	7 34	5 24	7 34	5 24	7 35	5 24	7 35	5 24	7 36	5 24	7 36	5 24	7 36
जुला.	5 31	7 37	5 32	7 37	5 32	7 37	5 33	7 37	5 34	7 36	5 35	7 36	5 35	7 35	5 36	7 35
अग.	5 52	7 19	5 52	7 18	5 53	7 17	5 54	7 15	5 54	7 15	5 55	7 14	5 56	7 13	5 56	7 12
सित.	6 12	6 42	6 13	6 41	6 14	6 40	6 15	6 38	6 15	6 36	6 16	6 35	6 16	6 33	6 17	6 32
अक्टू.	6 33	6 1	6 34	6 0	6 34	5 59	6 35	5 58	6 35	5 57	6 36	5 56	6 37	5 54	6 38	5 53
नव.	6 58	5 29	6 59	5 28	7 0	5 28	7 1	5 27	7 2	5 27	7 3	5 26	7 4	5 25	7 5	5 24
दिस.	7 [illegible]	5 [illegible]	7 [illegible]	5 [illegible]	7 [illegible]	5 [illegible]	7 [illegible]	5 [illegible]	7 [illegible]	5 [illegible]	7 [illegible]	5 21	7 29	5 21	7 29	5 21

अंग्रेज़ी	17		18		19		20		21		22		23		24	
	सूर्य उदय	सूर्य अस्त	सूर्य उदय	सूर्य अस्त	सूर्य उदय	सूर्य अस्त	सूर्य उदय	सूर्य अस्त	सूर्य उदय	सूर्य अस्त	सूर्य उदय	सूर्य अस्त	सूर्य उदय	सूर्य अस्त	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
जन.	7 38	5 43	7 38	5 44	7 37	5 45	7 37	5 46	7 36	5 47	7 36	5 48	7 35	5 49	7 35	5 50
फर.	7 17	6 12	7 16	6 13	7 15	6 14	7 14	6 15	7 13	6 15	7 12	6 16	7 11	6 17	7 9	6 19
मार्च	6 43	6 35	6 42	6 35	6 40	6 36	6 39	6 37	6 38	6 38	6 37	6 38	6 36	6 39	6 34	6 40
अप्रै.	6 3	6 57	6 2	6 58	6 0	6 59	5 59	6 59	5 58	7 0	5 57	7 0	5 56	7 1	5 55	7 2
मई	5 34	7 19	5 33	7 20	5 32	7 21	5 32	7 21	5 31	7 22	5 31	7 23	5 30	7 24	5 30	7 25
जून	5 24	7 36	5 25	7 37	5 25	7 37	5 25	7 38	5 25	7 38	5 25	7 38	5 25	7 38	5 26	7 38
जुला.	5 36	7 34	5 37	7 34	5 37	7 34	5 38	7 33	5 38	7 33	5 39	7 32	5 39	7 32	5 40	7 31
अग.	5 57	7 10	5 58	7 9	5 59	7 8	5 59	7 7	6 0	7 7	6 0	7 6	6 1	7 5	6 1	7 4
सित.	6 18	6 31	6 19	6 30	6 19	6 29	6 20	6 27	6 20	6 26	6 21	6 24	6 21	6 23	6 22	6 22
अक्टू.	6 39	5 53	6 40	5 51	6 40	5 50	6 41	5 48	6 42	5 47	6 43	5 46	6 44	5 45	6 45	5 44
नव.	7 5	5 24	7 6	5 23	7 7	5 23	7 8	5 22	7 9	5 22	7 10	5 21	7 11	5 21	7 12	5 20
दिस.	7 30	5 22	7 31	5 22	7 32	5 22	7 32	5 23	7 33	5 23	7 33	5 23	7 34	5 24	7 34	5 24

अंग्रेज़ी	25		26		27		28		29		30		31	
	सूर्य उदय	सूर्य अस्त	सूर्य उदय	सूर्य अस्त	सूर्य उदय	सूर्य अस्त	सूर्य उदय	सूर्य अस्त	सूर्य उदय	सूर्य अस्त	सूर्य उदय	सूर्य अस्त	सूर्य उदय	सूर्य अस्त
जन.	7 34	5 51	7 33	5 52	7 33	5 53	7 33	5 54	7 32	5 55	7 32	5 56	7 31	5 57
फर.	7 8	6 19	7 7	6 20	7 6	6 21	7 4	6 22	7 4	6 22				
मार्च	6 32	6 40	6 31	6 41	6 30	6 42	6 28	6 43	6 28	6 43	6 26	6 44	6 25	6 45
अप्रै.	5 54	7 3	5 52	7 4	5 52	7 6	5 51	7 6	5 50	7 7	5 49	7 7		
मई	5 29	7 25	5 29	7 26	5 28	7 26	5 28	7 28	5 27	7 27	5 27	7 27	5 27	7 28
जून	5 26	7 39	5 26	7 39	5 26	7 39	5 27	7 39	5 27	7 39	5 27	7 39		
जुला.	5 41	7 30	5 42	7 29	5 42	7 29	5 43	7 29	5 44	7 28	5 45	7 27	5 45	7 27
अग.	6 2	7 3	6 3	7 1	6 4	7 1	6 4	6 59	6 5	6 58	6 6	6 56	6 7	6 54
सित.	6 23	6 21	6 24	6 19	6 25	6 17	6 26	6 16	6 26	6 15	6 27	6 13		
अक्टू.	6 46	5 42	6 46	5 41	6 47	5 40	6 48	5 39	6 49	5 38	6 50	5 38	6 50	5 38
नव.	7 13	5 20	7 14	5 20	7 15	5 20	7 16	5 19	7 17	5 19	7 18	5 19		
दिस.	7 35	5 25	7 35	5 26	7 35	5 26	7 35	5 27	7 36	5 27	7 36	5 29	7 37	5 29

वर्ष का राजा
चन्द्रमा
काश्मीरी पद्धति से

वर्ष का राजा
मंगल
भारतीय पद्धति से

आषाढ़ नवमी
सोमवार
14 जुलाई

आर्द्रा नक्षत्र में
सूर्य का प्रवेश
21 जून शनिवार

वर्ष का
मन्त्री सूर्य

धान्य का
स्वामी
चन्द्रमा

2054
ज्योतिष के
दर्पण में

रक्षा के
स्वामी
शनि

धातुओं
के स्वामी
बुध

वर्षा का
स्वामी
शनि

धन का
स्वामी
मंगल

वर्ष का
वाहन
घोड़ा

वसन्त का
वाहन
सूकर

अजनास
का स्वामी
बुध

फलों का
स्वामी
शनि

रस के
स्वामी शुक्र

वर्ष का
नाम
विकृति

वर्षा
भगवती
सूपकारी

दस पदाधिकारियों का फल

(फलित ज्योतिष के आधार से)

वर्ष का राजा – भौम होने से भ्रष्टाचार में वृद्धि, अन्न के भावों में तेजी, वर्षा की कमी के कारण धान्य की उत्पती में कमी, कई राष्ट्रों में आपसी मतभेद के कारण टकराव की स्थिति।

वर्ष का मन्त्री – सूर्य होने से धन-धान्य की बहुतात, हर ओर से चोरी, ठगी का बोल बाला, रासायनिक पदार्थो अन्न, गेहूं, जौ, चना इत्यादि के भावों में तेज़ी तथा शासकों का आपस में मतभेद।

धान्य का स्वामी – चन्द्रमा होने से पृथ्वी जल से परिपूर्ण, हर ओर से विकास एवं जनहित के लिये कल्याणकारी स्कीमों का फहलाव, सभी प्रकार के उपद्रवों पर नियन्त्रण करने की योजनाओं का अमल में आने का योग, दूध, दही, घी में वृद्धि।

वर्षा का स्वामी – शनि होने से वर्षा की बेढंगी चाल से धान्य की उपज में हानि का योग, प्रजा में अनेक प्रकार के रोग, बाढ़ इत्यादि से धान्य की उपज में हानि, मन्त्रि परिषदों में परिवर्तन अथवा पद त्याग का योग।

अजनास के स्वामी – बुध होने से अच्छी वर्षा के कारण गेहूं, चावल, मक्की की उपज में आशा से अधिक वृद्धि, लोगों में धार्मिक प्रवृति, मूल्यों में उतार चढ़ाव का योग।

धन के स्वामी – भौम होने से कीमतों में बेढंगी चाल, कभी तेज़ी, कभी मन्दी, व्यापारी वर्ग के लिये लाभदायक, कई मन्त्रि परिषदों में परिवर्तन अथवा उलट-फेर का योग।

फलों के स्वामी – शनि होने से फल फूलों की पैदावार में कमी, फलों में नई-नई बीमारियां, बेढंगी वर्षा तथा बर्फ भारी के कारण फलों का नुकसान, फूलों के व्योपारी लाभ में रहेंगे।

रस के स्वामी - शुक्र होने से जनता की विलासता तथा ऐश्वर्य में वृद्धि, भावों में कमी होने से जनता सुख का सांस लेगी, शासन वर्ग का प्रजा की और तत्परता।

रक्षा के स्वामी - शनि होने से पूरा विश्व आकाशीय उपद्रवों से भयभीत रहेगा, प्रत्येक राष्ट्र अपनी-अपनी सैन्य शक्ति को बढ़ावा देने में लग जायेगा, युद्ध के बादल हर समय मंडलाते रहेंगे परन्तु बरसेंगे नहीं।

धातुओं के स्वामी - बुध होने से समुद्र में पैदा होने वाले वस्तु का व्यापार करने वाले लाभ में रहेंगे, सोना चाँदी इत्यादि के व्योपारी विशेष लाभ में नहीं रहेंगे, भावों में उतार चढ़ाव के कारण लोहा तथा सिमेन्ट के व्यापारी परेशानी में रहेंगे।

वर्ष का नाम - विकृति संवत्सर का स्वामी सूर्य होने से असमय वर्षा, राजाओं में विग्रह, दुर्भिक्ष, उत्पात, छत्रभंग प्राकृतिक भूकम्प, अग्निकाण्ड, बाढ तथा कई प्रदेशों में आतंकवाद का बोलबाला रहेगा।

वर्ष का वाहन - घोड़ा होने से कई राष्ट्रों में आपस में मतभेद होने पर आपस में विग्रह का योग, आकाशीय उपद्रवों के कारण जनता जर्नादन में भय की लहर, राजनीतिज्ञों में आपसी मतभेद के कारण राजनीति में अस्थिरता रहेगी।

वर्षा भगवती - सूपकारी होने से जनता में खाने की ओर प्रवृति बढ़ेगी, धार्मिक कामों की ओर रुचि कम रहेगी, लोगों में विलासता तथा ऐश्वर्य की ओर ज्यादा ध्यान रहेगा।

संसार

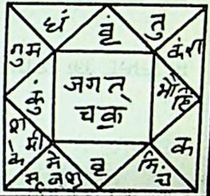

फलित ज्योतिष में बृहस्पति तथा शनि का बहुत महत्व है इन दोनों ग्रहों की स्थिति इस वर्ष के वर्ष चक्र तथा जगत चक्र में अच्छी न होने के कारण पूरा

विश्व आतंक के झूले में झूलता रहेगा हर ओर से आकाशी उपद्रव भूकम्प, तूफान इत्यादि से जन धन का नाश, राजनैतिक उत्थल-पुथल, प्रत्येक छोटा-बड़ा देश अपनी अपनी आन्तरिक समस्याओं में उलझने के बावजूद भी बाह्यरूप से शान्ति का राग अलापता रहेगा, गत वर्ष की तरह इस वर्ष भी वर्ष चक्र में आठवें भाव में पांच ग्रहों की युति किसी शुभ योग का सूचक नहीं है जिस के कारण प्राकृतिक प्रकोप, रेल दुर्घटना, वायु प्रदूषण में वृद्धि तथा चारों ओर हाहाकार। विश्व में कई देश आन्तरिक विवादों के होते हुये भी आपस में व्यापारिक तथा औद्योगिक क्षेत्रों में नये-नये सन्धियों में लगे रहेंगे, कई प्रमुख राष्ट्र परमाणु परीक्षण निषेध सन्धि के विषय में बड़े-बड़े सम्मेलनों का आयोजन करेंगे जिस में विशेष योगदान भारत का रहेगा। वर्ष का नाम विकृति होने से कई राष्ट्रों में राजनैतिक अस्थिरता तथा सात्ता परिवर्तन का योग, खाडी क्षेत्रों में तनाव का माहोल बनता रहेगा, किसी व्यक्ति विशेष का निधन।

भारत

भारत की वर्ष कुण्डली तथा गणतन्त्र कुण्डली में ग्रहों की स्थिति के देखने से विदित होता है कि 1997 का वर्ष भारत की सियास्त में एक ऐसा परिवर्तन लायेगा जो चिरकाल तक आजकल की अस्थिर सियास्त को दबाने में समर्थ रहेगा ग्रहों के योग के अनुसार यह वर्ष भारत के लिये महत्वपूर्ण होगा, भारत अपनी प्रभुसत्ता को कायम रखने के लिये कोई भी कसर बाकी नहीं रखेगा, अपनी विदेश नीति को सुदृढ़ बनाने के लिये नये-नये कदम उठायेगा, संयुक्त राष्ट्रसंघ में भारत अपनी छवि को बरकरार रखने में हर प्रकार के हथकण्डे प्रयोग में लायेगा जिस कारण उस के विरोधी देश भी देखते रह जायेंगे परन्तु सरकार आन्तरिक गुठबन्धी के कारण अपने घर के

माहौल को शान्त रखने में कहीं कहीं विफल भी रहेगी, राजनेताओं की गुठबन्दी तथा विफलता के कारण जनता-जनार्दन में सरकार के प्रति रोष तथा बदले की भावना बड़क उठेगी, हर ओर से राजनीतिज्ञों में विरोध, जनान्दोलन, तोड़फोड़ एवं हिंसक घटनाओं के कारण सरकार को बहुत चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा, आर्थिक स्थिति सुधारने में सरकार वांछित सफलता प्राप्त नहीं कर सकेगी जो कि त्रिशंकु सरकार की असफलता का विशेष कारण बनेगी।

फारूख अब्दुल्लाह

काश्मीर

हमने गत वर्ष के पंचांग में इस बात की ओर इशारा किया है कि 1998 के अन्त तक काश्मीर के हालात में कोई विशेष परिवर्तन आने का कोई योग नही है इस वर्ष के ग्रहों की स्थिति को देखते हुये आतंकवाद का दबदबा सरकार के दबाने पर भी चालू रहेगा, हर ओर से खून खराबा, बम-विस्फोट आदि का बोलबाला रहेगा, सरकार अपनी राजनीति के अनुसार आतंकवाद को समाप्त करने पर पूरा जोर लगायेगी परन्तु इतना ज़ोर लगाने पर भी इस समस्या का समाधान अभी होने वाला नहीं हैं। नई सरकार के शपथ ग्रहण शक्र के अनुसार यह वर्ष फारूक अब्दुला के लिये अग्नि परीक्षा का वर्ष होगा ग्रहों की स्थिति के बल पर फारूक अब्दुल्ला अपनी नीति में बहुत हद तक सफल ही रहेगा, सरकार जनता की सुविधा के लिये नई-नई योजनाओं को अमली जामा पहनाने का प्रयत्न करेगी परन्तु आतंकवाद के गोले इस में बाधक बन सकते हैं, रियासती सरकार को हर तरह का आर्थिक, मानसिक, राजनीतिक तथा सुरक्षा सम्बन्धी सहयोग केन्द्र से मिलता रहेगा।

सम्पादक

चैत्र शुक्लपक्ष सप्तर्षि सं॰ 5073 विक्रमी सं॰ 2054 शाका 1919 ईस्वी 1997

8 अप्रेल की ग्रह स्थिति :-मीन में सूर्य, शुक्र, शनि केतु। सिंह में भौम। कन्या में राहु। मकर में बृहस्पति। मेष में बुध

दिन	मान	चैत्र	अप्रेल	वार	नक्षत्र	बजे	मि	तिथि	बजे	मि	(वसन्त ऋतु, उत्तरायण (ग्रह संचार बजे मिनटों में)
31	27	26	8	भौम	अश्विन प्र	12	47	प्रति. दि	1	44	**नवरात्रारम्भ, नवरेह,** 8-40 दिन तक गण्डान्त, अमृतम।
	35	27	9	बुध	भर प्र	11	25	द्विती. दि	11	22	काण्ड:।
	37	28	10	गुरु	कृति प्र	10	42	तृती. दि	9	33	5-11 प्रात: **वृष में चन्द्र, जंगत्रय,** अलापक:।
	42	29	11	शुक्र	रोहि प्र	10	42	चतु. दि	8	25	3-23 दिन **मेष में शुक्र,** मैत्रम्।
	50	30	12	शनि	मृग प्र	11	28	पंच. दि	8	3	10-59 दिन **मिथुन में चन्द्र,** कुमार षष्ठी, शनि मास, **मासान्त,** वज्रम्।
	55	वैशा	13	रवि	आर्द्र प्र	1	00	षष्ठी. दि	8	28	**वैशाखी,** संक्रान्ति व्रत, 10-51 रात मेष में सूर्य मुहूर्त 15 **A.**
32	0	2	14	सोम	पुन प्र	3	12	सप्त. दि	9	39	8-35 शां **कर्क में चन्द्र,** धौम्य:।
	5	3	15	भौम	तिष्य प्र	5	55	अष्ट. दि	11	29	**दुर्गाष्टमी,** प्रवर्ध:।
	10	4	16	बुध	अश्ले -	दिन	रात	नव. दि	1	48	2-2 रात से गडान्त। **रामनवमी।** उमा जयनती, शिवा भगवती **B.**
	15	5	17	गुरु	अश्ले दि	8	56	दश. दि	4	21	3-45 दिन तक गण्डान्त। 8-56 दिन **सिंह में चन्द्र,** अमृतम्।
	20	6	18	शुक्र	मघा दि	12	3	एका. दि	6 शां	57	कामदा-एकादशी काण्ड:
	26	7	19	शनि	पूफा दि	3	2	द्वाद. प्र	9	21	9-44 रात **कन्या में चन्द्र,** अलापक:।
	30	8	20	रवि	उफा दि	5	43	त्रयो प्र	11	24	महावीर जयन्ती। मैत्रम्।
	35	9	21	सोम	हस्त प्र	7	58	चर्तु प्र	12	59	वज्रम्।
	37	10	22	भौम	चित्र प्र	9	45	पूर्णि प्र	2	4	8-55 दिन **तुला में चन्द्र,** ध्वांक्ष:

दुर्गाष्टमी 15 अप्रेल

13 अप्रेल वैशाखी

मध्याह्न :–प्रति अपने दिन, द्विती. से अष्ट. पहले दिन, नव से पूर्णि. अपने दिन। **श्राद्ध :**–प्रति से एका. तक पहले दिन, द्वा. से पूर्णि तक अपने दिन।

A. दरयाई, ध्वांक्ष:। **B.** जयन्ती, क्षय:।

वैशाख कृष्ण पक्ष, सप्तर्षि सं० 5073 विक्रमी सं० 2054 शाका 1919 ईस्वी 1997

23 अप्रैल की ग्रह स्थिति :-**मेष** में सूर्य, बुध, शुक्र,। **सिंह** में भौम। **मकर** में बृहस्पति। **मीन** में शनि, केतु। **कन्या** में राहु

दिन	मान	वैशा.	अप्रैल.	वार	नक्षत्र	बजे	मि	तिथि	बजे	मि	वसन्त ऋतु, उत्तरायण (ग्रह संचार बजे मिनटों में)
32	42	11	23	बुध	स्वा प्र	11	1	प्रति प्र	2	37	धौम्यः।
	47	12	24	गुरु	विशा प्र	11	48	द्विती. प्र	2	40	5-39 शां **वृश्चिक में चन्द्र,** प्रवर्धः।
	52	13	25	शुक्र	अनुरा प्र	12	8	तृती. प्र	2	17	क्षयः।
	57	14	26	शनि	ज्येष्ठ प्र	12	4	चतु. प्र	1	29	12-4 रात **धनु में चन्द्र** और मूल आरम्भ, 6-2 शां से गण्डान्त, **A.**
33	0	15	27	रवि	मूल प्र	11	39	पंच. प्र	12	20	6 बजे प्रातः तक गण्डान्त सिद्धः।
	7	16	28	सोम	पूर्षा प्र	10	55	षष्ठी. प्र	10	51	4-41 रात **मकर में चन्द्र**। वेताल षष्ठी, **ऋषि पीर श्राद्ध,** उन्मूलम्।
	12	17	29	भौम	उषा प्र	9	54	सप्त. प्र	9	6	मानसम्।
	15	18	30	बुध	श्रव प्र	8	38	अष्ट. दि	7	शां 5	छत्रम्
	20	19	मई	गुरु	धनि दि	7	9 शां	नव. दि	4	52	7-55 प्रातः **कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ**। श्रीवत्सः
	25	20	2	शुक्र	शत दि	5	30	दश. दि	2	27	बुलबुललंकर यज्ञ। सौम्यः।
	30	21	3	शनि	पूभा दि	3	45	एका. दि	11	56	10-11 दिन **मीन में चन्द्र**। वरूथिनी एकादशी। कालदण्डः।
	32	22	4	रवि	उभा दि	1	57	द्वाद दि	9	21	स्वा. **लक्ष्मीण जी जयन्ती** निशात काश्मीर, महेन्द्र नगर जम्मू, **B.**
	35	23	5	सोम	रेव दि	12	12	त्रयो. दि	6	49 सु	6-40 प्रातः से 6-3 शां तक गण्डान्त। 12-12 दिन **मेष में C.**
	37	24	6	भौम	अश्वि दि	10	38	अमा. प्र	2	17	अमृतम्।

शुक्रोदय
28 अप्रैल
12-11 रात

मध्याह्न :–प्रति से दशमी तक अपने दिन, एका. से त्रयो तक पहले दिन, अमावसी अपने दिन। **श्राद्ध** :–प्रति से अष्ट तक अपने दिन, नव. से त्रयो. तक पहले दिन, अमा. अपने दिन। **A.** संकट चतुर्थी, गजः **B. नयोडा देहली,** स्थिरः **C.** **चन्द्र** और पंचक समाप्त त्र्यहः। (चं प्र 4-25) 10-21 रात **वृष में शुक्र,** मातंगः

वैशाख शुक्लपक्ष सप्तर्षि सं॰ 5073 विक्रमी सं॰ 2054 शाका 1919 ईस्वी 1997

7 मई की ग्रह स्थिति :-**मेष** में सूर्य, बुध,। **सिंह** में भौम। **मकर** में वृहस्पति। **वृष** में शुक्र। **मीन** में शनि केतु। **कन्या** में राहु

दिन	मान	वैशा	मई	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	वसन्त ऋतु, उत्तरायण (ग्रह संचार बजे मिनटों में)
33	42	25	7	बुध	भर	दि	9	22	प्रति.	प्र	12	32	3-7 दिन **वृष में चन्द्र**। काण्ड:।
	47	26	8	गुरु	कृति	दि	8	32	द्विती.	प्र	11	18	अलापक:।
	52	27	9	शुक्र	रोहि	दि	8	15	तृती.	प्र	10	42	8-21 रात **मिथुन में चन्द्र**। अक्षया तृतीया। परशुराम जयन्ती। मैत्रम्।
	55	28	10	शनि	मृग	दि	8	37	चतु.	प्र	10	48	वज्रम्।
34	2	29	11	रवि	आर्द्र	दि	9	41	पंच.	प्र	11	38	8-54 दिन **कृतिका नक्षत्र में सूर्य** का प्रवेश। ध्वांक्ष:
	7	30	12	सोम	पुन	दि	11	28	षष्ठी.	प्र	1	9	कुमार षष्ठी। चन्द्रमास 4-57 प्रातः **कर्क में चन्द्र**। धौम्य:।
	7	31	13	भौम	तिष्य	दि	1	51	सप्त.	प्र	3	14	**मासान्त** प्रवर्ध:
	12	ज्येष्ठ	14	बुध	अश्ले	दि	4	41	अष्ट.		दिन रात		दिन अधिक। 9-56 दिन से 11-25 रात तक गण्डान्त। 7-46 **A.**
	17	2	15	गुरु	मघा	प्र	7	46	अष्ट.	दि	5 सु	40	गज:।
	17	3	16	शुक्र	पूफा	प्र	10	48	नव.	दि	8	13	सिद्ध:
	22	4	17	शनि	उफा	प्र	1	35	दश.	दि	10	37	5-32 प्रातः **कन्या में चन्द्र**। उन्मूलम्।
	27	5	18	रवि	हस्त	प्र	3	54	एका.	दि	12	38	**नारद एकादशी** (डुमटबलयत्रा) मानसम्।
	32	6	19	सोम	चित्र	-	दिन	रात	द्वाद.	दि	2	6	4-50 दिन **तुला में चन्द्र**। मुद्गरम्।
	35	7	20	भौम	चित्र	दि	5 सु	37	त्रयो.	दि	2	57	ध्वांक्ष:।
	37	8	21	बुध	स्वात	दि	6	43	चर्तु.	दि	3	9	1-8 रात **वृश्चिक में चन्द्र** गणेश चतुर्दशी, गणपतयार यात्रा, धौम्य:
	42	9	22	गुरु	विशा	दि	7	12	पूर्णि.	दि	2	43	प्रवर्ध:

मध्याह्न :-प्रति से अष्ट तक अपने दिन, नव, दश पहले दिन, एका से पूर्णि तक अपने दिन। **श्राद्ध** :-प्रति से अष्ट तक अपने दिन, नव से पूर्णि तक पहले दिन। **A.** शां **वृष में सूर्य** मुहूर्त 30 समुद्रीय संक्रान्ति व्रत, 4-41 दिन **सिंह में चन्द्र**, क्षय:।

ज्येष्ठ कृष्णपक्ष सप्तर्षि सं॰ 5073 विक्रमी सं॰ 2054 शाका 1919 ईस्वी 1997

23 मई की ग्रह स्थिति :-वृष में सूर्य, शुक्र,। **सिंह** में भौम। **मेष** में बुध। **मकर** में बृहस्पति। **मीन** में शनि, केतु। **कन्या** में राहु।

दिन	मान	ज्येष्ठ	मई	वार	नक्षत्र	बजे	मि	तिथि	बजे	मि	वसन्त ऋतु, उत्तरायण (ग्रह संचार बजे मिनटों में)
34	44	10	23	शुक्र	अनु दि	7	7	प्रति. दि	1	46	12-44 रात से गण्डान्त, क्षयः।
	49	11	24	शनि	ज्ये दि	6 सु	36	द्वित. दि	12	24	12-15 दिन तक गण्डान्त, 6-36 प्रातः **धनु में चन्द्र** और मूल **A.**
	49	12	25	रवि	मूल दि	5 सु	43	तृती. दि	10	42	संकट चतुर्थी, (पूपा प्र 4-36) सिद्धः।
	54	13	26	सोम	उषा प्र	3	20	चतु. दि	8	46	10-18 दिन **मकर में चन्द्र,** मृत्युः।
	54	14	27	भौम	श्रव प्र	2	00	पंच. दि	6 सु	42	त्र्यहः, (प प्र 4-35) अलापकः।
35	0	15	28	बुध	धनि प्र	12	38	सप्त. प्र	2	26	1-19 दिन **कुम्भ में चन्द्र** और पंचक आरम्भ, मैत्रम्।
	0	16	29	गुरु	शत प्र	11	16	अष्ट. प्र	12	17	वज्रम्।
	0	17	30	शुक्र	पूभा प्र	9	57	नव. प्र	10	12	4-16 दिन **मीन में चन्द्र,** 8-38 प्रातः **मिथुन में शुक्र,** ध्वांक्षः।
	2	18	31	शनि	उभा प्र	8	41	दश. प्र	8	9	धौम्यः।
	5	19	जून	रवि	रेव दि	7 शां	31	एका दि	6 शां	12	7-31 शां **मेष में चन्द्र** और पंचक समाप्त, 1-57 दिन से **B.**
	7	20	2	सोम	अश्वि दि	6	30	द्वाद दि	4	24	चरः।
	10	21	3	भौम	भर दि	5	41	त्रयो दि	2	48	11-32 रात **वृष में चन्द्र,** 8-13 रात **कन्या में भौम,** गजः।
	15	22	4	बुध	कृति दि	5	11	चर्तु दि	1	29	सिद्धः।
	15	23	5	गुरु	रोहि दि	5	3	अमा दि	12	34	11-58 दिन **वृष में बुध, नन्दकेश्वर सुम्बल** यात्रा **C.**

मध्याह्न :–प्रति, द्वि अपने दिन, तृती. से पंचमी तक पहले दिन, सप्त से अमा तक अपने दिन। **श्राद्ध** :–प्रति से पंच तक पहले दिन, सप्त. से एका तक अपने दिन, द्वा. से अमा. तक पहले दिन। **A.** आरम्भ, गजः **B.** 1-15 रात तक गण्डान्त, रथा एकादशी प्रवर्धः **C.** गोलगुजराल जम्मू, उन्मूलम्।

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष सप्तर्षि सं० 5073 विक्रमी 2054 शाका 1919 इस्वी 1997

6 जून की ग्रहस्थिति :-वृष में सूर्य, बुध। **कन्या** में भौम, राहु। **मकर** में बृहस्पति। **मिथुन** में शुक्र। **मीन** में शनि, केतु।

दिन	मान	ज्येष्ठ	जून	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	दि	ग्रीष्म ऋतु, उत्तरायण। (ग्रह संचार वजे मिनटों में)
35	17	24	6	शुक्र	मृग	दि	5	26	प्रति.	दि	12	7	5-11 प्रातः **मिथुन में चन्द्र,** मानसम्।
	17	25	7	शनि	आर्द्र	दि	6 शां	23	द्विती.	दि	12	14	मुद्गरम्।
	20	26	8	रवि	पुन	प्र	7	56	तृती.	दि	12	58	1-29 दिन **कर्क में चन्द्र,** ध्वजः।
	22	27	9	सोम	तिष्य	प्र	10	5	चतु.	दि	2	19	प्राजापत्यः।
	25	28	10	भौम	अश्ले	प्र	12	44	पंच.	दि	4	14	6-2 शां से गण्डान्त, 12-44 रात **सिंह में चन्द्र,** कुमार षष्ठी, आनन्दः।
	25	29	11	बुध	मघा	प्र	3	44	षष्ठी.	दि	6	34 शां	7-25 प्रातः तक गण्डान्त, बुध मास, चरः।
	27	30	12	गुरु	पूफा	-	दिन	रात	सप्त.	प्र	9	6	मुसलम्।
	27	31	13	शुक्र	पूफा	दि	6	50 सु	अष्ट.	प्र	11	34	1-36 दिन **कन्या में चन्द्र ज्येष्ठाष्टमी** क्षीर भवानी यात्रा, **A.**
	30	आषा	14	शनि	उफा	दि	9	47	नव.	प्र	1	43	2-26 रात मिथुन में सूर्य मुहूर्त 30, दरयाई, मासान्त उन्मूलम्
	30	2	15	रवि	हस्त	दि	12	20	दश.	प्र	3	19	1-24 रात **तुला में चन्द्र,** संक्रान्ति व्रत, मानसम्।
	30	3	16	सोम	चित्र	दि	2	17	एका.	प्र	4	13	निंजला एकादशी, मुद्गरम्।
	30	4	17	भौम	स्वा	दि	3	32	द्वाद.	प्र	4	22	ध्वजः।
	30	5	18	बुध	विशा	दि	4	1	त्रयो.	प्र	3	46	9-58 दिन **वृश्चिक में चन्द्र,** प्राजापत्यः।
	30	6	19	गुरु	अनु	दि	3	48	चर्तु.	प्र	2	29	क्षयः।
	33	7	20	शुक्र	ज्येष्ठ	दि	2	59	पूर्णि	प्र	12	39	2-59 दिन **धनु में चन्द्र** और मूल आरम्भ, 9-11 दिन से **B.**

मध्याह्न :–प्रति से पूर्णिमा तक अपने दिन। **श्राद्ध** :–प्रति से षष्ठी तक पहले दिन, सप्त से पूर्णि तक अपने दिन। **A.** जानी पोरा जम्मू, सिद्धः। **B.** 8-39 रात तक गण्डान्त, माता रूप भवानी जयन्ती, कबीर जयन्ती, चरः।

आषाढ कृष्णपक्ष सप्तर्षि सं॰ 5073 विक्रमी 2054 शाका 1919 ईस्वी 1997

21 जून की ग्रह स्थिति :- **मिथुन** में सूर्य, बुध, शुक्र। **कन्या** में भौम, राहु। **मकर** में बृहस्पति। **मीन** में शनि, केतु।

	दिनमान	आषा	जून	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	ग्रीष्म ऋतु, उत्तरायण (ग्रह संचार बजे मिनटों में)
35	33	8	21	शनि	मूला	दि	1	40	प्रति.	प्र	10	23	6-2 प्रातः **मिथुन में बुध,** 2-7 रात आर्द्रा नक्षत्र में सूर्य का **A.**
	33	9	22	रवि	पूषा	दि	12	1	द्विती.	प्र	7	51	5-34 शां **मकर में चन्द्र,** शूलम्।
	30	10	23	सोम	उषा	दि	10	11	तृती.	दि	5	11 शां	10-13 रात **कर्क में शुक्र** संकट चतुर्थी, मृत्युः
	30	11	24	भौम	श्रव	दि	8	18	चतु.	दि	2	29	7-22 शां **कुम्भ में चन्द्र** और पंचक आरम्भ, 8-14 प्रातः **B.**
	33	12	25	बुध	धनि	दि	6	28	पंच.	दि	11	53	मैत्रम्। (शत प्र 4-47)
	30	13	26	गुरु	पूभा	प्र	3	18	षष्ठी.	दि	9	27	9-39 रात **मीन में चन्द्र** मुद्गरम्।
	30	14	27	शुक्र	उभा	प्र	2	5	सप्त.	दि	7 सु	13	त्र्यहः (अष्ट प्र 5-15) ध्वजः।
	30	15	28	शनि	रेव	प्र	1	7	नव.	प्र	3	33	1-7 रात **मेष में चन्द्र** और पंचक समाप्त, 7-15 शां से **C.**
	30	16	29	रवि	अश्वि	प्र	12	27	दश.	प्र	2	8	6-56 प्रातः तक गण्डान्त, आनन्दः।
	30	17	30	सोम	भर	प्र	12	3	एका.	प्र	1	1	चरः।
	27	18	जुला.	भौम	कृति	प्र	11	59	द्वाद.	प्र	12	13	6 बजे प्रातः **वृष में चन्द्र** मुसलम्।
	27	19	2	बुध	रोहि	प्र	12	16	त्रयो	प्र	11	46	शूलम्।
	25	20	3	गुरु	मृग	प्र	12	57	चर्तु	प्र	11	44	12-34 दिन **मिथुन में चन्द्र** मृत्युः।
	22	21	4	शुक्र	आर्द्र	प्र	2	6	अमा	प्र	12	10	काम्यः।

मध्याह्न :–प्रति से चतु. तक अपने दिन, पंच. से सप्त. तक पहले दिन, नव. से अमा. तक अपने दिन। **श्राद्ध :–**प्रति से तृती. तक अपने दिन, चतु. से सप्त. तक पहले दिन, नव. से अमा. अपने दिन **A.** प्रवेश **दक्षिणायन,** मुसलम्। **B . सिंह में राहु और कुम्भ में केतु** अलापकः **C.** गण्डान्त, प्राजापत्यः

आषाढ शुक्लपक्ष सप्तर्षि सं० 5073 विक्रमी 2054 शाका 1919 ईस्वी 1997

5 जुलाई की ग्रह स्थिति :-**मिथुन** में सूर्य। **कन्या** में भौम। **कर्क** में बुध, शुक्र। **मकर** में वृहस्पति। **मीन** में शनि। **सिंह** में राहु। **कुम्भ** में केतु

दिन	मान	आषा	जुलाई	वार	नक्षत्र	बजे	मि	तिथि	बजे	मि	ग्रीष्म ऋतु, दक्षिणायन (ग्रह संचार बजे मिनटों में)
35	20	22	5	शनि	पुन प्र	3	43	प्रति. प्र	1	5	9-16 रात **कर्क में चन्द्र,** 6-59 प्रात: **कर्क में बुध** छत्रम्।
	17	23	6	रवि	तिष्य -	दिन	रात	द्विती. प्र	2	31	श्रीवत्स:।
	15	24	7	सोम	तिष्य दि	5	50	तृती. प्र	4	26	1-46 रात से गण्डान्त, प्राजापत्य:।
	15	25	8	भौम	अश्ले दि	8	25	चतु. -	दिन	रात	दिन अधिक, 8-25 दिन **सिंह में चन्द्र,** 3-10 दिन तक **A.**
	12	26	9	बुध	मघा दि	11	21	चतु. दि	6	45	चर:।
	12	27	10	गुरु	पूफा दि	2	29	पंच. दि	9	18	9-17 रात **कन्या में चन्द्र,** कुमार षष्ठी, मुसलम्।
	10	28	11	शुक्र	उफा दि	5	36 शां	षष्ठी. दि	11	52	**शुक्रमास,** शूलम्।
	10	29	12	शनि	हस्त प्र	8	27	सप्त. दि	2	13	**हार सप्तमी,** मृत्यु:।
	5	30	13	रवि	चित्र प्र	10	48	अष्ट. दि	4	6	**हार अष्टमी,** 9-42 दिन **तुला में चन्द्र** काम्य:।
	2	31	14	सोम	स्वा प्र	12	28	नव. दि	5	19	**आषाढ नवमी,** शारिका जयन्ती छत्रम्।
34	57	32	15	भौम	विशा प्र	1	21	दश. दि	5	45	7-12 शां **वृश्चिक में चन्द्र,** मासान्त, श्रीवत्स:।
	57	श्रा	16	बुध	अनु प्र	1	24	एका. दि	5	22	1-21 दिन **कर्क में सूर्य** मुहूर्त 30 समुद्रीय, संक्रान्ति व्रत, **B.**
	52	2	17	गुरु	ज्येष्ठ प्र	12	42	द्वाद. दि	4	10	12-42 रात **धनु में चन्द्र** और मूल आरम्भ, 7 बजे शां से **C.**
	52	3	18	शुक्र	मूला प्र	11	20	त्रयो. दि	2	15	6-19 प्रात: तक गण्डान्त। 3-51 दिन **सिंह में शुक्र** स्थिर:।
	50	4	19	शनि	पूषा प्र	9	26	चर्तु. दि	11	46	2-54 रात **मकर में चन्द्र,** ज्वाला चतुर्दशी, खवयात्रा, मातंग:।
	47	5	20	रवि	उत्तप दि	7	11 शां	पूर्णि. दि	8	50	अमृतम्।

मध्याह्न :–प्रति से चतु. अपने दिन, पंच., षष्ठी. पहले दिन, सप्त. से त्रयो. तक अपने दिन, चर्तु., पूर्णि. पहले दिन। **श्राद्ध :–**प्रति से चतु. तक अपने दिन, पंच. से पूर्णि. तक पहले दिन। **A.** गण्डान्त। आनन्द:। **B.** देवशयनी एकादशी, सौम्य:। **C.** गण्डान्त, लोकभवन यात्रा (बनतालाब जम्मू) कालदण्ड:।

श्रावण कृष्ण पक्ष सप्तर्षि 5073 विक्रमी 2054 शाका 1919 ईस्वी 1997

21 जुलाई की ग्रह स्थिति :-**कर्क** में सूर्य, बुध। **कन्या** में भौम। **सिंह** में शुक्र, राहु। **मकर** में बृहस्पति। **मीन** में शनि। **कुम्भ** में केतु।

दिन	मान	श्राव	जुला	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	वर्षा ऋतु-दक्षिणायन (ग्रह संचार बजे मिनटों में)
34	45	6	21	सोम	श्रव	दि	4	45	प्रति.	दि	5	39	त्र्यह: (द्वि. प्र. 2-22) 3-31 रात **कुम्भ में चन्द्र** और पंचक **A.**
	42	7	22	भौम	धनि	दि	2	17	तृती.	प्र	11	6	5-10 शां **सिंह में बुध** उन्मूलम्।
	40	8	23	बुध	शत	दि	11	56	चतु.	प्र	8	1	4-20 रात **मीन में चन्द्र,** संकट चतुर्थी, मानसम्।
	37	9	24	गुरु	पूभा	दि	9	50	पंच.	दि	5 शां	13	पांज़थयात्रा, मुद्गरम्।
	32	10	25	शुक्र	उभा	दि	8	5	षष्ठी.	दि	2	48	1-3 रात से गण्डान्त, ध्वज:
	27	11	26	शनि	रेव	दि	6 सु	44	सप्त.	दि	12	48	12-30 दिन तक गण्डान्त, 6-44 प्रात: **मेष में चन्द्र** और **B.**
	27	12	27	रवि	अश्वि	दि	5 सु	51	अष्ट.	दि	11	16	(भर प्र 5-27) आनन्द:।
	25	13	28	सोम	कृति	प्र	5	31	नव.	दि	10	13	11-25 दिन **वृष में चन्द्र** स्थिर:।
	20	14	29	भौम	रोहि	–	दिन	रात	दश.	दि	9	39	मातंग:।
	15	15	30	बुध	रोहि	दि	6 सु	24	एका.	दि	9	34	6-30 शां **मिथुन में चन्द्र** कमला एकादशी, शूलम्।
	15	16	31	गुरु	मृग	दि	7	4	द्वाद.	दि	9	57	मृत्यु:।
	10	17	अग.	शुक्र	आर्द्र	दि	8	30	त्रयो.	दि	10	46	3-52 रात **कर्क में चन्द्र** काम्य:।
	2	18	2	शनि	पुन	दि	10	23	चर्तु.	दि	12	3	छत्रम्।
	2	19	3	रवि	तिष्य	दि	12	39	अमा.	दि	1	44	श्रीवत्स:

मध्याह्न :–प्रति से सप्त. अपने दिन, अष्ट. से त्रयो तक पहले दिन, चर्तु. अमा. अपने दिन। **श्राद्ध** :–प्रति पहले दिन, तृती. से पंच. तक अपने दिन, षष्ठी से अमा. पहले दिन। **A.** आरम्भ, सिद्ध:। **B.** पंचक समाप्त, प्राजापत्य:।

श्रावण शुक्लपक्ष सप्तर्षि 5073 विक्रमी 2054 शाका 1919 ईस्वी 1997

4 अगस्त की ग्रह स्थिति :- **कर्क** में सूर्य। **तुला** में भौम। **सिंह** में बुध, शुक्र, राहु। **मकर** में बृहस्पति। **मीन** में शनि। **कुम्भ** में केतु।

दिन	मान	श्राव	अग	वार	नक्षत्र	बजे	मि	तिथि	बजे	मि	वर्षा ऋतु दक्षिणायन। (ग्रह संचार बजे मिनटों में)
33	57	20	4	सोम	अश्ले दि	3	18	प्रति. दि	3	48	3-18 दिन **सिंह में चन्द्र,** तुला में **भौम** 8 बजे दिन, 8-36 प्रातः से A.
	55	21	5	भौम	मघा दि	6	15 शां	द्विती. दि	6	11शां	कालदण्डः।
	47	22	6	बुध	पूफा प्र	9	23	तृती. प्र	8	46	4-11 रात **कन्या में चन्द्र,** स्थिरः।
	42	23	7	गुरु	उफा प्र	12	34	चतु. प्र	11	24	मातंगः।
	37	24	8	शुक्र	हस्त प्र	3	7	पंच. प्र	1	54	नाग पंचमी, अमृतम्।
	37	25	9	शनि	चित्र –	दिन	रात	षष्ठ. प्र	4	3	5-1 शां **तुला में चन्द्र,** कुमार पष्ठी, काण्डः।
	32	26	10	रवि	चित्र दि	6	18	सप्त. प्र	5	40	सूर्यमास, काम्यः।
	30	27	11	सोम	स्वाति दि	8	28	अष्ट. -	दिन	रात	दिन अधिक, 3-38 रात **वृश्चिक में चन्द्र,** छत्रम्।
	22	28	12	भौम	विशा दि	9	55	अष्ट. दि	6	34	3-31 दिन **कन्या में शुक्र** श्रीवत्सः।
	22	29	13	बुध	अनु दि	10	55	नव. दि	6	40	सौम्यः।
	17	30	14	गुरु	ज्येष्ठ दि	10	26	दश. दि	5	56 सु	त्र्यहः (एका प्र 4-23) 10-26 दिन **धनु में चन्द्र,** और मूल B.
	12	31	15	शुक्र	मूल दि	9	29	द्वाद. प्र	2	8	मासान्त, श्रावण द्वादशी, शोपियान यात्रा, स्थिरः।
	7	भाद्र	16	शनि	पूषा दि	7	52	त्रयो. प्र	11	17	संक्रान्ति व्रत, 9-45 रात **सिंह** में **सूर्य** मुहूर्त 45 पहाडी, 1-22 C.
	0	2	17	रवि	श्रव प्र	3	6	चर्तु. प्र	8	00	मुसलम्।
32	55	3	18	सोम	धनि प्र	12	18	पूर्णि. दि	4	26	1-43 दिन **कुम्भ में चन्द्र** और पंचक आरम्भ, रक्षा बन्धन, D.

मध्याह्न :–प्रति से अष्ट तक अपने दिन, नव, दश, पहले दिन, द्वा से पूर्णि अपने दिन। **श्राद्ध :**–प्रति, द्वि पहले दिन, तृती से अष्ट तक अपने दिन, नव-दश पहले दिन, दश से पूर्णि. अपने दिन। **A.** 9 बजे शां तक गण्डान्त, सौम्यः **B.** आरम्भ। 4-46 प्रातः से 4-8 दिन तक गण्डान्त पवित्रा एकादशी, कालदण्डः। **C.** दिन **मकर में चन्द्र** (उपा प्र 5-41) मातंगः। **D.** अमरनाथ यात्रा, थजीवार यात्रा, बिर्जवहारा शूलम्

भाद्र कृष्णपक्ष सप्तर्षि सं० 5073 विक्रमी 2054 शाका 1919 ईस्वी 1997

19 अगस्त की ग्रह स्थिति :-**सिंह** में सूर्य, बुध, राहु। **कन्या** में शुक्र। तुला में भौम। **मकर** में वृहस्पति। **मीन** में शनि। **कुम्भ** में केतु।

दिन	मान	भाद्र	अग.	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	वर्षा ऋतु, दक्षिणायन। (ग्रह संचार बजे मिनटों में)
32	50	4	19	भौम	शत	प्र	9	26	प्रति.	दि	12	45	मृत्यु:।
	47	5	20	बुध	पूभा	दि	6	41 शां	द्विती.	दि	9	6	1-21 दिन **मीन में चन्द्र,** त्र्यह: (तृ प्र 5-40) काम्य:।
	42	6	21	गुरु	उभा	दि	4	12	चतु.	प्र	2	34	संकट चतुर्थी, नवदलयात्रा, छत्रम्।
	40	7	22	शुक्र	रेव	दि	2	8	पंच.	प्र	11	55	2-8 दिन **मेष में चन्द्र** और पंचक समाप्त 8-38 **A.**
	35	8	23	शनि	अश्वि	दि	2	34	षष्ठी.	प्र	9	50	सौम्य: चन्दनषष्ठा
	35	9	24	रवि	भर	दि	11	37	सप्त.	प्र	8	23	5-28 शां **वृष में चन्द्र, जन्माष्टमी,** कालदण्ड:।
	32	10	25	सोम	कृति	दि	11	18	अष्ट.	प्र	7	35	स्थिर:।
	22	11	26	भौम	रोहि	दि	11	38	नव.	प्र	7	26	12-3 रात **मिथुन में चन्द्र,** मातंग:।
	22	12	27	बुध	मृग	दि	12	36	दश.	प्र	7	56	अमृतम्।
	15	13	28	गुरु	आर्द्र	दि	2	9	एका.	प्र	9	00	अजा एकादशी, काण्ड:
	12	14	29	शुक्र	पुन	दि	4	12	द्वा.	प्र	10	34	9-39 दिन **कर्क में चन्द्र,** गोवत्सा पूजा, अलापक:
	5	15	30	शनि	तिष्य	दि	6	40 शां	त्रयो.	प्र	12	33	कलियुग जन्म, मैत्रम्।
31	57	16	31	रवि	अश्ले	प्र	9	27	चर्तु.	प्र	2	50	9-27 रात **सिंह में चन्द्र,** 2-45 दिन से 4-13 रात तक **B.**
	55	17	सप्त	सोम	मघा	प्र	12	28	अमा.	प्र	5	22	कुशामावसी, सोमा मावसी, ध्वांक्ष:

चन्दन षष्ठी 23 अगस्त

जन्माष्टमी 24 अगस्त

मध्याह्न :–प्रति अपने दिन, द्वि पहले दिन, चतु से अमा अपने दिन। **श्राद्ध** :–प्रति, द्वि पहले दिन, चतु से अमा अपने दिन। **A.** प्रात: से 7-47 शां तक गण्डान्त, श्रीवत्स:। **B.** गण्डान्त, श्रीवत्स:

भाद्र शुक्ल पक्ष सप्तर्षि सं० 5073 विक्रमी 2054 शाका 1919 ईस्वी 1997

2 सितम्बर की ग्रह स्थिति :- **सिंह** में सूर्य, बुध, राहु। **तुला** में भौम। **कन्या** में शुक्र। **मकर** में बृहस्पति। **मीन** में शनि। **कुम्भ** में केतु।

दिन	मान	भाद्र	सप्त	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	वर्षा ऋतु, दक्षिणायन, (ग्रह संचार बजे मिनटों में)
31	47	18	2	भौम	पूफा	प्र	3	37	प्रति.	-	दिन	रात	दिन अधिक, धौम्यः।
	42	19	3	बुध	उफा	-	दिन	रात	प्रति.	दि	7	59	10-25 दिन **कन्या में चन्द्र,** प्रवर्धः।
	35	20	4	गुरु	उफा	दि	6 सु	47	द्विती.	दि	10	37	मातंगः। 14 सितम्बर काश्मीरी पण्डितों का बलिदान दिवस
	30	21	5	शुक्र	हस्त	दि	9	50	तृती.	दि	1	7	11-16 रात **तुला में चन्द्र,** हरितालिका तृतीया, अमृतम्।
	27	22	6	शनि	चित्र	दि	12	38	चतु.	दि	3	20	12-43 रात **तुला में शुक्र,** विनायक चतुर्थी, काण्डः।
	20	23	7	रवि	स्वा	दि	3	4	पंच.	दि	5	9	वराह पंचमी, कुमार षष्ठी, अलापकः
	17	24	8	सोम	विशा	दि	4	58	षष्ठी.	दि	6	24 शां	10-33 दिन **वृश्चिक में चन्द्र,** मैत्रम्।
	15	25	9	भौम	अनु	दि	6	14	सप्त.	प्र	7	00	भौम मास, ब्रह्मसरोवर श्राद्ध, वज्रम्।
	10	26	10	बुध	ज्येष्ठ	दि	6	42 शां	अष्ट.	प्र	6	51	6-42 शां **धनु में चन्द्र** और मूल आरम्भ, 12-38 दिन से **A.**
	5	27	11	गुरु	मूला	दि	6	34	नव.	दि	5	57 शां	धौम्यः।
30	57	28	12	शुक्र	पूषा	दि	5	38	दश.	दि	4	18	11-17 रात **मकर में चन्द्र,** प्रवर्धः।
	50	29	13	शनि	उषा	दि	4	2	एका.	दि	1	59	**नारायणी एकादशी,** गौतमनाग यात्रा, क्षयः।
	47	30	14	रवि	श्रव	दि	1	52	द्वाद.	दि	11	5	12-37 रात **कुम्भ में चन्द्र** और पंचक आरम्भ, मुसलम्।
	40	31	15	सोम	धनि	दि	11	16	त्रयो.	दि	7	45	त्र्यहः (चर्तु प्र 4-7) मासान्त। व्यथत्रयोदशी, अनन्त चतुर्दशी, **B.**
	37	असो	16	भौम	शत	दि	8	24	पूर्णि.	प्र	12	21	12-10 रात **मीन में चन्द्र,** 9-41 रात **कन्या में सूर्य मुहूर्त** 30 **C.**

मध्याह्न :–प्रति, अपने दिन द्वि पहले दिन, तृती से एका अपने दिन, द्वा, त्रयो पहले दिन पूर्णि अपने दिन। **श्राद्ध :**–प्रति से षष्ठी पहले दिन, सप्त से नव अपने दिन, दश से त्रयो पहले दिन, पूर्णिमा अपने दिन। **A.** 2-30 रात तक गण्डान्त, **गंगाष्टमी शारदाष्टमी** (गुशी कुपवारा) उमानगरी यज्ञ ध्वांक्षः। **B.** अनन्तनाग यात्रा शूलम् **C.** किनारी, **संक्रान्तिव्रत, चन्द्र ग्रहण,** (पूभा प्र 5:26) [illegible]

आश्विन कृष्ण पक्ष सप्तर्षि सं॰ 5073 विक्रमी 2054 शाका 1919 ईस्वी 1997

17 सितम्बर की ग्रह स्थिति :- **कन्या** में सूर्य। तुला में भौम, शुक्र। **सिंह** में बुध, राहु। **मकर** में बृहस्पति। **मीन** में शनि। **कुम्भ** में केतु।

दिन	मान	असो	सप्त	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	शरद ऋतु, दक्षिणायन, (ग्रह संचार बजे मिनटों में)
30	32	2	17	बुध	उभा	प्र	2	31	प्रति.	प्र	8	36	**पितृपक्षारम्भ,** अलापकः।
	27	3	18	गुरु	रेव	प्र	11	51	द्विती.	दि	5	2 शां	11-51 रात **मेष में चन्द्र** और पंचक समाप्त, 6-30 शां से **A.**
	25	4	19	शुक्र	अश्वि	प्र	9	35	तृती.	दि	1	49	5-12 प्रातः तक गण्डान्त, संकट चतुर्थी, वज्रम्
	17	5	20	शनि	भर	प्र	7	51	चतु.	दि	11	6	1-31 रात **वृष में चन्द्र,** 5-15 प्रातः **वृश्चिक में भौम,** ध्वांक्षः।
	15	6	21	रवि	कृति	प्र	6	48	पंच.	दि	9	1	धौम्यः।
	7	7	22	सोम	रोहि	प्र	6	31	षष्ठी.	दि	7	39	**साहिब सप्तमी** प्रवर्धः।
	5	8	23	भौम	मृग	प्र	6	58	सप्त.	दि	7	4	6-38 प्रातः **मिथुन में चन्द्र,** क्षयः।
30	0	9	24	बुध	आर्द्र	प्र	8	12	अष्ट.	दि	7	18	गजः।
29	55	10	25	गुरु	पुन	प्र	10	6	नव.	दि	8	16	3-34 दिन **कर्क में चन्द्र,** सिद्धः।
	47	11	26	शुक्र	तिष्य	प्र	12	34	दश.	दि	9	53	उन्मूलम्।
	40	12	27	शनि	अश्ले	प्र	3	26	एका.	दि	12	00	3-26 रात **सिंह में चन्द्र,** 8-43 रात से गण्डान्त, **इन्द्र काह B.**
	35	13	28	रवि	मघा	-	दिन	रात	द्वाद.	दि	2	28	10-11 दिन तक गण्डान्त, 12-14 रात **कन्या में बुध,** मुद्गरम्।
	30	14	29	सोम	मघा	दि	6	38	त्रयो.	दि	5	7 शां	ध्वांक्षः।
	25	15	30	भौम	पूफा	दि	9	41	चर्तु.	प्र	7	47	4-28 दिन **कन्या में चन्द्र,** धौम्यः।
	20	16	अक्टू	बुध	उफा	दि	12	48	अमा.	प्र	10	22	**पित्रामावसी,** प्रवर्धः।

साहिब सप्तमी

मध्याह्न :–प्रति से तृती अपने दिन, चतु से दश पहले दिन, एका से अमा अपने दिन। **श्राद्ध :–**प्रति, द्वि अपने दिन, तृती से त्रयो तक पहले दिन, चर्तु, अमा अपने दिन। **A.** गण्डान्त, मैत्रम्। **B.** सन्यासियों का श्राद्ध। मानसम्।

आश्विन शुक्लपक्ष सप्तर्षि सं॰ 5073 विक्रमी 2054 शाका 1919 ईस्वी 1997

2 अक्टूबर की ग्रह स्थिति :- **कन्या** में सूर्य, बुध। **वृश्चिक** में भौम, शुक्र। **मकर** में वृहस्पति। **मीन** में शनि। **सिंह** में राहु। **कुम्भ** में केतु।

दिन	मान	असो	अक्टू	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	शरद ऋतु, दक्षिणायन, ग्रह संचार बजे मिनटों में।
29	17	17	2	गुरु	हस्त	दि	3	45	प्रति.	प्र	12	43	2-3 रात **वृश्चिक में शुक्र, नवरात्रारम्भ** क्षय:
	14	18	3	शुक्र	चित्र	प्र	6	26	द्वित.	प्र	2	47	5-8 प्रात: **तुला में चन्द्र,** गज:।
	7	19	4	शनि	स्वा	प्र	8	47	तृती.	प्र	4	28	सिद्ध:।
	2	20	5	रवि	विशा	प्र	10	44	चतु.	प्र	5	42	4-17 दिन **वृश्चिक में चन्द्र,** उन्मूलम्।
28	57	21	6	सोम	अनु	प्र	12	14	पंच.	प्र	6	29	महायज्ञ दुर्गा मन्दिर नगरोटा मानसम्।
	55	22	7	भौम	ज्येष्ठ	प्र	1	11	षष्ठी.	–	-दिन	रात	7-9 शां से गण्डान्त, 1-11 रात **धनु में चन्द्र** और मूल आरम्भ, **A.**
	47	23	8	बुध	मूला	प्र	1	35	षष्ठी.	दि	6	41	7-20 प्रात: तक गण्डान्त, **त्र्यह:** (सप्त प्र 6-14) ध्वज:।
	40	24	9	गुरु	पूर्षा	प्र	1	23	अष्ट.	प्र	5	17	वृहस्पति मास, **दुर्गाष्टमी** प्राजापत्य:।
	35	25	10	शुक्र	उषा	प्र	12	34	नव.	प्र	3	41	7-14 प्रात: **मकर में चन्द्र, महानवमी,** आनन्द:।
	32	26	11	शनि	श्रव	प्र	11	11	दश.	प्र	1	30	**दसेरा,** स्थिर:।
	27	27	12	रवि	धनि	प्र	9	18	एका.	प्र	10	49	10-18 दिन **कुम्भ में चन्द्र** और पंचक आरम्भ, पापांकुशा **B.**
	25	28	13	सोम	शत	प्र	6	59	द्वाद.	प्र	7	43	अमृतम्।
	20	29	14	भौम	पूभा	दि	4	23	त्रयो.	दि	4	20	11-3 दिन **मीन में चन्द्र,** काण्ड:।
	15	30	15	बुध	उभा	दि	1	37	चर्तु.	दि	12	48	12-42 रात **तुला में बुध,** अलापक:।
	7	31	16	गुरु	रेव	दि	10	52	पूर्णि	दि	9	16	मासान्त, त्र्यह: (प्र प्र 5-53) 10-52 दिन **मेष में चन्द्र** और **C.**

दुर्गाष्टमी
9 अक्टूबर

महानवमी
10 अक्टूबर

मध्याह्न :–प्रति से चर्तु अपने दिन, पूर्णि का पहले दिन। **श्राद्ध :–**प्रति से त्रयो अपने दिन, चर्तु पूर्णि पहले दिन। **A.** कुमार षष्ठी, दिन अधिक मुद्गरम्।
B. एकादशी, मातंग: **C.** पंचक समाप्त, 5-32 प्रात: से 4-5 दिन तक गण्डान्त, मैत्रम्।

कार्तिक कृष्णपक्षे सप्तर्षि सं॰ 5073 विक्रमी 2054 शाका 1919 ईस्वी 1997

17 अक्टूबर की ग्रह स्थिति :- तुला में सूर्य, बुध। वृश्चिक में भौम, शुक्र। मकर में वृहस्पति। मीन में शनि। सिंह में राहु। कुम्भ में केतु।

दिन	मान	कत.	अक्टू	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	शरद ऋतु, दक्षिणायन, (ग्रह संचार बजे मिनटों में)
28	7	1	17	शुक्र	अश्वि	दि	8	18	द्विती.	प्र	2	52	**संक्रान्ति व्रत**, 9-37 दिन **तुला में सूर्य** मुहूर्त 15 किनारी, **A.**
27	57	2	18	शनि	कृति	प्र	4	24	तृती.	प्र	12	20	11-37 दिन **वृष में चन्द्र,** ध्वजः।
	52	3	19	रवि	रोहि	प्र	3	23	चतु.	प्र	10	28	संकट चतुर्थी, प्राजापत्यः।
	52	4	20	सोम	मृग	प्र	3	9	पंच.	प्र	9	22	3-10 दिन **मिथुन में चन्द्र,** आनन्दः।
	47	5	21	भौम	आर्द्र	प्र	3	44	षष्ठी.	प्र	9	6	चरः।
	42	6	22	बुध	पुन	प्र	4	9	सप्त.	प्र	9	42	10-43 रात **कर्क में चन्द्र** मुसलम्।
	37	7	23	गुरु	तिष्य	-	दिन	रात	अष्ट.	प्र	11	5	शूलम्।
	32	8	24	शुक्र	तिष्य	दि	7	17	नव.	प्र	1	8	उन्मूलम्।
	27	9	25	शनि	अश्ले	दि	9	59	दश.	प्र	3	37	9-59 दिन **सिंह में चन्द्र,** 3 बजे 20 प्रातः से 4-47 दिन तक **B.**
	20	10	26	रवि	मघा	दि	1	3	एका.	प्र	6	20	मुद्गरम्।
	17	11	27	सोम	पूफा	दि	4	14	द्वा.	-	दिन	रात	दिन अधिक, 11-1 रात **कन्या में चन्द्र,** ध्वजः।
	12	12	28	भौम	उफा	प्र	7	20	द्वाद.	दि	9	2	प्राजापत्यः।
	7	13	29	बुध	हस्त	प्र	10	13	त्रयो.	दि	11	33	आनन्दः।
	2	14	30	गुरु	चित्र	प्र	12	43	चर्तु.	दि	1	44	11-31 दिन **तुला में चन्द्र,** 1-46 दिन **धनु में शुक्र C.**
	0	15	31	शुक्र	स्वा	प्र	2	49	अमा.	दि	3	31	महावीर निर्वाण दिवस, अन्नकूट गोवर्धन पूजा, मुसलम्।

मध्याह्न :–द्विती से द्वाद. अपने दिन, त्रयो का पहले दिन, चर्तु-अमा अपने दिन। **श्राद्ध :**–द्वि से द्वाद अपने दिन, त्रयो से अमा पहले दिन। **A.** (भर प्र 6-5) चक्रम्। **B.** गण्डान्त, मानसम्। **C.** दीपमाला चरः।

कार्तिक शुक्लपक्ष सप्तर्षि सं० 5073 विक्रमी सं० 2054 शाका 1919 ईस्वी 1997

1 नवम्बर की ग्रह स्थिति :–तुला में सूर्य, बुध। धनु में भौम, शुक्र। मकर में वृहस्पति। मीन में शनि। सिंह में राहु। कुम्भ में केतु।

दिन	मान	कत.	नव	वार	नक्षत्र	बजे	मि	तिथि	बजे	मि	शरद ऋतु-दक्षिणायन-ग्रहसंचार वजे मिनटों में
26	57	16	1	शनि	विशा प्र	4	32	प्रति. दि	4	51	10-9 रात **वृश्चिक में चन्द्र,** 4:43 प्रात: धनु में भौम शूलम्
	47	17	2	रवि	अनु प्र	5	47	द्विती. दि	5	45	विश्वकर्मा पूजा, भाई दूज, मृत्यु:।
	42	18	3	सोम	ज्येष्ठ प्र	6	38	तृती. प्र	6	13	8-25 रात **वृश्चिक में बुध,** 12-23 रात से गण्डान्त, मानसम्।
	37	19	4	भौम	मूल -	-दिन	रात-	चतु. प्र	6	16	6-38 प्रात: **धनु में चन्द्र** और मूल आरम्भ, 12 बजे 50 दिन **A.**
	32	20	5	बुध	मूल दि	7	6	पंच. प्र	5	54	ध्वज:।
	27	21	6	गुरु	पुषा दि	7	9	षष्ठ. दि	5	शां 8	1-8 दिन **मकर में चन्द्र,** कुमार षष्ठी, (उषा प्र 6-48) प्राजापत्य:।
	22	22	7	शुक्र	श्रव प्र	6	3	सप्त. दि	3	58	आनन्द:।
	20	23	8	शनि	धनि प्र	4	55	अष्ट. दि	2	23	5-32 शां **कुम्भ में चन्द्र** और पंचक आरम्भ, **शनिमास,** प्रवर्ध:।
	17	24	9	रवि	शत प्र	3	24	नव. दि	12	24	क्षय:।
	12	25	10	सोम	पूभा प्र	1	33	दश. दि	10	3	8-2 रात **मीन में चन्द्र,** गज:।
	10	26	11	भौम	उभा प्र	11	26	एका. दि	7	24	त्र्यह: (द्वा. प्र 4-31) हरिबोधिनी काह, शिवस्वाप, सिद्ध:
	5	27	12	बुध	रेव प्र	9	12	त्रयो. प्र	1	30	9-12 रात **मेष में चन्द्र** और पंचक समाप्त, 3-34 दिन से **B.**
	2	28	13	गुरु	अश्वि दि	6	56	चर्तु प्र	10	31	मानसम्।
25	57	29	14	शुक्र	भर दि	4	48	पूर्णि प्र	7	42	10-19 रात **वृष में चन्द्र** मुद्गरम्।

मध्याह्न :–प्रति से नव अपने दिन, दश, एका पहले दिन, त्रयो से पूर्णि अपने दिन। **श्राद्ध :**–प्रति द्विती पहले दिन, तृती से षष्ठी अपने दिन, सप्त से एका पहले दिन, त्रयो से पूर्णि अपने दिन। **A.** तक गण्डान्त। मुद्गरम् **B.** 2-17 रात तक गण्डान्त उन्मूलम्।

मार्ग कृष्णपक्ष सप्तर्षि सं॰ 5073 विक्रमी 2054 शाका 1919 ईस्वी 1997

15 नवम्बर की ग्रहस्थिति :- तुला में सूर्य। **वृश्चिक में बुध। धनु में भौम, शुक्र। मकर में बृहस्पति। मीन में शनि। सिंह में राहु। कुम्भ में केतु**

दिन	मान	कत.	नव	वार	नक्षत्र	बजे	मि	तिथि	बजे	मि	हेमन्त ऋतु, दक्षिणायन (ग्रह संचार बजे मिनटों में)
25	52	30	15	शनि	कृति दि	2	59	प्रति. दि	5	12 शां	मासान्त, ध्वजः।
	47	मगर	16	रवि	रोहि दि	1	38	द्विती. दि	3	12	1-11 रात **मिथुन में चन्द्र,** 9-25 दिन **वृश्चिक में सूर्य** मुहूर्त **A.**
	47	2	17	सोम	मृग दि	12	54	तृती. दि	1	50	संकट चतुर्थी, आनन्दः।
	42	3	18	भौम	आर्द्र दि	12	55	चतु. दि	1	15	चरः।
	40	4	19	बुध	पुन दि	1	44	पंच. दि	1	29	7-27 प्रातः **कर्क में चन्द्र** मुसलम्।
	35	5	20	गुरु	तिष्य दि	3	21	षष्ठी. दि	2	32	शूलम्।
	30	6	21	शुक्र	अश्ले दि	5 40 शां		सप्त. दि	4	20	5-40 शां **सिंह में चन्द्र,** 11-7 दिन से 12-25 रात तक **B.**
	27	7	22	शनि	मघा प्र	8	30	अष्ट. प्र	6	42	महाकाल भैरवाष्टमी, काम्यः।
	25	8	23	रवि	पूफा प्र	11	38	नव. प्र	9	23	छत्रम्।
	20	9	24	सोम	उफा प्र	2	46	दश. प्र	12	7	4-35 रात **धनु में बुध,** 6-25 प्रातः **कन्या में चन्द्र,** श्रीवत्सः।
	17	10	25	भौम	हस्त प्र	5	41	एका. प्र	2	37	उत्पन्ना एकादशी, सौम्यः।
	15	11	26	बुध	चित्र -	दिन	रात	द्वाद. प्र	4	44	6-59 शां **तुला में चन्द्र,** कालदण्डः।
	12	12	27	गुरु	चित्र दि	8	11	त्रयो. प्र	6	18	चरः।
	7	13	28	शुक्र	स्वा दि	10	11	चर्तु. -	दिन	रात	दिन अधिक, मुसलम्।
	5	14	29	शनि	विशा दि	11	37	चर्तु. दि	7	18	5-19 प्रातः **वृश्चिक में चन्द्र** शूलम्।
	2	15	30	रवि	अनु दि	12	32	अमा दि	7	44	मृत्युः।

मध्याह्न :-प्रति से चर्तु तक अपने दिन, अमा पहले दिन **श्राद्ध** :-प्रति से सप्त पहले दिन, अष्ट से चर्तु अपने दिन अमा का पहले दिन। **A.** 45 समुद्री, **संक्रान्ति व्रत,** प्राजापत्यः **B.** गण्डान्त, मृत्युः।

मार्ग शुक्ल पक्ष सप्तर्षि से 5073 विक्रमी 2054 शाका 1919 ईस्वी 1997

1 दिसम्बर की ग्रह स्थिति :-**वृश्चिक** में सूर्य। **धनु** में भौम, बुध। **मकर** में शुक्र, बृहस्पति। **मीन** में शनि। **सिंह** में राहु। **कुम्भ** में केतु।

दिन	मान	मग	दस	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	हेमन्त ऋतु, दक्षिणायन (ग्रह संचार बजे मिनटों में)
25	0	16	1	सोम	ज्येष्ठ	दि	12	58	प्रति	दि	7	40	त्र्यहः, (दि० प्र 7-10) 12-58 दिन **धनु में चन्द्र** और मूल **A.**
	0	17	2	भौम	मूला	दि	1	00	तृती.	प्र	6	20	10-12 दिन **मकर में शुक्र** छत्रम्।
24	57	18	3	बुध	पूर्षा	दि	12	43	चतु.	प्र	5	12	6-36 शां **मकर में चन्द्र** श्रीवत्सः।
	55	19	4	गुरु	उषा	दि	12	10	पंच.	प्र	3	51	सौम्यः।
	52	20	5	शुक्र	श्रव	दि	11	25	षष्ठी.	प्र	2	18	10-58 रात **कुम्भ में चन्द्र** और पंचक आरम्भ, कुमार षष्ठी, धौम्यः।
	52	21	6	शनि	धनि	दि	10	28	सप्त.	प्र	12	35	प्रवर्धः।
	50	22	7	रवि	शत	दि	9	21	अष्ट.	प्र	10	41	2-25 रात **मीन में चन्द्र** क्षयः।
	47	23	8	सोम	पूभा	दि	8	5	नव.	प्र	8	38	चन्द्र मास और चन्द्र वर्ष (उभा प्र 6-39) गजः।
	45	24	9	भौम	रेव	प्र	5	7	दश.	प्र	6	27	11-30 रात से गण्डान्त, शूलम्
	47	25	10	बुध	अश्वि	प्र	3	32	एका.	दि	4	11	5-7 प्रातः से **मेष में चन्द्र** और पंचक समाप्त, 10-45 दिन **B.**
	45	26	11	गुरु	भर	प्र	1	59	द्वाद.	दि	1	55	काम्यः।
	45	27	12	शुक्र	कृति	प्र	12	36	त्रयो.	दि	11	44	7-37 प्रातः **वृष में चन्द्र** छत्रम्।
	42	28	13	शनि	रोहि	प्र	11	29	चर्तु.	दि	9	45	दत्तात्रेय जयन्ती, श्रीवत्सः।
	40	29	14	रवि	मृग	प्र	10	47	पूर्णि	दि	8	7	11-4 दिन **मिथुन में चन्द्र,** मासान्त मुंजहर तहर त्र्यहः सौम्यः।

मध्याह्न :–प्रति का पहले दिन, तृती से द्वाद अपने दिन, त्रयो से पूर्णि पहले दिन। **श्राद्ध** :–प्रति का पहले दिन, तृती से एकां तक अपने दिन, द्वा से पूर्णि तक पहले दिन। **A.** आरम्भ, 5-38 प्रातः से 6-58 शां तक गण्डान्त, काम्यः **B.** तक गण्डान्त, 2-2 दिन **मकर में भौम,** गीता जयन्ती, मौक्षदा काह, मृत्युः

पौष कृष्ण पक्ष सप्तर्षि सं॰ 5073 विक्रमी 2054 शाका 1919 ईस्वी 1997

15 दिसम्बर की ग्रहस्थिति :–**धनु** में सूर्य, बुध। **मकर** में भौम, बृहस्पति, शुक्र। **मीन** में शनि। **सिंह** में राहु। **कुम्भ** में केतु।

दिनमान	पौष	दस	वार	नक्षत्र	बजे	मि	तिथि	बजे	मि	हेमन्त ऋतु-दक्षिणायन, (ग्रह संचार बजे मिनटों में)
24 40	1	15	सोम	आर्द्र प्र	10	39	द्विती. प्र	6	25	12-13 रात **धनु में सूर्य** मुहूर्त 45 पहाडी, कालदण्ड:।
37	2	16	भौम	पुन प्र	11	9	तृती. प्र	6	34	4-57 दिन **कर्क में चन्द्र**, संक्रान्ति व्रत, स्थिर:।
40	3	17	बुध	तिष्य प्र	12	22	चतु. प्र	7	27	मातंग:।
37	4	18	गुरु	अश्ले प्र	2	17	पंच. –	दिन	रात	2-17 रात **सिंह में चन्द्र**, 7-50 शां से गण्डान्त 4-57 दिन **A.**
35	5	19	शुक्र	मघा प्र	4	48	पंच. दि	9	4	8-57 दिन तक गण्डान्त, काण्ड:।
35	6	20	शनि	पूफा	दिन	रात	षष्ठी. दि	11	16	अलापक:।
35	7	21	रवि	पूफा दि	7	45	सप्त. दि	1	51	2-51 दिन **कन्या में चन्द्र**, उत्तरायण, छत्रम्।
35	8	22	सोम	उफा दि	10	52	अष्ट. दि	4	35	महाकाली जयन्ती, श्रीवत्स:।
35	9	23	भौम	हस्त दि	1	54	नव. प्र	7	9	3-18 रात **तुला में चन्द्र** सौम्य:।
35	10	24	बुध	चित्र दि	4	36	दश. प्र	9	19	आनन्देश्वर भैरव जयन्ती, कालदण्ड:।
35	11	25	गुरु	स्वाति प्र	6	46	एका. प्र	10	53	सफला एकादशी, स्थिर:।
37	12	26	शुक्र	विशा प्र	8	17	द्वाद. प्र	11	46	1-58 दिन **वृश्चिक में चन्द्र** मातंग:।
37	13	27	शनि	अनु प्र	9	7	त्रयो. प्र	11	57	अमृतम्।
37	14	28	रवि	ज्येष्ठ प्र	9	18	चतु. प्र	11	29	9-18 रात **धनु में चन्द्र** और मूल आरम्भ, 3-15 दिन से 3-15 **B.**
37	15	29	सोम	मूला प्र	8	57	अमा. प्र	10	27	यक्षामावसी, **सोमामावसी** अलापक:।

मध्याह्न :–प्रति से चतु अपने दिन, पंच षष्ठी पहले दिन, सप्त से अमा अपने दिन। **श्राद्ध** :–प्रति से पंच अपने दिन, षष्ठी, सप्त, अष्ट पहले दिन, नव से अमा अपने दिन। **A. वृश्चिक में वक्री बुध,** संकट चतुर्थी, अमृतम् **B.** रात तक गण्डान्त, काण्ड:।

पौष शुक्ल पक्ष सप्तर्षि सं॰ 5073 विक्रमी 2054 शाका 1919 ईस्वी 1997-98

30 दिसम्बर की ग्रह स्थिति :-धनु में सूर्य। **मकर** में भौम, बृहस्पति, शुक्र। **वृश्चिक** में बुध। **मीन** में शनि। **सिंह** में राहु। **कुम्भ** में केतु।

दिन	मान	पौष	दस	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	हेमन्त ऋतु, उत्तरायण (ग्रह संचार बजे मिनटों में)
24	40	16	30	भौम	पूषा	प्र	8	7	प्रति.	प्र	8	57	1-53 रात **मकर में चन्द्र**, मैत्रम्।
	40	17	31	बुध	उषा	प्र	7	1	द्विती.	प्र	7	10	वज्रम्।
	42	18	जन	गुरु	श्रव	प्र	5	42	तृती.	दि	5	10	ध्वजः। 1998
	42	19	2	शुक्र	धनि	दि	4	16	चतु.	दि	3	4	4-59 प्रातः **कुम्भ में चन्द्र** और पंचक आरम्भ, प्राजापत्यः।
	45	20	3	शनि	शत	दि	2	49	पंच.	दि	12	56	कुमार षष्ठी। आनन्दः।
	47	21	4	रवि	पूभा	दि	1	24	षष्ठी.	दि	10	50	7-45 प्रातः **मीन में चन्द्र**, चरः।
	47	22	5	सोम	उभा	दि	12	3	सप्त.	दि	8	47	त्र्यहः। (अष्ट प्र 6-51) मुसलम्।
	47	23	6	भौम	रेव	दि	10	48	नव.	प्र	5	1	10-48 दिन **मेष में चन्द्र** और पंचक समाप्त, 5-5 प्रातः से **A.**
	50	24	7	बुध	अश्वि	दि	9	40	दश.	प्र	3	20	1-41 दिन **धनु में बुध**, बुधमास, मृत्युः।
	52	25	8	गुरु	भर	दि	8	41	एका.	प्र	1	49	2-28 दिन **वृष में चन्द्र**, 3-48 दिन **कुम्भ में बृहस्पति B.**
	55	26	9	शुक्र	कृति	दि	7	53	द्वाद.	प्र	12	33	छत्रम्।
	55	27	10	शनि	रोहि	प्र	7	20	त्रयो.	प्र	11	35	7-10 शां **मिथुन में चन्द्र**, श्रीवत्सः।
	57	28	11	रवि	मृग	प्र	7	6	चर्तु.	प्र	11	00	सौम्यः।
25	0	29	12	सोम	आर्द्र	प्र	7	17	पूर्णि.	प्र	10	54	1-43 रात **कर्क में चन्द्र**, कालदण्डः।

मध्याह्न :—प्रति से पंच तक अपने दिन, षष्ठी, सप्त पहले दिन, नव से पूर्णि तक अपने दिन। **श्राद्ध** :—प्रति से तृती अपने दिन, चतु से सप्त पहले दिन, नव से पूर्णि अपने दिन। **A.** 4-55 शां तक गण्डान्त, शूलम्। **B.** पुत्रदा-एकादशी, काम्यः।

माघ कृष्णपक्ष सप्तर्षि सं॰ 5073 विक्रमी 2054 शाका 1919 ईस्वी 1998

13 जनवरी की ग्रह स्थितिः- **धनु** में सूर्य, बुध। **मकर** में भौम, शुक्र। **कुम्भ** में बृहस्पति, केतु। **मीन** में शनि। **सिंह** में राहु।

दिन	मान	पौष	जन	बार	नक्षत्र		क्षेत्र	मि	तिथि		बजे	मि	शिशर ऋतु, उत्तरायण (ग्रह संचार बजे मिनटों में
25	2	30	13	**भौम**	पुन	दि	7	56	**प्रति.**	प्र	11	20	मासान्त, स्थिरः
	5	माघ	14	**बुध**	तिष्य	दि	9	8	**द्विती.**	प्र	12	21	10-47 दिन **मकर में सूर्य** मुहूर्त 15 किनारी, संक्रान्ति व्रत, **A.**
	7	2	15	**गुरु**	अश्ले	दि	10	54	**तृती.**	प्र	1	58	10-54 दिन **सिंह में चन्द्र,** 4-28 प्रातः से 5-30 शां तक **B.**
	10	3	16	**शुक्र**	मघा	दि	1	13	**चतु.**	प्र	4	6	संकट चतुर्थी, काण्डः।
	12	4	17	**शनि**	पूफा	दि	3	58	**पंच.**	प्र	6	37	10-43 रात **कन्या में चन्द्र,** 7-13 शां **कुम्भ में भौम** अलापकः।
	17	5	18	**रवि**	उफा	प्र	7	1	**षष्ठी.**	-	दिन	रात	मैत्रम्।
	20	6	19	**सोम**	हस्त	प्र	10	8	**षष्ठी.**	दि	9	19	**साहिब सप्तमी,** काश्मीरी पण्डितों का जन्म भूमि निष्कासन दिवस **C.**
	22	7	20	**भौम**	चित्र	प्र	1	4	**सप्त.**	दि	11	57	11-38 दिन **तुला में चन्द्र,** 11-43 दिन **धनु में वक्री शुक्र, D.**
	30	8	21	**बुध**	स्वा	प्र	3	35	**अष्ट.**	दि	2	16	धौम्यः।
	37	9	22	**गुरु**	विशा	प्र	5	30	**नव.**	दि	4	2	11-5 रात **वृश्चिक में चन्द्र** प्रवर्धः।
	35	10	23	**शुक्र**	अनु	प्र	6	41	**दश.**	दि	5	6 शां	क्षयः।
	37	11	24	**शनि**	ज्येष्ठ	प्र	7	6	**एका.**	दि	5	23 शां	पट्तिला एकादशी, एक बजे रात से गण्डान्त, अमृतम्।
	42	12	25	**रवि**	मूला	प्र	6	48	**द्वाद.**	दि	4	53	1-4 दिन तक गण्डान्त, 7-6 प्रातः **धनु में चन्द्र,** और मूल **E.**
	45	13	26	**सोम**	पूषा	प्र	6	51	**त्रयो.**	दि	3	40	**शिव चतुर्दशी,** अलापकः।
	50	14	27	**भौम**	उषा	प्र	4	23	**चर्तु.**	दि	1	50	11-31 दिन **मकर में चन्द्र,** मैत्रम्।
	52	15	28	**बुध**	श्रव	प्र	2	32	**अमा**	दि	11	31	छत्रम्।

मध्याह्न :–प्रति से षष्ठी अपने दिन, सप्त का पहले दिन, अष्ट से चर्तु अपने दिन, अमा का पहले दिन। **श्राद्ध :**–प्रति से षष्ठी अपने दिन, सप्त से अमा पहले दिन। A. [illegible]

माघ शुक्ल पक्ष सप्तर्षि सं॰ 5073 विक्रमी 2054 शाका 1919 ईस्वी 1998

29 जनवरी की ग्रह स्थिति :– **मकर** में सूर्य, बुध। **कुम्भ** में भौम, बृहस्पति, केतु। **धनु** में शुक्र। **मीन** में शनि। **सिंह** में राहु।

दिन	मान	माघ	जन.	वार	नक्षत्र	बजे	मि	तिथि	बजे	मि	शिशर ऋतु, उत्तरायण-(ग्रह संचार बजे मिनटों में)
25	57	16	29	गुरु	धनि प्र	12	27	प्रति. दि	8	52	त्र्यहः, (द्वि. प्र 6-3) 1-31 दिन **कुम्भ में चन्द्र** और पंचक **A.**
26	0	17	30	शुक्र	शत प्र	10	17	तृती. प्र	3	9	**गौरी तृतीया,** सौम्यः
	5	18	31	शनि	पूभा प्र	8	11	चतु. प्र	12	22	**त्रिपुरा चतुर्थी,** 2-42 दिन **मीन में चन्द्र,** कालदण्डः।
	7	19	फर	रवि	उभा प्र	6	13	पंच. प्र	9	43	**वसन्त पंचमी,** स्थिरः।
	12	20	2	सोम	रेव दि	4	30	षष्ठी. प्र	7	20	कुमार षष्ठी, 4-30 दिन **मेष में चन्द्र** और पंचक समाप्त, **B.**
	15	21	3	भौम	अश्वि दि	3	6	सप्त. दि	5	17 शां	सूर्य सप्तमी, मार्तण्ड तीर्थ यात्रा अमृतम्।
	20	22	4	बुध	भर दि	2	3	अष्ट. दि	3	36	**भीष्माष्टमी,** बुधाष्टमी, 7-51 रात **वृष में चन्द्र** काण्डः
	22	23	5	गुरु	कृति दि	1	24	नव. दि	2	19	अलापकः।
	27	24	6	शुक्र	रोहि दि	1	10	दश. दि	1	28	शुक्रमास, 1-13 रात **मिथुन में चन्द्र** मैत्रम्।
	32	25	7	शनि	मृग दि	1	22	एका. दि	1	3	जया काह भीमसेनकाह, वज्रम्।
	37	26	8	रवि	आर्द्र दि	2	00	द्वाद. दि	1	4	ध्वांक्षः।
	42	27	9	सोम	पुन दि	3	3	त्रयो. दि	1	33	8-45 दिन **कर्क में चन्द्र,** यक्षणी चर्तुदशी, धौम्यः
	47	28	10	भौम	तिष्य दि	4	34	चर्तु. दि	2	29	प्रवर्धः।
	50	29	11	बुध	अश्ले प्र	6	31	पूर्णि. दि	3	53	6-31 शां **सिंह में चन्द्र,** 12-1 दिन से 1-5 रात तक **C.**

वसन्त पंचमी
1 फरवरी

मध्याह्न :–प्रति का पहले दिन, तृती से पूर्णि अपने दिन। **श्राद्ध** :–प्रति का पहले दिन, तृती से सप्त अपने दिन, अष्ट से पूर्णि पहले दिन। **A.** आरम्भ 8-55 रात **मकर में बुध,** श्रीवत्सः **B.** 11 बजे 4 मि दिन से 10-5 रात तक गण्डान्त, मातंगः। **C.** गण्डान्त, मासान्त, काव पूर्णिमा, **माघ पूर्णिमा क्षयः**

फाल्गुन कृष्ण पक्ष सप्तर्षि सं० 5073 विक्रमी 2054 शाका 1919 ईस्वी 1998

12 फरवरी की ग्रह स्थिति :–**कुम्भ** में सूर्य, भौम, बृहस्पति, केतु। **धनु** में शुक्र। **मीन** में शनि। **सिंह** में राहु। **मकर** में बुध

दिन	मान	फा०	फर	वार	नक्षत्र		बजे	दि	तिथि		बजे	मि
26	55	1	12	गुरु	मघा	प्र	8	52	प्रति.	दि	5	42 शां
	57	2	13	शुक्र	पूफा	प्र	11	35	द्विती.	प्र	7	55
27	2	3	14	शनि	उफा	प्र	2	33	तृती.	प्र	10	26
	7	4	15	रवि	हस्त	प्र	5	40	चतु.	प्र	1	5
	12	5	16	सोम	चित्र	–	दिन	रात	पंच.	प्र	6	44
	17	6	17	भौम	चित्र	दि	8	43	षष्ठी.	प्र	3	10
	22	7	18	बुध	स्वा	दि	11	32	सप्त.	–	दिन	रात
	27	8	19	गुरु	विशा	दि	1	54	सप्त.	दि	8	10
	32	9	20	शुक्र	अनु	दि	3	39	अष्ट.	दि	9	33
	35	10	21	शनि	ज्येष्ठ	दि	4	41	नव.	दि	10	13
	40	11	22	रवि	मूला	दि	4	55	दश.	दि	10	3
	45	12	23	सोम	पूषा	दि	4	23	एका.	दि	9	6
	55	13	24	भौम	उपा	दि	3	8	द्वाद.	दि	7	24 सु
	57	14	25	बुध	श्रव	दि	1	18	चर्तु.	प्र	2	10
28	2	15	26	गुरु	धनि	दि	11	00	अमा.	प्र	10	56

शिशर ऋतु, उत्तरायण (ग्रह संचार बजे मिनटों में)

11-45 रात **कुम्भ में सूर्य** मुहूर्त 30 समुद्री **संक्रान्ति व्रत** गजः।
सिद्धः।
6-18 प्रातः **कन्या में चन्द्र** उन्मूलम्।
संकट चतुर्थी, मानसम्।
7-12 रात **तुला में चन्द्र**, मुद्गरम्।
5 बजे प्रातः **कुम्भ में बुध,** ध्वांक्षः।
दिन अधिक, धौम्यः।
7-21 प्रातः **वृश्चिक में चन्द्र**, प्रवर्धः।
होरा अष्टमी, **चक्रेश्वर यात्रा** क्षयः।
10-27 दिन से 10-45 रात तक गण्डान्त, 4-41 दिन **धनु में A.**
सिद्धः।
10-8 रात **मकर में चन्द्र**, 1-15 दिन **मकर में शुक्र, B.**
त्र्यहः (त्री प्र 5-2) 11-23 रात **मीन में भौम, शिवरात्रि,** मानसम्।
शिवचतुर्दशी, 12-12 रात **कुम्भ में चन्द्र** और पंचक आरम्भ, छत्रम्।
दून्य अमावसी, **वटुक परमोजुन**, श्रीवत्सः।

शिवरात्रि 24 फरवरी

बृहस्पति अस्त 12 फरवरी

वटुक परमोजुन 26 फरवरी

मध्याह्न :–प्रति से सप्त तक अपने दिन, अष्ट से द्वाद पहले दिन, चर्तु, अमा अपने दिन। **श्राद्ध** :–प्रति का पहले दिन, द्वि से सप्त अपने दिन, अष्ट से द्वाद पहले दिन चतु, अमा अपने दिन। **A. चन्द्र** और मूल आरम्भ, गजः। **B.** विजयाकाह, उन्मूलम्।

फाल्गुन शुक्ल पक्ष सप्तर्षि सं॰ 5073 विक्रमी 2054 शाका 1919 ईस्वी 1998

27 फरवरी की ग्रह स्थिति :-कुम्भ में सूर्य, बुध, वृहस्पति, केतु। **मीन** में भौम, शनि। **मकर** में शुक्र। **सिंह** में राहु।

दिन	मान	फा.	फर.	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	शिशर ऋतु, उत्तरायण, (ग्रह संचार बजे मिनटों में)
28	7	16	27	शुक्र	शत	दि	8	24	प्रति.	प्र	7	28	12-22 रात **मीन में चन्द्र** (पूभा प्र 5-41) सौम्यः
	15	17	28	शनि	उभा	प्र	2	58	द्विती.	दि	3	59	धौम्यः।
	15	18	मार्च	रवि	रेव	प्र	12	28	तृती.	दि	12	36	12-28 रात **मेष में चन्द्र** और पंचक समाप्त, 7-5 शां से **A.**
	22	19	2	सोम	अश्वि	प्र	10	16	चतु.	दि	9	28	5-54 प्रातः तक गण्डान्त, **त्र्यहः** (पंच प्र 6-48) क्षयः।
	25	20	3	भौम	भर	प्र	8	33	षष्ठी.	प्र	4	24	कुमार षष्ठी, 2-11 रात **वृष में चन्द्र**, गजः।
	30	21	4	बुध	कृति	प्र	7	21	सप्त.	प्र	2	47	सिद्धः।
	35	22	5	गुरु	रोहि	प्र	6	47	अष्ट.	प्र	1	44	7-24 प्रातः **मीन में बुध** तैलाष्टमी, उन्मूलम्
	40	23	6	शुक्र	मृग	प्र	6	51	नव.	प्र	1	21	6-44 प्रातः **मिथुन में चन्द्र**, मानसम्।
	45	24	7	शनि	आर्द्र	प्र	7	32	दश.	प्र	1	36	मुद्गरम्।
	50	25	8	रवि	पुन	प्र	8	49	एका.	प्र	2	25	2-25 दिन **कर्क में चन्द्र,** अमला एकादशी सूर्य मास, ध्वजः
	57	26	9	सोम	तिष्य	प्र	10	36	द्वाद.	प्र	3	46	प्राजापत्यः।
29	2	27	10	भौम	अश्ले	प्र	12	50	त्रयो.	प्र	5	33	12-50 रात **सिंह में चन्द्र,** 6-12 शां से गण्डान्त, आनन्दः।
	7	28	11	बुध	मघा	प्र	3	24	चर्तु.	–	दिन	रात	दिन अधिक, 7-26 प्रातः तक गण्डान्त, चरः।
	12	29	12	गुरु	पूफा	प्र	6	14	चर्तु.	दि	7	41	होलिका दहन, मुसलम्।
	15	30	13	शुक्र	उफा	-	- दिनरात-		पूर्णि	दि	10	4	12-58 दिन **कन्या में चन्द्र,** मासान्त, **होली, थाल भरुन, B.**

होली
13 मार्च

थाल भरुन
13 मार्च

मध्याह्न :–प्रति से तृती अपने दिन, चतु का पहले दिन, षष्ठी से चर्तु अपने दिन, पूर्णि का पहले दिन। **श्राद्ध** :–प्रति, द्वि अपने दिन, तृती, चतु पहले दिन, षष्ठी से चर्तु अपने दिन, पूर्णि का पहले दिन। **A.** गण्डान्त, प्रवर्धः। **B.** सिद्धः

चैत्र कृष्ण पक्ष सपतर्षि 5073 विक्रमी 2054 शाका 1919 ईस्वी 1998

14 मार्च की ग्रह स्थिति :– **मीन** में सूर्य, भौम, बुध, शनि। **कुम्भ** में बृहस्पति, केतु। **मंकर** में शुक्र। **सिंह** में राहु।

दिन	मान	चैत्र	मार्च	वार	नक्षत्र		बजे	मि	तिथि		बजे	मि	वसन्त ऋतु, उत्तरायण, (ग्रह संचार बजे मिनटों में)
29	20	1	14	शनि	उफा	दि	9	14	प्रति.	दि	12	37	8-35 रात **मीन में सूर्य** मुहूर्त 30 दरयाई, संक्रान्ति व्रत, **A.**
	27	2	15	रवि	हस्त	दि	12	18	द्विती.	दि	3	14	1-50 रात **तुला में चन्द्र,** मानसम्।
	32	3	16	सोम	चित्र	दि	3	21	तृती.	दि	5	48 शां	संकट चतुर्थी, मुद्गरम्। 5-16 शां **बृहस्पति उदय**
	37	4	17	भौम	स्वाति	दि	6	14	चतु.	प्र	8	11	ध्वजः।
	42	5	18	बुध	विशा	प्र	8	50	पंच.	प्र	10	15	2-13 दिन **वृश्चिक में चन्द्र** प्राजापत्यः।
	50	6	19	गुरु	अनु	प्र	11	00	षष्ठी.	प्र	11	52	आनन्दः।
	55	7	20	शुक्र	ज्येष्ठ	प्र	12	36	सप्त.	प्र	12	53	12-36 रात **धनु में चन्द्र** और मूल आरम्भ, 6-14 शां से **B.**
30	0	8	21	शनि	मूला	प्र	1	32	अष्ट.	प्र	1	12	6-49 प्रातः तक गण्डान्त, मुसलम्।
	2	9	22	रवि	पूषा	प्र	1	44	नव.	प्र	12	46	शूलम्।
	10	10	23	सोम	उषा	प्र	1	11	दश.	प्र	11	35	7-40 प्रातः **मकर में चन्द्र** मृत्युः।
	15	11	24	भौम	श्रव	प्र	11	56	एका.	प्र	9	39	पाप मोचिनी काह, अलापकः।
	20	12	25	बुध	धनि	प्र	10	2	द्वाद.	प्र	7	5	11-3 दिन **कुम्भ में चन्द्र** और पंचक आरम्भ, मैत्रम्।
	25	13	26	गुरु	शत	प्र	7	37	त्रयो.	दि	3	58	वज्रम्।
	30	14	27	शुक्र	पूभा	दि	4	50	चर्तु.	दि	12	28	11-33 दिन **मीन में चन्द्र,** चैत्र चतुर्दशी, ध्वांक्षः।
	35	15	28	शनि	उभा	दि	1	51	अमा	दि	8	44	**त्र्यहः** (प्रति प्र 4-55) श्री भट्ट दिवस, धौम्यः

सोन्थ
14 मार्च

16 मार्च
बृहस्पति उदय

मध्याह्न :–प्रति से चर्तु तक अपने दिन, अमा का पहले दिन। **श्राद्ध** :–प्रति से तृती पहले दिन, चतु से त्रयो तक अपने दिन चर्तु, अमा पहले दिन।
A. सोन्थ, उन्मूलम्। **B.** गण्डान्त, चरः।

यज्ञोपवीत मुहूर्त

सप्त. सं॰ 5073 वि॰ सं॰ 2054 ईस्वी 1997-98

वैशाख शुक्ल पक्ष

8 मई द्वितीय गुरुवार लग्न

8 बजे 32 मि प्रातः से

10 बजे 11 दिन तक (3)

10 बजे 11 दिन से

12 बजे 34 दिन तक (4)

9 मई तृतीया शुक्रवार

11 बजे 33 दिन से

12 बजे 30 दिन तक (4)

12 मई षष्ठी से सोमवार

9 बजे 31 दिन से

9 बजे 55 दिन तक (3)

19 मई द्वादशी सोमवार

7 बजे 12 प्रातः से

9 बजे 27 दिन तक (3)

9 बजे 27 दिन से

11 बजे 51 दिन तक (4)

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

26 मई चतुर्थी सोमवार

9 बजे दिन से

11 बजे 24 दिन तक (4)

ज्येष्ठ शुक्लपक्ष

6 जून प्रतिपदि शुक्रवार

12 बजे 7 दिन से

1 बजे 2 दिन तक (5)

8 जून तृतीया रविवार

8 बजे 9 प्रातः से

10 बजे 32 दिन तक (4)

10 बजे 32 दिन से

12 बजे 54 दिन तक (5)

16 जून एकादशी सोमवार

7 बजे 37 प्रातः से

10 बजे 1 दिन तक (4)

10 बजे 1 दिन से

12 बजे 23 दिन तक (5)

आषाढ कृष्णपक्ष

22 जून द्वितीया रविवार

2 बजे 20 दिन से

2 बजे 53 दिन तक (7)

23 जून तृतीया सोमवार

7 बजे 10 प्रात: से
9 बजे 33 दिन तक (4)
9 बजे 33 दिन से
11 बजे 55 दिन तक (5)

25 जून पंचमी बुधवार

7 बजे 2 प्रात: से
9 बजे 26 दिन तक (4)
9 बजे 26 दिन से
11 बजे 47 दिन तक (5)

आषाढ शुक्लपक्ष

6 जुलाई द्वितीया रविवार

8 बजे 42 प्रात: से
11 बजे 4 दिन तक (5)
1 बजे 25 दिन से
3 बजे 48 दिन तक (7)

आश्विन शुक्लपक्ष

3 अक्टूबर द्वितीया शुक्रवार

12 बजे 19 दिन से
2 बजे 21 दिन तक (9)

6 अक्टूबर पंचमी सोमवार

7 बजे 23 प्रात: से
9 बजे 46 दिन तक (7)
12 बजे 7 दिन से
2 बजे 9 दिन तक (9)

12 अक्टूबर एकादशी रविवार

6 बजे 59 प्रात: से
9 बजे 22 दिन तक (7)
11 बजे 43 दिन से
1 बजे 46 दिन तक (9)

13 अक्टूबर द्वादशी सोमवार

6 बजे 55 प्रात: से
9 बजे 19 दिन तक (7)
11 बजे 39 दिन से
1 बजे 43 दिन तक (9)

कार्तिक कृष्णपक्ष

20 अक्टूबर पंचमी सोमवार

11 बजे 12 दिन से
1 बजे 14 दिन तक (9)
1 बजे 14 दिन से
2 बजे 53 तक (10)

कार्तिक शुक्लपक्ष

2 नवम्बर द्वितीया रविवार

12 बजे 23 दिन से
2 बजे 2 दिन तक (10)
2 बजे 2 दिन से
3 बजे 27 दिन तक (11)

3 नवम्बर सोमवार तृतीया

12 बजे 19 दिन से
1 बजे 58 दिन तक (10)
1 बजे 58 दिन से
3 बजे 23 दिन तक (11)

6 नवम्बर षष्ठी गुरुवार

12 बजे 7 दिन से
1 बजे 8 दिन तक (10)
1 बजे 46 दिन से
3 बजे 11 दिन तक (11)

7 नवम्बर सप्तमी शुक्रवार

1 बजे 42 दिनसे
3 बजे 7 दिन तक (11)

9 नवम्बर नवमी रविवार

12 बजे 24 दिन से
1 बजे 34 दिन तक (10)

मार्ग कृष्णपक्ष

17 नवम्बर तृतीया सोमवार
11 बजे 24 दिन से
12 बजे 54 दिन तक (10)

19 नवम्बर पंचमी बुधवार
11 बजे 20 दिन से
12 बजे 59 दिन तक (10)
12 बजे 59 दिन से
1 बजे 29 दिन तक (11)

मार्ग शुक्लपक्ष

4 दिसम्बर पंचमी गुरुवार
11 बजे 56 दिन से
1 बजे 21 दिन तक (11)

5 दिसम्बर षष्ठी शुक्रे
11 बजे 52 दिन से
1 बजे 17 दिन तक (11)

माघ शुक्लपक्ष

1 फरवरी पंचमी रविवार
12 बजे 20 दिन से
2 बजे 13 दिन तक (2)

6 फरवरी दशमी शुक्रवार
10 बजे 29 दिन से
12 बजे दिन तक (1)
1 बजे 58 दिन से
3 बजे 13 दिन तक (3)

9 फरवरी त्रयोदशी सोमवार
11 बजे 49 दिन से
1 बजे 33 दिन तक (2)

विवाह मुहूर्त 1997-98

वैशाख कृष्ण पक्ष

30 अप्रेल अष्टमी बुधवार
6 बजे 33 प्रातः से
8 बजे 27 प्रातः तक (2)
8 बजे 27 प्रातः से
10 बजे 42 दिन तक (3)
10 बजे 42 दिन से
1 बजे 6 दिन तक (4)
8 बजे 11 रात से
10 बजे 32 रात तक (8)
10 बजे 32 रात से
12 बजे 35 रात तक (9)

1 मई नवमी गुरुवार
6 बजे 30 प्रातः से
8 बजे 23 प्रातः तक (2)
8 बजे 23 प्रातः से
10 बजे 38 दिन तक (3)
10 बजे 38 दिन से
1 बजे 2 दिन तक (4)

3 मई एकादशी शनिवार
8 बजे रात से
10 बजे 20 रात तक (8)
10 बजे 20 रात से
12 बजे 23 रात तक (9)

12 बजे 23 रातसे
2 बजे 2 रात तक (10)

4 मई द्वादशी रविवार

6 बजे 18 प्रात: से
8 बजे 11 प्रात: तक (2)
8 बजे 11 प्रात: से
10 बजे 26 दिन तक (3)
10 बजे 26 दिन से
12 बजे 50 दिन तक (4)

वैशाख शुक्ल पक्ष

8 मई द्वितीया गुरुवार

8 बजे 32 प्रात: से
10 बजे 15 दिन तक (3)
10 बजे 15 दिन से
12 बजे 34 दिन तक (4)

9 मई तृतीया शुक्रवार

11 बजे 33 दिन से
12 बजे 30 दिन तक (4)
7 बजे 36 शां से
10 बजे 57 रात तक (8)
10 बजे 57 रात से
11 बजे 59 रात तक (9)
11 बजे 59 रात से
1 बजे 38 रात तक (10)

10 मई चतुर्थी शनिवार

5 बजे 54 प्रात: से
7 बजे 47 प्रात: तक (2)

15 मई अष्टमी गुरुवार

7 बजे 28 प्रात: से
9 बजे 43 दिन तक (3)
9 बजे 43 दिन से
12 बजे 7 दिन तक (4)
4 बजे 49 दिन से
7 बजे 12 दिन तक (7)

19 मई द्वादशी सोमवार

7 बजे 12 प्रात: से
9 बजे 27 दिन तक (3)
9 बजे 27 दिन से
11 बजे 51 दिन तक (4)
9 बजे 18 रात से
11 बजे 20 रात तक (9)
11 बजे 20 रात से
12 बजे 59 रात तक (10)

22 मई पूर्णिमा गुरुवार

4 बजे 22 दिन से
6 बजे 45 दिन तक (7)
9 बजे 6 रात से
11 बजे 8 रात तक (9)
11 बजे 8 रात से
12 बजे 47 रात तक (10)
3 बजे 32 रात से
5 बजे 3 रात तक (1)

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

24 मई द्वितीया शनिवार

6 बजे 52 प्रात: से
9 बजे 8 दिन तक (3)
9 बजे 8 दिन से
11 बजे 31 दिन तक (4)
4 बजे 14 दिन से
6 बजे 37 शां तक (7)

11 बजे रात से
12 बजे 39 रात तक (10)
3 बजे 24 रात से
4 बजे 55 रात तक (1)

26 मई चतुर्थी सोमवार

6 बजे 45 प्रातः से
9 बजे दिन तक (3)
9 बजे दिन से
11 बजे 24 दिन तक (4)
4 बजे 6 दिन से
6 बजे 29 शां तक (7)
8 बजे 50 रात से
10 बजे 52 रात तक (9)
3 बजे 16 रात से
4 बजे 47 रात तक (1)

28 मई सप्तमी बुधवार

6 बजे 37 प्रातः से
8 बजे 52 दिन तक (3)
8 बजे 52 दिन से
11 बजे 16 दिन तक (4)
3 बजे 58 दिन से
6 बजे 21 शां तक (7)
8 बजे 42 रात से
10 बजे 45 रात तक (9)
10 बजे 45 रात से
12 बजे 23 रात तक (10)
3 बजे 8 रात से
4 बजे 39 रात तक (1)

30 मई नवमी शुक्रवार

9 बजे 57 रात से
10 बजे 37 रात तक (9)
10 बजे 37 रात से
12 बजे 16 रात तक (10)
3 बजे रात से
4 बजे 32 रात तक (1)

31 मई दशमी शनिवार

6 मई 25 प्रातः से
8 बजे 40 प्रातः तक (3)
8 बजे 40 प्रातः से
11 बजे 4 दिन तक (4)
3 बजे 46 दिन से
6 बजे 10 शां तक (7)

1 जून एकादशी रविवार

8 बजे 26 रात से
10 बजे 29 रात तक (9)
10 बजे 29 से
12 बजे 8 रात तक (10)
2 बजे 52 रात से
4 बजे 24 रात तक (1)

2 जून द्वादशी सोमवार

6 बजे 17 प्रातः से
8 बजे 32 प्रातः तक (3)
8 बजे 32 प्रातः से
10 बजे 56 दिन तक (4)
3 बजे 38 दिन से
6 बजे 2 शां तक (7)

ज्येष्ठ शुक्लपक्ष

6 जून प्रतिपदि शुक्रवार

8 बजे 17 प्रातः से
10 बजे 40 दिन तक (4)

10 बजे 40 दिन से
1 बजे 2 दिन तक (5)
3 बजे 23 दिन से
5 बजे 46 दिन तक (7)

11 जून षष्ठी बुधवार

5 बजे 42 प्रात: से
7 बजे 57 प्रात: तक (3)
7 बजे 57 प्रात: से
10 बजे 21 दिन तक (4)
10 बजे 21 दिन से
12 बजे 42 दिन तक (5)
3 बजे 3 दिन से
5 बजे 26 दिन तक (7)
7 बजे 47 शां से
9 बजे 49 रात तक (9)
9 बजे 49 रात से
11 बजे 28 रात तक (10)
11बजे 28 रात से
12 बजे 54 रात तक (11)

16 जून एकादशी सोमवार

7 बजे 37 प्रात: से
10 बजे 1 दिन तक (4)
10 बजे 1 दिन से
12 बजे 23 दिन तक (5)

18 जून त्रयोदशी बुधवार

4 बजे 1 दिन से
4 बजे 59 दिन तक (7)
7 बजे 20 शां से
9 बजे 22 रात तक (9)
9 बजे 22 रात से
11 बजे 1 रात तक (10)
11 बजे 1 रात से
12 बजे 26 रात तक (11)
1 बजे 45 रात से
3 बजे 17 रात तक (1)
3 बजे 17 रात से
5 बजे 10 रात तक (2)

19 जून चतुर्दशी गुरुवार

7 बजे 26 प्रात: से
9 बजे 49 दिन तक (4)
9 बजे 49 दिन से
12 बजे 11 दिन तक (5)
2 बजे 31 दिन से
3 बजे 48 दिन तक (7)

20 जून पूर्णिमा शुक्रवार

2 बजे 59 दिन से
4 बजे 51 दिन तक (7)
4 बजे 51 दिन से
7 बजे 12 शां तक (8)
9 बजे 14 रात से
10 बजे 53 रात तक (9)
10 बजे 53 रात से
12 बजे 18 रात तक (10)
1 बजे 38 रात से
3 बजे 9 रात तक (1)
3 बजे 9 रात से
5 बजे 2 रात तक (2)

आषाढ कृष्ण पक्ष

21 जून प्रतिपदि शनिवार

7 बजे 18 प्रात: से

9 बजे 41 दिन तक (4)
9 बजे 41 दिन से
12 बजे 3 दिन तक (5)

22 जून द्वितीया रविवार

2 बजे 20 दिन से
4 बजे 43 दिन तक (7)
4 बजे 43 दिन से
7 बजे 4 शां तक (8)
10 बजे 45 रात से
12 बजे 10 रात तक (11)
1 बजे 30 रात से
3 बजे 1 रात तक (1)
3 बजे 1 रात से
4 बजे 54 रात तक (2)

23 जून तृतीया सोमवार

7 बजे 10 प्रातः से
9 बजे 33 दिन तक (4)
9 बजे 33 दिन से
11 बजे 55 दिन तक (5)
2 बजे 16 दिन से
4 बजे 39 दिन तक (7)
4 बजे 39 दिन से
7 बजे शां तक (8)
10 बजे 41 रात से
12 बजे 6 रात तक (11)
1 बजे 26 रात से
2 बजे 57 रात तक (1)
2 बजे 57 रात से
4 बजे 50 रात तक (2)

29 जून दशमी रविवार

6 बजे 46 प्रातः से
9 बजे 10 दिन तक (4)
1 बजे 52 दिन से
4 बजे 15 दिन तक (7)
4 बजे 15 दिन से
6 बजे 36 शां तक (8)
8 बजे 39 रात से
10 बजे 18 रात तक (10)

2 जुलाई त्रयोदशी बुधवार

6 बजे 34 प्रातः से
8 बजे 58 दिन तक (4)
1 बजे 40 दिन से
4 बजे 4 दिन तक (7)
4 बजे 4 दिन से
6 बजे 24 शां तक (8)

8 बजे 27 रात से
10 बजे 6 रात तक (10)
12 बजे 50 रात से
2 बजे 22 रात तक (1)

3 जुलाई चतुर्दशी गुरुवार

6 बजे 30 प्रातः से
8 बजे 54 दिन तक (4)
1 बजे 36 दिन से
4 बजे दिन तक (7)
4 बजे दिन से
6 बजे 20 शां तक (8)
8 बजे 23 रात से
10 बजे 2 रात तक (10)

आषाढ शुक्लपक्ष

9 जुलाई चतुर्थी बुधवार

8 बजे 5 प्रात: से
10 बजे 29 दिन तक (4)

13 जुलाई अष्टमी रविवार

5 बजे 51 प्रात: से
8 बजे 15 प्रात: तक (4)
3 बजे 20 दिन से
5 बजे 41 दिन तक (8)
7 बजे 44 शां से
9 बजे 22 रात तक (10)
12 बजे 7 रात से
1 बजे 38 रात तक (1)
1 बजे 38 रात से
3 बजे 32 रात तक (2)

14 जुलाई नवमी सोमवार

5 बजे 47 प्रात: से
8 बजे 13 प्रात: तक (4)
3 बजे 16 दिन से
5 बजे 37 दिन तक (8)
7 बजे 40 शां से
9 बजे 18 रात तक (10)

19 जुलाई चतुर्दशी शनौ

1 बजे 19 रात से
3 बजे 12 रात तक (2)
3 बजे 12 रात से
5 बजे 28 रात तक (3)

20 जुलाई पूर्णिमा रविवार

12 बजे 29 दिन से
2 बजे 53 दिन तक (7)
2 बजे 53 दिन से
5 बजे 14 दिन तक (8)
5 बजे 14 दिन से
7 बजे 16 शां तक (9)
11 बजे40 रात से
1 बजे 11 रात तक (1)
1 बजे 11 रात से
3 बजे 4 रात तक (2)
3 बजे 4 रात से
5 बजे 20 रात तक (3)

श्रावण कृष्णपक्ष

21 जुलाई प्रतिपदि सोमवार

12 बजे 25 दिन से
2 बजे 48 दिन तक (7)
2 बजे 48 दिन से
5 बजे 10 दिन तक (8)
5 बजे 10 दिन से
7 बजे 12 शां तक (9)
11 बजे 36 रात से
1 बजे 7 रात तक (1)
1 बजे 7 रात से
3 बजे रात तक (2)
3 बजे रात से
5 बजे 16 रात तक (3)

24 जुलाई पंचमी गुरुवार

12 बजे 14 दिन से
2 बजे 37 दिन तक (7)
2 बजे 37 दिन से
4 बजे 58 दिन तक (8)
4 बजे 58 दिन से
7 बजे शां तक (9)
11 बजे 24 रात से

12 बजे 55 रात तक (1)
12 बजे 55 रात से
2 बजे 54 रात तक (2)
2 बजे 54 रात से
5 बजे 8 रात तक (3)

26 जुलाई सप्तमी शनिवार

12 बजे 6 दिन से
2 बजे 29 दिन तक (7)
2 बजे 29 दिन से
4 बजे 50 दिन तक (8)
4 बजे 50 दिन से
6 बजे 52 शां तक (9)
12 बजे 47 रात से
2 बजे 41 रात तक (2)
2 बजे 41 रात से
4 बजे 56 रात तक (3)

30 जुलाई एकादशी बुधवार

11 बजे 50 दिन से
2 बजे 14 दिन तक (7)
2 बजे 14 दिन से
4 बजे 34 दिन तक (8)
4 बजे 34 दिन से
6 बजे 37 शां तक (9)
11 बजे रात से
12 बजे 32 रात तक (1)
12 बजे 32 रात से
2 बजे 25 रात तक (2)

श्रावण शुक्लपक्ष

4 अगस्त प्रतिपदि सोमवार

3 बजे 18 दिन से
4 बजे 15 दिन तक (8)
4 बजे 15 दिन से
6 बजे 17 शां तक (9)
10 बजे 41 रात से
12 बजे 12 रात तक (1)
12 बजे 12 रात से
2बजे 5 रात तक (2)

7 अगस्त चतुर्थी गुरुवार

12 बजे 34 रात से
1 बजे 53 रात तक (2)
1 बजे 53 रात से
4बजे 9 रात तक (3)

8 अगस्त पंचमी शुक्रवार

1 बजे 38 दिन से
3 बजे 59 दिन तक (8)
3 बजे 59 दिन से
6 बजे 1 शां तक (9)
11 बजे 56 रात से
1 बजे 50 रात तक (2)
1 बजे 50 रात से
4 बजे 5 रात तक (3)

10 अगस्त सप्तमी रविवार

1 बजे 30 दिन से
3 बजे 51 दिन तक (8)
3 बजे 51 दिन से
5 बजे 53 दिन तक (9)
11 बजे 48 रात से
1 बजे 42 रात तक (2)
1 बजे 42 रात से
3 बजे 57 रात तक (3)

14 अगस्त दशमीं गुरुवार

1 बजे 15 दिन से	
3 बजे 35 दिन तक	(8)
11 बजे 33 रात से	
1 बजे 26 रात तक	(2)
1 बजे 26 रात से	
3 बजे 41 रात तक	(3)

आश्विन शुक्लपक्ष

4 अक्टूबर तृतीया शनिवार

12 बजे 15 दिन से	
2 बजे 17 दिन तक	(9)
2 बजे 17 दिन से	
3 बजे 56 दिन तक	(10)
6 बजे 41 शां से	
8 बजे 12 रात तक	(1)

6 अक्टूबर पंचमी सोमवार

7 बजे 23 प्रात: से	
9 बजे 46 दिन तक	(7)
12 बजे 7 दिन से	
2 बजे 9 दिन तक	(9)
2 बजे 9 दिन से	
3 बजे 48 दिन तक	(10)
6 बजे 33 शां से	
8 बजे 4 रात तक	(1)

8 अक्टूबर षष्ठी बुधवार

7 बजे 15 प्रात: से	
9 बजे 38 दिन तक	(7)
2 बजे 1 दिन से	
3 बजे 40 दिन तक	(10)
7 बजे 56 शां से	
9 बजे 50 रात तक	(1)
9 बजे 50 रात से	
12 बजे 5 रात तक	(3)
12 बजे 5 रात से	
1 बजे 35 रात तक	(4)

9 अक्टूबर अष्टमी गुरुवार

1 बजे 23 रात से	
2 बजे 25 रात तक	(4)

10 अक्टूबर नवमी शुक्रवार

7 बजे 7 प्रात: से	
9 बजे 30 दिन तक	(7)
11 बजे 51 दिन से	
1 बजे 54 दिन तक	(9)
6 बजे 17 शां से	
7 बजे 48 रात तक	(1)
9 बजे 42 रात से	
11 बजे 57 रात तक	(3)
11 बजे 57 रात से	
2 बजे 21 रात तक	(4)

11 अक्टूबर दशमी शनिवार

7 बजे 3 प्रात: से	
9 बजे 26 दिन तक	(7)
11 बजे 47 दिन से	
1 बजे 50 दिन तक	(9)
6 बजे 13 शां से	
7 बजे 44 शां तक	(1)
9 बजे 35 रात से	
11 बजे 53 रात तक	(3)
11 बजे 53 रात से	
2 बजे 17 रात तक	(4)

12 अक्टूबर एकादशी रविवार

6 बजे 59 प्रातः से

9 बजे 22 दिन तक (7)

11 बजे 43 दिन से

1 बजे 46 दिन तक (9)

1 बजे 46 दिन से

3 बजे 25 दिन तक (10)

6 बजे 9 शां से

7 बजे 41 शां तक (1)

9 बजे 34 रात से

11 बजे 49 रात तक (3)

11 बजे 49 रात से

2 बजे 13 रात तक (4)

15 अक्टूबर चतुर्दशी बुधवार

6 बजे 47 प्रातः से

9 बजे 11 दिन तक (7)

11 बजे 31 दिन से

1 बजे 34 दिन तक (9)

कार्तिक कृष्णपक्ष

20 अक्टूबर पंचमी सोमवार

11 बजे 12 दिन से

1 बजे 14 दिन तक (9)

1 बजे 14 दिन से

2 बजे 53 दिन तक (10)

9 बजे 2 रात से

11 बजे 18 रात तक (3)

11 बजे 18 रात से

1 बजे 41 रात तक (4)

25 अक्टूबर दशमी शनिवार

10 बजे 52 दिन से

12 बजे 55 दिन तक (9)

12 बजे 55 दिन से

2 बजे 33 दिन तक (10)

8 बजे 43 रात से

10 बजे 58 रात तक (3)

10 बजे 58 रात से

1 बजे 22 रात तक (4)

26 अक्टूबर एकादशी रविवार

10 बजे 48 दिन से

12 बजे 51 दिन तक (9)

12 बजे 51 दिन से

1 बजे 3 दिन तक (10)

29 अक्टूबर त्रयोदशी बुधवार

10 बजे 36 दिन से

12 बजे 39 दिन तक (9)

12 बजे 39 दिन से

2 बजे 18 दिन तक (10)

8 बजे 27 रात से

10 बजे 42 रात तक (3)

10 बजे 42 रात से

1 बजे 6 रात तक (4)

30 अक्टूबर चतुर्दशी गुरुवार

10 बजे 32 दिन से

12 बजे 39 दिन तक (9)

12 बजे 39 दिन से

1 बजे 44 दिन तक (10)

कार्तिक शुक्ल पक्ष

2 नवम्बर द्वितीया रविवार

12 बजे 23 दिन से

2 बजे 2 दिन तक (10)

8 बजे 11रात से

10 बजे 27 रात तक (3)
10 बजे 27 रात से
12 बजे 50 रात तक (4)

6 नवम्बर षष्ठी गुरुवार

7 बजे 44 प्रात: से
10 बजे 5 दिन तक (8)
12 बजे 7 दिन से
1 बजे 8 दिन तक (10)
7 बजे 56 शां से
10 बजे 11 रात तक (3)
10 बजे 11 रात से
12 बजे 35 रात तक (4)

7 नवम्बर सप्तमी शुक्रवार

7 बजे 40 प्रात: से
10 बजे 1 दिन तक (8)
5 बजे 58 शां से
7 बजे 52 शां तक (2)
10 बजे 7 रात से
12 बजे 31 रात तक (4)

8 नवम्बर अष्टमी शनिवार

7 बजे 36 प्रात: से
9 बजे 57 दिन तक (8)
5 बजे 54 शां से
7 बजे 48 शां तक (2)
10 बजे 3 रात से
12 बजे 27 रात तक (4)

मार्ग कृष्ण पक्ष

17 नवम्बर तृतीया सोमवार

11 बजे 24 दिन से
12 बजे 54 दिन तक (10)

21 नवम्बर सप्तमी शुक्रवार

9 बजे 12 रात से
11 बजे 36 रात तक (4)
4 बजे 18 रात से
6 बजे 41 रात तक (7)

22 नवम्बर अष्टमी शनिवार

11 बजे 4 दिन से
12 बजे 43 दिन तक (10)
3 बजे 28 दिन से
5 बजे दिन तक (1)

24 नवम्बर दशमी सोमवार

4 बजे 6 रात से
6 बजे 29 रात तक (7)

26 नवम्बर द्वादशी बुधवार

10 बजे 49 दिन से
12 बजे 28 दिन तक (10)
3 बजे 12 दिन से
4 बजे 43 दिन तक (1)
8 बजे 52 रात से
11 बजे 16 रात तक (4)
3 बजे 58 रात से
6 बजे 22 रात तक (7)

27 नवम्बर त्रयोदशी गुरुवार

10 बजे 45 दिन से
12 बजे 24 दिन तक (10)
3 बजे 8 दिन से
4 बजे 39 दिन तक (1)
8 बजे 48 रात से
11 बजे 12 रात तक (4)
3 बजे 54 रात से

6 बजे 18 रात तक (7)

मार्ग शुक्लपक्ष

1 दिसम्बर प्रतिपदि सोमवार

2 बजे 53 दिन से
4 बजे 24 दिन तक (1)
8 बजे 33 रात से
10 बजे 56 रात तक (4)
3 बजे 38 रात से
6 बजे 2 रात तक (7)

3 दिसम्बर चतुर्थी बुधवार

10 बजे 21 दिन से
12 बजे दिन तक (10)
2 बजे 45 दिन से
4 बजे 16 दिन तक (1)
8 बजे 25 रात से
10 बजे 48 रात तक (4)
3 बजे 31 रात से
5 बजे 54 रात तक (7)

4 दिसम्बर पंचमी गुरुवार

2 बजे 41 दिन से
4 बजे 12 दिन तक (1)
8 बजे 21 रात से
10 बजे 44 रात तक (4)
3 बजे 27 रात से
5 बजे 50 रात तक (7)

5 दिसम्बर षष्ठी शुक्रवार

2 बजे 37 दिन से
4 बजे 8 दिन तक (1)
8 बजे 17 रात से
10 बजे 40 रात तक (4)
3 बजे 23 रात से
5 बजे 46 रात तक (7)

8 दिसम्बर नवमी सोमवार

10 बजे 1 दिन से
11 बजे 40 दिन तक (10)
2 बजे 25 दिन से
3 बजे 56 दिन तक (1)
8 बजे 5 रात से
10 बजे 29 रात तक (4)
3 बजे 11 रात से
5 बजे 34 रात तक (7)

12 दिसम्बर त्रयोदशी शुक्रवार

2 बजे 55 रात से
5 बजे 19 रात तक (7)

13 दिसम्बर चतुर्दशी शनिवार

7 बजे 43 प्रात: से
9 बजे 42 दिन तक (9)
2 बजे 5 दिन से
3 बजे 37 दिन तक (1)
5 बजे 34 शां से
7 बजे 45 शां तक (3)
7 बजे 45 शां से
10 बजे 9 रात तक (4)

माघ कृष्ण पक्ष

23 जनवरी दशमी शुक्रवार

11 बजे 24 दिन से
12 बजे 55 दिन तक (1)
12 बजे 55 दिन से
2 बजे 49 दिन तक (2)
2 बजे 49 दिन से

5 बजे 4 दिन तक (3)
12 बजे 10 रात से
2 बजे 33 रात तक (7)
4 बजे 54 रात से
6 बजे 57 रात तक (9)

माघ शुक्ल पक्ष

29 जनवरी प्रतिपदि गुरुवार

11 बजे दिन से
12 बजे 32 दिन तक (1)
12 बजे 32 दिन से
2 बजे 25 दिन तक (2)
2 बजे 25 दिन से
4 बजे 24 दिन तक (3)

11 बजे 46 रात से
12 बजे 27 रात तक (7)

31 जनवरी चतुर्थी शनिवार

11 बजे 39 रात से
2 बजे 2 रात तक (7)
2 बजे 2 रात से
4 बजे 23 रात तक (8)
4 बजे 23 रात से
6 बजे 25 रात तक (9)

1 फरवरी पंचमी रविवार

10 बजे 49 दिन से
12 बजे 20 दिन तक (1)
12 बजे 20 दिन से
2 बजे 13 दिन तक (2)
2 बजे 13 दिन से
4 बजे 29 दिन तक (3)

5 फरवरी नवमी गुरुवार

1 बजे 58 दिन से
4 बजे 13 दिन तक (3)
11 बजे 19 रात से
1 बजे 42 रात तक (7)
1 बजे 42 रात से
4 बजे 3 रात तक (8)
4 बजे 3 रात से
6 बजे 5 रात तक (9)

6 फरवरी दशमी शुक्रवार

10 बजे 29 दिन से
12 बजे दिन तक (1)
1 बजे 54 दिन से
4 बजे 9 दिन तक (3)
11 बजे 15 रात से
1 बजे 38 रात तक (7)
1 बजे 38 रात से
3 बजे 59 रात तक (8)
3 बजे 59 रात से
6 बजे 2 रात तक (9)

7 फरवरी एकादशी शनिवार

10 बजे 25 दिन से
11 बजे 56 दिन तक (1)
11 बजे 56 दिन से
1 बजे 22 दिन तक (2)

साथ रटुन

विवाह, यज्ञोपवीत इत्यादि शुभ मुहूर्तों के लिए
वस्त्र, मसाला, अग्निवत्र, लिवुन, महन्दी
लगाना, मस मुचरुन इत्यादि

वैशाख कृष्ण पक्ष

30 अप्रेल अष्टमी बुधवार

वैशाख शुक्ल पक्ष

8 मई द्वितीया गुरुवार

8 बजे 32 प्रातः से

9 मई तृतीया शुक्रवार

11 मई पंचमी रविवार

9 बजे 41 दिन से

12 मई षष्ठी सोमवार

18 मई एकादशी रविवार

19 मई द्वादशी सोमवार

21 मई चतुदर्शी बुधवार

3 बजे 9 दिन से

22 मई पूर्णिमा गुरुवार

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

23 मई प्रतिपदि शुक्रवार

7 बजे 7 प्रातः तक

2 जून द्वादशी सोमवार

5 जून अमावसी गुरुवार

ज्येष्ठ शुक्लपक्ष

6 जून प्रतिपदि शुक्रवार

9 जून चतुर्थी सोमवार

2 बजे 19 दिन से

16 जून एकादशी सोमवार

18 जून त्रयोदशी बुधवार

20 जून पूर्णिमा शुक्रवार

2 बजे 59 दिन तक

आषाढ कृष्ण पक्ष

29 जून दशमी रविवार

2 जुलाई त्रयोदशी बुधवार

आषाढ शुक्ल पक्ष

6 जुलाई द्वितीया रविवार

13 जुलाई अष्टमी रविवार

14 जुलाई नवमी सोमवार

5 बजे 19 शां से

17 जुलाई द्वादशी गुरुवार

श्रावण कृष्ण पक्ष

21 जुलाई प्रतिपदि सोमवार

27 जुलाई अष्टमी रविवार

5 बजे 51 प्रातः तक

30 जुलाई एकादशी बुधवार

31 जुलाई द्वादशी गुरुवार

7 बजे 4 प्रातः तक

3 अगस्त अमावसी रविवार

12 बजे 39 दिन तक

श्रावण शुक्ल पक्ष

8 अगस्त पंचमी शुक्रवार

10 अगस्त सप्तमी रविवार

11 अगस्त अष्टमी सोमवार

13 अगस्त नवमी बुधवार

10 बजे 55 दिन तक

14 अगस्त दशमी गुरुवार

आश्विन शुक्ल पक्ष

2 अक्टूबर प्रतिपदि गुरुवार

3 अक्टूबर द्वितीया शुक्रवार

6 अक्टूबर पंचमी सोमवार

कार्तिक कृष्ण पक्ष

20 अक्टूबर पंचमी सोमवार

22 अक्टूबर सप्तमी बुधवार

23 अक्टूबर अष्टमी गुरुवार

29 अक्टूबर त्रयोदशी बुधवार

31 अक्टूबर अमावसी शुक्रवार

कार्तिक शुक्लपक्ष

2 नवम्बर द्वितीया रविवार

3 नवम्बर तृतीया सोमवार

7 नवम्बर सप्तमी शुक्रवार

मार्ग कृष्ण पक्ष

17 नवम्बर तृतीया सोमवार

12 बजे 54 दिन से

19 नवम्बर पंचमी बुधवार

20 नवम्बर षष्ठी गुरुवार

26 नवम्बर द्वादशी बुधवार

27 नवम्बर त्रयोदशी गुरुवार

30 नवम्बर अमावसी रविवार

मार्ग शुक्ल पक्ष

1 दिसम्बर प्रतिपदि सोमवार

10 दिसम्बर एकादशी बुधवार

माघ कृष्ण पक्ष

21 जनवरी अष्टमी बुधवार

2 बजे 16 दिन तक

22 जनवरी नवमी गुरुवार

4 बजे 2 दिन से

23 जनवरी दशमी शुक्रवार

28 जनवरी अमावसी बुधवार

माघशुक्लपक्ष

6 फरवरी दशमी शुक्रवार

8 फरवरी द्वादशी रविवार

9 फरवरी सोमवार त्रयोदशी

शंकु प्रतिष्ठा मुहूर्त
(बुनियाद मकान)

वैशाख शुक्ल पक्ष

8 मई द्वितीया गुरुवार

7 बजे 55 प्रात: से

10 बजे 11 दिन तक (3)

9 मई तृतीया शुक्रवार

7 बजे 51 प्रात: से

10 बजे 7 दिन तक (3)

10 मई चतुर्थी शनिवार

5 बजे 54 प्रात: से

7 बजे 47 प्रात: तक (2)

12 मई षष्ठी सोमवार

5 बजे 46 प्रात: से

7 बजे 40 प्रात: तक (2)

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

26 मई चतुर्थी सोमवार

8 बजे 46 प्रात: से

9 बजे प्रात: तक (3)

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

6 जून प्रतिपदि शुक्रवार

12 बजे 7 दिन से

1 बजे 2 दिन तक (5)

श्रावण कृष्ण पक्ष

24 जुलाई पंचमी गुरुवार

4 बजे 58 दिन से

7 बजे शां तक (9)

25 जुलाई षष्ठी शुक्रवार

4 बजे 54 दिन से

6 बजे 56 शां तक (9)

श्रावण शुक्लपक्ष

8 अगस्त पंचमी शुक्रवार

3 बजे 59 दिन से

6 बजे 1 शां तक (9)

9 अगस्त षष्ठी शनिवार

3 बजे 55 दिन से

5 बजे 57 शां तक (9)

18 अगस्त पूर्णिमा सोमवार

8बजे 15 प्रात: से

10 बजे 35 दिन तक (6)

3 बजे 20 दिन से

4 बजे 26 दिन तक (9)

भाद्र कृष्ण पक्ष

22 अगस्त पंचमी शुक्रवार

7 बजे 59 प्रात: से

10 बजे 20 दिन तक (6)

भाद्र शुक्ल पक्ष

4 सितम्बर द्वितीया गुरुवार

2 बजे 13 दिन से

4 बजे 15 दिन तक (9)

5 सितम्बर तृतीया शुक्रवार

2 बजे 9 दिन से

4 बजे 11 दिन तक (9)

कार्तिक कृष्ण पक्ष

20 अक्टूबर पंचमी सोमवार

11 बजे 12 दिन से

1 बजे 4 दिन तक (9)

कार्तिक शुक्ल पक्ष

6 नवम्बर षष्ठी गुरुवार

1 बजे 46 दिन से

3 बजे 11 दिन तक (11)

7 नवम्बर सप्तमी शुक्रवार

1 बजे 42 दिन से

3 बजे 7 दिन तक (11)

मार्ग कृष्ण पक्ष

17 नवम्बर तृतीया सोमवार

1 बजे 3 दिन से

1 बजे 50 दिन तक (11)

19 नवम्बर पंचमी बुधवार

1 बजे 29 दिन से

2 बजे 20 दिन् तक (11)

20 नवम्बर षष्ठी गुरुवार

12 बजे 51 दिन से

2 बजे 16 दिन तक (11)

मार्ग शुक्ल पक्ष

4 दिसम्बर पंचमी गुरुवार
11 बजे 56 दिन से
1 बजे 21 दिन तक (11)

5 दिसम्बर षष्ठी शुक्रवार
11 बे 52 दिन से
1 बजे 17 दिन तक (11)

13 दिसम्बर चतुदर्शी शनिवार
7 बजे 39 प्रात: से
9 बजे 42 दिन तक (9)

माघ शुक्ल पक्ष

29 जनवरी प्रतिपदि गुरुवार
2 बजे 25 दिन से
4 बजे 41 दिन तक (3)

30 जनवरी तृतीया शुक्रवार
2 बजे 21 दिन से
4 बजे 37 दिन तक (3)

2 फरवरी षष्ठी सोमवार
2 बजे 9 दिन से
4 बजे 25 दिन तक (3)

प्रवेश मुहूर्त

(नये मकान में दाखिल होने के मुहूर्त)

वैशाख शुक्ल पक्ष

9 मई तृतीया शुक्रवार
7 बजे 51 प्रात: से
10 बजे 7 दिन तक (3)

12 मई षष्ठी सोमवार
7 बजे 40 प्रात: से
9 बजे 55 दिन तक (3)

19 मई द्वादशी सोमवार
7 बजे 12 प्रात: से
9 बजे 27 प्रात: तक (3)

ज्येष्ठ शुक्लपक्ष

6 जून प्रतिपदि शुक्रवार
12 बजे 7 दिन से
1 बजे 2 दिन तक (5)

16 जून एकादशी सोमवार
10 बजे 1 दिन से
12 बजे 23 दिन तक (5)

आषाढ कृष्ण पक्ष

23 जून तृतीया सोमवार
9 बजे 33 दिन से
10 बजे 11 दिन तक (5)

आषाढ शुक्ल पक्ष

12 जुलाई सप्तमी शनिवार
8 बजे 19 दिन से
10 बजे 40 दिन तक (5)

आश्विन शुक्ल पक्ष

6 अक्टूबर पंचमी सोमवार
3 बजे 48 दिन से
5 बजे 13 दिन तक (11)

13 अक्टूबर द्वादशी सोमवार
3 बजे 21 दिन से
4 बजे 45 दिन तक (11)

कार्तिक कृष्ण पक्ष

20 अक्टूबरपंचमी सोमवार
2 बजे 53 दिन से

4 बजे 18 दिन तक (11)

कार्तिक शुक्लपक्ष

6 नवम्बर षष्ठी गुरुवार

1 बजे 46 दिन से

3 बजे 11 दिन तक (11)

मार्ग कृष्ण पक्ष

17 नवम्बर तृतीया सोमवार

1 बजे 3 दिन से

1 बजे 50 दिन तक (11)

मार्ग शुक्ल पक्ष

4 दिसम्बर पंचमी गुरुवार

11 बजे 56 दिन से

12 बजे 10 दिन तक (11)

6 दिसम्बर सप्तमी शनिवार

11 बजे 48 दिन से

1 बजे 13 दिन तक (11)

माघ शुक्ल पक्ष

5 फरवरी नवमी गुरुवार

2 बजे 19 दिन से

4 वे 17 दिन तक (3)

6 फरवरी दशमी शुक्रवार

1 बजे 54 दिन से

4 बजे 9 दिन तक (3)

चूढा कर्म मुहूर्त

(ज़रकासय)

वैशाख शुक्ल पक्ष

8 मई द्वितीया गुरुवार

6 बजे 2 प्रात: से

7 बजे 55 प्रात: तक (2)

10 बजे 11 दिन से

12 बजे 34 दिन तक (4)

9 मई तृतीया शुक्रवार

5 बजे 58 प्रात: से

7 बजे 51 प्रात: तक (2)

10 बजे 7 दिन से

12 बजे 30 दिन तक (4)

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

26 मई चतुर्थी सोमवार

9 बजे दिन से

11 बजे 24 दिन तक (4)

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

16 जून एकादशी सोमवार

7 बजे 37 प्रात: से

10 बजे 1 दिन तक (4)

आषाढ कृष्ण पक्ष

23 जून तृतीया सोमवार

7 बजे 10 प्रात: से

9 बजे 33 दिन तक (4)

25 जून पंचमी बुधवार

7 बजे 2 प्रात: से

9 बजे 26 दिन तक (4)

आश्विन शुक्लपक्ष

3 अक्टूबर द्वितीया शुक्रवार

7 बजे 34 प्रात: से

9 बजे 58 दिन तक (7)

12 बजे 19 दिन से

2 बजे 21 दिन तक (9)

6 अक्टूबर पंचमी सोमवार

7 बजे 23 प्रात: से

9 बजे 46 दिन तक (7)
12 बजे 7 दिन से
2 बजे 9 दिन तक (9)

कार्तिक कृष्णपक्ष

20 अक्टूबर पंचमी सोमवार
11 बजे 12 दिन से
1 बजे 14 दिन तक (9)

कार्तिक शुक्लपक्ष

3 नवम्बर तृतीया सोमवार
8 बजे प्रातः से
10 बजे 21 दिन तक (8)
1 बजे 58 दिन से
3 बजे 23 दिन तक (11)

7 नवम्बर सप्तमी शुक्रवार
7 बजे 40 प्रातः से
10 बजे 1 दिन तक (8)
1 बजे 42 दिन से
3 बजे 7 दिन तक (11)

मार्ग कृष्ण पक्ष

19 नवम्बर पंचमी बुधवार
12 बजे 59 दिन से
1 बजे 29 दिन तक (11)

मार्ग शुक्ल पक्ष

4 दिसम्बर पंचमी गुरुवार
11 बजे 56 दिन से
1 बजे 21 दिन तक (11)

माघ शुक्ल पक्ष

5 फरवरी नवमी गुरुवार
2 बजे 19 दिन से
4 बजे 13 दिन तक (3)

6 फरवरी दशमी शुक्रवार
10 बजे 29 दिन से
12 बजे दिन तक (1)

9 फरवरी त्रयोदशी सोमवार
10 बजे 17 दिन से
11 बजे 49 दिन तक (1)

जात कर्म मुहूर्त
(काह नेथर)

वैशाख शुक्ल पक्ष

8 मई द्वितीया गुरुवार
8 बजे 32 दिन से
9 मई तृतीया शुक्रवार
11 मई पंचमी रविवार
9 बजे 41 दिन से
12 मई षष्ठी सोमवार
18 मई एकादशी रविवार
19 मई द्वादशी सोमवार

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

26 मई चतुर्थी सोमवार
8 बजे 46 प्रातः से

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

6 जून प्रतिपदि शुक्रवार
12 बजे 7 दिन से
8 जून तृतीया रविवार
12 बजे 58 दिन तक
9 जून चतुर्थी सोमवार
2 बजे 19 दिन से
16 जून एकादशी सोमवार

आषाढ कृष्ण पक्ष

22 जून द्वितीया रविवार

12 बजे 1 दिन से

23 जून तृतीया सोमवार

25 जून पंचमी बुधवार

आषाढ शुक्ल पक्ष

6 जुलाई द्वितीया रविवार

7 जुलाई तृतीया सोमवार

11 जुलाई षष्ठी शुक्रवार

श्रावण कृष्ण पक्ष

21 जुलाई प्रतिपदि सोमवार

5 बजे 39 प्रातः से

24 जुलाई पंचमी गुरुवार

9 बजे 50 दिन से

श्रावण शुक्ल पक्ष

8 अगस्त पंचमी शुक्रवार

10 अगस्त सप्तमी रविवार

13 अगस्त नवमी बुधवार

आश्विन शुक्लपक्ष

3 अक्टूबर द्वितीया शुक्रवार

6 अक्टूबर पंचमी सोमवार

12 अक्टूबर एकादशी रविवार

13 अक्टूबर द्वादशी सोमवार

कार्तिक कृष्ण पक्ष

20 अक्टूबर पंचमी सोमवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

2 नवम्बर द्वितीया रविवार

6 नवम्बर षष्ठी गुरुवार

7 नवम्बर सप्तमी शुक्रवार

9 नवम्बर नवमी रविवार

12 बजे 24 दिन से

12 नवम्बर त्रयोदशी बुधवार

मार्ग कृष्ण पक्ष

17 नवम्बर तृतीया सोमवार

19 नवम्बर पंचमी बुधवार

1 बजे 29 दिन तक

मार्ग शुक्ल पक्ष

4 दिसम्बर पंचमी गुरुवार

5 दिसम्बर षष्ठी शुक्रवार

10 दिसम्बर एकादशी बुधवार

माघ शुक्ल पक्ष

29 जनवरी प्रतिपदि गुरुवार

8 बजे 52 प्रातः से

30 जनवरी तृतीया शुक्रवार

1 फरवरी पंचमी रविवार

2 फरवरी षष्ठी सोमवार

6 फरवरी दशमी शुक्रवार

9 फरवरी त्रयोदशी सोमवार

1 बजे 33 दिन तक

वाग्दान मुहूर्त

गण्डुन

वैशाख कृष्ण पक्ष

1 मई नवमी गुरुवार

4 बजे 52 दिन से

2 मई दशमी शुक्रवार

5 बजे 30 शां से

4 मई द्वादशी रविवार

वैशाख शुक्ल पक्ष

7 मई प्रतिपदि बुधवार

9 बजे 22 दिन से
8 मई द्वितीया गुरुवार
9 मई तृतीया शुक्रवार
16 मई नवमी शुक्रवार
8 बजे 13 प्रातः से
18 मई एकादशी रविवार

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

23 मई प्रतिपदि शुक्रवार
7 बजे 7 दिन तक
25 मई तृतीया रविवार
26 मई चतुर्थी सोमवार
8 बजे 46 प्रातः से
28 मई सप्तमी बुधवार
1 जून एकादशी रविवार

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

6 जून प्रतिपदि शुक्रवार .
11 जून षष्ठी बुधवार
12 जून सप्तमी गुरुवार
16 जून एकादशी सोमवार
2 बजे 17 दिन से
18 जून त्रयोदशी बुधवार
4 बजे 1 दिन से
20 जून पूर्णिमा शुक्रवार
2 बजे 59 दिन से

आषाढ कृष्ण पक्ष

22 जून द्वितीया रविवार
23 जून तृतीया सोमवार
26 जून षष्ठी गुरुवार
27 जून सप्तमी शुक्रवार
7 बजे 13 प्रातः तक
2 जुलाई त्रयोदशी बुधवार

आषाढ शुक्लपक्ष

9 जुलाई चतुर्थी बुधवार
10 जुलाई पंचमी गुरुवार
11 जुलाई षष्ठी शुक्रवार
14 जुलाई नवमी सोमवार
5 बजे 19 शां से
18 जुलाई त्रयोदशी शुक्रवार
2 बजे 15 दिन तक
20 जुलाई पूर्णिमा रविवार

श्रावण कृष्ण पक्ष

21 जुलाई प्रतिपदि सोमवार
4 बजे 45 दिन से
24 जुलाई पंचमी गुरुवार
25 जुलाई षष्ठी शुक्रवार
28 जुलाई नवमी सोमवार
10 बजे 13 दिन से
30 जुलाई एकादशी बुधवार
31 जुलाई द्वादशी गुरुवार
7 बजे 4 प्रातः तक

श्रावण शुक्लपक्ष

4 अगस्त प्रतिपदि सोमवार
3 बजे 18 दिन से
6 अगस्त तृतीया बुधवार
8 अगस्त पंचमी शुक्रवार
10 अगस्त सप्तमी रविवार
13 अगस्त नवमी बुधवार

आश्विन शुक्ल पक्ष

2 अक्टूबर प्रतिपदि गुरुवार

3 बजे 45 दिन तक

6 अक्टूबर पंचमी सोमवार

8 अक्टूबर षष्ठी बुधवार

12 अक्टूबर एकादशी रविवार

15 अक्टूबर चतुर्दशी बुधवार

12 बजे 48 दिन से

कार्तिक कृष्ण पक्ष

20 अक्टूबर पंचमी सोमवार

26 अक्टूबर एकादशी रविवार

27 अक्टूबर द्वादशी सोमवार

29 अक्टूबर त्रयोदशी बुधवार

11 बजे 33 दिन तक

31 अक्टूबर अमावसी शुक्रवार

3 बजे 31 दिन से

कार्तिक शुक्ल पक्ष

2 नवम्बर द्वितीया रविवार

5 नवम्बर पंचमी बुधवार

6 नवम्बर षष्ठी गुरुवार

7 नवम्बर सप्तमी शुक्रवार

3 बजे 58 दिन तक

10 नवम्बर दशमी सोमवार

12 नवम्बर त्रयोदशी बुधवार

14 नवम्बर पूर्णिमा शुक्रवार

4 बजे 48 दिन से

मार्ग कृष्ण पक्ष

17 नवम्बर तृतीया सोमवार

12 बजे 54 दिन तक

24 नवम्बर दशमी सोमवार

27 नवम्बर त्रयोदशी गुरुवार

8 बजे 11 दिन से

30 नवम्बर अमावसी रविवार

7 बजे 44 प्रातः से

मार्ग शुक्ल पक्ष

1 दिसम्बर प्रतिपदि सोमवार

12 बजे 58 दिन से

4 दिसम्बर पंचमी गुरुवार

5 दिसम्बर षष्ठी शुक्रवार

12 दिसम्बर त्रयोदशी शुक्रवार

माघ कृष्ण पक्ष

23 जनवरी दशमी शुक्रवार

25 जनवरी द्वादशी रविवार

26 जनवरी त्रयोदशी सोमवार

3 बजे 40 दिन तक

माघ शुक्ल पक्ष

29 जनवरी प्रतिपदि गुरुवार

1 फरवरी पंचमी रविवार

2 फरवरी षष्ठी सोमवार

5 फरवरी नवमी गुरुवार

2 बजे 19 दिन से

6 फरवरी दशमी शुक्रवार

विद्यारम्भ मुहूर्त

(स्कूल में दाखिल करना या पढ़ाई आरम्भ करना)

वैशाख शुक्ल पक्ष

9 मई तृतीया शुक्रवार

8 बजे 15 दिन से
11 मई पंचमी रविवार
16 मई नवमी शुक्रवार
8 बजे 13 दिन से
18 मई एकादशी रविवार

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

25 मई तृतीया रविवार
10 बजे 42 दिन तक

ज्येष्ठ शुक्लपक्ष

6 जून प्रतिपदि शुक्रवार
12 बजे 7 दिन से
8 जून तृतीया रविवार
12 बजे 58 दिन से
12 जून सप्तमी गुरुवार

आषाढ कृष्ण पक्ष

22 जून द्वितीया रविवार

आषाढ शुक्ल पक्ष

6 जुलाई द्वितीया रविवार
10 जुलाई पंचमी गुरुवार
2 बजे 29 दिन तक
11 जुलाई षष्ठी शुक्रवार
5 बजे 36 शां से

आश्विन शुक्लपक्ष

3 अक्टूबर द्वितीया शुक्रवार
12 अक्टूबर एकादशी रविवार

कार्तिक शुक्लपक्ष

2 नवम्बर द्वितीया रविवार
6 नवम्बर षष्ठी गुरुवार
7 बजे 9 प्रातः तक
9 नवम्बर नवमी रविवार
12 बजे 24 दिन से

मार्ग शुक्ल पक्ष

5 दिसम्बर षष्ठी शुक्रवार

माघ शुक्ल पक्ष

29 जनवरी प्रतिपदि गुरुवार
8 बजे 52 दिन से
30 जनवरी तृतीया शुक्रवार
6 फरवरी दशमी शुक्रवार
1 बजे 10 दिन से
8 फरवरी द्वादशी रविवार
1 बजे 4 दिन तक

लडकी को दूध देने का मुहूर्त

वैशाख कृष्ण पक्ष

1 मई नवमी गुरुवार
4 बजे 52 दिन से

वैशाख शुक्ल पक्ष

11 मई पंचमी रविवार
9 बजे 41 दिन से
18 मई एकादशी रविवार
12 बजे 38 दिन तक
22 मई पूर्णिमा गुरुवार
7 बजे 12 दिन से

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

25 मई तृतीया रविवार
5 बजे 43 प्रातः तक

ज्येष्ठ शुक्लपक्ष

8 जून तृतीया रविवार
12 बजे 58 दिन तक

आषाढ शुक्ल पक्ष

6 जुलाई द्वितीया रविवार

20 जुलाई पूर्णिमा रविवार

7 बजे 11 शां से

श्रावण कृष्ण पक्ष

31 जुलाई द्वादशी गुरुवार

9 बजे 57 दिन से

श्रावण शुक्लपक्ष

14 अगस्त दशमी गुरुवार

10 बजे 26 दिन से

आश्विन शुक्लपक्ष

2 अक्टूबर प्रतिपदि गुरुवार

3 बजे 45 दिन तक

कार्तिक शुक्ल पक्ष

2 नवम्बर द्वितीया रविवार

मार्ग कृष्ण पक्ष

20 नवम्बर षष्ठी गुरुवार

2 बजे 32 दिन से

25 नवम्बर एकादशी भौमवार

30 नवम्बर अमावसी रविवार

मार्ग शुक्ल पक्ष

2 दिसम्बर तृतीया भौमवार

1 बजे दिन तक

माघ कृष्ण पक्ष

25 जनवरी द्वादशी रविवार

4 बजे 53 दिन से

माघ शुक्ल पक्ष

10 फरवरी चतुर्दशी भौमवार

2 बजे 29 दिन से

वस्त्र धारण मुहूर्त

[दोनों स्त्री पुरुष के लिए]

चैत्र शुक्लपक्ष

20 अप्रेल त्रयोदशी रविवार

5-43 दिन से

वैशाख कृष्ण पक्ष

23 अप्रेल प्रतिपदि बुधवार

24 अप्रेल द्वितीया गुरुवार

25 अप्रेल तृतीया शुक्रवार

1 मई नवमी गुरुवार

4 बजे 52 दिन से

4 मई द्वादशी रविवार

1 बजे 57 दिन से

वैशाख शुक्लपक्ष

18 मई एकादशी रविवार

21 मई चतुर्दशी बुधवार

3 बजे 9 दिन से

22 मई पूर्णिमा गुरुवार

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

23 मई प्रतिपदि शुक्रवार

7 बजे 7 प्रातः तक

28 मई सप्तमी बुधवार

1 जून एकादशी रविवार

ज्येष्ठ शुक्लपक्ष

18 जून त्रयोदशी बुधवार

आषाढ कृष्णपक्ष

25 जून पंचमी बुधवार

6 बजे 28 प्रातः तक

29 जून दशमी रविवार

आषाढ शुक्लपक्ष

11 जुलाई षष्ठी शुक्रवार

5 बजे 36 शां से

13 जुलाई अष्टमी रविवार

4 बजे 6 दिन से

श्रावण कृष्ण पक्ष

25 जुलाई षष्ठी शुक्रवार

8 बजे 5 दिन से

27 जुलाई अष्टमी रविवार

5 बजे 51 प्रातः तक

श्रावण शुक्ल पक्ष

8 अगस्त पंचमी शुक्रवार

10 अगस्त सप्तमी रविवार

13 अगस्त नवमी बुधवार

6 बजे 40 प्रातः से

भाद्र कृष्ण पक्ष

22 अगस्त पंचमी शुक्रवार

भाद्र शुक्ल पक्ष

4 सितम्बर द्वितीया गुरुवार

5 सितम्बर तृतीया शुक्रवार

1 बजे 7 दिन तक

7 सितम्बर पंचमी रविवार

14 सितम्बर द्वादशी रविवार

1 बजे 52 दिन से

आश्विन कृष्ण पक्ष

18 सितम्बर द्वितीया गुरुवार

19 सितम्बर तृतीया शुक्रवार

1 बजे 49 दिन तक

आश्विन शुक्ल पक्ष

2 अक्टूबर प्रतिपदि गुरुवार

3 अक्टूबर द्वितीया शुक्रवार

12 अक्टूबर एकादशी रविवार

कार्तिक कृष्णपक्ष

29 अक्टूबर त्रयोदशी बुधवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

2 नवम्बर द्वितीया रविवार

12 नवम्बर त्रयोदशी बुधवार

मार्ग कृष्ण पक्ष

26 नवम्बर द्वादशी बुधवार

27 नवम्बर त्रयोदशी गुरुवार

मार्ग शुक्ल पक्ष

5 दिसम्बर षष्ठी शुक्रवार

11 बजे 25 दिन से

10 दिसम्बर एकादशी बुधवार

पौष कृष्ण पक्ष

24 दिसम्बर दशमी बुधवार

25 दिसम्बर एकादशी गुरुवार

26 दिसम्बर द्वादशी शुक्रवार

पौष शुक्ल पक्ष

2 जनवरी चतुर्थी शुक्रवार

3 बजे 4 दिन से

7 जनवरी दशमी बुधवार

9 बजे 40 दिन तक

माघ कृष्ण पक्ष

21 जनवरी अष्टमी बुधवार

2 बजे 16 दिन तक

22 जनवरी नवमी गुरुवार

4 बजे 2 दिन से

23 जनवरी दशमी शुक्रवार

माघ शुक्ल पक्ष

29 जनवरी प्रतिपदि गुरुवार

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

18 फरवरी सप्तमी बुधवार

19 फरवरी सप्तमी गुरुवार

20 फरवरी अष्टमी शुक्रवार

फाल्गुन शुक्लपक्ष

1 मार्च तृतीया रविवार

12 बजे 36 दिन तक

चैत्र कृष्ण पक्ष

15 मार्च द्वितीया रविवार

18 मार्च पंचमी बुधवार

19 मार्च षष्ठी गुरुवार

25 मार्च द्वादशी बुधवार

वस्त्र धारण मुहूर्त

केवल पुरुषों के लिए

चैत्र शुक्ल पक्ष

11 अप्रेल चतुर्थी शुक्रवार

8 बजे 25 प्रात: से

20 अप्रेल त्रयोदशी रविवार

5 बजे 43 शां से

वैशाख कृष्ण पक्ष

4 मई द्वादशी रविवार

1 बजे 57 दिन तक

वैशाख शुक्ल पक्ष

8 मई द्वितीया गुरुवार

8 बजे 32 दिन से

9 मई तृतीया शुक्रवार

8 बजे 15 प्रात: तक

11 मई पंचमी रविवार

9 बजे 41 दिन से

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

8 जून तृतीया रविवार

12 बजे 58 दिन तक

आषाढ कृष्ण पक्ष

22 जून द्वितीया रविवार

12 बजे 1 दिन से

27 जून सप्तमी शुक्रवार

2 जुलाई त्रयोदशी बुधवार

आषाढ शुक्लपक्ष

6 जुलाई द्वितीया रविवार

10 जुलाई पंचमी गुरुवार

2 बजे 29 दिन से

11 जुलाई षष्ठी शुक्रवार

20 जुलाई पूर्णिमा रविवार

श्रावण कृष्ण पक्ष

25 जुलाई षष्ठी शुक्रवार

8 बजे 5 प्रात: तक

30 जुलाई एकादशी बुधवार

6 बजे 4 प्रात: तक

1 अगस्त त्रयोदशी शुक्रवार

10 बजे 46 दिन तक

भाद्र कृष्ण पक्ष

28 अगस्त एकादशी गुरुवार

2 बजे 9 दिन से

29 अगस्त द्वादशी शुक्रवार

भाद्र शुक्ल पक्ष

3 सितम्बर प्रतिपदि बुधवार

4 सितम्बर द्वितीया गुरुवार

6 बजे 47 प्रात: तक

12 सितम्बर दशमी शुक्रवार

5 बजे 38 शां से

आश्विन कृष्ण पक्ष

17 सितांबर प्रतिपदि बुधवार

25 सितम्बर नवमी गुरुवार

8 बजे 16 दिन से

26 सितम्बर दशमी शुक्रवार

आश्विन शुक्ल पक्ष

15 अक्टूबर चतुदर्शी बुधवार

12 बजे 48 दिन से

कार्तिक कृष्ण पक्ष

22 अक्टूबर सप्तमी बुधवार

23 अक्टूबर अष्टमी गुरुवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

6 नवम्बर षष्ठी गुरुवार

मार्ग कृष्ण पक्ष

19 नवम्बर पंचमी बुधवार

20 नवम्बर षष्ठी गुरुवार

मार्ग शुक्ल पक्ष

4 दिसम्बर पंचमी गुरुवार

12 बजे 10 दिन तक

पौष कृष्ण पक्ष

17 दिसम्बर तृतीया बुधवार

21 दिसम्बर सप्तमी रविवार

प्रात: 7 बजे 45 से

पौष शुक्ल पक्ष

31 दिसम्बर द्वितीया बुधवार

4 ज़नवरी षष्ठी रविवार

1 बजे 24 दिन से

9 जनवरी द्वादशी शुक्रवार

7 बजे 53 प्रात: से

माघ कृष्ण पक्ष

18 जनवरी षष्ठी रविवार

माघ शुक्ल पक्ष

1 फरवरी पंचमी रविवार

6 फरवरी दशमी शुक्रवार

8 फरवरी द्वादशी रविवार

2 बजे दिन से

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

5 मार्च अष्टमी गुरुवार

8 मार्च एकादशी रविवार

दिवचक्षीर मुहूर्त

वैशाख शुक्ल पक्ष

18 मई एकादशी रविवार

19 मई द्वादशी सोमवार

21 मई चतुदर्शी बुधवार

3 बजे 9 दिन से

22 मई पूर्णिमा गुरुवार

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

23 मई प्रतिपदि शुक्रवार

7 बजे 7 प्रात: तक

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

16 जून एकादशी सोमवार

18 जून त्रयोदशी बुधवार

आषाढ शुक्ल पक्ष

13 जुलाई अष्टमी रविवार

श्रावण शुक्ल पक्ष

8 अगस्त पंचमी शुक्रवार

10 अगस्त सप्तमी रविवार

11 अगस्त अष्टमी सोमवार

13 अगस्त नवमी बुधवार

आश्विन शुक्ल पक्ष

2 अक्टूबर प्रतिपदि गुरुवार

3 अक्टूबर द्वितीया शुक्रवार

6 अक्टूबर पंचमी सोमवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

2 नवम्बर द्वितीया रविवार

12 नवम्बर त्रयोदशी बुधवार

मार्ग शुक्ल पक्ष

10 दिसम्बर एकादशी बुधवार

माघ शुक्ल पक्ष

2 फरवरी षष्ठी सोमवार

लेन्टर छत इत्यादि डालने का मुहूर्त

वैशाख कृष्ण पक्ष

30 अप्रैल अष्टमी बुधवार

वैशाख शुक्ल पक्ष

11 मई पंचमी रविवार

9 बजे 41 दिन तक

12 मई षष्ठी सोमवार

11 बजे 28 दिन से

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

26 मई चतुर्थी सोमवार

8 बजे 46 दिन से

28 मई सप्तमी बुधवार

1 बजे 19 दिन तक

ज्येष्ठ शुक्लपक्ष

6 जून प्रतिपदि शुक्रवार

5 बजे 26 प्रात: से

9 जून चतुर्थी सोमवार

2 बजे 19 दिन से

आषाढ कृष्ण पक्ष

22 जून द्वितीया रविवार

12 बजे दिन से

23 जून तृतीया सोमवार

आषाढ शुक्ल पक्ष

6 जुलाई द्वितीया रविवार

7 जुलाई तृतीया सोमवार

5 बजे 50 प्रात: तक

10 जुलाई पंचमी गुरुवार

2 बजे 28 दिन से

11 जुलाई षष्ठी शुक्रवार

श्रावण कृष्ण पक्ष

31 जुलाई द्वादशी गुरुवार

7 बजे 4 प्रात: से

1 अगस्त त्रयोदशी शुक्रवार

8 बजे 30 प्रात: तक

आश्विन शुक्ल पक्ष

12 अक्टूबर एकादशी रविवार

10 बजे 18 दिन तक

कार्तिक कृष्ण पक्ष

23 अक्टूबर अष्टमी गुरुवार

27 अक्टूबर द्वादशी सोमवार

4 बजे 14 दिन से

कार्तिक शुक्ल पक्ष

6 नवम्बर षष्ठी गुरुवार

7 बजे 9 दिन से

7 नवम्बर सप्तमी शुक्रवार

मार्ग कृष्ण पक्ष

17 नवम्बर तृतीया सोमवार

12 बजे 54 दिन से

19 नवम्बर पंचमी बुधवार

1 बजे 44 दिन से

20 नवम्बर षष्ठी गुरुवार

24 नवम्बर दशमी सोमवार

मार्ग शुक्ल पक्ष

4 दिसम्बर पंचमी गुरुवार

5 दिसम्बर षष्ठी शुक्रवार

माघ शुक्ल पक्ष

29 जनवरी प्रतिपदि गुरुवार

8 बजे 52 प्रातः से

8 फरवरी द्वादशी रविवार

2 बजे दिन तक

नये मकान में चुल्हा गैस आदि जलाने का मुहूर्त

वैशाख शुक्ल पक्ष

9 मई तृतीया शुक्रवार

8 बजे 15 प्रातः से

12 मई षष्ठी सोमवार

16 मई नवमी शुक्रवार

8 बजे 13 प्रातः से

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

23 मई प्रतिपदि शुक्रवार

1 बजे 46 दिन से

26 मई चतुर्थी सोमवार

8 बजे 46 प्रातः से

2 जून द्वादशी सोमवार

ज्येष्ठ शुक्लपक्ष

6 जून प्रतिपदि शुक्रवार

12 बजे 7 दिन से

9 जून चतुर्थी सोमवार

2 बजे 19 दिन से

12 जून सप्तमी गुरुवार

16 जून एकादशी सोमवार

2 बजे 17 दिन से

18 जून त्रयोदशी बुधवार

आषाढ कृष्ण पक्ष

23 जून तृतीया सोमवार

आषाढ शुक्ल पक्ष

7 जुलाई तृतीया सोमवार

5 बजे 50 प्रातः तक

10 जुलाई पंचमी गुरुवार

2 बजे 29 दिन तक

11 जुलाई षष्ठी शुक्रवार

5 बजे 36 शां से

14 जुलाई नवमी सोमवार

5 बजे 19 शां से

17 जुलाई द्वादशी गुरुवार

श्रावण कृष्ण पक्ष

21 जुलाई प्रतिपदि सोमवार

5 बजे 39 प्रात: से

30 जुलाई एकादशी बुधवार

31 जुलाई द्वादशी गुरुवार

7 बजे 4 प्रात: तक

1 अगस्त त्रयोदशी शुक्रवार

8 बजे 30 प्रात: से

श्रावण शुक्ल पक्ष

6 अगस्त तृतीया बुधवार

8 अगस्त पंचमी शुक्रवार

13 अगस्त नवमी बुधवार

आश्विन शुक्ल पक्ष

6 अक्टूबर पंचमी सोमवार

कार्तिक कृष्ण पक्ष

20 अक्टूबर पंचमी सोमवार

22 अक्टूबर सप्तमी बुधवार

27 अक्टूबर द्वादशी सोमवार

29 अक्टूबर त्रयोदशी बुधवार

11 बजे 33 दिन तक

कार्तिक शुक्ल पक्ष

3 नवम्बर तृतीया सोमवार

6 नवम्बर षष्ठी गुरुवार

7 बजे 9 प्रात: से

7 नवम्बर सप्तमी शुक्रवार

3 बजे 58 दिन तक

मार्ग कृष्ण पक्ष

17 नवम्बर तृतीया सोमवार

1 बजे 50 दिन तक

19 नवम्बर पंचमी बुधवार

20 नवम्बर षष्ठी गुरुवार

27 नवम्बर त्रयोदशी गुरुवार

8 बजे 11 प्रात: से

मार्ग शुक्लपक्ष

1 दिसम्बर प्रतिपदि सोमवार

7 बजे 40 प्रात: से

4 दिसम्बर पंचमी गुरुवार

5 दिसम्बर षष्ठी शुक्रवार

11 बजे 25 दिन तक

10 दिसम्बर एकादशी बुधवार

माघ कृष्ण पक्ष

22 जनवरी नवमी गुरुवार

4 बजे 2 दिन से

23 जनवरी दशमी शुक्रवार

माघ शुक्ल पक्ष

6 फरवरी दशमी शुक्रवार

1 बजे 10 दिन से

9 फरवरी त्रयोदशी सोमवार

1 बजे 33 दिन तक

पन्न द्युन मुहूर्त

भाद्र शुक्ल पक्ष

5 सितम्बर तृतीया शुक्रवार

6 सितम्बर चतुर्थी शनिवार

7 सितम्बर पंचमी रविवार

14 सितम्बर द्वादशी रविवार

1 बजे 52 दिन से

15 सितम्बर त्रयोदशी सोमवार

शिशर मुहूर्त

मार्ग कृष्ण पक्ष

26 नवम्बर द्वादशी बुधवार

27 नवम्बर त्रयोदशी गुरुवार

मार्ग शुक्ल पक्ष

4 दिसम्बर पंचमी गुरुवार

5 दिसम्बर षष्ठी शुक्रवार

11 बजें 25 दिन से

10 दिसम्बर एकादशी बुधवार

पौष कृष्ण पक्ष

24 दिसम्बर दशमी बुधवार

25 दिसम्बर एकादशी गुरुवार

26 दिसम्बर द्वादशी शुक्रवार

पौष शुक्ल पक्ष

7 जनवरी दशमी बुधवार

दीपदान मुहूर्त

आश्विन शुक्लपक्ष

3 अकटूबर द्वितीया शुक्रवार

6 अक्टूबर पंचमी सोमवार

8 अक्टूबर षष्ठी बुधवार

16 अक्टूबर पूर्णिमा गुरुवार

कार्तिक कृष्ण पक्ष

20 अक्टूबर पंचमी सोमवार

27 अक्टूबर द्वादशी सोमवार

29 अक्टूबर त्रयोदशी बुधवार

11 बजे 33 दिन तक

कार्तिक शुक्ल पक्ष

3 नवम्बर तृतीया सोमवार

5 नवम्बर पंचमी बुधवार

14 नवम्बर पूर्णिमा शुक्रवार

माघ शुक्ल पक्ष

6 फरवरी दशमी शुक्रवार

यात्रा मुहूर्त

चैत्र शुक्ल पक्ष

8 अप्रेल पूर्व दक्षिण यात्रा

11 अप्रेल पश्चिम बिना यात्रा

14 अप्रेल पूर्व बिना यात्रा

15 अप्रेल पूर्व दक्षिण यात्रा

18 अप्रेल पश्चिम बिना यात्रा

12 बजे 3 दिन से

19 अप्रेल पूर्व बिना यात्रा

20 अप्रेल पूर्वोत्तर यात्रा

21 अप्रेल पूर्व बिना यात्रा

वैशाख कृष्ण पक्ष

25 अप्रेल पश्चिम बिना यात्रा

26 अप्रेल पूर्व बिना यात्रा

27 अप्रेल पूर्वोत्तर यात्रा

28 अप्रेल पूर्व बिना यात्रा

29 अप्रेल पूर्व दक्षिण यात्रा

30 अप्रेल उत्तर बिना यात्रा

1 मई पूर्व पश्चिम यात्रा

2 मई पूर्वोत्तर यात्रा

3 मई पश्चिमोत्तर यात्रा

4 मई पूर्वोत्तर यात्रा

5 मई पश्चिमोत्तर यात्रा

6 मई पूर्व दक्षिण यात्रा
10 बजे 38 दिन तक

वैशाख शुक्ल पक्ष

8 मई-पूर्वपश्चिम यात्रा
8 बजे 32 प्रातः से
9 मई पश्चिम बिना यात्रा
10 मई पूर्व बिना यात्रा
8 बजे 37 दिन तक
12 मई पूर्व बिना यात्रा
16 मई पश्चिम बिना यात्रा
17 मई पूर्व बिना यात्रा
18 मई पूर्वोत्तर यात्रा
22 मई .पूर्व पश्चिम यात्रा
7 बजे 12 दिन से

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

23 मई पश्चिम बिना यात्रा
24 मई पूर्व बिना यात्रा
25 मई पूर्वोत्तर यात्रा
26 मई पूर्व बिना यात्रा
28 मई पूर्व पश्चिम यात्रा
29 मई पूर्व पश्चिम यात्रा
30 मई पूर्वोत्तर यात्रा
31 मई पूर्वोत्तर यात्रा
1 जून पूर्वोत्तर यात्रा
2 जून पूर्व बिना यात्रा
5 जून पूर्व पश्चिम यात्रा

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

6 जून पश्चिम यात्रा
8 जून पूर्वोत्तर यात्रा
9 जून पूर्व बिना यात्रा
12 जून पूर्व पशिचम यात्रा
14 जून पूर्व बिना यात्रा
18 जून उत्तर बिना यात्रा
4 बजे 1 दिन से
19 जून पूर्व पश्चिम यात्रा
20 जून पश्चिम बिना यात्रा

आषाढ कृष्ण पक्ष

21 जून पूर्व बिना यात्रा
22 जून पूर्वोत्तर यात्रा
23 जून पूर्व बिना यात्रा
24 जून पूर्व दक्षिण यात्रा
8 बजे 18 प्रातः तक
25 जून पूर्व पश्चिम यात्रा
26 जून पूर्व पश्चिम यात्रा
27 जून पूर्वोत्तर यात्रा
28 जून पश्चिमोत्तर यात्रा
29 जून पूर्वोत्तर यात्रा
2 जुलाई उत्तर बिना यात्रा
3 जुलाई पूर्व पश्चिम यात्रा

आषाढ शुक्ल पक्ष

5 जुलाई पूर्व बिना यात्रा
6 जुलाई पूर्वोत्तर यात्रा
7 जुलाई पूर्व बिना यात्रा
5 बजे 50 प्रातः तक
9 जुलाई उत्तर बिना यात्रा
11 बजे 21 दिन से
10 जुलाई पूर्व पश्चिम यात्रा
11 जुलाई पश्चिम बिना यात्रा
12 जुलाई पूर्व बिना यात्रा
17 जुलाई पूर्व पश्चिम यात्रा

18 जुलाई पश्चिम बिना यात्रा
19 जुलाई पूर्व बिना यात्रा
20 जुलाई पूर्वोत्तर यात्रा

श्रावण कृष्ण पक्ष

21 जुलाई पूर्व बिना यात्रा
22 जुलाई पूर्व यात्रा
23 जुलाई पूर्व पश्चिम यात्रा
24 जुलाई पूर्व पश्चिम यात्रा
25 जुलाई पूर्वोत्तर यात्रा
26 जुलाई पश्चिमोत्तर यात्रा
27 जुलाई पश्चिमोतर यात्रा
5 बजे 51 प्रातः तक
29 जुलाई पूर्व दक्षिण यात्रा
30 जुलाई उत्तर बिना यात्रा
31 जुलाई पूर्व पश्चिम यात्रा
1 अगस्त पश्चिम बिना यात्रा
8 बजे 20 दिन से
2 अगस्त पूर्व बिना यात्रा
3 अगस्त पूर्वोत्तर यात्रा
12 बजे 39 दिन तक

श्रावण शुक्ल पक्ष

5 अगस्त पूर्व दक्षिण यात्रा
6 बजे 15 शां से
6 अगस्त उत्तर बिना यात्रा
7 अगस्त पूर्व पश्चिम यात्रा
8 अगस्त पश्चिम बिना यात्रा
12 अगस्त पूर्व दक्षिण यात्रा
9 बजे 55 दिन से
13 अगस्त उत्तर बिना यात्रा
14 अगस्त पूर्व पश्चिम यात्रा
17 अगस्त पूर्वोत्तर यात्रा
18 अगस्त पश्चिमोत्तर यात्रा

भाद्र कृष्ण पक्ष

19 अगस्त पूर्व यात्रा
20 अगस्त पूर्व पश्चिम यात्रा
21 अगस्त पूर्व पश्चिम यात्रा
22 अगरत पूर्वोत्तर यात्रा
23 अगस्त पूर्व बिना यात्रा
2 बजे 34 दिन तक
25 अगस्त पूर्व बिना यात्रा
11 बजे 18 दिन से
26 अगस्त पूर्व दक्षिण यात्रा
27 अगस्त उत्तर बिना यात्रा
12 बजे 36 दिन तक
28 अगस्त पूर्व पश्चिम यात्रा
2 बजे 9 दिन से
29 अगस्त पश्चिम बिना यात्रा
30 अगस्त पूर्व बिना यात्रा

भाद्र शुक्ल पक्ष

3 सितम्बर उत्तर बिना यात्रा
4 सितम्बर पूर्व पश्चिम यात्रा
5 सितम्बर पश्चिम बिना यात्रा
9 बजे 50 दिन तक
8 सितम्बर पूर्व बिना यात्रा
4 बजे 58 दिन से
9 सितम्बर पूर्व दक्षिण यात्रा
10 सितम्बर उत्तर बिना यात्रा
11 सितम्बर पूर्व पश्चिम यात्रा
12 सितम्बर पश्चिम बिना यात्रा
13 सितम्बर पूर्व बिना यात्रा

14 सितम्बर पूर्वोत्तर यात्रा

आश्विन कृष्ण पक्ष

17 सितम्बर पूर्व पश्चिम यात्रा
18 सितम्बर पूर्व पश्चिम यात्रा
19 सितम्बर पश्चिम बिना यात्रा
22 सितम्बर पूर्व बिना यात्रा
23 सितम्बर पूर्व दक्षिण यात्रा
25 सितम्बर पूर्व पश्चिम यात्रा
26 सितम्बर पश्चिम बिना यात्रा
29 सितम्बर पूर्व बिना यात्रा
6 बजे 38 प्रात: से
30 सितम्बर पूर्व दक्षिण यात्रा
1 अक्टूबर उत्तर बिना यात्रा

आश्विन शुक्ल पक्ष

2 अक्टूबर पूर्व पश्चिम यात्रा
3 बजे 45 दिन तक
6 अक्टूबर पूर्व बिना यात्रा
7 अक्टूबर पूर्व दक्षिण यात्रा
8 अक्टूबर उत्तर बिना यात्रा
9 अक्टूबर पूर्व पश्चिम यात्रा
10 अक्टूबर पश्चिम बिना यात्रा
11 अक्टूबर पूर्व बिना यात्रा
12 अक्टूबर पूर्वोत्तर यात्रा
13 अक्टूबर पश्चिमोत्तर यात्रा
14 अक्टूबर पूर्व यात्रा
15 अक्टूबर पूर्व पश्चिम यात्रा

कार्तिक कृष्ण पक्ष

19 अक्टूबर पूर्वोत्तर यात्रा
20 अक्टूबर पूर्व बिना यात्रा
22 अक्टूबर उत्तर बिना यात्रा
23 अक्टूबर पूर्व पश्चिम यात्रा
24 अक्टूबर पश्चिम बिना यात्रा
7 बजे 17 प्रात: तक
26 अक्टूबर पूर्वोत्तर यात्रा
1 बजे 3 दिन से
27 अक्टूबर पूर्व बिना यात्रा
28 अक्टूबर पूर्व दक्षिण यात्रा
29 अक्टूबर उत्तर बिना यात्रा

कार्तिक शुक्ल पक्ष

2 नवम्बर पूर्वोत्तर यात्रा
3 नवम्बर पूर्व बिना यात्रा
4 नवम्बर पूर्व दक्षिण यात्रा
5 नवम्बर उत्तर बिना यात्रा
6 नवम्बर पूर्व पश्चिम यात्रा
7 नवम्बर पश्चिम बिना यात्रा
8 नवम्बर पश्चिमोत्तर यात्रा
9 नवम्बर पूर्वोत्तर यात्रा
10 नवम्बर पश्चिमोत्तर यात्रा
12 नवम्बर पूर्व पश्चिम यात्रा
13 नवम्बर पूर्व पश्चिम यात्रा
6 बजे 56 शां तक

मार्ग कृष्ण पक्ष

17 नवम्बर पूर्व बिना यात्रा
12 बजे 54 दिन तक
18 नवम्बर पूर्व दक्षिण यात्रा
12 बजे 55 दिन से
19 नवम्बर उत्तर बिना यात्रा
20 नवम्बर पूर्व पश्चिम यात्रा
3 बजे 21 दिन तक
23 नवम्बर पूर्वोत्तर यात्रा

24 नवम्बर पूर्व बिना यात्रा
25 नवम्बर पूर्व दक्षिण यात्रा
29 नवम्बर पश्चिम बिना यात्रा

11 बजे 37 दिन से

30 नवम्बर पूर्वोत्तर यात्रा

मार्ग शुक्ल पक्ष

1 दिसम्बर पूर्व बिना यात्रा
2 दिसम्बर पूर्व दक्षिण यात्रा
3 दिसम्बर उत्तर बिना यात्रा
4 दिसम्बर पूर्व पश्चिम यात्रा
5 दिसम्बर पश्चिम बिना यात्रा
6 दिसम्बर पश्चिमोतर यात्रा
7 दिसम्बर पूर्वोत्तर यात्रा
8 दिसम्बर पश्चिमोत्तर यात्रा
9 दिसम्बर पूर्व यात्रा
10 दिसम्बर उत्तर बिना यात्रा
13 दिसम्बर पूर्व बिना यात्रा

पौष कृष्ण पक्ष

17 दिसम्बर उत्तर बिना यात्रा
20 दिसम्बर पूर्व बिना यात्रा
21 दिसम्बर पूर्वोत्तर यात्रा
22 दिसम्बर पूर्व बिना यात्रा
23 दिसम्बर पूर्व दक्षिण यात्रा

1 बजे 54 दिन तक

27 दिसम्बर पूर्व बिना यात्रा
28 दिसम्बर पूर्वोत्तर यात्रा
29 दिसम्बर पूर्व बिना यात्रा

पौष शुक्ल पक्ष

30 दिसम्बर पूर्व दक्षिण यात्रा
31 दिसम्बर उत्तर बिना यात्र
1 जनवरी पूर्व पश्चिम यात्रा
2 जनवरी पूर्वोत्तर यात्रा
3 जनवरी पश्चिमोत्तर यात्रा
4 जनवरी पूर्वोत्तर यात्रा
5 जनवरी पश्चिमोत्तर यात्रा
6 जनवरी पूर्व यात्रा

10 बजे 48 दिन तक

7 जनवरी उत्तर बिना यात्रा

9 बजे 40 दिन तक

9 जनवरी पश्चिम बिना

7 बजे 51 दिन से

10 जनवरी पूर्व बिना यात्रा
11 जनवरी पूर्वोत्तर यात्रा

माघ कृष्ण पक्ष

16 जनवरी पश्चिम बिना यात्रा

1 बजे 13 दिन से

17 जनवरी पूर्व बिना यात्रा
18 जनवरी पूर्वोत्तर यात्रा
19 जनवरी पूर्व बिना यात्रा
23 जनवरी पश्चिम बिना यात्रा
24 जनवरी पूर्व बिना यात्रा
25 जनवरी पूर्वोत्तर यात्रा
26 जनवरी पूर्व बिना यात्रा
27 जनवरी पूर्व दक्षिण यात्रा
28 जनवरी उत्तर बिना यात्रा

माघ शुक्ल पक्ष

29 जनवरी पूर्व पश्चिम यात्रा
30 जनवरी पूर्वोत्तर यात्रा
31 जनवरी पश्चिमोत्तर यात्रा
1 फरवरी पूर्वोत्तर यात्रा

2 फरवरी पश्चिमोत्तर यात्रा
3 फरवरी पूर्व दक्षिण यात्रा
5 फरवरी पूर्व पश्चिम यात्रा
1 बजे 24 दिन से
6 फरवरी पश्चिम बिना यात्रा
7 फरवरी पूर्व बिना यात्रा
8 फरवरी पूर्वोत्तर यात्रा
2 बजे दिन से
9 फरवरी पूर्व बिना यात्रा
10 फरवरी पूर्व दक्षिण यात्रा
4 बजे 34 दिन तक

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

13 फरवरी पश्चिम बिना यात्रा
14 फरवरी पूर्व बिना यात्रा
15 फरवरी पूर्वोत्तर यात्रा
19 फरवरी पूर्व पश्चिम यात्रा
1 बजे 54 दिन से
20 फरवरी पश्चिम बिना यात्रा
21 फरवरी पूर्व बिना यात्रा
22 फरवरी पूर्वोत्तर यात्रा
23 फरवरी पूर्व बिना यात्रा
25 फरवरी उत्तर बिना यात्रा
26 फरवरी पूर्व पश्चिम यात्रा

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

27 फरवरी पूर्वोत्तर यात्रा
28 फरवरी पश्चिमोत्तर यात्रा
1 मार्च पूर्वोत्तर यात्रा
2 मार्च पूर्व बिना यात्रा
5 मार्च पूर्व पश्चिम यात्रा
6 मार्च पश्चिम बिना यात्रा
8 मार्च पूर्वोत्तर यात्रा
9 मार्च पूर्व बिना यात्रा
12 मार्च पूर्व पश्चिम यात्रा
13 मार्च पश्चिम बिना यात्रा

चैत्र कृष्ण पक्ष

15 मार्च पूर्वोत्तर यात्रा
12 बजे 18 दिन तक
19 मार्च पूर्व पश्चिम यात्रा
20 मार्च पश्चिम बिना यात्रा
21 मार्च पूर्व बिना यात्रा
22 मार्च पूर्वोत्तर यात्रा
23 मार्च पूर्व बिना यात्रा
24 मार्च पूर्व दक्षिण यात्रा
25 मार्च पूर्व पश्चिम यात्रा
26 मार्च पूर्व पश्चिम यात्रा
27 मार्च पूर्वोत्तर यात्रा
28 मार्च पश्चिमोत्तर यात्रा

सर्वार्थ सिद्धि योग

(अफसर से मिलना, चार्ज लेन देन, फार्म भरना, दरखास्त भेजना, छोटी मोटी यात्रा को जाना ऐसे ही आम मुहूर्तों के लिए सर्वार्थ सिद्धि योग से लाभ उठायें)

चैत्र शुक्ल पक्ष

8 अप्रेल प्रतिपदि भौमवार
16 अप्रेल नवमी बुधवार
18 अप्रेल एकादशी शुक्रवार
12 बजे 3 दिन से
20 अप्रेल त्रयोदशी रविवार

वैशाख कृष्ण पक्ष

27 अप्रेल पंचमी रविवार

4 मई द्वादशी रविवार

1 बजे 57 दिन तक

6 मई अमावसी भौमवार

वैशाख शुक्ल पक्ष

7 मई प्रतिपदि बुधवार

9 बजे 22 दिन से

12 मई षष्ठी सोमवार

11 बजे 28 दिन से

16 मई नवमी शुक्रवार

18 मई एकादशी रविवार

22 मई पूर्णिमा गुरुवार

7 बजे 12प्रात: से

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

25 मई तृतीया रविवार

5 बजे 43 प्रात: तक

1 जून एकादशी रविवार

7 बजे 31 शां से

3 जून त्रयोदशी भौमवार

5 बजे 41 शां से

4 जून चतुदर्शी बुधवार

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

9 जून चतुर्थी सोमवार

10 जूनपंचमी भौमवार

18 जून त्रयोदशी बुधवार

4 बजे 1 दिन से

19 जून चतुदर्शी गुरुवार

आषाढ कृष्ण पक्ष

22 जून द्वितीया रविवार

12 बजे 1 दिन से

23 जून तृतीया सोमवार

10 बजे 11 दिन से

29 जून दशमी रविवार

1 जुलाई द्वादशी भौमवार

2 जुलाई त्रयोदशी बुधवार

आषाढ शुक्ल पक्ष

6 जुलाई द्वितीया रविवार

7 जुलाई तृतीया सोमवार

5 बजे 50 प्रात: तक

20 जुलाई पूर्णिमा रविवार

श्रावण कृष्ण पक्ष

21 जुलाई प्रतिपदि सोमवार

25 जुलाई षष्ठी शुक्रवार

8 बजे 5 प्रात: से

27 जुलाई अष्टमी रविवार

5 बजे 51 प्रात: तक

30 जुलाई एकादशी बुधवार

6 बजे 4 प्रात: तक

1 अगस्त त्रयोदशी शुक्रवार

8 बजे 30 प्रात: से

3 अगस्त अमावसी रविवार

12 बजे 39 दिन तक

श्रावण शुक्ल पक्ष

13 अगस्त नवमी बुधवार

10 बजे 55 दिन तक

भाद्र कृष्ण पक्ष

21 अगस्त चतुर्थी गुरुवार

4 बजे 12 दिन से

22 अगस्त पंचमी शुक्रवार

25 अगस्त अष्टमी सोमवार

11 बजे 18 दिन से

28 अगस्त एकादशी गुरुवार

2 बजे 9 दिन से

29 अगस्त द्वादशी शुक्रवार

4 बजे 12 दिन तक

भाद्र शुक्ल पक्ष

8 सितम्बर षष्ठी सोमवार

4 बजे 58 दिन से

13 सितम्बर एका. शनिवार

4 बजे 2 दिन से

आश्विन कृष्ण पक्ष

18 सितम्बर द्वितीया गुरुवार

19 सितम्बर तृतीया शुक्रवार

22 सितम्बर षष्ठी सोमवार

25 सितम्बर नवमी गुरुवार

1 अक्टूबर अमावसी बुधवार

12 बजे 48 दिन से

आश्विन शुक्ल पक्ष

4 अक्टूबर तृतीया शनिवार

6 अक्टूबर पंचमी सोमवार

11 अक्टूबर दशमी शनिवार

14 अक्टूबर त्रयोदशी भौमवार

4 बजे 23 दिन से

कार्तिक कृष्ण पक्ष

20 अक्टूबर पंचमी सोमवार

23 अक्टूबर अष्टमी गुरुवार

29 अक्टूबर त्रयोदशी बुधवार

कार्तिक शुक्ल पक्ष

7 नवम्बर सप्तमी शुक्रवार

13 नवम्बर चतुर्दशी गुरुवार

मार्ग कृष्ण पक्ष

17 नवम्बर तृतीया सोमवार

12 बजे 54 दिन तक

20 नवम्बर षष्ठी गुरुवार

3 बजे 21 दिन तक

मार्ग शुक्ल पक्ष

5 दिसम्बर षष्ठी शुक्रवार

11 बजे 25 दिन तक

13 दिसम्बर चतुर्दशी शनिवार

पौष शुक्ल पक्ष

4 जनवरी षष्ठी रविवार

1 बजे 24 दिन से

6 जनवरी नवमी भौमवार

10 बजे 48 दिन से

10 जनवरी त्रयोदशी शनिवार

माघ कृष्ण पक्ष

16 जनवरी चतुर्थी शुक्रवार

1 बजे 13 दिन से

18 जनवरी षष्ठी रविवार

25 जनवरी द्वादशी रविवार

माघ शुक्ल पक्ष

1 फरवरी पंचमी रविवार

3 फरवरी सप्तमी भौमवार

4 फरवरी अष्टमी बुधवार

2 बजे 3 दिन से

9 फरवरी त्रयोदशी सोमवार

3 बजे 3 दिन से

10 फरवरी चतुर्दशी भौमवार

4 बजे 38 दिन से **फाल्गुन कृष्ण पक्ष** 13 फरवरी द्वितीया शुक्रवार 15 फरवरी चतुर्थी रविवार	19 फरवरी सप्तमी गुरुवार 1 बजे 54 दिन से 22 फरवरी दशमी रविवार 4 बजे 55 दिन तक	**फाल्गुन शुक्ल पक्ष** 9 मार्च द्वादशी सोमवार 10 मार्च त्रयोदशी भौमवार	**चैत्र कृष्ण पक्ष** 15 मार्च द्वितीया रविवार 12 बजे 18 दिन तक 19 मार्च षष्ठी गुरुवार

→ पृष्ठ 236 का शेष ←

मार्ग शुक्ल पक्ष 6 दिसम्बर सप्तमी शनि० **माघ शुक्ल पक्ष** 2 फरवरी षष्ठी सोम० 7 फरवरी एकादशी शनि०	**कर्क वृश्चिक मीन** **वैशाख शुक्ल पक्ष** 9 मई तृतीया शुक्र० 12 मई षष्ठी सोम० **आषाढ कृष्ण पक्ष**	23 जून तृतीया सोम० **आषाढ शुक्ल पक्ष** 12 जुलाई सप्तमी शनि० **आश्विन शुक्ल पक्ष** 6 अक्टूबर पंचमी सोम० **कार्तिक शुक्ल पक्ष**	6 नवम्बर षष्ठी गुरु० **मार्ग शुक्ल पक्ष** 4 दिसम्बर पंचमी गुरु० **माघ शुक्ल पक्ष** 2 फरवरी षष्ठी सोम० 6 फरवरी दशमी शुक्र०

राशि के अनुसार यज्ञोपवीत, विवाह, शंकुप्रतिष्ठा तथा प्रवेश मुहूर्त

यज्ञोपवीत मुहूर्त

मेष सिंह धनु — पूजा

वैशाख शुक्ल पक्ष

8 मई द्वितीया गुरु॰
9 मई तृतीया शुक्र॰ (च)
12 मई षष्ठी सोम॰ (च)
19 मई द्वादशी सोम॰

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

26 मई चतुर्थी सोम॰

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

6 जून प्रतिपदि शुक्र॰
8 जून तृतीया रवि॰
16 जून एकादशी सोम॰

आषाढ कृष्ण पक्ष

22 जून द्वितीया रवि॰
23 जून तृतीया सोम॰
25 जून पंचमी बुध॰

आषाढ शुक्ल पक्ष

6 जुलाई द्वितीया रवि॰

आश्विन शुक्ल पक्ष

3 अक्टूबर द्वितीया शुक्र॰
6 अक्टूबर पंचमी सोम॰ (च)
12 अक्टूबर एका॰ रवि॰
13 अक्टूबर द्वादशी सोम॰

कार्तिक कृष्ण पक्ष

20 अक्टूबर पंचमी सोम॰

कार्तिक शुक्ल पक्ष

2 नवम्बर द्वितीया रवि॰ (च)
3 नवम्बर तृतीया सोम॰
6 नवम्बर षष्ठी गुरु॰
9 नवम्बर नवमी रवि॰

मार्ग कृष्ण पक्ष

17 नवम्बर तृतीया सोम॰ (सू)

मार्ग शुक्लपक्ष

4 दिसम्बर पंचमी गुरु॰ (सू)
5 दिसम्बर षष्ठी शुक्र॰ (सू)

माघ शुक्ल पक्ष

1 फरवरी पंचमी रवि॰ (च)
5 फरवरी नवमी गुरु॰
6 फरवरी दशमी शुक्र॰
9 फरवरी त्रयोदशी सोम॰ (चं)

वृष कन्या मकर	पूजा
वैशाख शुक्लपक्ष	
8 मई द्वितीया गुरु॰	(सू)
9 मई तृतीया शुक्र॰	(सू)
12 मई षष्ठी सोम॰	(सू)
19 मई द्वादशी सोम॰	
ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	
26 मई चतुर्थी सोम॰	(च)
ज्येष्ठ शुक्लपक्ष	
6 जून प्रतिपदि शुक्र॰	
8 जून तृतीया रवि॰	
16 जून एकादशी सोम॰	
आषाढ कृष्ण पक्ष	
22 जून द्वितीया रवि॰	(च)
23 जून तृतीया सोम॰	(च)
25 जून पंचमी बुध॰	

आषाढ शुक्ल पक्ष	
6 जुलाई द्वितीया रवि॰	
आश्विन शुक्ल पक्ष	
3 अक्टूबर द्वितीया शुक्र॰	
6 अक्टूबर पंचमी सोम॰	
12 अक्टूबर एका॰ रवि॰	
13 अक्टूबर द्वादशी सोम॰	
कार्तिक कृष्ण पक्ष	
20 अक्टूबर पंचमी सोम॰	
कार्तिक शुक्ल पक्ष	
2 नवम्बर द्वितीया रवि॰	
3 नवम्बर तृतीया सोम॰	
6 नवम्बर षष्ठी गुरु॰	
7 नवम्बर सप्तमी शुक्र॰	
9 नवम्बर नवमी रवि॰	

मार्ग कृष्ण पक्ष	
17 नवम्बर तृतीया सोम॰	
19 नवम्बर पंचमी बुध॰	
मार्ग शुक्ल पक्ष	
4 दिसम्बर पंचमी गुरु॰	
5 दिसम्बर षष्ठी शुक्र॰	
माघ शुक्ल पक्ष	
1 फरवरी पंचमी रवि॰	
5 फरवरी नवमी गुरु॰	
6 फरवरी दशमी शुक्र॰	
9 फरवरी त्रयोदशी सोम॰	
मिथुन तुला कुम्भ	
वैशाख शुक्ल पक्ष	
9 मई तृतीय शुक्र॰	(वृ)

12 मई षष्ठी सोम॰	(वृ)
ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	
16 जून एकादशी सोम॰	(वृ)
आषाढ कृष्ण पक्ष	
22 जून द्वितीया रवि॰	(वृ)
23 जून तृतीया सोम॰	(वृ)
25 जून पंचमी बुध॰	(वृ)
आषाढ शुक्ल पक्ष	
6 जुलाई द्वितीया रवि॰	(वृ)
कार्तिक शुक्ल पक्ष	
2 नवम्बर द्वितीया रवि॰	(वृ)
3 नवम्बर तृतीया सोम॰	(वृ)
9 नवम्बर नवमी रवि॰	(वृ)
मार्ग कृष्ण पक्ष	
17 नवम्बर तृतीया सोम॰	(वृ)

19 नवम्बर पंचमी बुध॰ (बृ)

माघ शुक्ल पक्ष

1 फरवरी पंचमी रवि॰ (सू)

9 फरवरी त्रयोदशी सोम॰ (सू)

कर्क वृश्चिक मीन

वैशाख शुक्ल पक्ष

8 मई द्वितीया गुरु॰

9 मई तृतीया शुक्र॰

12 मई षष्ठी सोम॰

19 मई द्वादशी सोम॰

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

26 मई चतुर्थी सोम॰

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

6 जून प्रतिपदि शुक्र॰ (च)

8 जून तृतीया रवि॰ (च)

16 जून एकादशी सोम॰ (च)

आषाढ कृष्ण पक्ष

22 जून द्वितीया रवि॰

23 जून तृतीया सोम॰

25 जून पंचमी बुध॰ (च)

आषाढ शुक्ल पक्ष

6 जुलाई द्वितीया रवि॰

आश्विन शुक्ल पक्ष

3 अक्टूबर द्वितीया शुक्र॰ (च)

6 अक्टूबर पंचमी सोम॰

12 अक्टूबर एका॰ रवि॰ (च)

कार्तिक कृष्ण पक्ष

20 अक्टूबर पंचमी सोम॰ (सू)

कार्तिक शुक्ल पक्ष

2 नवम्बर द्वितीया रवि॰ (सू)

3 नवम्बर तृतीया सोम॰ (सू)

6 नवम्बर षष्ठी गुरु॰ (सू)

7 नवम्बर सप्तमी शुक्र॰ (सू)

मार्ग कृष्ण पक्ष

17 नवम्बर तृतीया सोम॰ (चं)

19 नवम्बर पंचमी बुध॰

मार्ग शुक्ल पक्ष

4 दिसम्बर पंचमी गुरु॰

5 दिसम्बर षष्ठी शुक्र॰

माघ शुक्ल पक्ष

1 फरवरी पंचमी रवि॰ (बृ)

5 फरवरी नवमी गुरु॰ (बृ)

6 फरवरी दशमी शुक्र॰ (बृ)

9 फरवरी त्रयोदशी सोम॰ (बृ)

विवाह मुहूर्त

(राशि के अनुसार)

मेष सिंह धनु पूजा

वैशाख कृष्ण पक्ष

30 अप्रेल अष्टमी बुध॰

1 मई नवमी गुरु॰

3 मई एकादशी शनि॰ (चं)

4 मई द्वादशी रवि॰ (चं)

वैशाख शुक्ल पक्ष

8 मई द्वितीया गुरु॰

9 मई तृतीया शुक्र॰

10 मई चतुर्थी शनि॰

15 मई अष्टमी गुरु॰

19 मई द्वादशी सोम॰

22 मई पूर्णिमा गुरु॰ (च)

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

24 मई द्वितीया शनि॰
26 मई चतुर्थी सोम॰
28 मई सप्तमी बुध॰
30 मई नवमी शुक्र॰ (च)
31 मई दशमी शनि॰ (च)
1 जून एकादशी रवि॰
2 जून द्वादशी सोम॰

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

6 जून प्रतिपदि शुक्र॰
11 जून षष्ठी बुध॰
16 जून एकादशी सोम॰
18 जून त्रयोदशी बुध॰ (च)
19 जून चतुदर्शी गुरु॰ (चं)

20 जून पूर्णिमा शुक्र॰

आषाढ कृष्ण पक्ष

21 जून प्रतिपदि शनि॰
22 जून द्वितीया रवि॰
23 जून तृतीया सोम॰
29 जून दशमी रवि॰
2 जुलाई त्रयोदशी बुध॰
3 जुलाई चतुदर्शी गुरु॰

आषाढ शुक्ल पक्ष

9 जुलाई चतुर्थी बुध॰
13 जुलाई अष्टमी रवि॰
14 जुलाई नवमी सोम॰
19 जुलाई चतुदर्शी शनि॰ (सू)
20 जुलाई पूर्णिमा रवि॰ (सू)

श्रावण कृष्ण पक्ष

21 जुलाई प्रतिपदि सोम॰ (सू)
26 जुलाई सप्तमी शनि॰ (सू)
30 जुलाई एकादशी बुध॰ (सू)

श्रावण शुक्ल पक्ष

4 अगस्त प्रतिपदि सोम॰ (सू)
7 अगस्त चतुर्थी गुरु॰ (सू)
8 अगस्त पंचमी शुक्र॰ (सू)
10 अगस्त सप्तमी रवि॰ (सू)
14 अगस्त दशमी गुरु॰ (सू)

आश्विन शुक्ल पक्ष

4 अक्टूबर तृतीया शनि॰
6 अक्टूबर पंचमी सोम॰ (च)
8 अक्टूबर षष्ठी बुध॰
9 अक्टूबर अष्टमी गुरु॰
10 अकटूबर नवमी शुक्र॰

12 अक्टूबर एकादशी रवि॰
15 अक्टूबर चतुर्थी बुध॰ (च)

कार्तिक कृष्ण पक्ष

20 अक्टूबर पंचमी सोम॰
25 अक्टूबर दशमी शनि॰
26 अक्टूबर एकादशी रवि॰
29 अक्टूबर त्रयोदशी बुध॰
30 अक्टूबर चतुर्दशी गुरु॰

कार्तिक शुक्ल पक्ष

2 नवम्बर द्वितीया रवि॰ (चं)
6 नवम्बर षष्ठी गुरु॰
7 नवम्बर सप्तमी शुक्र॰
8 नवम्बर अष्टमी शनि॰

मार्ग कृष्ण पक्ष

17 नवम्बर तृतीया सोम॰ (सू)

21 नवम्बर सप्तमी शुक्र॰	(सू)
22 नवम्बर अष्टमी शनि॰	(सू)
24 नवम्बर दशमी सोम॰	(सू)
26 नवम्बर द्वादशी बुध॰	(सू)
27 नवम्बर त्रयोदशी गुरु॰	(सू)
मार्ग शुक्ल पक्ष	
1 दिसम्बर प्रतिपदि सोम॰	(सू)
3 दिसम्बर चतुर्थी बुध॰	(सू)
4 दिसम्बर पंचमी गुरु॰	(सू)
5 दिसम्बर षष्ठी शुक्र॰	(सू)
12 दिसम्बर त्रयोदशी शुक्र॰	(सू)
13 दिसम्बर चतुर्दशी शनि॰	(सू)
माघ कृष्ण पक्ष	
23 जनवरी दशमी शुक्र॰	(चु)
माघ शुक्ल पक्ष	
29 जनवरी प्रतिपदि गुरु॰	

31 जनवरी चतुर्थी शनि॰	(च)
1 फरवरी पंचमी रवि॰	(च)
5 फरवरी नवमी गुरु॰	
6 फरवरी दशमी शुक्र॰	
7 फरवरी एकादशी शनि॰	
वृष कन्या मकर	पूजा
वैशाख कृष्ण पक्ष	
30 अप्रेल अष्टमी बुध॰	(सू)
1 मई नवमी गुरु॰	(सू)
3 मई एकादशी शनि॰	(सू)
4 मई द्वादशी रवि॰	(सू)
वैशाख शुक्ल पक्ष	
8 मई द्वितीया गुरु॰	(सू)
9 मई तृतीया शुक्र॰	(सू)
10 मई चतुर्थी शनि॰	(सू)

15 मई अष्टमी गुरु॰	(च)
19 मई द्वादशी सोम॰	
22 मई पूर्णिमा गुरु॰	
ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	
24 मई द्वितीया शनि॰	(चं)
26 मई चतुर्थी सोम॰	
28 मई सप्तमी बुध॰	
30 मई नवमी शुक्र॰	
31 मई दशमी शनि॰	
1 जून एकादशी रवि॰	(च)
2 जून द्वादशी सोम॰	(च)
ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	
6 जून प्रतिपदि शुक्र॰	
11 जून षष्ठी बुध॰	(च)
16 जून एकादशी सोम॰	
18 जून त्रयोदशी बुध॰	

19 जून चतुर्दशी गुरु॰	
20 जून पूर्णिमा शुक्र॰	(चं)
आषाढ कृष्ण पक्ष	
21 जून प्रतिपदि शनि॰	(चं)
22 जून द्वितीया रवि॰	
(दिन के लग्नों में चन्द्र	**पूजा**
23 जून तृतीया सोम॰	
29 जून दशमी रवि॰	(चं)
2 जुलाई त्रयोदशी बुध॰	
3 जुलाई चतुर्दशी गुरु॰	
आषाढ शुक्ल पक्ष	
9 जुलाई चतुर्थी बुध॰	(चं)
13 जुलाई अष्टमी रवि॰	
14 जुलाई नवमी सोम॰	
19 जुलाई चतुर्दशी शनि॰	
20 जुलाई पूर्णिमा रवि॰	

श्रावण कृष्ण पक्ष

21 जुलाई प्रतिपदि सोम॰

24 जुलाई पंचमी गुरु॰

26 जुलाई सप्तमी शनि॰ (च)

30 जुलाई एकादशी बुध॰

श्रावण शुक्ल पक्ष

4 अगस्त प्रतिपदि सोम॰ (च)

7 अगस्त चतुर्थी गुरु॰

8 अगस्त पंचमी शुक्र॰

10 अगस्त सप्तमी रवि॰

14 अगस्त दशमी गुरु॰ (च)

आश्विन शुक्ल पक्ष

4 अक्टूबर तृतीया शनि॰

6 अक्टूबर पंचमी सोम॰

8 अक्टूबर षष्ठी बुध॰ (च)

9 अक्टूबर अष्टमी गुरु॰ (च)

10 अक्टूबर नवमी शुक्र॰

11 अक्टूबर दशमी शनि॰

12 अक्टूबर एकादशी रवि॰

15 अक्टूबर चतुर्दशी बुध॰

कार्तिक कृष्ण पक्ष

20 अक्टूबर पंचमी सोम॰

25 अक्टूबर दशमी शनि॰ (च)

26 अक्टूबर एकादशी रवि॰

29 अक्टूबर त्रयोदशी बुध॰

30 अक्टूबर चतुर्दशी गुरु॰

कार्तिक शुक्ल पक्ष

2 नवम्बर द्वितीया रवि॰

6 नवम्बर षष्ठी गुरु॰

7 नवम्बर सप्तमी शुक्र॰

8 नवम्बर अष्टमी शनि॰

मार्ग कृष्ण पक्ष

17 नवम्बर तृतीया सोम॰

21 नवम्बर सप्तमी शुक्र॰ (च)

22 नवम्बर अष्टमी शनि॰ (च)

24 नवम्बर दशमी सोम॰

26 नवम्बर द्वादशी बुध॰

27 नवम्बर त्रयोदशी गुरु॰

मार्ग शुक्ल पक्ष

1 दिसम्बर प्रतिपदि सोम॰ (च)

3 दिसम्बर चतुर्थी बुध॰

4 दिसम्बर पंचमी गुरु॰

5 दिसम्बर षष्ठी शुक्र॰

8 दिसम्बर नवमी सोम॰

12 दिसम्बर त्रयोदशी शुक्र॰

13 दिसम्बर चतुर्दशी शनि॰

माघ कृष्ण पक्ष

23 जनवरी दशमी शुक्र॰

माघ शुक्ल पक्ष

29 जनवरी प्रतिपदि गुरु॰

31 जनवरी चतुर्थी शनि॰

1 फरवरी पंचमी रवि॰

5 फरवरी नवमी गुरु॰

6 फरवरी दशमी शुक्र॰

7 फरवरी एकादशी शनि॰

मिथुन तुला कुम्भ

वैशाख कृष्ण पक्ष

1 मई नवमी गुरु॰ (वृ)

3 मई एकादशी शनि॰ (वृ)

4 मई द्वादशी रवि॰ (वृ)

वैशाख शुक्ल पक्ष

- 9 मई तृतीया शुक्र० (वृ)
- 10 मई चतुर्थी शनि० (वृ)

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

- 16 जून एकादशी सोम० (वृ)
- 18 जून त्रयोदशी बुध० (वृ)
- 19 जून चतुर्दशी गुरु० (वृ)
- 20 जून पूर्णिमा शुक्र० (वृ)

आषाढ कृष्ण पक्ष

- 21 जून प्रतिपदि शनि० (वृ)
- 29 जून दशमी रवि० (वृ)
- 3 जुलाई चतुर्दशी गुरु० (वृ)

आषाढ शुक्ल पक्ष

- 9 जुलाई चतुर्थी बुध० (वृ)
- 13 जुलाई अष्टमी रवि० (वृ)
- 14 जुलाई नवमी सोम० (वृ)

श्रावण कृष्ण पक्ष

- 21 जुलाई प्रतिपदि सोम० (वृ)
- 24 जुलाई पंचमी गुरु० (वृ)
- 26 जुलाई सप्तमी शनि० (वृ)
- 30 जुलाई एकादशी बुध० (वृ)

श्रावण शुक्ल पक्ष

- 4 अगस्त प्रतिपदि सोम० (वृ)
- 10 अगस्त सप्तमी रवि० (वृ)
- 14 अगस्त दशमी गुरु० (वृ)

कार्तिक कृष्ण पक्ष

- 20 अक्टूबर पंचमी सोम० (वृ)
- 25 अक्टूबर दशमी शनि० (वृ)
- 26 अक्टूबर एकादशी रवि० (वृ)
- 30 अक्टूबर चतुर्दशी गुरु० (वृ)

कार्तिक शुक्ल पक्ष

- 2 नवम्बर द्वितीया रवि० (वृ)
- 6 नवम्बर षष्ठी गुरु० (वृ)
- 8 नवम्बर अष्टमी शनि० (वृ)

मार्ग कृष्ण पक्ष

- 17 नवम्बर तृतीया सोम० (वृ)
- 21 नवम्बर सप्तमी शुक्र० (वृ)
- 22 नवम्बर अष्टमी शनि० (वृ)
- 26 नवम्बर द्वादशी बुध० (वृ)
- 27 नवम्बर त्रयोदशी गुरु० (वृ)

मार्ग शुक्ल पक्ष

- 1 दिसम्बर प्रतिपदि सोम० (वृ)
- 3 दिसम्बर चतुर्थी बुध० (वृ)
- 5 दिसम्बर षष्ठी शुक्र०

(रात के लग्नों में बृहस्पति पूजा दिन के लग्न निषेध)

- 8 दिसम्बर नवमी सोम० (वृ)

माघ कृष्ण पक्ष

- 23 जनवरी दशमी शुक्र० (सू)

माघ शुकल पक्ष

- 29 जनवरी प्रतिपदि गुरु० (सू)
- 31 जनवरी चतुर्थी शनि० (सू)
- 1 फरवरी पंचमी रवि० (सू)
- 6 फरवरी दशमी शुक्र० (सू)
- 7 फरवरी एकादशी शनि० (सू)

कर्क वृश्चिक मीन

वैशाख कृष्ण पक्ष

- 30 अप्रेल अष्टमी बुध०
- 1 मई नवमी गुरु० (चं)

3 मई एकादशी शनि०
4 मई द्वादशी रवि०

वैशाख शुक्ल पक्ष

8 मई द्वितीया गुरु०
9 मई तृतीया शुक्र०
(रात के लग्नों चन्द्र पूजा)
10 मई चतुर्थी शनि० (च)
15 मई अष्टमी गुरु०
19 मई द्वादशी सोम० (च)
22 मई पूर्णिमा गुरु०

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

24 मई द्वितीया शनि०
26 मई चतुर्थी सोम०
28 मई सप्तमी बुध०
(रात के लग्नों में चन्द्र पूजा)
30 मई नवमी शुक्र०
31 मई दशमी शनि०
1 जून एकादशी रवि०
2 जून द्वादशी सोम०

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

11 जून षष्ठी बुध०
18 जून त्रयोदशी बुध० (सू)
19 जून चतुर्दशी गुरु० (सू)
20 जून पूर्णिमा शुक्र० (सू)

आषाढ कृष्ण पक्ष

21 जून प्रतिपदि शनि० (सू)
22 जून द्वितीया रवि० (सू)
23 जून तृतीया सोम० (सू)
29 जून दशमी रवि० (सू)
2 जुलाई त्रयोदशी बुध० (सू)

आषाढ शुक्ल पक्ष

9 जुलाई चतुर्थी बुध०
19 जुलाई चतुर्दशी शनि०
20 जुलाई पूर्णिमा रवि०

श्रावण कृष्ण पक्ष

21 जुलाई प्रतिपदि सोम० (च)
24 जुलाई पंचमी गुरु० (च)
26 जुलाई सप्तमी शनि० (च)
30 जुलाई एकादशी बुध०
रात के लग्नों में चन्द्र पूजा
दिन के लग्न शुद्ध)

श्रावण शुक्ल पक्ष

4 अगस्त प्रतिपदि सोम०
7 अगस्त चतुर्थी गुरु०
8 अगस्त पंचमी शुक्र०
10 अगस्त सप्तमी रवि० (च)
14 अगस्त दशमी गुरु०

आश्विन शुक्ल पक्ष

4 अक्टूबर तृतीया शनि० (च)
6 अकटूबर पंचमी सोम०
8 अक्टूबर षष्ठी बुध०
9 अकटूबर अष्टमी गुरु०
10 अक्टूवर नवमी शुक्र०
11 अक्टूबर दशमी शनि०
12 अक्टूबर एका० रवि० (च)
15 अक्टूबर चतुर्दशी बुध०

कार्तिक कृष्ण पक्ष

20 अक्टूबर पंचमी सोम०
(दिन के लग्नों में सूर्य पूजा
रात के लग्न निषेध)
25 अक्टूबर दशमी शनि० (सू)
26 अक्टूबर एकादशी रवि० (सू)

29 अक्टूबर त्रयोदशी बुध०

कार्तिक शुक्ल पक्ष

2 नवम्बर द्वितीया रवि० (सू)
6 नवम्बर षष्ठी गुरु० (सू)
7 नवम्बर सप्तमी शुक्र० (सू)
8 नवम्बर अष्टमी शनि० (सू)
दिन के लग्नों में सूर्य पूजा

मार्ग कृष्ण पक्ष

17 नवम्बर तृतीया सोम०
21 नवम्बर सप्तमी शुक्र०
22 नवम्बर अष्टमी शनि०
24 नवम्बर दशमी सोम०
26 नवम्बर द्वादशी बुध०
(रात के लग्नों में चन्द्र पूजा (च)
दिन के लग्न शुद्ध)
27 नवम्बर त्रयोदशी गुरु०

मार्ग शुक्ल पक्ष

1 दिसम्बर प्रतिपदि सोम०
3 दिसम्बर चतुर्थी बुध०
4 दिसम्बर पंचमी गुरु०
5 दिसम्बर षष्ठी शुक्र०
(रात के लग्नों में चन्द्र पूजा) (च)
8 दिसम्बर नवमी सोम०
12 दिसम्बर त्रयोदशी शुक्र०
13 दिसम्बर चतुर्दशी शनि०

माघ कृष्ण पक्ष

23 जनवरी दशमी शुक्र० (बृ)

माघ शुक्लपक्ष

29 जनवरी प्रतिपदि गुरु० (बृ)
31 जनवरी चतुर्थी शनि० (बृ)
1 फरवरी पंचमी रवि० (बृ)
5 फरवरी नवमी गुरु० (बृ)
6 फरवरी दशमी शुक्र०
(दिन के लग्नों में बृहस्पति पूजा रात के लग्न निषेध)

शंकु प्रतिष्ठा मुहूर्त
(राशि के अनुसार)

मेष सिंह धनु

वैशाख शुक्ल पक्ष

8 मई द्वितीया गुरु०
9 मई तृतीया शुक्र०
10 मई चतुर्थी शनि०

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

26 मई चतुर्थी सोम०

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

6 जून प्रतिपदि शुक्र०

श्रावण शुक्ल पक्ष

8 अगस्त पंचमी शुक्र०
9 अगस्त षष्ठी शनि०
18 अगस्त पूर्णिमा सोम०

भाद्र कृष्ण पक्ष

22 अगस्त पंचमी शुक्र०

भाद्र शुक्ल पक्ष

4 सितम्बर द्वितीया गुरु०
5 सितम्बर तृतीया शुक्र०

कार्तिक कृष्ण पक्ष

20 अक्टूबर पंचमी सोम०

कार्तिक शुक्ल पक्ष

6 नवम्बर षष्ठी गुरु०
7 नवम्बर सप्तमी शुक्र०

मार्ग कृष्ण पक्ष

17 नवम्बर तृतीया सोम०

मार्ग शुकल पक्ष

4 दिसम्बर पंचमी गुरु०

5 दिसम्बर षष्ठी शुक्र०

13 दिसम्बर चतुर्दशी शनि०

माघ शुक्ल पक्ष

29 जनवरी प्रतिपदि गुरु०

30 जनवरी तृतीया शुक्र०

2 फरवरी षष्ठी सोम०

वृष कन्या मकर

वैशाख शुक्ल पक्ष

8 मई द्वितीया गुरु०

9 मई तृतीया शुक्र०

10 मई चतुर्थी शनि०

12 मई षष्ठी सोम०

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

6 जून प्रतिपदि शुक्र०

श्रावण कृष्ण पक्ष

24 जुलाई पंचमी गुरु०

25 जुलाई षष्ठी शुक्र०

श्रावण शुक्ल पक्ष

8 अगस्त पंचमी शुक्र०

9 अगस्त षष्ठी शनि०

18 अगस्त पूर्णिमा सोम०

भाद्र शुक्ल पक्ष

4 सितम्बर द्वितीया गुरु०

5 सितम्बर तृतीया शुक्र०

कार्तिक कृष्ण पक्ष

20 अक्टूबर पंचमी सोम०

कार्तिक शुक्ल पक्ष

6 नवम्बर षष्ठी गुरु०

7 नवम्बर सप्तमी शुक्र०

मार्ग कृष्ण पक्ष

17 नवम्बर तृतीया सोम०

19 नवम्बर पंचमी बुध०

20 नवम्बर षष्ठी गुरु०

मार्ग शुक्ल पक्ष

4 दिसम्बर पंचमी गुरु०

5 दिसम्बर षष्ठी शुक्र०

13 दिसम्बर चतुर्दशी शनि०

माघ शुक्ल पक्ष

29 जनवरी प्रतिपदि गुरु०

30 जनवरी तृतीया शुक्र०

मिथुन तुला कुम्भ

वैशाख शुक्ल पक्ष

10 मई चतुर्थी शनि०

12 मई षष्ठी सोम०

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

26 मई चतुर्थी सोम०

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

6 जून प्रतिपदि शुक्र०

श्रावण कृष्ण पक्ष

24 जुलाई पंचमी गुरु०

25 जुलाई षष्टी शुक्र०

श्रावण शुक्ल पक्ष

18 अगस्त पूर्णिमा सोम०

भाद्र कृष्ण पक्ष

22 अगस्त पंचमी शुक्र०

मार्ग कृष्ण पक्ष

17 नवम्बर तृतीया सोम०
19 नवम्बर पंचमी बुध०
20 नवम्बर षष्ठी गुरु०

माघ शुक्ल पक्ष

29 जनवरी प्रतिपदि गुरु०
30 जनवरी तृतीया शुक्र०
2 फरवरी षष्ठी सोम०

कर्क वृश्चिक मीन

वैशाख शुक्ल पक्ष

8 मई द्वितीया गुरु०
9 मई तृतीया शुक्र०
12 मई षष्ठी सोम०

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

26 मई चतुर्थी सोम०

श्रावण कृष्ण पक्ष

24 जुलाई पंचमी गुरु०
25 जुलाई षष्ठी शुक्र०

श्रावण शुक्ल पक्ष

8 अगस्त पंचमी शुक्र०
9 अगस्त षष्ठी शनि०

भाद्र कृष्ण पक्ष

22 अगस्त पंचमी शुक्र०

भाद्र शुक्ल पक्ष

4 सितम्बर द्वितीया गुरु०
5 सितम्बर तृतीया शुक्र०

कार्तिक कृष्ण पक्ष

20 अक्टूबर पंचमी सोम०

कार्तिक शुक्ल पक्ष

6 नवम्बर षष्ठी गुरु०
7 नवम्बर सप्तमी शुक्र०

मार्ग कृष्ण पक्ष

19 नवम्बर पंचमी बुध०
20 नवम्बर षष्ठी गुरु०

मार्ग शुक्ल पक्ष

4 दिसम्बर पंचमी गुरु०
5 दिसम्बर षष्ठी शुक्र०
13 दिसम्बर चतुर्दशी शनि०

माघ शुक्ल पक्ष

2 फरवरी षष्ठी सोम०

प्रवेश मुहूर्त
(राशि के अनुसार)

मेष सिंह धनु

वैशाख शुक्ल पक्ष

9 मई तृतीया शुक्र०
19 मई द्वादशी सोम०

ज्येष्ठ शुक्ल पक्षं

6 जून प्रतिपदि शुक्र०
16 जून एकादशी सोम०

आषाढ कृष्ण पक्ष

23 जून तृतीया सोम०

आषाढ शुक्ल पक्ष

12 जुलाई सप्तमी शनि०

आश्विन शुक्ल पक्ष

13 अक्टूबर द्वादशी सोम॰

कार्तिक कृष्ण पक्ष

20 अक्टूबर पंचमी सोम॰

कार्तिक शुक्ल पक्ष

6 नवम्बर षष्ठी गुरु॰

मार्ग कृष्ण पक्ष

17 नवम्बर तृतीया सोम॰

मार्ग शुक्ल पक्ष

4 दिसम्बर पंचमी गुरु॰

6 दिसम्बर सप्तमी शनि॰

माघ शुक्ल पक्ष

2 फरवरी षष्ठी सोम॰

6 फरवरी दशमी शुक्र॰

7 फरवरी एकादशी शनि॰

वृष कन्य मकर

वैशाख शुक्ल पक्ष

9 मई तृतीया शुक्र॰

12 मई षष्ठी सोम॰

19 मई द्वादशी सोम॰

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

6 जून प्रतिपदि शुक्र॰

16 जून एकादशी सोम॰

आषाढ कृष्ण पक्ष

23 जून तृतीया सोम॰

आषाढ शुकल पक्ष

12 जुलाई सप्तमी शनि॰

आश्विन शुक्ल पक्ष

6 अक्टूबर पंचमी सोम॰

13 अक्टूबर द्वादशी सोम॰

कार्तिक कृष्ण पक्ष

20 अक्टूबर पंचमी सोम॰

कार्तिक शुक्ल पक्ष

6 नवम्बर षष्ठी गुरु॰

मार्ग कृष्ण पक्ष

17 नवम्बर तृतीया सोम॰

मार्ग शुक्ल पक्ष

4 दिसम्बर पंचमी गुरु॰

6 दिसम्बर सप्तमी शनि॰

माघ शुक्ल पक्ष

6 फरवरी दशमी शुक्र॰

7 फरवरी एकादशी शनि॰

मिथुन तुला कुम्भ

वैशाख शुक्ल पक्ष

12 मई षष्ठी सोम॰

19 मई द्वादशी सोम॰

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

6 जून प्रतिपदि शुक्र॰

16 जून एकादशी सोम॰

आश्विन शुक्ल पक्ष

6 अक्टूबर पंचमी सोम॰

13 अक्टूबर द्वादशी सोम॰

कार्तिक कृष्ण पक्ष

20 अक्टूबर पंचमी सोम॰

मार्ग कृष्ण पक्ष

17 नवम्बर तृतीया सोम॰

मेष राशि का वर्षफल (ARIES)

चु, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ

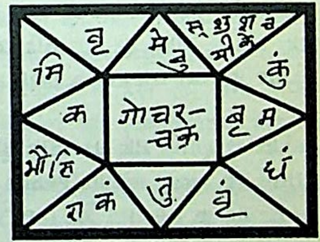

वर्ष के आरम्भ पर ग्रहों की स्थिति को गोचर सिद्धान्तों की कसोटी पर परखने से विदित होता है कि यह वर्ष कोई विशेष शुभ सन्देश लेकर नहीं आया है बारवें भाव में छः ग्रहों का एक साथ होना शुभफल का सूचक नहीं है यह योग आपकी आर्थिक तथा शारीरिक स्थिति को अवश्य प्रभावित करेगा कभी धन की अधिकता तथा कभी-कभी ज़रूरत के समय उधार लेने की नौबत भी आ सकती है, बारवां सूर्य आपके आंखों को प्रभावित कर सकता है यदि आप कारोबार करते हैं तो अपने कारोबार को सीमित रूप में रखें नहीं तो हानि की सम्भावना यदि आप विलास के सुगन्धित पदार्थों इत्यादि का काम करते हैं तो आपको अवश्य लाभ होगा, पांचवां मंगल होने से सन्तान पक्ष की ओर से मानसिक चिन्ता, यदि आपको लड़की अथवा लड़के के विवाह सम्बन्धित कोई परेशानी है तो वह ज्यों की त्यों लटकती रहेगी, दसवां बृहस्पति गोचर चक्र में शुभफल का सूचक नहीं है यदि आप नौकरी करते हैं तो राज्याधिकारियों से अनबन, यदि आपका किसी प्रकार की पदोन्नति का कोई सिलसिला चल रहा है तो इस वर्ष उसको अमली रूप मिलने की कोई सम्भावना नहीं है, गृहस्थी होने पर गृहस्थ की ओर से किसी व्यक्ति विशेष के शरीर सम्बन्धित कोई परेशानी आपको वर्षभर घेरे रखेगी, पांचवां मंगल विद्यार्थी वर्ग के लिए कोई विशेष शुभफल देने वाला नहीं है अतः विद्यार्थी वर्ग को चाहिए

कि वह डट कर पढ़ाई की ओर लग जाए तब कहीं सफलता की आशा रखे इस वर्ष के क्रूर ग्रहों के प्रभाव को शान्त करने के लिए आप नियमपूर्वक से गीता जी की एक-एक अध्याय का पाठ अवश्य करें।

मेष राशि का मासिक फल

अप्रेल :—बारवां सूर्य, शुक्र, शनि, केतु पहला बुध पांचवां मंगल दसवां चन्द्रमा, बृहस्पति, छटा राहु इस मास के आरम्भ पर अशुभ ग्रहों का पलडा भारी होने पर भी यह मास सामान्य रूप से गुज़रेगा, दसवां चन्द्रमा आपकी आर्थिक स्थिति को सुधारने में सहायक बनेगा, यदि किसी प्रकार की डिपार्टमेन्टल प्रमोशन का कोई सिलसिला है तो थोडा-सा ज़ोर लगाने से आपको अवश्य सफलता होगी, विद्यार्थियों के लिए संघर्ष का ही महीना है।

मई :—पहला सूर्य, बुध, शुक्र, बारवां, शनि, केतु, पांचवां भौम छटा राहु दसवां बृहस्पति ग्यारवां चन्द्रमा इस मास के आरम्भ पर दो अशुभ ग्रहों सूर्य तथा शनि का वेध में होना शुभफल की ओर इशारा करता है इस शुभ योग के प्रभाव से यह मास हर प्रकार से सुख और शान्ति से गुज़रेगा आमदनी में इज़ाफा, घर पर मेहमानों का आना-जाना जो कि आपके लिए लाभप्रद ही रहेगा, घर में कोई मांगलिक कार्य करने का परोग्राम बनेगा, देर से लटकी हुई किसी समस्या का समाधान अवश्य होगा, विद्यार्थियों को चाहिए कि वह पढाई की ओर ध्यान दें, नहीं तो पछताना पडेगा।

जून :—पहला चन्द्रमा, बुध दूसरा सूर्य, तीसरा शुक्र, पांचवा भौम, छटा राहु दसवां बृहस्पति, बारवां शनि केतु गोचर सिद्धान्तों के अनुसार चन्द्रमा पहले भाव में होने पर सुख और आनन्द की प्राप्ति, स्वस्थ शरीर कई प्रकार से धन कमाने का योग, तीसरा शुक्र होने से मित्रों में वृद्धि धन प्राप्ति, मान-सम्मान में वृद्धि, भाग्योदय, धार्मिक कार्यों की ओर प्रवृत्ति इस मास में शेष ग्रहों का अशुभ होना ऊपर लिखित फलादेश को अवश्य प्रभावित कर सकता है इस कारण यह मास संघर्ष के माहोल में ही गुज़रेगा,

बने बनाए कार्य रुक जाएंगे, विद्यार्थियों को सख्त मेहनत करने की ज़रूरत है।

जुलाई :—दूसरा चन्द्रमा तीसरा सूर्य, बुध चौथा शुक्र, पांचवां राहु छटा भौम दसवां बृहस्पति ग्यारवां केतु बारवां शनि इस मास के आरम्भ पर पांच शुभ ग्रहों तथा बुध और शनि का वेध में होना शुभ फ़ल का सूचक है इस शुभयोग के प्रभाव से यह मास सुख और शान्ति के माहोल में गुज़रेगा देर से लटकी हुई समस्याओं का समाधान अवश्य होगा, कारोबारी होने पर आपका कारोबार चमकेगा, जमीन जाईदाद इत्यादि बनाने का योग यदि आप अविवाहित हैं तो विवाह का योग भी बनता है जो कि आपके भाग्योदय का कारण बनेगा, विद्यार्थियों के लिए हर प्रकार से लाभदायक महीना।

अगस्त :—चौथा सूर्य, चन्द्रमा पांचवां बुध, शुक्र, राहु, सातवां भौम दसवां बृहस्पति ग्यारवां केतु, बारवां शनि नव ग्रहों में से केवल तीन ग्रहों का शुभ होना कोई विशेष सुख का सूचक नहीं है इस कारण यह महीना संघर्षमय माहोल में ही गुज़रेगा, गाहे तंग दस्ती, गाहे शरीर पीडा आपको हर समय चिन्ता में रखेगा, कोई भी कार्य बिना रुकावट के हल नहीं होगा, मामूली काम में भी अडचन आने का योग, कारोबारी होने पर कारोबार में मन्दा तथा कोई विशेष लाभ नहीं, विद्यार्थियों के लिए हर प्रकार से सफलता का मास।

सिप्तम्बर :—इस मास की स्थिति में कोई विशेष परिवर्तन न होने के कारण यह महीना भी गत मास की तरह गुज़ारना होगा कोई भी कार्य बिना रुकावट के हल नहीं होगा आमदनी के साधनों में कमी तथा खर्च की मात्रा अधिक रहेगी, सन्तान पक्ष की ओर से मानसिक चिन्ता का योग ऐसा होते हुए भी किसी प्रकार के हानि का योग नहीं है, विद्यार्थियों के लिए सफलता का महीना।

अक्टूबर :—पांचवां राहु, छटा सूर्य, बुध, चन्द्रमा तथा आठवां शुक्र होने से यह मास सुख और शान्ति के माहोल में गुज़रेगा आपका प्रत्येक कार्य बिना विघ्न के सिद्ध होगा, आपकी आर्थिक स्थिति में विशेष सुधार होगा, खर्च के नए परोग्राम बनते रहेंगे यदि आपने किसी बच्चे इत्यादि का विवाह रचाने का परोग्राम है तो थोड़ा-सा जोर लगाने से आपका वह कार्य भी

सिद्ध हो जाएगा, कारोबारी होने पर आप लाभ में रहेंगे, नौकरी पेशा होने पर यदि आपको डिपार्टमेन्टल पदोन्नति मिलने का कोई चान्स है तो आवश्य मिलेगा, विद्यार्थियों के लिए सफलता का महीना।

नवम्बर :—सातंवा सूर्य, बुध, आठवां चन्द्रमा, नवां भौम शुक्र दसवां बृहस्पति बारवां शनि इस मास के शुभाशुभ ग्रहों के प्रभाव से यह महीना संघर्षमय होते हुए भी सुख-शान्ति से गुज़रेगा सातवां सूर्य तथा आठवां चन्द्रमा आपके शरीर को अवश्य प्रभावित करेगा अत: आप शरीर के विषय में सावधान रहें गृहस्थी होने पर गृहस्थ की ओर से परेशानी विद्यार्थी वर्ग को चाहिए कि मन लगाकर पढाई में जुट जाएं, तब ही कहीं सफलता की आशा रखें।

दिसम्बर :—इस मास के आरम्भ पर अशुभ ग्रहों का पलडा भारी होने से यह मास संघर्ष के माहोल में गुज़ारना होगा शरीर के विषय में आपको सावधान रहना होगा यद्यपि आप की आमदनी में कोई विशेष परिवर्तन नहीं होगा परन्तु खर्च के नए-नए रास्ते निकल आएंगे जिस कारण कुछ-कुछ दिक्कत सी महसूस होगी, सगे सम्बन्धियों से अनबन होने की सम्भावना। विद्यार्थियों को आशा से अधिक सफलता मिलने का योग।

जनवरी :—पांचवां राहु, आठवां बुध, नवां सूर्य, दसवां भौम, शुक्र, बृहस्पति, ग्यारवां चन्द्रमा, केतु बारवां शनि नए वर्ष के आरम्भ पर शुभ और अशुभ ग्रहों का पलडा एक जैसा होने के कारण यह महीना सुख शान्ति के माहोल में ही गुज़रेगा, शरीर सुख का योग, आमदनी तथा खर्च एक जैसा परन्तु घर पर सगे-सम्बन्धियों का आना-जाना जोरों पर रहेगा हो सकता है कि घर की किसी समस्या का समाधान हो चाहे वह विवाह से सम्बन्धित हो अथवा ज़मीन जाईदाद से, विद्यार्थियों के लिए हर प्रकार से सफलता का महीना।

फरवरी :—यह महीना आपके लिए शुभ सन्देश लेकर आया है, दसवां सूर्य, बुध ग्यारवां बृहस्पति, भौम नवां शुक्र होने से राज्याधिकारियों से मित्रता, धन प्राप्ति, प्रत्येक कार्य में सफलता तथा पदोन्नति का अवसर मिलेगा, कारोबारी होने पर आशा से अधिक लाभ का योग यदि आप अपने कारोबार को बढ़ाना चाहते हैं तो अवश्य बढ़ाएं सफलता आपको अवश्य होगी

घर में मांगलिक उत्सव मनाने का योग यदि आप अविवाहित हैं तो इस मास में अवश्य आपका यह कार्य सिद्ध होगा विद्यार्थियों के लिए हर प्रकार से लाभदायक।

मार्च :—ग्यारवां सूर्य, बुध, बृहस्पति, केतु, पहला चन्द्रमा, पांचवां राहु इन सभी ग्रहों के शुभ होने से आप का यह महीना हर प्रकार से सुख और शान्ति के माहोल में गज़रेगा, नए-नए कार्यों का शुभारम्भ होने की सम्भावना यदि आपको नौकरी अथवा कारोबार के सम्बन्ध में विदेश जाने का कोई परोग्राम है तो उसको इस मास में अमली रूप दीजिए सफलता अवश्य होगी, विद्यार्थी वर्ग के लिए सफलता का महीना यदि आप उच्च विद्या प्राप्ति के लिए विदेश जाना चाहते हैं अवश्य परोग्राम बनाएं सफलता अवश्य होगी।

वृष राशि का वर्षफल (TAURUS)

इ, उ, ए, ओ, व, वि, वृ, वे, वो

गोचर शास्त्रों के अनुसार ग्यारवें भाव में सूर्य, बुध, शुक्र, शनि तथा केतु होने से हर प्रकार से लाभ, धन प्राप्ति, नवीन पद की प्राप्ति, घर पर मांगलिक कार्य, सात्विकता में वृद्धि, आरोग्य, आय में आशातीत वृद्धि, सभी कार्यों में सफलता, मित्रों तथा सगे-सम्बन्धियों से लाभ तथा सहयोग, नवां बृहस्पति होने से धन में वृद्धि, पुत्र जन्म का योग, भाग्योन्नति का योग राज्य में मान तथा प्रतिष्ठा का योग, हर कार्य में सफलता धर्म के कार्यों में रुचि इत्यादि चौथा मंगल होने से अपनों में विरोध, धन की कमी, ज़मीन जाईदाद सम्बन्धित समस्याएं मान हानि इत्यादि गोचर चक्र के ग्रहों को वेधाष्टक वर्ग की दृष्टि से देखने

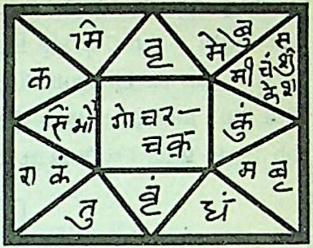

से मालूम होता है यह वर्ष सफलता से परिपूर्ण वर्ष होगा, आर्थिक दृष्टि से भी यह वर्ष सन्तोषजनक रहेगा खर्च के बड़े-बड़े परोग्राम बनने पर भी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी, यदि आप गृहस्थी हैं तो गृहस्थ की ओर से मानसिक शान्ति का योग आपके घर में किसी नवज़ात शिशु के आगमन का योग जिसकी प्रतीक्षा में आप बहुत समय से हैं यदि आप कारोबार करते हैं तो कारोबार में अचानक वृद्धि तथा आमदनी सन्तोषजनक, यदि आप लड़के अथवा लेड़की के विवाह के विषय में परेशान हैं तो आप विश्वास रखें कि आपकी यह समस्या अवश्य हल हो जाएगी, विद्यार्थियों के लिए हर प्रकार से सफलता देने वाला वर्ष रहेगा यदि आप उच्च विद्या की सोच रहे हैं तो आप आरम्भ कीजिए सफलता आपको अवश्य मिलेगी।

वृष राशि का मासिक फल

अप्रेल :—चौथा भौम, पांचवां राहु, नवां बृहस्पति, चन्द्रमा, ग्यारवां सूर्य, शुक्र, शनि, केतु, बारवां बुध इस मास के आरम्भ पर शुभाशुभ ग्रहों का पलड़ा एक जैसा होने के कारण यह मास सामान्य रूप से गुज़रेगा, खर्च तथा आमदनी का योग अच्छा है, दफ्तर का माहोल भी आपके अनुकूल ही रहेगा, राज्याधिकारियों से मिलने-जुलने का अवसर मिलेगा जोकि भविष्य में आप के लिए लाभप्रद रहेगा, विद्यार्थियों को पढ़ने की ओर रुचि कम रहेगी जोकि उनके असफलता का कारण बनेगी।

मई :—चौथा भौम, पांचवां राहु, नवां बृहस्पति, दसवां चन्द्रमा, ग्यारवां शनि, केतु बारवां सूर्य, बुध, शुक्र मास के आरम्भ पर

छः ग्रहों का शुभ होना तथा दो ग्रहों सूर्य तथा बुध का वेध में होना शुभ फल का संकेत है इस शुभ योग के प्रभाव से हर कार्य में सफलता, धन में वृद्धि, धार्मिक उत्सवों का घर पर रचाने का परोग्राम, घर में यदि किसी वृद्ध पुरुष के शरीर की समस्या है तो थोड़ा-सा इलाज कराने से वह ठीक हो सकता है विद्यार्थियों को चाहिए कि इस मास के ग्रहों से लाभ उठाये ग्रह उनके अनुकूल हैं।

जून :—पहला सूर्य, दूसरा शुक्र चौथा भौम पांचवां राहु नवां बृहस्पति ग्यारवां शनि, केतु बारवां चन्द्रमा, बुध इस मास के आरम्भ पर शुभ ग्रहों तथा अशुभ ग्रहों का पलडा एक जैसा होने के कारण यह मास हर प्रकार से सुख और शान्ति से गुज़रेगा कई रुके हुए कार्य सम्पन्न होने का योग आर्थिक स्थिति ज्यों की त्यों होने पर भी आपका हर एक कार्य सफलतापूर्वक सम्पन्न होगा, विद्यार्थियों के लिए हर प्रकार से सफलता का महीना।

जुलाई :—पहला चन्द्रमा दूसरा सूर्य, बुध तीसरा शुक्र चौथा राहु पांचवां भौम नवां बृहस्पति दसवां केतु, ग्यारवां शनि गोचर चक्र के ग्रहों को वेधाष्टक वर्ग के सिद्धान्तों पर परखने से मालूम होता है कि यह मास सुख और आनन्द से परिपूर्ण रहेगा सभी कार्य बिना रुकावट के सिद्ध हो जाएंगे, नौकरी पेशा वालों के लिए विशेष लाभदायक रहेगा, नवां बृहस्पति होने से मान प्रतिष्ठा का योग, पदोन्नति का अवसर, अपने अफसर लोगों के साथ मिलने-जुलने का अवसर, विद्यार्थियों को चाहिए कि वह मन लगाकर पढाई में जुट जाएं ऐसा न हो उनको असफलता का मुंह देखना पड़े।

अगस्त :—तीसरा सूर्य, चन्द्रमा चौथा बुध, शुक्र, राहु छटा मंगल, नवां बृहस्पति, दसवां केतु ग्यारवां शनि मास के सभी ग्रह आपके हक में होने से यह मास हर प्रकार से सुख और शान्ति के माहोल से गुज़रेगा कारोबारी होने पर आपकी आर्थिक स्थिति में विशेष सुधार होगा, ज़मीन, जाईदाद, वाहन इत्यादि खरीदने का योग, नौकरी पेशा होने पर स्थान परिवर्तन का योग परन्तु स्थान परिवर्तन के साथ ही पदोन्नति का योग जिसकी आप चिरकाल से प्रतीक्षा में हैं, घर में किसी नवजात शिशु का आगमन, घर में कोई धार्मिक अथवा मांगलिक उत्सव मनाने का योग, विद्यार्थी वर्ग के लिए विशेष सफलता का महीना।

सितम्बर :—दूसरा चन्द्रमा, चौथा सूर्य, बुध, राहु पांचवां शुक्र, छटा भौम नवां बृहस्पति, दसवां केतु, ग्यारवां शनि इस मास के आरम्भ पर दो अशुभ ग्रह आपके शरीर को प्रभावित करेंगे जिस कारण शरीर अस्वस्थ रहेगा, सगे-सम्बन्धियों के साथ अनबन, मानसिक परेशानी का योग परन्तु शेष ग्रहों के शुभफल के प्रभाव से किसी विशेष भय का कोई योग नहीं है, आपकी आर्थिक स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं आएगा परन्तु खर्च के साधन बढ़ते नज़र आएंगे, घर में किसी लड़के अथवा लड़की के विवाह का योग बनता है जो कि बिना किसी रुकावट के सम्पन्न होगा, विद्यार्थियों के लिए हर प्रकार से सफलता का महीना।

अक्टूबर :—चौथा राहु पांचवां सूर्य, चन्द्रमा, बुध सातवां भौम, शुक्र, नवां गुरु दसवां शनि इस मास के आरम्भ पर केवल दो ग्रहों शनि तथा बृहस्पति का शुभ होना किसी विशेष चमत्कार का सूचक नहीं है यह मास संघर्ष के माहोल में ही गुज़रेगा, आपका शरीर बनता बिगड़ता रहेगा, विवाहित होने पर स्त्री पक्ष के मानसिक चिन्ता आमदनी में कमी तथा खर्च में ज्यादती रहेगी जोकि अशान्ति का कारण बनेगा, कारोबारी होने पर यदि आप किसी नए काम को हाथ में लेने की योजना बना रहे हैं तो उसमें विशेष सफलता का कोई योग नज़र नहीं आता है, विद्यार्थी वर्ग के लिये भी परेशानी का ही महीना रहेगा।

नवम्बर :—चौथा राहु छटा सूर्य, बुध सातवां चन्द्रमा, आठवां भौम शुक्र नवां बृहस्पति दसवां केतु ग्यारवां शनि, आठवें मंगल के बगैर शेष सभी ग्रह आपके हक में होने से यह मास हर प्रकार से शान्ति के माहोल में गुज़रेगा, आप जो कोई भी काम हाथ में लेंगे उसमें अवश्य सफलता मिलेगी यदि आप कोई नया काम आरम्भ करना चाहते हैं अवश्य कीजिए सफलता अवश्य होगी, केवल शरीर के विषय में सावधान रहिये, विद्यार्थियों को आशा से अधिक सफलता।

दिसम्बर :—चौथा राहु सातवां सूर्य आठवां भौम, चन्द्रमा, बुध नवां बृहस्पति, शुक्र दसवां केतु, ग्यारवां शनि, बुध, गुरु शुक्र तथा शनि के शुभ होने से पुत्र सुख और धन लाभ, हर कार्य में सफलता, आपकी आर्थिक तथा सामाजिक स्थिति में सुधार होगा, धार्मिक कार्यों में रुचि, शरीर स्वस्थ चिरस्थाई लाभ की प्राप्ति घर पर धार्मिक उत्सव मनाने का योग, कारोबारी होने

पर आशा से अधिक लाभ, विद्यार्थियों के लिए सफलता का महीना।

जनवरी :—चौथा राहु, सातवां बुध आठवां सूर्य नवां भौम, बृहस्पति, शुक्र दसवां चन्द्र, केतु ग्यारवां शनि शुभ और अशुभ ग्रहों का पलडा एक जैसा होने के कारण यह मास शान्ति के माहोल में ही गुज़रेगा विशेष लाभदायक न होते हुए भी किसी विशेष हानि का सूचक भी नहीं है कारोबारी वर्ग का कार्य सामान्य रूप से चलता रहेगा, नौकरी पेशा वालों को दफ्तर की ओर से मानसिक चिन्ता का योग क्योंकि दफ्तर का माहोल उनके अनुकूल नहीं रहेगा, विद्यार्थी वर्ग को चाहिए कि मास के ग्रहों से लाभ उठायें क्योंकि ग्रह उनके अनुकूल है।

फरवरी :—चौथा राहु आठवां शुक्र नवां सूर्य, बुध दसवां बृहस्पति भौम, केतु ग्यारवां चन्द्रमा शनि छः अशुभ ग्रहों तथा तीन शुभ ग्रहों को वेधाष्टक वर्ग की दृष्टि से देखने पर मालूम होता है कि यह मास गत मास की अपेक्षा अशान्ति तथा संघर्ष के ही माहोल में गुज़रेगा, बने बनाये काम बिगड़ने की सम्भावना शरीर का बनना बिगड़ना आपको परेशान रख सकता है घरेलू वातावरण आपके अनुकूल न होने के कारण मानसिक चिन्ता ऐसा होते हुए भी आपका हर एक कार्य सामान्य रूप से चलता रहेगा, विद्यार्थियों को पढ़ने की ओर प्रवृति कम रहेगी जोकि उनके लिए परेशानी का कारण बनेगी।

मार्च :—चौथा राहु नवां शुक्र दसवां सूर्य, बुध, बृहस्पति, केतु ग्यारवां भौम, शनि बारवां चन्द्रमा गतमास की अपेक्षा इस मास के ग्रहों के विशेष परिवर्तन के कारण यह मास हर प्रकार से सुख शान्ति के माहोल में गुज़रेगा नौकरी पेशा होने पर राज्याधिकारियों से मित्रता जोकि भविष्य में आपके लिए लाभप्रद रहेगी, कारोबारी होने पर आय में आशातीत वृद्धि मान प्रतिष्ठा का योग, स्वदेश में ही लम्बी यात्रा का योग जो कि आपके लिए लाभदायक रहेगी, विद्यार्थियों के लिए विशेष लाभदायक यदि आपने किसी इन्ट्रव्यू इत्यादि में सम्मिलित होना है अवश्य हो जाएं सफलता अवश्य होगी।

मिथुन राशि का वर्षफल (GEMINI)

क, कि, की, कु, के, घ, ङ, छ, ह

वर्ष के आरम्भ पर चार ग्रहों का शुभ होना तथा पांच अशुभ ग्रहों का वेध में होना शुभ फल का सूचक है क्योंकि अशुभ ग्रह वेध में होने से शुभफल देते हैं इन सभी ग्रहों को गोचर सिद्धान्तों की कसोटी पर परखने से मालूम होता है कि यह वर्ष आपके लिए कोई शुभ सन्देश लेकर आया है, इस शुभ योग के प्रभाव से आपकी आर्थिक तथा सामाजिक स्थिति सुधर जाएगी, ज़मीन जाईदाद इत्यादि के विषय में यदि आप चिन्तित हैं तो यह मसला खुद ही ठीक हो जाएगा, यदि आप पढ़-लिख कर बेकार ही घूम रहे तो विश्वास रखिए इस वर्ष में आप का यह कार्य अपनी इच्छानुसार सिद्ध होगा, यदि आप नौकरी करते हैं तो दफ्तर का माहोल आपके अनुकूल रहेगा यदि दफ्तर में किसी प्रकार से आपका कोई कार्य रुका हुआ है तो थोड़ा-सा परिश्रम करने से आपका यह कार्य अवश्य सम्पन्न होगा, कारोबारी होने पर आपका कारोबार सामान्य रूप से चलता रहेगा यदि आप लोहे से सम्बन्धित कोई कार्य करते हैं तो आपके काम में चार चान्द लगने का योग है गृहस्थी होने पर घर में यदि किसी प्रकार की कोई समस्या है तो विश्वास रखिए वह समस्या अवश्य पूर्ण होगी, परन्तु यह सब कुछ तभी सम्भव होगा जब आप किसी नशीली वस्तु का सेवन नहीं करोगे नहीं तो बाद में पछताना होगा, विद्यार्थी वर्ग के लिए यह वर्ष हर प्रकार से लाभदायक

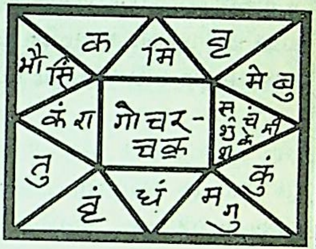

है यदि आप उच्च विद्या प्राप्ति के लिए विदेश अथवा स्वदेश में ही कहीं जाना चाहते हैं तो यह परोग्राम अवश्य बनाएं सफलता आपको अवश्य होगी यदि आप ट्रेनिंग इत्यादि के लिए कोशिश करते हैं तो विश्वास रखिये उसमें अवश्य सफलता तभी होगी जब आप पक्के वैष्णव रहेंगे।

मिथुन राशि का मासिक फल

अप्रेल :—तीसरा भौम, चौथा राहु आठवां चन्द्रमा, बृहस्पति दसवां सूर्य, शुक्र, शनि, केतु ग्यारवां बुध मास के आरम्भ पर केवल तीन ग्रहों का शुभ होना कोई विशेष शुभफल का सूचक नहीं है कई अशुभ ग्रहों का वेध में होना अच्छे फल का ही संकेत हैं इस शुभाशुभ योग से यह महीना सर्वसाधारण रूप से ही व्यतीत होगा आमदनी तथा खर्च एक जैसा रहेगा, नौकरी वालों को दफ्तर का माहोल उनके अनुकूल रहेगा, विद्यार्थियों के लिए सफलता का ही महीना है।

मई :—तीसरा सूर्य, भौम चौथा राहु, आठवां बृहस्पति, नवां चन्द्रमा, दसवां शनि केतु, ग्यारवां सूर्य, बुध, शुक्र ग्रहों की स्थिति को देखते हुए आमदनी में इज़ाफा, प्रत्येक कार्य निर्विघ्न रूप से सम्पन्न होगा, शरीर स्वस्थ रहेगा, घरेलू हालात आपके अनुकूल रहेंगे किसी महान पुरुष के साथ मेल-मिलाप का योग, कारोबारी वर्ग को सावधान रहने की आवश्यकता नहीं तो हानि होने की सम्भावना, नौकरी पेशा वालों को दफ्तर का माहोल उनके अनुकूल रहेगा, विद्यार्थी वर्ग को चाहिए कि मन लगाकर पढ़ाई करें फिर ही कहीं सफलता की आशा रखें।

जून :—पहला शुक्र, तीसरा भौम चौथा-राहु, आठवां बृहस्पति दसवां शनि केतु, ग्यारवां चन्द्रमा, बुध बारवां सूर्य बेधाष्टक वर्ग तथा गोचर सिद्धान्तों के अनुसार ग्रहों पर विचार करने से मालूम होता है ग्रहों का झुकाव शुभफल की ओर है जिस कारण सुख और धन की प्राप्ति, शत्रु नाश, सन्तान जन्म का योग जिसकी प्रतीक्षा आप बहुत समय से कर रहे हैं यदि आप

अविवाहित हैं तो इस महीने में कहीं न कहीं विवाह की बात पक्की होगी या बात चल पड़ेगी, विद्यार्थियों के लिए सफलता का महीना।

जुलाई :—पहला सूर्य, बुध दूसरा शुक्र तीसरा राहु चौथा भौम आठवां बृहस्पति केतु दसवां शनि बारवां चन्द्रमा–सूर्य, बुध, शनि, भौम तथा चन्द्रमा की स्थिति अच्छी न होने के कारण आपको शरीर के विषय में सावधान रहना चाहिए यह आपकी आर्थिक तथा शारीरिक स्थिति पर प्रभाव डाल सकते हैं परन्तु किसी विशेष भय का कोई योग नहीं है, फजूल खर्च का योग, घर में मेहमानों का आना–जाना जोरों पर रहेगा, विद्यार्थियों के लिए भी परेशानी का महीना।

अगस्त :—दूसरा सूर्य, चन्द्रमा तीसरा बुध, शुक्र, राहु पांचवां भौम आठवां बृहस्पति नवां केतु दसवां शनि यह महीना संघर्ष तथा हलचल के माहोल में ही गुज़रेगा, आप नौकरी करते या कारोबार दोनों सूरतों में परिवर्तन का योग, सम्बन्धियों से मतभेद, धन का फजूल खर्च सन्तान पक्ष की ओर से मानसिक चिन्ता यदि आप कोई नया कार्य आरम्भ करना चाहते हैं तो समय ज़ाया मत कीजिए काम आरम्भ कीजिए, विद्यार्थियों के लिए सफलता का ही महीना है।

सितम्बर :—पहला चन्द्रमा तीसरा सूर्य, बुध, राहु, चौथा शुक्र पांचवां भौम आठवां बृहस्पति नवां केतु दसवां शनि इस ग्रहस्थिति के अनुसार यह महीना संघर्ष का होते हुए भी शान्तिपूर्वक ही गुज़रेगा, आपका प्रत्येक कार्य रुकावटों के आने पर भी पूर्ण होगा, आपकी आमदनी में किसी प्रकार की कमी नहीं होगी अपितु खर्च के साधन बढ़ेंगे दफ्तर का माहोल आपके अनुकूल होते हुए भी शत्रु पक्ष आप पर हावी हो सकता है जिसे कुछ अशान्ति का वातावरण बनेगा, विद्यार्थियों के लिए भी परेशानी का महीना क्योंकि बृहस्पति की स्थिति अच्छी नहीं है।

अक्टूबर :—तीसरा राहु चौथा सूर्य, चन्द्रमा, बुध, छटा भौम शुक्र आठवां बृहस्पति नवां केतु दसवां शनि इस मास के आरम्भ पर ग्रहों में कोई विशेष परिवर्तन न होने के कारण यह मास भी गत मास की तरह शान्तिपूर्वक ही गुज़रेगा खर्च की नई–नई योजनाएं बनेगी जिनको आप अमली रूप भी देंगे घर पर कोई मांगलिक कार्य करने का परोग्राम बनेगा, यदि मकान, ज़मीन

इत्यादि के विषय में आप कुछ चिन्तित हैं तो थोड़ा-सा परिश्रम करने से इस महीने में उस कार्य का शुभारम्भ हो सकता है, विद्यार्थियों को पठन-पाठन में दिलचस्पी कम रहेगी।

नवम्बर :—तीसरा राहु, पांचवां सूर्य, बुध छटा चन्द्रमा सातवां भौम, शुक्र आठवां बृहस्पति नवां केतु दसवां शनि इस मास के ग्रहों से विदित होता है कि आपकी शारीरिक, मानसिक तथा आर्थिक शक्ति में कमी आएगी जो कि आपके परेशानी का कारण बनेगा, नौकरी पेशा होने पर राज्याधिकारियों से बाद-विवाद तथा अनबन, कारोबारी होने पर हानि की सम्भावना यदि आप शरीर से अस्वस्थ हैं तो शरीर के विषय में आप सावधान रहिये, विद्यार्थियों के लिए सफलता का महीना यदि आपने ट्रेनिंग इत्यादि के लिए फार्म भरना है तो अवश्य भरिये उसमें अवश्य सफलता होगी।

दिसम्बर :—तीसरा राहु, छटा सूर्य सातवां चन्द्रमा, भौम, बुध आठवां बृहस्पति, शुक्र नवां केतु दसवां शनि इस मास के ग्रहों के अनुसार आमदनी में इज़ाफा, नए कार्यों का हाथ में लेना तथा उसमें सफलता सुख प्राप्ति का योग, शरीर से स्वस्थ रहने का योग यदि घर में किसी के शरीर सम्बन्धित कोई परेशानी है तो थोड़ा-सा इलाज करने से आपकी यह परेशानी दूर हो जाएगी, नौकरी पेशा वालों को दफ्तर की ओर से लाभ यदि आप तबदीली के लिए प्रयत्न करते हैं तो इस महीने में इन कागज़ों में जोर रहेगा, विद्यार्थी वर्ग के लिए विशेष लाभदायक मास रहेगा।

जनवरी :—तीसरा राहु, छटा बुध, सातवां सूर्य आठवां भौम, बृहस्पति शुक्र, नवां चन्द्रमा, केतु दसवां शनि नए वर्ष का पहला महीना आपके लिए कोई विशेष शुभ सन्देश लेकर नहीं आया है क्योंकि मास के आरम्भ पर बृहस्पति तथा शनि की स्थिति अच्छी नहीं है जबकि गोचर शास्त्र में बृहस्पति तथा शनि का महत्व अधिक है इस कारण यह महीना सर्वसाधारण रूप से गुज़रेगा गृहस्थी होने पर गृहस्थ की ओर से चिन्ता कोई भी कार्य बिना अड़चन के सिद्ध होगा नहीं, नौकरी पेशा वाले को घर से दूर रहने का योग, कारोबारी वर्ग के लिए परेशानी का ही महीना होगा परन्तु यदि आपकी जन्म कुण्डली में शनि तथा बृहस्पति की स्थिति अच्छी है तो यह महीना सुख और शान्ति से गुज़रेगा, विद्यार्थियों के लिए भी संघर्ष का महीना है उपाय

के रूप में आप जन्थरी में दर्ज सरस्वती वन्दना का पाठ नित्य किया करें।

फरवरी :—तीसरा राहु, सातवां शुक्र आठवां सूर्य, बुध नवां भौम, बृहस्पति, केतु दसवां चन्द्रमा शनि इस मास के आरम्भ पर बृहस्पति ने अपनी स्थिति को अच्छी प्रकार सम्भाला है जिसके फल स्वरूप यह महीना सुख और शान्ति से गुज़रेगा, आपके रुके हुए कार्य सिद्ध हो जाएंगे, आपकी आमदनी में भी इज़ाफा होगा दफ्तर में यदि आपकी कोई प्रमोशन रुकी हुई है वह भी अवश्य मिलेगी, विद्यार्थी वर्ग के लिए हर प्रकार से सफलता का महीना।

मार्च :—तीसरा राहु, आठवां शुक्र, नवां सूर्य, बुध, गुरु, केतु, दसवां भौम, शनि ग्यारवां चन्द्रमा इस मास के शुभ और अशुभ ग्रहों को देखने से मालूम होता है कि यह मास सुख और शान्ति से गुज़रेगा घर में देर से लटकी हुई किसी समस्या का समाधान होने के आसार दिखाई देंगे, आपकी आर्थिक स्थिति भी सन्तोषजनक रहेगी, बाहरी कार्यों में खर्च करने का योग बनता है व्यापारी होने पर आशा से अधिक लाभ विद्यार्थी वर्ग के लिए सफलता का महीना।

कर्क राशि का वर्षफल (CANCER)

हि, हु, हे, हो, ड, डा, डि, डे, डी

वर्ष के आरम्भ पर नवें भाव में सूर्य, चन्द्रमा, बुध, शनि, सातवां बृहस्पति तथा दूसरा भौम शुभ फल का सूचक नहीं है इसके प्रभाव से बने बनाये काम बिगड़ने की सम्भावना, बिना कारण धन हानि तथा आमदनी में कमी हर तरफ से अशान्ति का वातावरण तथा अपमान का भय जिस किसी कार्य को आप हाथ में लेंगे बिना रुकावट के हल नहीं होगा, नौकरी पेशा होने

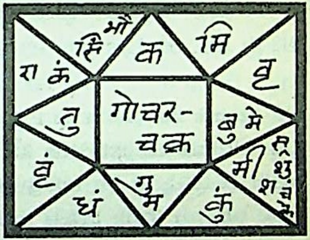

पर राज्य दरबार की ओर से परेशानी अफसर लोगों के साथ बाद-विवाद, शत्रु पक्ष आप पर हाबी हो सकता है यदि दफ्तर में कोई प्रमोशन इत्यादि का चान्स है उसमें अकस्मात् रुकावट, दूसरे भाव का भौम तथा नवां चन्द्रमा आपके शरीर को प्रभावित कर सकता है आपका शरीर बनता बिगड़ता रहेगा गृहस्थी होने पर स्त्री पक्ष की ओर से चिन्ता, कारोबारी वर्ग के लिए विशेष लाभदायक वर्ष नहीं है धन होते हुए भी कमी का अनुभव होगा मूल्यों की अस्थिरता के कारण हानि का योग भी बनता है गोचर चक्र में नवें भाव में शुक्र का होना चिरस्थाई लाभ का सूचक है घर में कोई मांगलिक अथवा धार्मिक उत्सव मनाने का योग, विद्यार्थी वर्ग के लिए भी कोई विशेष महत्व का वर्ष नहीं है विद्यार्थियों को पढ़ने की ओर प्रवृति कम रहेगी वर्ष के क्रूर ग्रहों के क्रूर प्रभाव को शान्त करने के लिए आप नियम से श्री भगवद्गीता की एक-एक अध्याय का पाठ किया करें, यदि आप गीता जी पढ़ नहीं सकते हैं तो गीता जी का पाठ सुना करें क्योंकि गीता जी के सुनने से भी सभी कष्ट दूर हो जाते हैं ऐसा ही भगवद्गीता में लिखा है।

कर्क राशि का मासिक फल

अप्रेल :—दूसरा भौम तीसरा राहु सातवां चन्द्रमा, बृहस्पति नवां सूर्य, शुक्र, शनि, केतु दसवां बुध होने से यह महीना दौड़धूप के ही माहोल में गुज़रेगा आप कारोबार करते हैं या नौकरी दोनों सूरतों में आपकी आमदनी में कोई वृद्धि नहीं होगी, खर्च में वृद्धि का योग, गृहस्थी होने पर घर में नई-नई समस्याएं उठ खड़ी हो जाएगी जो कि आपके लिए अशान्ति का कारण बनेगी इस अशान्ति को दूर करने के लिए हर मंगलवार को तहर बनाकर पक्षियों को डाला करें, विद्यार्थियों के लिए भी कोई

सफलता देने वाला महीना नहीं है।

मई :—दूसरा भौम, तीसरा राहु सातवां बृहस्पति आठवां चन्द्रमा नवां शनि, केतु दसवां सूर्य, बुध, शुक्र मास के आरम्भ पर चार शुभ ग्रहों तथा तीन अशुभ ग्रहों का वेध में होना शुभफल का सूचक है इस शुभ योग के प्रभाव से यह महीना सुख और शान्ति के माहोल में गुज़रेगा कई रुके हुए कार्य सिद्ध हो जाएंगे आमदनी में आशा से अधिक वृद्धि होगी, ज़मीन जाईदाद, वाहन इत्यादि खरीदने का यदि कोई परोग्राम है तो यह महीना ऐसे शुभ कामों के लिए ठीक है, विद्यार्थियों के लिए भी हर प्रकार से लाभदायक।

जून :—दूसरा भौम तीसरा राहु सातवां बृहस्पति नवां शनि, केतु, दसवां चन्द्रमा, बुध ग्यारवां सूर्य बारवां शुक्र, वेध में गया हुआ अशुभ ग्रह भी शुभफल को देता है मास के आरम्भ पर तीन ग्रह वेध में होने से तथा छः ग्रहों का शुभ होना शुभफल का संकेत है इस शुभ योग के कारण आपका प्रत्येक कार्य बिना रुकावट के सिद्ध होगा जो कोई भी कार्य आप हाथ में लेंगे उसमें सफलता होगी, आप नौकरी करते हैं या कारोबार दोनों सूरतों में आप लाभ में रहेंगे, शरीर भी स्वस्थ रहेगा, विद्यार्थियों के लिए हर प्रकार से सफलता का महीना।

जुलाई :—पहला शुक्र, दूसरा राहु तीसरा भौम, सातवां बृहस्पति आठवां केतु नवां शनि ग्यारवां चन्द्रमा बारवां सूर्य, बुध गोचर चक्र में शनि तथा बृहस्पति का महत्व होता है यह दोनों ग्रह वेध में होने से तथा शेष की स्थिति को भी देखने से मालूम होता है कि यह मास हर प्रकार से सुख और शान्ति के माहोल में गुज़रेगा देर से लटकी हुई समस्याओं का समाधान होगा यदि आप लड़की अथवा लड़के के विवाह के विषय में चिन्तित हैं तो थोड़ा-सा परिश्रम करने से आपकी यह समस्या हल होगी, विद्यार्थियों को चाहिए कि इस मास के ग्रहों से लाभ उठाएं क्योंकि ग्रह उनके अनुकूल हैं।

अगस्त :—पहला सूर्य, चन्द्रमा दूसरा बुध, शुक्र, राहु चौथा भौम सातवां बृहस्पति आठवां केतु, नवां शनि इस मास के ग्रह गत मास की अपेक्षा विप्रीत होने के कारण चलते हुए कार्यों में रुकावट, आमदनी में कमी नौकरी पेशा होने पर दफ्तर का

माहोल आपके उलट ही रहेगा जो महीना भर आपके लिए परेशानी का कारण बनेगा यदि आप कारोबार करते हैं तो थोड़ा सावधानी से अपने कारोबार को सम्भालें नहीं तो हानि की सम्भावना है जिस की पूर्ति बहुत समय तक पूरी नहीं होगी, चौथा मंगल आपके शरीर को प्रभावित करेगा जिस कारण शरीर अस्वस्थ रहेगा, विद्यार्थी वर्ग के लिए सफलता का ही महीना है।

सितम्बर :—दूसरा सूर्य, बुध, राहु तीसरा शुक्र चौथा भौम सातवां बृहस्पति आठवां केतु, नवां शनि बारवां चन्द्रमा इस मास के शुभाशुभ ग्रहों को देखने से मालूम होता है कि यह मास सर्व-साधारण रूप से ही गुज़रेगा, आपके स्वभाव में अचानक चिड़-चिड़ापन आने का योग आपका शरीर भी बनता बिगड़ता रहेगा, गृहस्थी होने पर घर के किसी वृद्ध पुरुष के शरीर की समस्या आपको घेरे रखेगी, सन्तान पक्ष से मानसिक चिन्ता यदि आपने अपने बच्चे को ट्रेनिंग इत्यादि के लिए भेजने का कोई परोग्राम है तो उसकी ओर पूरी तवजह दीजिए तभी कहीं उस में सफलता मिल सकती है विद्यार्थियों के लिए सफलता का महीना होते हुए भी आशानुरूप सफलता नहीं मिल सकती है।

अक्टूबर :—दूसरा राहु तीसरा सूर्य, चन्द्रमा, बुध पांचवां भौम शुक्र सातवां बृहस्पति आठवां केतु नवां शनि गोचर चक्र के ग्रहों को देखने से मालूम होता है कि यह मास संघर्ष का होते हुए भी सुख और शान्ति के माहोल में ही गुज़रेगा प्रायः शरीर स्वस्थ रहेगा, सज्जनों एवं उच्च राज्याधिकारियों से मेल-मिलाप का योग जोकि भविष्य में आपके लिए लाभदायक रहेगा, सगे-सम्बन्धियों से लाभ, मान-प्रतिष्ठा का योग, घर में किसी नवजात शिशु के आने का योग, विभागीय परीक्षाओं में सफलता, विद्यार्थियों को चाहिए कि इस मास के ग्रहों से लाभ उठाएं तथा पढ़ाई में जुट जायें तभी आशानुरूप सफलता होगी।

नवम्बर :—दूसरा राहु चौथा सूर्य, बुध, पांचवां चन्द्रमा, छटा भौम, शुक्र सातवां बृहस्पति आठवां केतु नवां शनि इस मास के आरम्भ पर गोचर चक्र के शुभाशुभ ग्रहों के अनुसार यह मास सामान्य रूप से गुज़रेगा किसी चमत्कार का योग इस महीने में नहीं है आपकी आमदनी ज्यों की त्यों रहेगी परन्तु खर्च की अधिकता रहेगी दफ्तर में अफसर लोगों के साथ अनबन जोकि आपकी नौकरी में बाधक भी बन सकता है अतः आपको समयम से काम लेना चाहिए, कारोबारी वर्ग के लिए यह मास

अच्छा ही रहेगा आमदनी कम होने पर भी तसल्लीवख्श लाभ होगा, विद्यार्थियों को चाहिए कि वे डटकर पढ़ाई की ओर जुट जाएं तभी सफलता की आशा रखें।

दिसम्बर :—दूसरा राहु पांचवां सूर्य छटा चन्द्रमा, भौम, बुध सातवां शुक्र, बृहस्पति आठवां राहु नवां शनि इस मास के ग्रहों की स्थिति के अनुसार यह मास हर प्रकार से सुख और शान्ति के माहोल में गुज़रेगा आपकी आमदनी में अचानक इज़ाफा होने का योग कारोबारी वर्ग को चाहिए कि इस मास के ग्रहों से लाभ उठाएं तथा अपने कारोबार को बड़ावा दें, गृहस्थी होने पर घर का वातावरण आपके अनुकूल रहेगा, नौकरी पेशा होने पर दफ्तर में हरप्रकार से आदर मान तथा प्रतिष्ठा का योग, विद्यार्थियों के लिए सफलता का मास।

जनवरी :—नए वर्ष के पहले मास के ग्रह आपके पक्ष में होते हुए भी आपको हर समय सावधान रहना चाहिए आप जो भी कार्य करते हैं आपको अवश्य सफलता मिलेगी परन्तु शत्रुपक्ष आप पर हर समय हावी होता रहेगा जोकि आपके लिए परेशानी का कारण बनेगा गृहस्थी होने पर यदि घर के किसी सदस्य के शरीर सम्बन्धित कोई परेशानी है वह अवश्य दूर हो जाएगी, आमदनी भी अच्छी रहेगी, विद्यार्थियों के लिए संघर्षमय मास होते हुए भी सफलता से परिपूर्ण रहेगा।

फरवरी :—मास के आरम्भ पर आठवां भौम तथा बृहस्पति आपके शरीर को अवश्य प्रभावित कर सकता है इस कारण आपको शरीर के विषय में सावधान रहना चाहिए नवां शनि तथा चन्द्रमा आपके कारोबार तथा नौकरी को धन की दृष्टि से प्रभावित करेगा आमदनी में अचानक रुकावट तथा दफ्तर में अफसर लोगों के साथ अनबन परन्तु ऐसा होते हुए भी किसी प्रकार की हानि का कोई योग नहीं है विद्यार्थियों के लिए सफलता का महीना उपाय के रूप में सरस्वती वन्दना का उच्चारण रोज़ किया करें।

मार्च :—इस मास के आरम्भ पर चार ग्रह आठवें तथा दो नवें भाव में बैठे हैं जिनके फलस्वरूप यह मास सर्व साधारण रूप से ही गुज़रेगा आमदनी तथा खर्च एक जैसा ही रहेगा, परन्तु ऐसा होते हुए भी अच्छे-अच्छे पुरुषों से मिलने का अवसर मिलेगा, नौकरी पेशा होने पर दफ्तर का माहोल आप के अनुकूल रहेगा, विद्यार्थियों के लिए हर प्रकार से सफलता का महीना।

सिंह राशि का वर्ष फल (LEO)

म, मि, मु, मे, मा, टा, टि, टू, टे

गोचर शास्त्र में बृहस्पति तथा शनि का बहुत महत्व शास्त्रकारों ने रखा है इस कारण गोचर चक्र में इन दोनों की स्थिति अच्छी होनी चाहिए परन्तु सिंह राशि वालों के गोचर चक्र में इन दोनों ग्रहों की स्थिति कोई विशेष न होने के कारण यह वर्ष संघर्ष तथा दौड़धूप में गुज़रेगा लग्न का मंगल आठवां सूर्य, चन्द्रमा, शुक्र तथा शनि विशेषरूप से आपके स्वास्थ्य को प्रभावित करेंगे इस कारण आपको शरीर के विषय में सावधान रहना चाहिए आपका शरीर बनता बिगड़ता रहेगा चोट का भय, बवासीर, इत्यादि से आपका स्वास्थ्य कमज़ोर हो सकता है अतः उपाय के रूप में आप नित्य 'भगवद्गीता' की एक-एक अध्याय पढ़ा करें यदि आप संस्कृत पढ़ नहीं सकते हैं तो नित्य भगवद्गीता का पाठ सुना करें, आप कारोबार करते हैं या नौकरी दोनों सूरतों में आपकी आमदनी प्रभावित होगी, खर्च के नये-नये साधन बनते रहेंगे, दफ्तर का माहोल आपके अनुकूल नहीं रहेगा अफसर लोगों के साथ अनबन जिस कारण आपकी डिपार्टमेन्टल प्रमोशन इत्यादि पर असर पड़ सकता है, विद्यार्थियों को पढ़ाई की ओर प्रवृति कम रहने पर भी आशानुरूप सफलता मिलेगी, यदि आपने ट्रेनिंग इत्यादि के लिए फारम इत्यादि भरना है तो अवश्य भरें, सफलता आपको अवश्य मिलेगी।

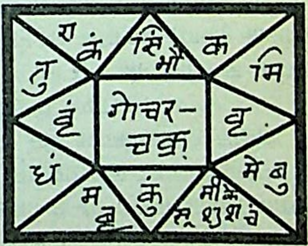

सिंह राशि का मासिक फलादेश

अप्रेल :—इस मास के शुभ-अशुभ ग्रहों के मिले-जुले योग से यह मास दौड़धूप तथा संघर्ष में ही गुज़रेगा आपका आरम्भ किया हुआ कोई भी कार्य बिना रुकावट के सिद्ध नहीं होगा जन्म का भौम तथा आठवां सूर्य शरीर के लिए हानिकारक है, आपकी आमदनी भी ज्यों की त्यों रहेगी, घर पर मेहमानों का आना-जाना ज़ोरों पर रहेगा, यदि आपको ज़मीन-जाईदाद के विषय में कोई समस्या है तो वह इस महीने में हल नहीं होगी विद्या सम्बन्धित हर कार्य में सफलता।

मई :—इस मास के आरम्भ पर ग्रहों में कुछ सुधार होने के कारण यह मास गत मास की अपेक्षा सुख और शान्ति के माहोल में गुज़रेगा परन्तु गृहस्थ सम्बन्धित कोई न कोई चिन्ता आपको घेरे रखेगी नौकरी पेशा होने पर अचानक तरक्की का योग विद्यार्थियों के लिए हर प्रकार से सफलता का महीना।

जून :—गोचर चक्र के ग्रहों को देखने से मालूम होता है कि यह महीना हर प्रकार से सुख और शान्ति के माहोल में गुज़रेगा ग्यारवां शुक्र आपको आमदनी में वृद्धि करेगा सभी कार्यों में सफलता गृहस्थ सुख तथा मित्रों द्वारा लाभ तथा सहयोग कारोबारी होने पर आपके कारोबार में अचानक वृद्धि का योग आमदनी में आशानुरूप वृद्धि परन्तु खर्च के ऐसे-ऐसे परोग्राम बनेंगे कि कभी-कभी आप धन की कमी महसूस करेंगे, विद्या सम्बन्धित कार्य में सफलता।

जुलाई :—इस मास के आरम्भ पर वृष राशि का चन्द्रमा ग्यारवां सूर्य का होना शुभफल की ओर इशारा है इस शुभ योग के प्रभाव से यह महीना संघर्ष का होते हुए भी अनन्तः शुभफल का ही सूचक है नौकरी पेशा होने पर आपको डिपार्टमेन्टल प्रमोशन का योग, कारोबारी होनेपर आप अपने काम को ध्यान से देखें कहीं आपकी गफलत से आपको हानि का मुंह देखना न पड़े, विद्यार्थियों के लिए हर प्रकार से शुभ फलदायक।

अगस्त :—इस मास के आरम्भ पर बारवां सूर्य तथा चन्द्रमा आपके शरीर को अवश्य प्रभावित कर सकता है अतः आपको शरीर के विषय में सावधान रहना चाहिए आपका शरीर बनता बिगड़ता रहेगा दैव योग से यदि आप शरीर से स्वस्थ हैं तो घर के किसी सदस्य के शरीर सम्बन्धित कोई परेशानी आप को महीना भर घेरे रखेगी जोकि आपके लिए परेशानी का कारण बनेगी, नौकरी पेशा होने पर दफ्तर का माहोल आपके उलट होते हुए भी किसी प्रकार से हानिकारक सिद्ध नहीं होगा, विद्यार्थियों के लिए परेशानी का ही महीना होगा।

सितम्बर :—गोचर शास्त्र के अनुसार पहला सूर्य, बुध तथा राहु होने से धन नाश, मान-सम्मान में कमी, शरीर अस्वस्थ, प्रत्येक कार्य का विलम्भ से होना, सगे-सम्बन्धियों मित्रों से अनबन तथा मानसिक परेशानी परन्तु ऐसा अशुभ योग होते हुए भी शेष ग्रहों के प्रभाव से किसी प्रकार के भय का कोई योग नहीं है कारोबारी वर्ग को चाहिए कि इस मास के ग्रहों से लाभ उठाएं क्योंकि इस मास के ग्रह आपके कारोबार के अनुकूल हैं आशा से अधिक लाभ का योग, नौकरी पेशा वालों को हर समय चौकस रहना चाहिए ऐसा नहीं कि आप पर झूठा इलज़ाम लग जाये जोकि भविष्य में आप के बदनामी का कारण बने, छटा बृहस्पति विद्या प्राप्ति के लिए विशेष लाभदायक न होने के कारण विद्यार्थियों के लिए संघर्ष का ही महीना।

अक्टूबर :—इस मास के आरम्भ पर सूर्य, चन्द्रमा तथा शनि वेध में होने से अशुभ होते हुए भी शुभ फल कारक ही हैं इस शुभ योग के प्रभाव से यह मास हर प्रकार से शान्ति के माहोल में ही गुज़रेगा आमदनी में विशेष इज़ाफा न होने पर आपकी आर्थिक स्थिति सन्तोषजनक ही रहेगी घर में कोई शुभ काम अथवा महोत्सव मनाने का परोग्राम बनेगा, जिसकी प्रतीक्षा आप बहुत समय से करते आये हैं, विद्यार्थी वर्ग के लिए हर प्रकार से सफलता देने वाला महीना।

नवम्बर :—इस मास के शुभाशुभ ग्रहों पर विचार करने से प्रतीत होता है कि यह मास सुख और शान्ति के माहोल में गुज़रेगा आपके रुके हुए कार्य फिर से हरकत में आएंगी नौकरी पेशा होने पर यदि आपने कोई डिपार्टमेन्टल परीक्षा में शामिल होना है तो अवश्य शामिल हो जाएं सफलता आपको अवश्य मिलेगी, परन्तु व्यापारी वर्ग को चाहिए कि वह ईमानदारी से अपने कार्य में डट जाये नहीं तो लेने के देने पड़ेंगे, विद्या सम्बन्धित कार्यों के लिए विशेष सफलता देने वाला महीना है।

दिसम्बर :—इस वर्ष का आखरी महीना आपके लिए अपनी कुछ यादें छोड़ कर जाएगा चौथा सूर्य, पांचवां चन्द्रमा, भौम तथा बुध होने से मानसिक तथा शारीरिक पीडा, घरेलू परेशानी ज़मीन-जाईदाद सम्बन्धित नये-नये झगड़ों का उत्पन्न होना, धन हानि सन्तान पक्ष से चिन्ता, शत्रुओं का जोर अर्थात् यह महीना हर प्रकार से अशान्ति के वातावरण में ही गुज़रेगा ऐसा अशुभ होते हुए भी आपकी आर्थिक स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं होगा, विद्यार्थियों के लिए संघर्ष का महीना।

जनवरी :—नये वर्ष का पहला महीना आपके लिए यद्यपि कोई विशेष लाभ लेकर नहीं आया है परन्तु तो भी गत मास की अपेक्षा यह मास शान्ति के माहोल में ही गुज़रेगा आमदनी तथा खर्च एक जैसा रहेगा नौकरी वालों के लिए कुछ लाभदायक ही रहेगा व्यापारी वर्ग को हाथ पर हाथ रखकर बैठना होगा परन्तु किसी प्रकार की हानि की कोई सम्भावना नहीं है, विद्यार्थियों को चाहिए कि वह मन लगाकर पढ़ाई में जुट जाएं तभी कहीं सफलता की आशा रखें।

फरवरी :—पहला राहु, पांचवां शुक्र छटा सूर्य तथा बुध, वेध में गया हुआ भौम, चन्द्रमा तथा शनि का होना कार्य सिद्धि, सुख प्राप्ति शत्रुओं पर विजय, रोगों का नाश, राज्याधिकारियों से लाभ अन्न, धन की प्राप्ति विद्या अध्ययन की ओर अधिक प्रवृत्ति, सन्तान पक्ष के साथ प्रेम प्यार, यश में वृद्धि पुत्र जन्म का योग, विभागीय परीक्षाओं में सफलता इत्यादि के सूचक हैं इस शुभ योग के प्रभाव से यह महीना सुख और शान्ति के माहोल में गुज़रेगा, विद्यार्थियों के लिए आशा से अधिक सफलता देने वाला महीना।

मार्च :—सातवें भाव का सूर्य, बुध, बृहस्पति तथा आठवां भौम शनि आपके शरीर को अवश्य प्रभावित करेंगे आपको शरीर के विषय में सावधान रहना पड़ेगा चोट का भय यदि आप वाहन चलाते हैं तो वाहन चलाने से पूर्व तीन बार गायत्री मन्त्र का उच्चारण किया करें यदि आप किसी नशीली वस्तु का सेवन करते हैं तो उससे दूर रहने की कोशिश करें तब ही कहीं क्रूर ग्रहों के प्रभाव से बच सकते हैं ऐसा न करने से आपको अवश्य पछताना पड़ेगा, विद्यार्थियों के लिए सफलता का महीना उनको चाहिए कि पढ़ाई आरम्भ करने से पहले जन्थरी में लिखी हुई सरस्वती वन्दना का पाठ एक बार अवश्य करें तो आशा से अधिक सफलता मिलेगी।

कन्या राशि का वर्षफल (VIRGU)

टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो

वर्ष के आरम्भ पर पहला राहु, पांचवां, बृहस्पति, सातवां चन्द्रमा तथा वेध में गया हुआ सूर्य आपकी आर्थिक स्थिति को विशेष प्रभावित करेगा, आप की आर्थिक स्थिति में आशा से अधिक सुधार होने की सम्भावना पांचवां बृहस्पति सुख और आनन्द का सूचक है हर कार्य में सफलता का योग, नौकरी पेशा वालों को पदोन्नति की सम्भावना यदि ऐसा होगा भी नहीं तो भी इस प्रकार के कागज हरकत में आएंगे कारोबारी लोगों को कारोबार में आशा से अधिक लाभ होने की सम्भावना यदि आप अपने कारोबार को और बढ़ावा देना चाहते हैं तो समय ज़ाया मत कीजिए अपने काम को आगे बढ़ाएं, घर पर किसी मांगलिक उत्सव बनाने का परोग्राम बनेगा, घर में किसी नवजात शिशु के आगमन का योग जिसकी प्रतीक्षा में आप बहुत समय से थे, यदि आप शेयर इत्यादि का कारोबार करते हैं तो उसमें आशा से अधिक लाभ की सम्भावना, बारवां मंगल तथा सातवां शनि आपके शरीर को अवश्य प्रभावित कर सकता है अचानक शरीर बिगड़ने का योग, चोट का भय रक्त विकार का योग शरीर को स्वस्थ रखने के लिए आप नियम से भगवान् शंकर पर दूधवाला जल चढ़ाया करें तथा जल चढ़ाते समय इस मन्त्र का उच्चारण अवश्य किया करें :–

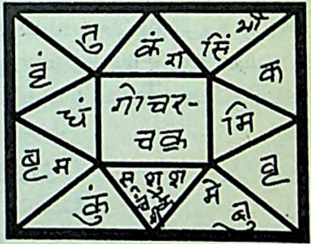

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टि-वर्धनम्।
उर्वा-रुकम्-इव बन्धनात्-मृत्यो-मुक्षीय मामृतात्।

पांचवां बृहस्पति विद्यार्थियों के लिए हर प्रकार से सफलता देने वाला है यदि आप उच्च विद्या प्राप्ति के लिए विदेश जाना चाहते हैं तो थोड़ा-सा प्रयत्न कीजिए अवश्य सफलता होगी।

कन्या राशि का मासिक फलादेश

अप्रेल :—मास के आरम्भ पर पांचवां बृहस्पति आठवां बुध आपको हर काम में सफलता देने वाले तथा शुभ फल के सूचक हैं इनके प्रभाव से आर्थिक तथा सामाजिक स्थिति में सुधार तथा सन्तान पक्ष की ओर से मानसिक शान्ति, परन्तु शारीरिक स्थिति के कारण आपके काम में अडचन आने का योग इस कारण आप शरीर के बारे में सावधान रहें, विद्यार्थियों के लिए हर प्रकार से सफलता का योग यदि आपको ट्रेनिंग इत्यादि पर जाने का कोई परोग्राम है तो इसकी ओर ज्यादा ध्यान दीजिए सफलता मिलने का योग है।

मई :—वेध में गया हुआ अशुभ ग्रह भी शुभफल देता है इस मास के आरम्भ पर सूर्य तथा शनि वेध में होने से तथा शेष सभी ग्रहों का शुभ होना शुभफल का ही सूचक है इस शुभ योग के प्रभाव से आपका प्रत्येक कार्य बिना किसी रुकावट के हल होगा यदि आप ज़मीन-जायदाद सम्बन्धित किसी समस्या से चिन्तित है तो उसका समाधान इस महीने में निकलने की सम्भावना है शारीरिक स्थिति ज्यों की त्यों रहेगी, विद्या सम्बन्धित हर कार्य के लिए शुभफलदायक।

जून :—इस मास के आरम्भ पर अशुभ ग्रहों का पलडा भारी होने से यह मास संघर्षमय ही रहेगा बिना कारण चिन्ता, धन हानि, आमदनी में कमी, अशान्ति, राज्याधिकारियों से अपमान का भय, हर प्रकार से असफलता का वातावरण जैसा बना रहेगा

जो कि अन्ततः आपके लिए परेशानीदायक ही सिद्ध होगा इस परेशानी से निकलने का एक ही उपाय है कि आप घर के किसी वृद्ध पुरुष से आशीर्वाद प्राप्त करने की कोशिश करें आशीर्वाद आप तभी प्राप्त कर सकेंगे जब आप निष्काम भाव से रात-दिन उनकी सेवा में जुट जाओगे, विद्यार्थियों के लिए सफलता का महीना।

जुलाई :—इस मास के आरम्भ पर बृहस्पति, सूर्य, बुध तथा शुक्र अच्छी स्थिति में होने के कारण आपकी आर्थिक तथा सामाजिक स्थिति में विशेष सुधार होगा नौकरी पेशा वालों के लिए यह महीना आर्थिक दृष्टि से लाभदायक ही रहेगा परन्तु कारोबारी वर्ग को चाहिए कि वह सावधानी से अपने कार्य में जुट जाये नहीं तो हानि का योग बनता है शत्रु पक्ष आपको नुकसान भी पहुंचा सकता है जन्म का मंगल आपके शरीर को प्रभावित कर सकता है, हर मंगलवार को गाय माता को गुड खिलाया करें, विद्यार्थियों के लिए सफलता का महीना।

अगस्त :—दसवां सूर्य तथा चन्द्रमा होने से राज्याधिकारियों से मित्रता, धन प्राप्ति, प्रत्येक कार्य में सफलता, नौकरी पेशा होने पर पदोन्नति का योग पांचवां बृहस्पति पुत्र सुख का सूचक है ऐसा गोचर शास्त्रों में दर्ज है परन्तु गोचर चक्र के शुभ अशुभ ग्रहों को ध्यान में रखने से विदित होता है यह मास सफलता से परिपूर्ण होते हुए भी संघर्षमय ही होगा, खर्च के नये-नये प्लान बनते रहेंगे जिनमें धन फजूल खर्च होगा, विद्यार्थियों के लिए सफलता का ही महीना है।

सितम्बर :—महीने के आरम्भ पर बारवां सूर्य, बुध तथा राहु दूसरा भौम, सातवां शनि अच्छी स्थिति में न होने के कारण आपकी आर्थिक स्थिति को प्रभावित करने का कारण बनेगी जिस के फलस्वरूप सभी कर्यों में अड़चन आने की सम्भावना बने-बनाये काम बिगड़ने का योग, बृहस्पति, शुक्र तथा चन्द्रमा की स्थिति अच्छी होने पर भी यह महीना परेशानी का ही महीना होगा इस मास में किसी भी समस्या का समाधान देखने में नहीं आएगा अपितु नई-नई समस्याएं पैदा हो जाएगी वैसे तो विद्यार्थियों के लिए सफलता का महीना है।

अक्टूबर :—पांचवां बृहस्पति, पहला चन्द्रमा तीसरा भौम और शुक्र इस मास के आरम्भ पर आपके हक में हैं इनके फल

स्वरूप यह महीना कदरे शान्ति के वातावरण में ही गुज़रेगा धन कां फजूल खर्च तथा घर पर मेहमानों का आना-जाना ज़ोरों पर रहेगा पहला सूर्य तथा बारवां राहु आपके शरीर बिगड़ने के कारण बनेंगे, विद्यार्थियों के लिए सफलता का महीना।

नवम्बर :—मास के आरम्भ पर पांच ग्रहों का शुभ होना शुभफल का ही सूचक है इस शुभ योग के प्रभाव से धन प्राप्ति, स्वस्थ शरीर, बन्धुजनों से मेल-मिलाप, देर से लटकी कोई मनोकामना पूर्ण होगी यदि आप ज़मीन, मकान अथवा वाहन इत्यादि खरीदना चाहते हैं तो इस प्रकार की समस्या का कोई न कोई हल निकल आएगा, जनता से प्रेम तथा सम्पर्क का योग, विद्या सम्बन्धित कार्यों में सफलता।

दिसम्बर :—वेधाष्टक-वर्ग इत्यादि सिद्धान्तों के आधार से यह मास दौड़धूप तथा संघर्ष के वातावरण में ही गुज़रेगा यद्यपि लाभ की दृष्टि से यह मास अच्छा ही रहेगा परन्तु आप किसी ऐसी उलझन में फस जाओगे जिससे बच निकलना आपके लिए कठिन होगा उपाय के रूप में आप रोज़ प्रातः 'बहुरूपगर्भ' का पाठ किया करें, तभी आप इस उलझन से बच सकते हैं विद्यार्थी वर्ग के लिए पांचवां बृहस्पति शुभफल का ही सूचक है परन्तु ऐसा होने पर भी कटिबद्ध होकर पढ़ाई में लग जाने की ज़रूरत है तभी सफलता की आशा रखें।

जनवरी :—इस मास के आरम्भ पर केवल बृहस्पति, शुक्र तथा चन्द्रमा अच्छी स्थिति में हैं जिस कारण धन लाभ, यश और आनन्द की प्राप्ति गृहस्थ सुख, सन्तान पक्ष से लाभ, पुत्र जन्म का योग आमोद प्रमोद की ओर अधिक रुचि परन्तु ऐसा होते हुए भी आमदनी में कोई विशेष वृद्धि नहीं होगी खर्च के नये-नये ज़रिये बनेंगे चौथा सूर्य होने के कारण आपकी शारीरिक स्थिति डांवाडोल ही रहेगी, विद्यार्थियों के लिए सफलता का महीना।

फरवरी :—इस मास के आरम्भ पर बृहस्पति, शनि की स्थिति अच्छी न होने कारण यह मास दौड़धूप तथा परेशानी के ही माहोल में गुज़रेगा क्योंकि गोचर शास्त्रों में शनि तथा बृहस्पति का बहुत महत्व है विशेष रूप से यह आपकी आर्थिक, सामाजिक वातावरण को प्रभावित कर सकते हैं जोकि आपके लिए परेशानी का कारण बनेगा इस मास में बृहस्पति कुम्भ

राशि में जाकर छटे भाव मे ठहरा है जिसका विशेष प्रभाव विद्यार्थी वर्ग पर होगा, पढ़ाई की ओर प्रवृति न होने के कारण असफलता का मुंह देखना पड़ेगा।

मार्च :—चार ग्रहों का वेध में होना तथा दो ग्रहों का शुभ होना सूख का सूचक है लाभ की दृष्टि से यह महीना साधारण हीं है परन्तु आपका प्रत्येक कार्य बिना किसी रुकावट के सिद्ध होगा गृहस्थी होने पर यदि किसी प्रकार की कोई समस्या है उसका समाधान अवश्य निकल आएगा यदि आप बच्चे की नौकरी अथवा विवाह के सम्बन्ध में चिन्तित हैं तो थोड़ा-सा परिश्रम करने से आपका वह कार्य हल हो सकता है, विद्यार्थियों के लिए परेशानी का ही महीना है।

तुला राशि का वर्षफल (LIBRA)

र, री, रु, रे, रो, ता, ति, तु, ते

वेधाष्टक वर्ग, दृष्टि गोचर सिद्धान्तों के आधार से छटा सूर्य, चन्द्रमा, बुध, शनि, वेध में गया हुआ शुक्र ग्यारवां भौम वेध में गया हुआ राहु के कारण कार्य सिद्धि सुख प्राप्ति शत्रुओं पर विजय रोगों का नाश, राज्याधिकारियों से लाभ यश और आनन्द की प्राप्ति, गृहस्थ सुख, खर्च में अधिकता, धन-धान्य की प्राप्ति आमदनी में आशा से अधिक वृद्धि, भ्रातृ वर्ग की ओर से लाभ विद्याध्ययन की ओर अधिक प्रवृत्ति भूमि मकान आदि से लाभ की प्राप्ति, गोचर चक्र में बृहस्पति की स्थिति अच्छी न होना मनहूस योग ही माना जाता है क्योंकि गोचर सिद्धान्तों में बृहस्पति को बहुत महत्व है इस कारण चौथा बृहस्पति अपने प्रभाव डाले बिना नहीं रह सकता है यह आपकी आर्थिक तथा सामाजिक स्थिति पर विशेष प्रभाव डालेगा आप उपाय

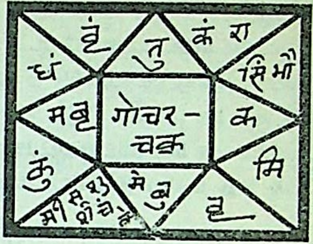

के रूप में हर बृहस्पति वार को गाय माता को आटे का एक पिण्ड खिलाया करें तब कहीं आप इस मनहूस योग से बच सकते हैं यदि आप नौकरी करते हैं और नौकरी छोड़कर व्यापार करने का पलान बनारहे हैं तो उसको अवश्य अमली रूप दीजिए परन्तु नौकरी को अभी अपने हाथ में रखें यदि आप को विभागीय परीक्षा में सम्मिलित होना है तो इस चान्स को हाथ से मत जाने दो सफलता आपको अवश्य मिलेगी विद्या सम्बन्धित प्रत्येक कार्य में सफलता यदि आप किसी कारणवश पिछली परीक्षा में रह गये हैं तो समय ज़ाया मत कीजिए गृहों से लाभ उठाएं गृह आपके अनुकूल हैं यदि आप विद्या प्राप्ति के लिए विदेश जाना चाहते हैं तो ऐसा योग इस वर्ष में नहीं बनता है।

तुला राशि का मासिक फलादेश

अप्रेल :—ग्रहों की स्थिति को देखने से मालूम होता है कि यह मास हर प्रकार से शान्ति के माहोल में ही गुज़रेगा यद्यपि यह मास आर्थिक दृष्टि से कमज़ोर ही है परन्तु आदरमान, प्रतिष्ठा तथा सामाजिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, राज्याधिकारियों से मेल-मिलाप का अवसर मिलेगा घर में कोई मांगलिक महोत्सव मनाने का परोग्राम, विद्यार्थियों के लिए सफलता का महीना।

मई :—मास के आरम्भ पर केवल दो ग्रहों भौम तथा शनि के शुभ होने से कोई विशेष लाभदायक महीना नहीं होगा पूरा महीना संघर्ष तथा अशान्ति के वातावरण से भरा पड़ा होगा, जो भी कार्य आप करते हैं अचानक अड़चन आने का योग, कोई नया काम करने की ओर प्रवृति भी नहीं रहेगी, गृहस्थ की ओर से भी कोई विशेष शान्ति का कोई योग नहीं है विद्यार्थियों के लिए भी अशान्ति का ही महीना होगा।

जून :—इस मास के शुभाशुभ ग्रहों को देखते हुए यह मास गत मास की अपेक्षा कुछ शान्तिदायक ही होगा आपका प्रत्येक कार्य सामान्य रूप से चलता रहेगा आप नौकरी करते हैं या व्यापार दोनों सूरतों में आप लाभ में ही रहेंगे यदि आप ज़मीन, मकान इत्यादि के विषय में कुछ सोच रहे हैं तो आपकी यह समस्या भी कुछ हद तक पूर्ण होगी, विद्यार्थियों को चाहिए कि डटकर पढ़ाई में लग जाएं तब कहीं सफलता की आशा रखें।

जुलाई :—शनि के बगैर प्रत्येक ग्रह अशुभ स्थिति में होने से यह महीना कोई विशेष शान्ति देने वाला नहीं है आठ ग्रहों का अशुभ होना एक प्रकार का मनहूस योग ही है परन्तु शनि ही एक ऐसा ग्रह है जोकि इस मनहूस योग को शान्त करने में समर्थ है इस कारण इस मिलेजुले योग से यह मास संघर्ष का होते हुए भी किसी विशेष हानि का द्योतक नहीं है, विद्या सम्बन्धित कार्यों के लिए सफलता देने वाला है।

अगस्त :—इस मास के आरम्भ पर शुभ ग्रहों का पलड़ा भारी होने के कारण यह मास हर प्रकार से शान्ति के माहोल में ही गुज़रेगा आपका पत्येक कार्य बिना रुकावट के हल होगा गृहस्थी होने पर स्त्री पक्ष से मानसिक शान्ति, घर पर कोई महोत्सव रचाने का परोग्राम बनेगा, यदि आपको किसी बच्चे अथवा लड़की के विवाह का परोग्राम है हो सकता है उस परोग्राम को इस मास में अमली रूप मिले, विद्यार्थियों के लिए लाभका ही महीना है।

सितम्बर :—ग्यारवां सूर्य, बुध तथा शुक्र होने से हर प्रकार से लाभ, धन प्राप्ति, प्रत्येक कार्य में सफलता पदोन्नति का अवसर, कारोबार में वृद्धि, मांनसिक सुख और शान्ति, मान प्रतिष्ठा का योग परोपकार करने की प्रवृति छटा शनि होने से धन, अन्न और सुख में वृद्धि, शत्रुओं पर विजय, भूमि, मकान आदि से लाभ की प्राप्ति ऐसा शुभ योग होते हुए भी पहला भौम आपके शरीर को प्रभावित करेगा अतः आप शरीर के विषय में सावधान रहें चीर-फाड का योग भी बन सकता है, विद्यार्थियों के लिए सफलता देने वाला महीना।

अक्टूबर :—इस मास के आरम्भ पर केवल दो ग्रहों शनि तथा शुक्र का शुभ होना कोई विशेष शान्ति देने वाला महीना नहीं

होगा बारवां सूर्य, चन्द्रमा, बुध आपके शरीर को बिगाड़ने में सहायक होगा जोकि परेशानी का कारण बनेगा, यदि आप कारोबार करते हें तो हानि होने की सम्भावना नौकरी पेशा होने पर क्रिसी झूठे इलज़ाम में फसने का योग, क्रूर प्रभाव को शान्त करने के लिए आप नित्य गीता जी की एक-एक अध्याय पढ़ा करें।

नवम्बर :—इस मास में तीन ग्रहों के वेध में होने से शुभ और अशुभ ग्रहों का पलडा एक जैसा हुआ है जिस कारण यह मास सामान्य रूप से गुज़रेगा आप जो भी काम करते हैं आपका काम यथावत चलता रहेगा आपकी आमदनी में किसी प्रकार की कमी नहीं आएगी अपितु खर्च के साधन बढ़ेंगे घर के किसी वृद्ध पुरुष के शरीर सम्बन्धित समस्या से आपको थोड़ी बहुत परेशानी रहेगी, विद्यार्थियों के लिए अग्नि परीक्षा का महीना।

दिसम्बर :—इस वर्ष का आखरी महीना संघर्षमय होते हुए भी आर्थिक दृष्टि से ठीक ही है यदि कहीं आपका पैसा रुका हुआ है तो वह पैसा इस महीने में आपको अवश्य मिलेगा कारोबारी होने पर आशा से अधिक लाभ का योग, नौकरी पेशा होने पर अपने अफसर लोगों के साथ मेल-मिलाप, डिपार्टमेन्टल प्रमोशन का योग, विद्या सम्बन्धित हर कार्य में सफलता।

जनवरी :—नये वर्ष का पहला महीना चमत्कारिक न होते हुए भी हर प्रकार से लाभदायक ही रहेगा आपका प्रत्येक काम बिना रुकावट के हल होगा आपकी कोई मनोकामना इस महीने में अवश्य पूर्ण होगी जोकि बहुत देर से आपके मन में टिकी हुई है चौथा शुक्र वैभव विलास वाहन इत्यादि का सूचक माना जाता है इस कारण अवश्य ही कुछ न कुछ लाभ होगा, नौकरी पेशा होने पर स्थान परिवर्तन का योग जो आपके लिए लाभदायक ही रहेगा।

फरवरी :—पांच ग्रहों का शुभ होना तथा तीन ग्रहों का वेध में होना शुभ योग का ही सूचक है इस मिले-जुले योग के प्रभाव से यह मास दरबार की दृष्टि से उत्तम रहेगा अफसर लोगों की कृपादृष्टि आप पर हर समय रहने का योग, कारोबारी होने पर धन की प्राप्ति, ज़मीन-जाईदाद में वृद्धि, अच्छे पुरुषों के साथ मिलने का अवसर गृहस्थ सुख का योग, विद्यार्थियों के लिए यह मास शुभ सन्देश लेकर आया है विद्यार्थियों को यदि इस मास में परीक्षा देनी है तो आशा से अधिक सफलता का योग।

मार्च :—पाचवां बृहस्पति छठः शनि और भौम सातवां चन्द्रमा, चौथा शुक्र तथा वेध में गया हुआ सूर्य और बुध के कारण यह मास हर प्रकार से शान्ति के वातावरण में गुज़रेगा, आपकी आर्थिक तथा सामाजिक स्थिति में उतार-चढ़ाव आने पर भी आपकी आमदनी में वृद्धि-ही होगी, आप की शारीरिक स्थिति भी ठीक ही रहेगी, नौकरी पेशा होने पर दफ्तर का माहोल आपके अनुकूल रहेगा दफ्तर में आदर मान व प्रतिष्ठा का योग, विद्या सम्बन्धित कार्यों में आशा से अधिक सफलता।

वृश्चिक राशि का वर्षफल (SCORPIO)

तो, न, नु, ने, नी, यो, या, यी, यु

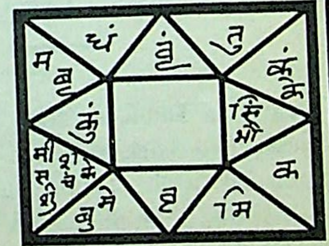

गोचर सिद्धान्तों के आधार से पांचवां सूर्य होने से शारीरिक तथा मानसिक शक्ति में कमी, धन हानि, राज्याधिकारियों से वाद-विवाद, यात्रा में विघ्न, पांचवां चन्द्रमा होने से अशान्ति दुर्घटना की सम्भावना, दसवां भौम होने से तामसिक पदार्थों की ओर रुचि प्रायः घर से बाहर रहने का योग; पांचवां बुध तथा शनि होने से मानसिक चिन्ता, केवल योजनाएं बनाने में ही समय व्यतीत होगा आर्थिक क्षेत्र में परेशानी, योजनाओं को अमली रूप देने में रुकावट, धन तथा सुख में कमी, सन्तान पक्ष से मानसिक अशान्ति, व्यापार में मन्दा इत्यादि तीसरा बृहस्पति होने से शारीरिक पीड़ा, कुटुम्ब के साथ अनबन, रोजगार में ढ़ीलापन नौकरी छूट जाने की सम्भावना, धन हानि इत्यादि का योग इस मिले-जुले शुभाशुभ योग

के प्रभाव से वृश्चिक राशि वालों को चाहिए कि वह कोई भी कार्य बिना सोचे-समझे हाथ में न लें, नौकरी पेशा होने पर दफ्तर का माहोल आपके उलट होते हुए भी आप को हानि पहुंचाने में असमर्थ रहेगा, कारोबारी वर्ग को भी हाथ पर हाथ धरकर बैठने का योग, कारोबारी वर्ग का समय नए-नए प्लान बनाने में ही व्यतीत होगा किसी भी प्लान को वह अमली रूप नहीं दे सकेंगा उनकी आर्थिक स्थिति बुरी तरह से प्रभावित होगी जो उनके लिए परेशानी का कारण बनेगी, विद्यार्थी वर्ग के लिए भी कोई सन्तोषजनक सफलता देने वाला वर्ष नहीं है उपाय के रूप नित्य नियमपूर्वक भगवान् शंकर पर दूध वाला पानी डाला करें तथा किसी नशीली वस्तु का प्रयोग न करें।

वृश्चिक राशि का मासिक फलादेश

अप्रेल :—केवल दो ग्रहों चन्द्रमा तथा बुध का शुभ होना महीना भर संघर्ष की ओर इशारा है संघर्षमय होते हुए भी कोई विशेष परेशानी का महीना नहीं है आपकी आमदनी में इज़ाफा न होते हुए भी दूसरे से मांगने की नौबत नहीं आएगी नौकरी पेशा वालों को दफ्तर की ओर से परेशानी का योग, विद्यार्थियों के लिए कोई विशेष सफलता देने वाला माह नहीं है।

मई :—इस मास के ग्रहों पर विचार करने से मालूम होता है कि शरीर की स्थिति ढांवा-ढोल ही रहेगी आपकी आर्थिक स्थिति में थोड़ा बहुत इज़ाफा होते हुए भी किसी विशेष लाभ का कोई योग नहीं है छटा सूर्य तथा बुध होने से कार्य सिद्धि, सुख प्राप्ति, शत्रुओं पर विजय, राज्याधिकारियों से लाभ, विद्यार्थियों के लिए भी सफलता देने वाला महीना।

जून :—मास के आरम्भ पर शुभ और अशुभ ग्रहों की स्थिति को देखते हुए यह मास शान्ति के ही माहोल में गुज़रेगा गोचर चक्र में शनि तथा बृहस्पति की स्थिति अच्छी न होते हुए भी शेष ग्रहों के आधार से आप जो कोई भी काम करते हैं उस में सफलता होगी, गृहस्थी होने पर यदि आपको सन्तान पक्ष से कोई चिन्ता है विश्वास रखें वह चिन्ता अवश्य दूर हो जाएगी

यदि आप नियम से घर के किसी वृद्ध पुरुष से आशीर्वाद प्राप्त कर सकेंगे, विद्या सम्बन्धित हर कार्य में सफलता।

जुलाई :—ग्यारवां भौंम नवां शुक्र आठवां बुध होने पर हर प्रकार से विजय, आरोग्य, धन धान्य की प्राप्ति, आमदनी में आशातीत वृद्धि, पुत्र सुख, धन लाभ हर कार्य में सफलता, आर्थिक तथा सामाजिक स्थिति में सुधार, सुखों में वृद्धि, धन प्राप्ति, विलासों में वृद्धि, विद्या में हर प्रकार से सफलता यदि आप ट्रेनिंग इत्यादि के लिए परोग्राम बना रहे तो उसमें अवश्य सफलता मिलेगी।

अगस्त :—नवां सूर्य और चन्द्रमा होने से बिना कारण धन हानि, आमदनी में कमी, अपमान का भय, हर काम में अडचन, दफ्तर की ओर से परेशानी, कारोबार में हानि, पुत्रों से मतभेद, शारीरिक कष्ट बारवां भौम होने से धन का फजूल खर्च, घर से बाहर रहने का योग, भाइयों से अनबन, मान-हानि, स्त्री को कष्ट, विद्यार्थी वर्ग के लिए अशान्ति का ही महीना है।

सितम्बर :—इस मास के आरम्भ पर सूर्य, बुध, राहु तथा शुक्र की स्थिति अच्छी होने से राज्याधिकारियों से मेल-मिलाप का अवसर, धन प्राप्ति, प्रत्येक कार्य में सफलता, पदोन्नति का अवसर, कारोबार में वृद्धि, मानसिक सुख और शान्ति, मान-प्रतिष्ठा का योग, परोपकार करने की प्रवृति परन्तु ऐसा शुभ योग होते हुए भी बारवां मंगल आपके शरीर को प्रभावित करेगा, विद्यार्थी वर्ग को चाहिए कि डट कर पढ़ाई में लग जाएं तो ही सफलता की आशा रखें।

अक्टूबर :—पहले भाव का मंगल शरीर तथा आपकी नौकरी को प्रभावित करेगा, रक्त विकार अथवा चोट का भय, दफ्तर में अपने अफसर लोगों के साथ अनबन जोकि आपके लिए परेशानी भी बनेगी परन्तु शेष ग्रहों की स्थिति को देखते हुए किसी विशेष परेशानी का योग नहीं बनता है पहला शुक्र ग्यारवां सूर्य, चन्द्रमा, बुध होने से सुख और धन की प्राप्ति, शत्रु नाश, विवाह और सन्तान जन्म का योग, विद्या में आशा से अधिक सफलता।

नवम्बर :—मास के आरम्भ पर केवल तीन ग्रहों का आपके हक में होना कोई चमत्कारिक योग नहीं है विशेषतया शनि तथा बृहस्पति की स्थिति अच्छी न होने के कारण यह महीना दौड़धूप में गुज़रेगा कोई भी कार्य हल नहीं होगा आपका प्रत्येक

कार्य ज्यों का त्यों ही लटकता रहेगा चाहे वह घर का हो अथवा दफ्तर का, कारोबारी वर्ग भी कोई विशेष लाभ में नहीं रहेगा विद्यार्थियों की प्रवृति भी पढ़ाई की ओर कम रहेगी।

दिसम्बर :—इस मास के आरम्भ पर कोई भी ग्रह आपके अनुकूल नहीं है इस कारण यह मास पूरे संघर्ष तथा अशान्ति के वातावरण में ही गुज़रेगा आपका कोई भी कार्य बिना उलझन से हल नहीं होगा, आपकी शारीरिक स्थिति भी डांवा-डोल ही रहेगी, यदि किसी प्रकार के महोत्सव मनाने का परोग्राम बनेगा भी परन्तु उसको अगले मास में ही अमली रूप मिलेगा।

जनवरी :—नये मास का पहला महीना आपके लिए कोई विशेष समाचार लेकर नहीं आया है क्योंकि ग्रहों की स्थिति ही इस प्रकार की है कि यह महीना भी गत मास की भांति दौड़धूप के माहोल में ही गुज़ारना है आप जो कोई भी काम करते हैं बिना रुकावट के चलेगा नहीं, आपकी शारीरिक स्थिति भी ज्यों की त्यों रहेगी, गृहस्थी होने पर स्त्री के शरीर की चिन्ता महीना भर आपको घेरे रखेगी, विद्या प्राप्ति के लिए भी कोई सफलता देने वाला मास नहीं है।

फरवरी :—तीसरा सूर्य तथा बुध होने से रोगों से मुक्ति, सुख, स्वस्थ शरीर, सज्जनों एवं उच्च राज्याधिकारियों से मेल-मिलाप, पुत्रों तथा मित्रों से धन लाभ, मान प्रतिष्ठा का योग साहस की कमी, बन्धु जनों से अनबन, दूसरा शुक्र होने से धन प्राप्ति, स्त्री सुख, सन्तान प्राप्ति का मौका, प्रतिष्ठा का योग इत्यादि ऐसा शुभ योग होते हुए भी आपको हर समय सावधान रहने की आवश्यकता है क्योंकि शत्रु पक्ष आप पर हर समय हावी रहने का प्रयत्न करेगा।

मार्च :—गोचर शास्त्रों के अनुसार तीसरा शुक्र होने से मित्रों की वृद्धि धन प्राप्ति, मान-सम्मान में वृद्धि, धार्मिक प्रवृति चौथा सूर्य होने से मानसिक तथा शारीरिक पीडा, घरेलू परेशानी, ज़मीन जायदाद सम्बन्धित नये-नये झगड़ों का उत्पन्न होना, घरेलू परेशानी, घर में किसी वृद्ध पुरुष के शरीर सम्बन्धित परेशानी आपको घेरे रखेगी विद्या सम्बन्धित हर कार्य में सफलता का योग।

धनु राशि का वर्षफल (SAGITTARIUS)

से, या, भा, भि, भु, फ, ढ, भे

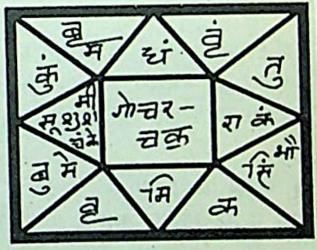

गोचर सिद्धान्तों के आधार से दूसरा बृहस्पति होने से धन का आगमन, कुटम्ब की सुख-समृद्धि, विवाह अथवा पुत्र जन्म का योग, शत्रुओं के साथ मित्रता का व्यवहार, चौथा बुध होने से धन की प्राप्ति, माता को सुख ज़मीन-जायदाद में वृद्धि, अच्छे विद्वानों तथा भद्र पुरुषों के साथ मिलने का अवसर, गृहस्थ सुख का योग, चौथे भाव में शुक्र होने से मनोकामनाओं में सिद्धि, वैभव विलास वाहन इत्यादि की प्राप्ति, जनता से प्रेम तथा सम्पर्क बढ़ने का योग, मनोबल में वृद्धि, इस मास के आरम्भ पर शुभ और अशुभ ग्रहों का पलड़ा एक जैसा होने के कारण यह वर्ष हर प्रकार से सर्व-साधारण स्थिति में ही गुज़रेगा आप जो भी काम करते हैं वह बिना किसी रुकावट के चलता रहेगा परन्तु किसी विशेष लाभ या हानि का कोई योग नहीं है, चौथा सूर्य तथा शनि के कारण आपका शरीर बनता बिगड़ता रहेगा जोकि आपके लिए परेशानी का कारण बन सकता है, हो सकता है कि शरीर की समस्या आपके काम में भी रुकावट डाल सके अतः आपको शरीर के विषय में हर समय सावधान रहने की ज़रूरत है उपाय के रूप में आप नित्य नियम से 'भगवद्गीता' की एक-एक अध्याय का पाठ किया करें यदि आप गीता जी पढ़ नहीं सकते हैं तो सुनने का परोग्राम अवश्य बनाया करें, विद्यार्थियों के लिए हर प्रकार से सफलता देने वाला वर्ष है उनको चाहिए कि इस वर्ष के ग्रहों

से लाभ उठाएं, सफलता अवश्य मिलेगी।

धनु राशि का मासिक फल

अप्रेल :—इस मास के आरम्भ पर अशुभ ग्रहों का पलड़ा भारी होने के कारण यद्यपि यह महीना दौड़धूप का ही होगा परन्तु आमदनी की दृष्टि से यह महीना ठीक ही रहेगा, आप कारोबार करते हैं या नौकरी आपका काम यथावत चलता रहेगा और लाभ भी होगा, हो सकता है लाभ में कुछ कमी हो परन्तु नुकसान का कोई अन्देशा नहीं है दूसरा बृहस्पति विद्या प्राप्ति के लिए उत्तम है।

मई :—गोचर सिद्धान्तों के आधार से ग्रहों की स्थिति को देखते हुए यह महीना हर प्रकार से सुख और शान्ति के माहोल में गुज़रेगा आपका प्रत्येक काम चाहे नौकरी अथवा कारोबार अच्छी प्रकार से चलेगा, लाभ भी आशा से अधिक ही मिलेगा दफ्तर का माहोल आपके अनुकूल रहेगा गृहस्थी को गृहस्थ की ओर से शान्ति का योग विद्यार्थियों के लिए सफलता का महीना।

जून :—गोचर शास्त्र के आधार से छटा सूर्य होने से कार्य सिद्धि, सुख प्राप्ति शत्रुओं पर विजय, रोगों का नाश राज्याधिकारियों से लाभ, दूसरा बृहस्पति होने से धन का आगमन, विवाह अथवा पुत्र जन्म का योग, शत्रुओं के साथ मित्रता का व्यवहार, चल सम्पत्ति में वृद्धि का योग ऊपर दिये हुए फल के आधार से यह महीना शुभफल का ही सूचक है परन्तु केवल तीन ग्रहों का शुभ होना संघर्ष का ही सूचक माना जाता है।

जुलाई :—इस मास के ग्रहों के अनुसार यह महीना शान्त माहोल में ही गुज़रेगा आप शरीर से स्वस्थ रहेंगे यदि घर में शरीर सम्वन्धित कोई परेशानी होगी वह भी दूर हो जाएगी आप जिस किसी पेशा से सम्बंन्धित हैं आपका काम बिना किसी रुकावट

के सिद्ध होगा यदि आपको सन्तान पक्ष से किसी प्रकार की परेशानी है तो उसका हल भी निकल सकता है या निकलने के आसार दिखाई देगें, विद्या सम्बन्धित कार्यों में सफलता का योग।

अगस्त :—गोचर सिद्धान्तों के आधार से ग्यारवां मंगल होने से हर ओर से जय, आरोग्य, धन धान्य की प्राप्ति, आय में आशातीत वृद्धि, सगे-सम्बन्धियों से लाभ, नवां शुक्र होने से शरीर स्वस्थ आशा से अधिक लाभ, घर में मांगलिक तथा धार्मिक उत्सव मनाने का योग, मित्रों के साथ मिलने-जुलने का योग, दूसरा बृहस्पति होने से धन का आगमन तथा विद्यार्थियों के लिए विद्या सम्बन्धित कार्यों के लिए सफलता का महीना।

सितम्बर :—इस मास के आरम्भ पर केवल बृहस्पति तथा मंगल की स्थिति अच्छी शेष सभी ग्रह अशुभ स्थिति में हैं इस मिले-जुले ग्रहों के प्रभाव से यह महीना दौड़धूप तथा संघर्ष के माहोल में ही गुज़रेगा आप जो कोई भी कार्य करते हैं बिना रुकावट के चल नहीं सकता है, बिना कारण धन हानि विशेष रूप से व्योपारी वर्ग को, नौकरी पेशा होने पर झूठा आरोप लगाने का योग, गृहस्थी होने पर घर का माहोल भी आपके अनुकूल नहीं रहेगा, विद्यार्थियों के लिए सफलता का ही महीना।

अक्टूबर :—मास के आरम्भ पर पांच ग्रहों का शुभ होना सुख और शान्ति का सूचक है इस शुभ योग के प्रभाव से आपकी आमदनी में विशेष वृद्धि होगी यदि आप नौकरी करते हैं तो पदोन्नति का अवसर अवश्य मिलने का चान्स है यदि मिलेगा भी नहीं तो भी उससे सम्बन्धित कागज़ात हरकत में आएंगे अफसर लोगों के साथ मिलने-जुलने का मौका मिलेगा, विद्यार्थियों को आशा से अधिक सफलता का योग।

नवम्बर :—बारवां चन्द्रमा तथा पहला भौम होने के कारण आपका शरीर बनता बिगड़ता रहेगा जोकि आपके प्रत्येक कार्य में अडचन डाल सकता है शेष सभी ग्रह आपके हक में हैं आपकी आमदनी में आशा से अधिक वृद्धि होगी घर पर कोई महोत्सव इत्यादि मनाने का परोग्राम, नौकरी पेशा होने पर स्थान परिवर्तन का योग जो कि आपके लिए लाभदायक रहेगा, विद्यार्थियों के लिए सफलता का महीना।

दिसम्बर :—वर्ष के आखरी मास में केवल तीन ग्रह आपके अनुकूल होने से यह मास संघर्ष में ही गुज़रेगा लग्न का भौम तथा चन्द्रमा और बारवां सूर्य आपके शरीर को अवश्य प्रभावित करेगा इस कारण आपको शरीर के विषय में सावधान रहना चाहिए इस क्रूर प्रभाव से बचने के लिए आपको उपाय के रूप में मंगलवार के दिन तहर बनाकर पक्षियों को खिलाना चाहिए तथा यदि आपको किसी नशीली वस्तु की आदत है तो उससे दूर रहें नहीं तो बाद में पछताना पड़ेगा।

जनवरी :—पहला सूर्य, दूसरा भौम, बृहस्पति, शुक्र, तीसरा चन्द्रमा, चौथा शनि बारवां बुध नए वर्ष का पहला महीना कोई विशेष शुभ सन्देश लेकर नहीं आया है क्योंकि अशुभ ग्रहों का पलडा भारी होना दौड़धूप का ही सूचक है आप हर काम को मन लगाकर कीजिए नहीं तो हानि की सम्भावना है कारोबारी वर्ग को इस महीने में हाथ पर हाथ धर कर वैठना है नौकरी पेशा होने पर दफ्तर का माहोल आपके अनुकूल होने के कारण थोड़ी बहुत शान्ति रहेगी।

फरवरी :—इस मास के ग्रहों को वेधाष्टक वर्ग सिद्धान्तों पर परखने से मालूम होता है कि ग्रहों में गतमास की अपेक्षा कुछ सुधार हुआ है जिस कारण यह मास शान्ति में ही गुज़रेगा परन्तु आपकी आमदनी में कोई खास वृद्धि नहीं होगी अपितु खर्च के नए-नए प्लान बनते रहेंगे और खर्च होता रहेगा, गृहस्थी होने पर गृहस्थ की ओर से शान्ति, विद्यार्थी वर्ग के लिये सफलता का महीना।

मार्च :—पांच ग्रहों का वेध में होना तथा दो ग्रहों का शुभ होना सुख और शान्ति का सूचक है क्योंकि वेध में गया हुआ अशुभ ग्रह शुभ फल देने वाला बनता है इस कारण आपका प्रत्येक कार्य बिना रुकावट के हल होगा, आप नौकरी करते हैं या कारोबार दोनों सूरतों में आप लाभ में रहेंगे, विद्यार्थियों के लिए परेशानी का ही महीना है।

मकर राशि का वर्षफल (CAPRICORN)

भो, जा, जि, जू, जे, खा, खो, खू, ग, गो

वेधाष्टक वर्ग गोचर सिद्धान्तों के आधार के अनुसार तीसरा सूर्य, चन्द्रमा, शुक्र तथा शनि होने से रोगों से मुक्ति, सुख, स्वस्थ शरीर सज्जनों एवं उच्च राज्याधिकारियों से मेल-मिलाप, मान-प्रतिष्ठा का योग धन प्राप्ति, स्वस्थ शरीर, बन्धजनों से मेल-मिलाप, लाभ, भाग्य में वृद्धि, मित्रों की वृद्धि, मान-सम्मान में वृद्धि, भाग्योदय, धार्मिक प्रवृत्ति, आरोग्य, पराक्रम, सुख में वृद्धि, हर काम में सफलता, धन तथा पद की प्राप्ति इत्यादि जन्म का बृहस्पति तीसरी बुध तथा आठवां मंगल होने से भय, मान-हानि, रोज़गार तथा व्यवसाय में विघ्न, राजभय, यात्राकष्ट फजूल खर्च, आर्थिक स्थिति डांवा-डोल, भाइयों से अनबन, नेत्र रोग की सम्भावना, साहस की कमी, धन हानि, सगे-सम्बन्धियों से अनबन इत्यादि गोचर शास्त्रों के आधार से ऊपर लिखे गए फल के अनुसार यह वर्ष सुख शान्ति का होते हुए भी संघर्ष वाला वर्ष ही होगा आठवां मंगल आपके शरीर को अवश्य प्रभावित कर सकता है शरीर अस्वस्थ रहने का योग, चोट का

भय यदि जन्मचक्र में भी मंगल की स्थिति अशुभ है तो चीरफाड़ योग बन सकता है गृहस्थी होने पर आपको स्त्री अथवा सन्तान पक्ष से शान्ति का योग यदि आपको लड़की अथवा लड़के के विवाह सम्बन्धित कोई उलझन पीछे से चल रही है तो थोड़ा-सा परिश्रम करने से यह आपकी समस्या हल हो सकती है, यदि आप वाहन, ज़मीन मकान का कोई प्लान बना

रहे हैं तो आप आरम्भ कीजिए आपका यह काम अवश्य बिना किसी रुकावट के हल होगा, बृहस्पति की स्थिति अच्छी न होने पर भी विद्यार्थियों के लिए यह वर्ष हर प्रकार से सफलता का ही वर्ष होगा।

मकर राशि का मासिक फल

अप्रेल :—तीसरा सूर्य, शुक्र, शनि, पहला चन्द्रमा होने से यह मास सुख और शान्ति का सूचक है आपकी आमदनी में आशा से अधिक इज़ाफा होगा परन्तु साथ ही खर्च के नये-नये प्लान बनने में समय नहीं लगेगा आप जो कोई भी काम करते हैं आप लाभ में ही रहेंगे परन्तु शेयर का कारोबार करने वाले खसारे में रहेंगे आठवां मंगल होने के कारण आपको शरीर के विषय में सावधान रहना चाहिए, विद्यार्थियों के लिए कोई विशेष सफलता का महीना नहीं है।

मई :—इस मास के आरम्भ पर केवल तीन ग्रहों का शुभ होना कोई विशेष महत्व नहीं रखता है इस कारण यह महीना दौड़धूप तथा संघर्ष में ही गुज़रेगा हर ओर से अशान्ति का दौर होगा आप जो कोई भी काम करते हैं बिना अड़चन के सिद्ध होगा नही, अशुभ ग्रहों का प्रभाव आपकी आमदनी पर भी पड़ेगा जो कि आपके लिए परेशानी का कारण बन सकता है, विद्यार्थियों को भी पढ़ने की ओर प्रवृति कम रहेगी जिस कारण असफलता का मुंह देखना पड़ेगा।

जून :—इस मास के शुभ और अशुभ ग्रहों की स्थिति के आधार से यह मास अशान्ति में ही गुज़रेगा घर का वातावरण आपके अनुकूल न होने के कारण घरेलू परेशानी स्त्री तथा सन्तान पक्ष की ओर से अशान्ति यदि आप नौकरी करते हैं तो अफसर लोगों के साथ अनबन जो कि आपके लिए हानिकारक सिद्ध होगा, कारोबारी वर्ग का काम यथावत् चलता रहेगा, विद्यार्थियों के लिए सफलता का महीना।

जुलाई :—इस मास के आरम्भ पर ग्रहों की स्थिति में कोई विशेष बदलाव न आने के कारण यह मास भी गत मास की

तरह अशान्ति के ही माहोल में गुज़रेगा, कोई भी कार्य बिना रुकावट के सिद्ध नहीं होगा, यदि आप नौकरी करते हैं और घूस लेने के आदि हैं तो घूस लेना बन्द कीजिए वरना लेने के देने पड़ेंगे विद्यार्थियों के लिए सफलता का महीना।

अगस्त :—मास के आरम्भ पर शुभा-शुभ ग्रहों का पलडा एक जैसा होने के कारण यह मास सर्व-साधारण रूप से गुज़रेगा यद्यपि आमदनी में कोई फरक नहीं पड़ेगा भी परन्तु खर्च में अधिक वृद्धि होगी, घर पर कोई मांगलिक महोत्सव मनाने का परोग्राम बनेगा यदि आपको दफ्तर में कोई प्रमोशन का चान्स है हो सकता है मिल जायेगा यदि मिलेगा भी नहीं तो भी उससे सम्बन्धित कागजात हरकत में आयेंगे।

सितम्बर :—तीसरा शनि छटा चन्द्रमा आठवां बुध, नवां शुक्र होने से आरोग्य, पराक्रम सुख में वृद्धि, हर कार्य में सफलता धन तथा पद प्राप्ति, पुत्र सुख और धन लाभ, हर कार्य में सफलता आपकी आर्थिक तथा सामाजिक स्थिति में सुधार, यश और आनन्द की प्राप्ति, गृहस्थ सुख, रोगों का नाश, खर्च में थोड़ी बहुत अधिकता होने की सम्भावना।

अक्टूबर :—इस मास के ग्रहों के आधार से यह मास सुख और शान्ति के माहोल में गुज़रेगा आप जो कोई भी काम करते हैं उसमें आशा से अधिक सफलता मिलेगी आपकी आमदनी में भी वृद्धि होगी यदि आपको लड़की अथवा लड़के से सम्बन्धित कोई परेशानी है वह अवश्य दूर हो जाएगी यदि आप अविवाहित हैं तो इस मास में विवाह होने का योग बनता है विद्यार्थी वर्ग को चाहिए कि इस मास के ग्रहों से लाभ उठायें ग्रह उनके अनुकूल है।

नवम्बर :—इस मास के आरम्भ पर केवल बृहस्पति तथा भौम की स्थिति अच्छी न होने के कारण धन का फजूल खर्च, घर से बाहर रहने का योग, मान-हानि तथा स्त्री को कष्ट इत्यादि परन्तु शेष ग्रहों की स्थिति को देखते हुए किसी प्रकार के कष्ट का योग नहीं बनता है यह महीना हर प्रकार से शान्ति के माहोल में गुज़रेगा आपकी आमदनी खर्च की अपेक्षा ठीक रहेगी आप जो भी काम करते हैं आप फायदे में रहेंगे, विद्यार्थी वर्ग के लिए लाभ का महीना।

दिसम्बर :—गोचर कुण्डली में इस मास में सभी ग्रह ऊपर की ओर होने से एक प्रकार का छत्र योग जैसा बनता है इस

शुभ योग के प्रभाव से यह महीना हर प्रकार से लाभदायक रहेगा आप जो कोई काम करते हैं लाभ अवश्य मिलेगा यदि आप कोई नया काम आरम्भ करना चाहते हैं तो अवश्य कीजिए सफलता आपको अवश्य मिलेगी गृहस्थी होने पर सगे-सम्बन्धियों का आना जाना ज़ोरों पररहेगा, विद्या सम्बन्धित हर कार्य के लिए सफलता देने वाला महीना।

जनवरी :—बारवां सूर्य, पहला भौम तथा बृहस्पति यदि अशुभ स्थिति में हैं भी परन्तु यह किसी प्रकार का अनिष्ट करने में असमर्थ है क्योंकि छत्र योग का होना गोचर शास्त्रों में भी शुभ ही माना गया है इस कारण इस शुभ योग के प्रभाव से यह महीना हर प्रकार से शान्ति के माहोल में गुज़रेगा आपका प्रत्येक कार्य बिना किसी रुकावट के हल होगा, यदि आपको ज़मीन जायदाद के विषय में कोई समस्या है उस समस्या का हल इस महीने में निकल सकता है।

फरवरी :—आपका गोचर चक्र देखने से विदित होता है कि दिसम्बर महीने से ही ग्रह आपके अनुकूल हैं यह मास भी हर प्रकार से सुख और शान्ति के माहोल में गुज़रेगा, कारोबारी होने पर यदि लोगों के पास आपका पैसा फंसा हुआ है वह अवश्य वापिस आने लगेगा यदि दफ्तर में किसी प्रकार का प्रमोशन का पैसा रुका हुआ है उसके हल होने का भी योग बनता है, विद्यार्थियों के लिये सफलता का महीना।

मार्च :—बुध, बृहस्पति, शनि, भौम तथा शुक्र की स्थिति का शुभ होना शुभ योग का सूचक माना गया है इसके प्रभाव से यह महीना हर प्रकार से सुख और शान्ति के माहोल में गुज़रेगा यदि आपको वाहन इत्यादि लाने का कोई परोग्राम है तो इस महीने में उसको अमली रूप मिलेगा यदि आप मकान इत्यादि बनाने की ताक में हैं तो समय ज़ाया मत कीजिए, आप एकदम मकान का काम आरम्भ करें आपका यह काम बिना किसी रुकावट के सिद्ध होगा, विद्यार्थी वर्ग ने यदि कोई ट्रेनिंग इत्यादि का परोग्राम बना रखा है तो उसकी ओर तवजह देने से अवश्य सफलता मिलेगी।

कुम्भ राशि का वर्षफल (AQUARIUS)

गु, गे, गो, सा, सि, सु, से, सो, द

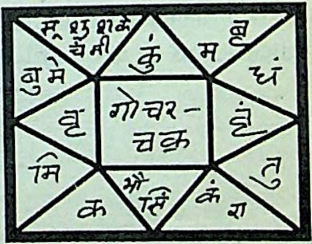

गोचर शास्त्र के अनुसार दूसरा सूर्य होने पर बुरे लोगों के साथ मेल-मिलाप, स्वभाव में चिड़चिड़ापन हो जाना, सर आंखों में पीड़ा, व्यापार तथा धन सम्पति की हानि दूसरा चन्द्रमा होने से मानसिक असन्तोष कुटुम्ब वालों के साथ अनबन, नेत्रों में पीड़ा, कार्यों में असफलता, पाप कर्मों की ओर प्रवृत्ति, विद्या में असफलता, सातवां मंगल होने से स्वजनों को मानसिक तथा शारीरिक कष्ट, स्त्री से अनबन, आपसी विवाद इत्यादि दूसरा बुध होने से आनन्द, धन की प्राप्ति, विद्या में उन्नति तथा सम्बन्धियों से धन प्राप्ति बारवां बृहस्पति होने से पुत्रादिकों से अलग होने की नौबत, धन का खर्च शरीर अस्वस्थ, झूठा इलज़ाम लगने का योग, दूसरा शुक्र होने से धन प्राप्ति, शरीर स्वस्थ, स्त्री सुख, सन्तान प्राप्ति का अवसर, मान प्रतिष्ठा का योग, गायन वादन की ओर रुचि, शत्रु नाश, दूसरा शनि होने से क्लेश, बिना कारण झगड़ा, स्वजनों से बैर, धन हानि, सुख की कमी इत्यादि ग्रहों के अनुसार ऊपर लिखे हुए फलादेश को दृष्टि में रखकर विदित होता है कि वर्ष के आरम्भ पर सूर्य, चन्द्रमा, शनि तथा भौम और बृहस्पति हानि कारक स्थिति में है शेष चार ग्रह शुभ अवस्था में हैं इन शुभाशुभ ग्रहों के अनुसार सामूहिक रूप से यह वर्ष सुख और शान्ति के माहोल में गुजरेगा आप का शरीर प्रायः स्वस्थ रहेगा यदि आप पहले से ही शरीर से अस्वस्थ

हैं तो उस में सुधार होगा आपकी आर्थिक स्थिति में भी थोड़ा सुधार होगा नौकरी पेशा वालों की अपेक्षा व्योपारी वर्ग अधिक लाभ में रहेगा, विद्या स्थान का स्वामी बुध होना विद्या प्राप्ति के लिए उत्तम माना जाता है इसलिए विद्यार्थियों के लिए शुभफल का सूचक है यदि आप उच्च विद्या के लिए बाहर कहीं जाना चाहते हैं तो अवश्य परोग्राम बनांयें उसमें सफलता होगी अपने क्रूर ग्रहों के फल को शान्त करने के लिए नियम से 'भगवद्गीता' का पाठ किया करें।

कुम्भ राशि का मासिक फल

अप्रेल : इस मास के आरम्भ पर शुभाशुभ ग्रहों के आधार से यह मास सामान्य रूप से गुज़रेगा आप के घर का माहोल आप के अनुकूल रहेगा, भाई बन्धु और रिश्तेदारों से मिलने-जुलने का मौका मिलेगा, सातवां बृहस्पति शुभफल का सूचक न होने के कारण नौकरी पेशा वालों को हर समय चौकस रहने की ज़रूरत है विद्यार्थी वर्ग के लिए सफलता का महीना।
मई : वेधाष्टक वर्ग दृष्टि इत्यादि सिद्धान्तों के अनुसार इस मास के ग्रहों से विदित होता है कि आप जो भी काम करते हैं वह अच्छी प्रकार से चलता रहेगा यद्यपि आपकी आर्थिक स्थिति में विशेष सुधार होगा भी नहीं परन्तु किसी प्रकार की कमी आप अनुभव नहीं करेंगे सातवां मंगल आपको सन्तान पक्ष की ओर से चिन्तित रखेगा यदि आपको लड़के अथवा लड़की के विवाह के विषय में कोई समस्या है तो वह जून के बाद हल होगी, विद्यार्थियों के लिए भी परेशानी का ही महीना है।
जून : दूसरा शनि होने से क्लेश, बिना कारण झगड़ा, स्वजनों से वैर, धन हानि तीसरा चन्द्रमा तथा बुध होने से धन प्राप्ति, स्वस्थ शरीर, बन्धुजनों से मेल-मिलाप, भाग्य में वृद्धि, साहस की कमी, धन हानि इत्यादि बारवां बृहस्पति से पुत्रादिकों से अलग होने की नौबत, धन का खर्च, शरीर अस्वस्थ इत्यादि इस मिले जुले शुभाशुभ फल के परिणामस्वरूप यह महीना दौड़धूप तथा संघर्ष में गुजरेगा आपका कोई भी काम बिना रुकावट के सिद्ध होगा नहीं, विद्यार्थी वर्ग के लिए भी विशेष सफलता

का महीना नहीं।

जुलाई : इस मास के आरम्भ पर सभी ग्रह आपके हक में नहीं हैं अत: आपको हर समय सावधान रहने की ज़रूरत है आठवां मंगल आपके शरीर को प्रभावित कर सकता है चौट का भय, आपकी आर्थिक तथा सामाजिक स्थिति भी इस महीने में डांवा-डोल ही रहगी काई भी कार्य स्वत: सिद्ध हल नहीं होगा, गृहस्थी होने पर गृहस्थ की ओर से परेशानी का योग, विद्यार्थी वर्ग को पढ़ाई की ओर प्रवृति कम रहेगी जिस कारण उनकी सफलता आशानुरूप नहीं होगी।

अगस्त : मास के आरम्भ पर केवल सूर्य तथा चन्द्रमा आपके अनुकूल है तथा बुध और शुक्र वेध में होकर शुभफल के ही सूचक हैं इस शुभ योग के प्रभाव से आपका यह महीना शान्ति के माहोल में ही गुज़रेगा आप जो भी काम करते हैं बिना किसी उलझन के चलता रहेगा चाहे किसी भी प्रकार का कारोबार हो, नौकरी पेशा वाले को दफ्तर का माहोल अनुकूल न रहने के कारण परेशानी का योग, विद्यार्थी वर्ग के लिए सफलता का महीना।

सितम्बर : गोचर शास्त्रों में बृहस्पति तथा शनि को बहुत महत्व है इस कारण गोचर चक्र में इन दोनों ग्रहों की स्थिति अच्छी होनी चाहिए इस मास के आरम्भ पर यह दोनों ग्रह अच्छी स्थिति में न होने के कारण यह महीना दौड़धूप तथा संघर्ष के माहोल में ही गुज़रेगा आपको शरीर के विषय में सावधान रहना चाहिए आप का शरीर बनता बिगड़ता रहेगा जोकि आपकी परेशानी का कारण बनेगा, गृहस्थी होने पर गृहस्थ की ओर से परेशानी विद्यार्थियों के लिए सफलता का ही महीना है।

अक्टूबर : इस मास के ग्रहों की स्थिति को देखने से विदित होता है कि यह मास सर्व साधारण रूप से गुज़रेगा विशेषतौर से आपकी आर्थिक तथा सामाजिक स्थिति में कोई विशेष परिवर्तन नहीं आएगा कारोबारी वर्ग की हालत कुछ सुधरने के आसार दिखाई देते हैं परन्तु नौकरी पेशा वालों की स्थिति ज्यों की त्यों रहेगी, आठवां सूर्य तथा चन्द्रमा आपके शरीर को भी प्रभावित कर सकता है, विद्यार्थियों के लिए सफलता का महीना।

नवम्बर : नवां सूर्य बुध होने से बिना कारण धन हानि, झूठा आरोप, आदर की कमी, अपमान का भय, हर प्रकार से असफलता

परन्तु ग्यारवां भौम तथा शुक्र होने से आरोग्य तथा धन धान्य की प्राप्ति, आमदनी में आशा से अधिक वृद्धि, सगे-सम्बन्धियों से लाभ, सभी कार्यों में सफलता इत्यादि ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार यह महीना दौड़धूप का होते हुए भी अन्ततः लाभ का ही महीना है, विद्यार्थियों के लिए विशेष सफलता देने वाला महीना।

दिसम्बर : ग्यारवां चन्द्रमा, बुध, भौम होने से व्यापार में लाभ, पुत्रादि से मिलाप, आय में वृद्धि, धन-धान्य की प्राप्ति, आमदनी में वृद्धि नए पद की प्राप्ति, कारोबार में वृद्धि, मानसिक सुख और शांन्ति, मान प्रतिष्ठा का योग, परोपकार करने की प्रवृत्ति, दसवां सूर्य होने से राज्याधिकारियों से मित्रता, धन प्राप्ति, पदोन्नति का अवसर इत्यादि गोचर शास्त्रों के अनुसार यह मास सुख और शान्ति के माहोल में ही गुज़रेगा, विद्या सम्बन्धित हर कार्य में सफलता।

जनवरी : नए वर्ष के आरम्भ पर बृहस्पति तथा शनि के बिना सभी ग्रह आपके हक में है इस कारण यह महीना आपके लिए शान्ति का सन्देश लेकर ही आया है यह महीना सुख और शान्ति में ही गुज़रेगा आपकी आमदनी अच्छी रहेगी परन्तु खर्च के साधन ही बड़ेंगे आपका काम सामान्य रूप से चलता रहेगा परन्तु शनि तथा बृहस्पति अपना प्रभाव डाले बिना नहीं रह सकते हैं अतः आपको शरीर के विषय में सावधान रहना चाहिए, विद्यार्थियों को भी सावधान ही रहना पड़ेगा।

फरवरी : इस मास के आरम्भ पर सभी ग्रह ऊपर की ओर होने से शुभ योग की ओर इशारा करते हैं इस शुभ योग से यह महीना हर प्रकार से सुख और शान्ति के माहोल में गुज़रेगा आपका प्रत्येक कार्य बिना रूकावट के हल होगा आपकी आमदनी में विशेष परिवर्तन आएगा, ज़मीन जाईदाद सम्बन्धित यदि कोई समस्या है वह समस्या हल होने के हालत बनेंगे, आपका शरीर यद्यपि ढीला-ढाला ही रहेगा परन्तु किसी भय का योग नहीं है विद्यार्थियों के लिए सफलता देने वाला मास।

मार्च : यह महीना हर प्रकार से सुख और शान्तिदायक महीना है ग्रहों की स्थिति इस प्रकार की है कि आपका प्रत्येक काम बिना किसी विघ्न के हल होगा आपके घर में यदि किसी प्रकार की कोई समस्या है तो उसका समाधान अवश्य होगा यदि आपको दफ्तर की ओर से कोई परेशानी है तो वह परेशानी दूर हो जाएगी, गृहस्थी होने पर सन्तान पक्ष से कोई शुभ सन्देश मिलने का योग, विद्यार्थियों को चाहिए कि इस मास के ग्रहों से लाभ उठाये, ग्रह उनके अनुकूल हैं।

मीन राशि का वर्षफल (PISCES)

दि, दु, दे, दो, च, ची, घ, झ, ञ

गोचर सिद्धान्तों के अनुसार पहले भाव में चन्द्रमा तथा शुक्र होने से सुख और आनन्द की प्राप्ति, रोग मुक्ति, उपहारादि से धन प्राप्ति, शत्रु नाश, विवाह और सन्तान जन्म का योग, विद्या में सफलता, हर प्रकार से वैभव और विलास, कारोबार में वृद्धि, सत्यता की ओर झुकाव, छठे भाव में भौम होने से धन-अन्न की प्राप्ति, शत्रुओं पर विजय, शुभकामनाओं का नाश, स्वस्थ शरीर, ग्यारवें भाव में बृहस्पति होने से धन तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि, शत्रुओं की पराजय तथा समस्त कार्यों में सफलता विवाह अथवा पुत्र जन्म का योग, नौकरी में पदोन्नति, व्यापार में वृद्धि शुभकार्यों की ओर रुचि, सातवें भाव में राहु होना अचानक कारोबार में वृद्धि, यात्रा से धन का लाभ, राज्य की ओर से अचानक उन्नति अथवा कोई लाभ, शरीर अस्वस्थ, स्त्री पक्ष से चिन्ता, धार्मिक अथवा सामाजिक कामों में दिलचस्पी का योग ऊपर लिखे हुए फलादेश के अनुसार पांच ग्रहों का शुभ होना आपके लिए हर प्रकार से शुभ फलादायक ही है तथा दो ग्रहों का वेध में होना भी शुभ ही माना जाता है क्योंकि वेध में गया हुआ अशुभ ग्रह भी शुभ फलादायक बनता है परन्तु ऐसा शुभ योग होते हुए भी पहले भाव का सूर्य तथा शनि प्रभावित किए बिना नहीं रह सकता है यह आपके शरीर को ढीला रख सकता है इस प्रकार आपको शरीर के विषय में सावधान रहना

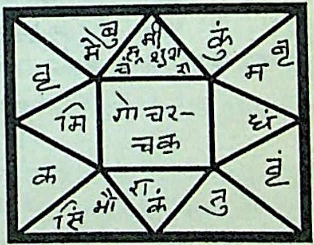

चाहिए उपाय के रूप में आप किसी नशीली वस्तु का सेवन न करें नहीं तो बाद में पछताना पड़ेगा, गृहस्थी होने पर गृहस्थ की ओर से मानसिक शान्ति परन्तु सन्तान पक्ष की ओर से कोई न कोई चिन्ता आपको घेरे रखेगी उपाय के रूप में नित्य नियम से 'भगवद्गीता' की एक-एक अध्याय पढ़ें या सुनें, विद्यार्थी वर्ग के लिए विशेष लाभ का वर्ष है बृहस्पति देव उनके अनुकूल है इस कारण विद्यार्थियों को चाहिए कि इस का लाभ उठाएं।

मीन राशि का मासिक फल

अप्रेल : इस मास की ग्रह स्थिति आपके अनुकूल होने से यह मास सुख-शान्ति के माहोल में गुज़रेगा आपका शरीर स्वस्थ रहेगा गृहस्थी होने पर आपकी स्त्री यदि शरीर से अस्वस्थ है तो इस मास में ग्रह अनुकूल होने से उनका शरीर स्वस्थ होने का योग, घर में कोई शुभ काम का शुभारम्भ होने का योग, सगे-सम्बन्धियों के आने-जाने का योग जोरों पर रहेगा, कारोबारी होने पर कारोबार में अचानक लाभ का योग, विद्यार्थियों के लिए सफलता का महीना।

मई : इस मास के ग्रहों के अनुसार यह महीना भी सुख और शान्ति के माहोल में गुज़रेगा देर से लटकी हुई किसी समस्या का समाधान अवश्य निकलेगा चाहे वह किसी भी चीज़ से सम्बन्धित हो यदि आप वाहन इत्यादि लाने का परोग्राम बना रहे हैं इस परोग्राम को अमली रूप दीजिए फिर ऐसा मौका नहीं आएगा, विद्यार्थी वर्ग को चाहिए कि डटकर पढ़ाई में मन लगाकर पढ़ें तो आशा से अधिक सफलता मिलने का योग।

जून : इस मास के आरम्भ पर शुभ और अशुभ ग्रहों का पलड़ा एक जैसा होने के कारण यह महीना सर्व साधारण रूप से गुज़रेगा यद्यपि इस मास में कोई चमत्कारिक योग नहीं है परन्तु किसी प्रकार का अशुभयोग भी नहीं है, आप जो भी कोई काम करते हैं यथावत चलता रहेगा आपकी आमदनी खर्च के अनुसार ही रहेगी, गृहस्थ की ओर से मानसिक शान्ति का

योग, विद्या सम्बन्धित हर कार्य में सफलता।

जुलाई : मास के आरम्भ पर सातवां भौम आपके शरीर को प्रभावित करेगा आपका शरीर बनता बिगड़ता रहेगा जिस कारण आपका कार्य प्रभावित होगा और आपके लिए चिन्ता का कारण बनेगा इस कारण आपको शरीर के विषय में सावधान रहना चाहिए उपाय के रूप में हर मंगलवार को गौमाता को आटे का एक पिण्ड खिलाया करें आपकी आमदनी ज्यों की त्यों रहेगी परन्तु खर्च के नए-नए साधन बनते रहेंगे, विद्यार्थियों के लिए सफलता का महीना।

अगस्त : इस मास के आरम्भ पर आठवां मंगल शुभफल का सूचक न होते हुए आपका शरीर ढीला ही रहेगा परन्तु शेष ग्रहों की स्थिति को देखते हुए किसी विशेष हानि का कोई योग नहीं है ग्यारवां बृहस्पति छठः बुध तथा शुक्र के शुभयोग के प्रभाव से यह महीना शान्ति के माहोल में ही गुज़रेगा आमदनी भी ठीक ही रहेगी, गृहस्थी होने पर स्त्री पक्ष से मानसिक शान्ति गृहस्थी न होने पर विवाह सम्बन्धित कुछ परोग्राम बनेगा, विद्यार्थियों के लिए लाभ का महीना।

सितम्बर : इस मास के आरम्भ पर ग्रहों की स्थिति कुछ अज़ीब सी प्रतीत होने पर भी यह मास शान्ति के माहोल में गुज़रेगा क्योंकि बृहस्पति जोकि अच्छी स्थिति में है तथा जिसको गोचर शास्त्रों में महत्व का स्थान है के कारण आपका कोई भी कार्य रुकेगा नहीं तथा ना ही किसी प्रकार की परेशानी का योग बनता है आठवां मंगल होते हुए भी आप शरीर से ठीक रहेंगे, विद्यार्थियों के लिए सफलता का महीना।

अक्टूबर : सातवां सूर्य तथा बुध आपको गृहस्थ की ओर से चिन्तित रख सकता है परन्तु किसी भय का कोई योग नहीं है क्योंकि आगामी जनवरी तक बृहस्पति आपके ग्यारवें भाव में बैठकर आपके लिए एक अङ्ग रक्षक का काम निबा रहा है इस कारण यह समय हर प्रकार से सुख और शान्ति के माहोल में गुज़रेगा आपका रोज़गार अच्छी तरह चलता रहेगा चाहे आप जो भी काम करते होंगे, विद्यार्थियों के लिए सफलता का महीना।

नवम्बर : इस मास के आरम्भ पर केवल बृहस्पति देव आपके हक में हैं शेष सभी ग्रह अशुभ स्थिति में हैं इस कारण

यह महीना दौड़धूप के ही माहोल में गुज़रेगा परन्तु दौड़धूप होते हुए भी किसी प्रकार के अनिष्ट का क़ोई योग नहीं है आपका प्रत्येक कार्य विलम्ब से ही हल होगा, रुकावटें आने पर भी फल आपके हक में होगा, आपकी आर्थिक स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं आएगा विद्यार्थियों के लिए सफलता देने वाला महीना।

दिसम्बर : इस मास के आरम्भ पर चार ग्रह आपके अनुकूल हैं तथा शेष ग्रह आपके प्रतिकूल अर्थात् शुभ और अशुभ ग्रहों का पलड़ा एक जैसा होने से यह मास शान्ति के माहोल में गुज़रेगा आप जो कोई भी काम करते हैं आप लाभ में रहेंगे नौकरी पेशा वालों को पदोन्नति का अवसर तथा अपने अफसर लोगों के साथ मिलने-जुलने का अवसर मिलेगा, दफ्तर का माहोल आपके अनुकूल रहेगा, विद्यार्थियों के लिए सफलता का महीना।

जनवरी : 8 जनवरी को बृहस्पति राशि बदलता है जिसके राशि बदलने से इस मास भी गृह स्थिति में विशेष परिवर्तन आएगा जिस कारण यह मास दौड़धूप तथा संघर्ष के माहोल में ही गुज़रेगा बारवां बृहस्पति होने से कारोबारी वर्ग को हानि की सम्भावना तथा फजूल खर्च का योग यद्यपि आपकी आमदनी में कोई परिवर्तन नहीं आएगा तो भी खर्च के नए दरवाज़े खुले रहेंगे, विद्यार्थियों के लिए परेशानी का ही महीना।

फरवरी : बारवां बृहस्पति तथा भौम देवता आपके शरीर को अवश्य प्रभावित करेगाजिस कारण आपका शरीर बनता बिगड़ता रहेगा आपको शरीर के विषय में अवश्य सावधान रहना चाहिए यदि आप दैव योग से शरीर से स्वस्थ हैं तो गृहस्थ के किसी सदस्य के शरीर सम्बन्धित परेशानी आपको घेरे रखेगी, आप जो भी कोई काम करते हैं वह काम चलता रहेगा परन्तु कारोबारी वर्ग को नुकसान की सम्भावना, विद्यार्थियों के लिए परेशानीका ही महीना।

मार्च : इस मास के आरम्भ पर चार ग्रहों का बारवें भाव में होना कोई शुभ सूचक नहीं है विशेष तौर से यह आपके शरीर को ही प्रभावित करेंगे लग्न का भौम तथा शनि भी विशेष शुभफल के सूचक नहीं है सामूहिक रूप से यह मास संघर्ष के माहोल में ही गुज़रेगा, शरीर आपके परेशानी का विशेष कारण बनेगा, विद्यार्थियों के लिए संघर्ष का ही महीना।

साढ़-सती

कुम्भ

मीन

मेष

कुम्भ : फलित ज्योतिष में शनि को बहुत महत्व है यदि शनि की स्थिति आप की जन्म कुण्डली में अच्छी है तो आपके लिए बहुत लाभप्रद रहेगा परन्तु शनि की दृष्टि को मनहूस माना जाता है कुम्भ राशि वालों को शनि दूसरे भाव में बैठकर चौथे आठवें तथा ग्यारवें भाव को देख रहा है इस कारण शनि आपके शरीर तथा आमदनी को प्रभावित कर सकता है जोकि आपके लिए अशान्ति का कारण बनेगा इस क्रूर प्रभाव को शान्त करने का एक ही उपाय है कि आप नियमपूर्वक 'भगवद्गीता' की एक-एक अध्याय का पाठ रोज़ किया करें।

मीन : मीन राशि वालों को शनि देव-लग्न में बैठा है लग्न में शनि का होना यदि शुभ माना जाता है परन्तु वह आपके गृहस्थ तथा दरबार को देख रहा है जिस कारण आप गृहस्थ तथा दरबार से चिन्तित रहोगे नौकरी पेशा वालों को दफ्तर का माहोल उलटा ही रहेगा अपने अफसर लोगों के साथ अनबन जोकि आपके लिए सालभर परेशानी का कारण बनेगा यदि जन्म कुण्डली में शनि की स्थिति अच्छी है तो साढ़सत्ती का प्रभाव आप पर ज्यादा बुरा नहीं हो सकता है इस क्रूर प्रभाव को कम करने के लिए आप नियम से भगवान् शंकर पर जल चढ़ाया करें तथा वैष्णव रहें।

मेष : मेष राशि वालों को शनि बारवें भाव में ठहरा है जो कि धन, शत्रु तथा भाग्यस्थान को देख रहा है जिसके फलस्वरूप फज़ूल खर्च का योग तथा हानि की सम्भावना यह वर्ष मेष राशि वालों के लिए दौड़धूप तथा संघर्ष का वर्ष होगा, ऐसे प्लान बनेंगे जिसमें

धन का अधिकतम हिस्सा ज़ाया ही हो जाएगा यदि आपकी जन्मकुण्डली में शनि की स्थिति अच्छी भी होगी तो भी आप हर प्रकार से सावधान रहें शनि के क्रूर प्रभाव को शान्तकरने के लिए आप निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण अवश्य करें।

सूर्य पुत्रो दीर्घदेहो विशालाक्षः शिवप्रियः मन्दाचारः प्रसन्नात्मापीडां हरतु मे शनिः।।

ढय्या

सिंह

धनु

सिंह : सिंह राशि वालों को आठवें भाव में शनि देव बैठा है जोकि अशुभफल का ही सूचक है जिसके कारण कारोबार में विघ्न तथा रुकावटें तथा पारिवारिक परेशानियां तथा सन्तान पक्ष से मानसिक चिन्ता फल स्वरूप यह समय आपके लिए हर तरह से परेशानी का ही समय है आपका कोई भी कार्य बिना किसी उलझन के सिद्ध होगा नहीं, यदि आप कारोबार में धन लगाना चाहते हैं तो सोच समझ कर ऐसा काम करना ऐसा न हो कि हानि का मुंह देखना पड़े उपाय के रूप में भगवद्गीता की एक एक अध्याय का पाठ किया करें।

धनु : आपको शनि महाराज चौथे भाव में ठहर कर दसवें तथा लग्न को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है शनि की दृष्टि मनहूस होने के कारण यह आपके दरबार तथा शरीर को प्रभावित कर सकता है आपका शरीर बनता बिगड़ता रहेगा चोट का भय दफ्तर में अपने राज्याधिकारियों के साथ अनबन होने का योग जोकि भविष्य में आपके लिए हानि कारक सिद्ध होगा, दसवे घर को पिता का घर मानने से पितृपक्ष की ओर से चिन्ता का योग इस क्रूर प्रभाव को कम करने के लिए नियम से भगवान् शंकर पर जल चढ़ाया करें।

अक्षांश = 33 -10 -------------------- लग्न सारिणी -------------------- पलभा :- 8-7

तिथि	0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	लग्न
वैशा.	2	2	2	2	3	3	3	3	3	3	3	3	4	4	4	4	4	4	4	4	5	5	5	5	5	5	5	6	6	6	मेष
	38	45	52	58	4	11	18	26	34	41	49	57	5	13	20	28	36	44	52	59	7	15	23	31	38	46	54	1	10	17	
ज्येष्ठ	6	6	6	6	6	7	7	7	7	7	7	8	8	8	8	8	8	9	9	9	9	9	9	9	10	10	10	10	10	10	वृष
	25	33	41	49	56	4	12	22	32	41	51	1	11	21	31	40	50	10	10	20	30	39	49	59	9	19	29	38	48	58	
आषा.	11	11	11	11	11	11	12	12	12	12	12	13	13	13	13	13	14	14	14	14	14	15	15	15	15	15	16	16	16	16	मि.
	8	18	28	38	47	57	7	19	30	42	54	5	17	28	40	52	3	15	27	38	50	1	13	25	36	48	0	12	23	34	
श्राव.	16	16	17	17	17	17	17	18	18	18	18	18	19	19	19	19	19	20	20	20	20	20	21	21	21	21	21	22	22	22	कर्क
	47	58	9	21	33	44	56	8	20	32	45	57	9	21	33	45	57	9	22	34	45	58	10	22	34	46	59	11	23	35	
भाद्र	22	22	23	23	23	23	24	24	24	24	24	25	25	25	25	25	26	26	26	26	26	27	27	27	27	27	28	28	28	28	सिहं
	47	59	11	24	36	47	0	12	24	36	48	0	12	24	36	48	0	12	24	36	48	0	12	24	36	48	0	12	24	36	
अस्र	28	29	29	29	29	29	30	30	30	30	30	31	31	31	31	31	32	32	32	32	32	33	33	33	33	33	34	34	34	34	कन्य.
	48	0	12	24	36	48	0	12	24	36	48	0	12	24	36	48	0	12	24	36	48	0	12	24	36	48	0	12	24	36	
कार्ति	34	35	35	35	35	35	36	36	36	36	36	37	37	37	37	37	38	38	38	38	38	39	39	39	39	39	40	40	40	40	तुला
	48	0	12	24	36	48	0	12	24	36	49	1	13	25	37	49	1	13	26	38	50	2	14	26	38	51	3	15	27	39	
मार्ग	40	41	41	41	41	41	42	42	42	42	42	43	43	43	43	43	44	44	44	44	44	44	45	45	45	45	45	46	46	46	वृश्चि
	51	3	15	28	40	52	4	16	27	39	51	2	14	25	37	49	0	12	24	35	47	58	10	22	33	45	57	8	20	32	
पौष	46	46	47	47	47	47	47	48	48	48	48	48	48	49	49	49	49	49	49	50	50	50	50	50	50	51	51	51	51	51	धनु
	43	54	6	18	31	41	53	3	13	23	32	42	52	2	12	21	31	41	52	1	11	20	30	40	50	0	10	19	29	39	
माघ	51	51	52	52	52	52	52	52	53	53	53	53	53	53	53	53	54	54	54	54	54	54	54	55	55	55	55	55	55	55	मक
	49	59	9	18	28	38	48	56	4	11	19	27	35	43	50	58	6	14	22	29	37	45	53	1	8	16	24	32	40	47	
फा.	55	56	56	56	56	56	56	56	56	57	57	57	57	57	57	57	57	57	58	58	58	58	58	58	58	58	58	59	59	59	कुम्भ
	55	3	11	19	26	34	42	49	55	2	8	15	22	28	35	41	48	55	1	8	14	21	28	34	41	47	54	1	7	14	
चैत्र	59	59	59	59	59	59	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	1	1	1	1	1	1	1	1	1	2	2	2	2	2	मीन
	20	27	34	40	47	53	0	7	13	20	26	33	40	46	53	59	6	13	19	26	32	39	46	52	59	5	12	19	25	32	

दैनिक लग्न सारिणी वैशाख मास (13 अप्रेल से 13 मई) तक के लिये -- भ.स्टै, समयानुसार

वैशा	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	लग्न
अंग्रेज़ी	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	मई	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	
प्रातः	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	5	5	5	5	5	मे
तक	40	36	32	29	25	21	17	13	9	5	1	57	53	49	45	41	37	33	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	
दिन	9	9	9	9	9	9	9	9	9	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	7	7	7	7	7	7	7	वृ
तक	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	43	32	35	31	27	23	19	15	11	7	3	59	55	51	47	44	40	36	
दिन	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	9	9	9	मि
तक	49	45	41	37	33	29	25	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	30	26	23	19	15	11	7	3	59	55	51	
दिन	2	2	2	2	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	क
तक	13	9	5	1	57	53	49	45	41	37	33	29	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	30	27	23	19	15	
दिन	4	4	4	4	4	4	4	4	4	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	2	2	2	2	2	2	सिं
तक	34	30	27	23	19	15	11	7	3	59	55	51	47	43	39	35	31	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	
शां	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	4	कं
तक	55	51	47	43	39	35	31	27	23	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	32	28	24	21	17	13	9	5	1	57	
रात	9	9	9	9	9	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	तु
तक	18	14	10	7	3	59	55	51	47	43	39	35	31	27	23	19	15	11	8	4	0	56	52	48	44	40	36	32	28	24	20	
रात	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	9	9	9	9	9	वृं
तक	39	35	31	27	23	19	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	32	28	24	20	17	13	9	5	1	57	53	49	45	41	
रात	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	11	11	11	11	11	धं
तक	42	38	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	43	39	35	31	27	23	19	15	11	7	3	59	55	51	47	44	
रात	3	3	3	3	3	3	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	म
तक	20	16	13	9	5	1	57	53	49	45	41	37	33	29	25	21	17	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	30	26	22	
रात	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	2	2	2	2	कुं
तक	46	42	38	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	51	47	43	39	35	31	27	23	19	15	11	7	3	59	55	52	48	
रात	6	6	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	मी
तक	5	1	57	53	49	45	41	38	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	32	39	35	31	27	23	19	15	11	7	

दैनिक लग्न सारिणी ज्येष्ठ मास (14 मई से 13 जून तक) के लिये -- भ.स्टै, समयानुसार

ज्येष्ठ	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	
अंग्रेजी	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	जून	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	
प्रातः	7	7	7	7	7	7	7	7	7	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	5	5	5	5	5	5	5	वृ
तक	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	45	41	37	33	29	25	21	17	13	9	5	1	57	53	49	46	42	38	34	
दिन	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	7	7	7	मि
तक	47	43	39	35	31	27	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	32	28	25	21	17	13	9	5	1	57	53	49	
दिन	12	12	12	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	क
तक	11	7	3	59	55	51	47	43	39	35	31	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	32	29	25	21	17	13	
दिन	2	2	2	2	2	2	2	2	2	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	12	12	12	12	12	12	12	सिं
तक	32	29	25	21	17	13	9	5	1	57	53	49	45	41	37	33	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	
दिन	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	2	2	कं
तक	53	49	45	41	37	33	29	25	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	30	26	23	19	15	11	7	3	59	55	
शां	7	7	7	7	7	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	तु
तक	16	12	9	5	1	57	53	49	45	41	37	33	29	25	21	17	13	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	30	26	22	18	
रात	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	7	7	7	7	7	7	वृं
तक	37	33	26	25	21	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	30	26	22	19	15	11	7	3	59	55	51	47	43	39	
रात	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	9	9	9	9	9	धं
तक	40	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	45	41	37	33	29	25	21	17	13	9	5	1	57	53	49	46	42	
रात	1	1	1	1	1	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	म
तक	18	15	11	7	3	59	55	51	47	43	39	35	31	27	23	19	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	32	28	24	20	
रात	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	12	12	12	12	कुं
तक	44	40	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	53	49	45	41	37	33	29	25	21	17	13	9	5	1	57	54	50	46	
रात	4	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	मी
तक	3	59	55	51	47	43	40	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	41	37	33	29	25	21	17	13	9	5	
रात	5	5	5	5	5	5	5	5	5	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	3	3	3	3	3	3	मे
तक	39	31	27	23	19	15	11	7	3	59	55	51	47	43	39	35	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	

दैनिक लग्न सारिणी आषाढ मास (14 जून से 15 जुलाई तक) के लिये -- भ.स्टै. समयानुसार

आषाढ	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	
अंग्रेज़ी	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	जुला.	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	
प्रातः	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	5	5	5	5	5	मि
तक	45	41	37	33	29	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	30	27	23	19	15	11	7	3	59	55	51	47	43	
दिन	10	10	10	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	क
तक	9	5	1	57	53	49	45	41	37	33	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	31	27	23	19	15	11	7	
दिन	12	12	12	12	12	12	12	12	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	10	10	10	10	10	10	10	10	सिं
तक	31	27	23	19	15	11	7	3	59	55	51	47	43	39	35	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	33	29	
दिन	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	12	12	12	कं
तक	51	47	43	39	35	31	27	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	32	28	25	21	17	13	9	5	1	57	53	49	
दिन	5	5	5	5	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	तुं
तक	14	11	7	3	59	55	51	47	43	39	35	31	27	23	19	15	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	32	28	24	20	16	13	
शाम	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	5	5	5	5	5	5	5	वृं
तक	35	31	27	23	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	32	28	24	21	17	13	9	5	1	57	53	49	45	41	37	33	
रात	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	7	7	7	7	7	7	7	धं
तक	38	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	47	43	39	35	31	27	23	19	15	11	7	3	59	55	51	48	44	40	36	
रात	11	11	11	11	11	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	म
तक	17	13	9	5	1	57	53	49	45	41	37	33	29	25	21	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	30	26	22	19	15	
रात	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	10	10	10	10	10	10	कुं
तक	42	38	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	55	51	47	43	39	35	31	27	23	19	15	11	7	3	59	56	52	48	44	40	
रात	2	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	11	मी
तक	1	57	53	49	45	42	38	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	43	39	35	31	27	23	19	15	11	7	3	59	
रात	3	3	3	3	3	3	3	3	3	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	1	1	1	1	1	1	1	मे
तक	33	29	25	21	17	13	9	5	1	57	33	49	45	41	37	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	35	31	
रात	5	5	5	5	5	5	5	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	वृ
तक	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	47	43	39	35	31	27	23	19	15	11	7	3	59	55	51	48	44	40	36	32	28	24	

दैनिक लग्न सारिणी श्रावणमास (16 जुलाई से 15 अगस्त) तक के लिये -- भ.स्टै. समयानुसार

श्रावण	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	
अंग्रेजी	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	अगस्त	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	
प्रातः	8	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	
तक	3	59	55	51	47	43	39	35	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	33	29	25	21	17	13	9	5	क
दिन	10	10	10	10	10	10	10	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	8	8	8	8	8	8	8	8	8	
तक	25	21	17	13	9	5	1	57	53	49	45	41	37	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	35	31	27	सिं
दिन	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	10	10	10	10	
तक	45	41	37	33	29	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	30	27	23	19	15	11	7	3	59	55	51	47	कं
दिन	3	3	3	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	
तक	9	5	1	57	53	49	45	41	37	33	29	25	21	17	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	30	26	22	18	15	11	तु
दिन	5	5	5	5	5	5	5	5	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	3	3	3	3	3	3	3	3	
तक	29	25	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	30	26	23	19	15	11	7	3	59	55	51	47	43	39	35	31	वृं
शां	7	7	7	7	7	7	7	7	7	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	5	5	5	5	5	5	5	
तक	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	49	45	41	37	33	29	25	21	17	13	9	5	1	57	53	50	46	42	38	34	धं
रात	9	9	9	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	
तक	11	7	3	59	55	51	47	43	39	35	31	27	23	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	32	28	24	21	17	13	म
रात	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	8	8	8	8	8	8	
तक	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	57	53	49	45	41	38	33	29	25	21	17	13	9	5	1	58	54	50	46	42	38	कुं
रात	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	9	
तक	55	51	47	44	40	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	45	41	37	33	29	25	21	17	13	9	5	1	57	मी
रात	1	1	1	1	1	1	1	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	11	11	11	11	11	11	11	11	
तक	27	23	19	15	11	7	3	59	55	51	47	43	39	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	37	33	29	मे
रात	3	3	3	3	3	3	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	
तक	20	16	12	8	4	0	56	52	54	45	41	37	33	29	25	21	17	13	9	5	1	57	53	50	46	42	38	34	30	26	22	वृ
रात	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	3	3	3	3	3	3	
तक	35	31	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	32	29	25	21	17	13	9	5	1	57	53	49	45	41	37	मि

दैनिक लग्न सारिणी भाद्रमास के लिये (16 अगस्त से 15 सितम्बर) तक -- भ.रैट, समयानुसार

भाद	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	
अंग्रेजी	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	सित	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	
प्रात:	8	8	8	8	8	8	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	6	6	6	6	6	6	6	6	6	सिं
तक	23	19	15	11	7	3	59	55	51	47	43	39	36	32	28	24	20	16	12	8	6	0	56	52	48	44	40	37	33	29	25	
दिन	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	8	8	8	8	कं
तक	43	39	35	31	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	32	29	25	21	17	13	9	58	0	57	53	49	45	
दिन	1	1	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	तु
तक	7	3	59	55	51	47	43	39	35	31	27	23	19	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	32	28	24	20	17	13	9	
दिन	3	3	3	3	3	3	3	3	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	1	1	1	1	1	1	1	1	वृं
तक	27	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	32	28	25	21	17	13	9	5	1	57	53	49	45	41	37	33	29	
दिन	5	5	5	5	5	5	5	5	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	3	3	3	3	3	3	3	3	धं
तक	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	51	47	43	39	35	31	27	23	19	15	11	7	3	59	55	52	48	44	40	36	32	
शां	7	7	7	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	म
तक	9	5	1	57	53	49	45	41	37	33	29	25	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	30	26	23	19	15	11	
रात	8	8	8	8	8	8	8	8	8	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	77	7	7	7	6	6	6	6	6	6	कुं
तक	34	30	26	22	18	14	10	6	2	59	55	51	47	43	39	35	31	27	23	19	15	11	7	3	0	56	52	48	44	40	38	
रात	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	7	7	मी
तक	53	49	46	42	38	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	47	43	39	35	31	27	23	19	15	11	7	3	59	55	
रात	11	11	11	11	11	11	11	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	9	9	9	9	9	9	9	9	9	मे
तक	25	21	17	13	9	5	1	57	53	49	45	41	38	35	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	39	35	31	27	
रात	1	1	1	1	1	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	वृ
तक	18	14	10	6	2	58	54	51	47	43	39	35	31	27	23	19	15	11	7	3	59	55	52	48	44	40	36	32	28	24	20	
रात	3	3	3	3	3	3	3	3	3	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	1	1	1	1	1	1	1	1	मि
तक	33	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	31	27	23	19	15	11	7	3	59	55	51	47	43	39	35	
रात	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	3	क
तक	57	53	49	45	41	37	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	35	31	27	23	19	15	11	7	3	59	

दैनिक लग्न सारिणी आश्विन मास (16 सितम्बर से 15 अक्तुबर तक) के लिये -- भ.स्टै, समयानुसार

आश्वि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	
अंग्रेजी	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	अक्तू	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	
प्रात:	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	6	6	6	6	कं
तक	41	37	33	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	31	27	23	19	15	11	7	3	59	55	51	47	
दिन	11	11	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	तु
तक	5	1	57	53	49	45	41	37	33	29	25	21	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	30	26	22	19	15	11	
दिन	1	1	1	1	1	1	1	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	11	11	11	11	11	11	11	11	वृं
तक	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	30	27	23	19	15	11	7	3	59	55	51	47	43	39	35	31	
दिन	3	3	3	3	3	3	3	3	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	1	1	1	1	1	1	1	धं
तक	28	24	20	16	12	8	4	0	56	53	49	45	41	37	33	29	25	21	17	13	9	5	1	57	54	50	46	42	38	34	
दिन	5	5	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	म
तक	7	3	59	55	51	47	43	39	35	31	27	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	32	28	25	21	17	13	
दिन	6	6	6	6	6	6	6	6	6	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	4	4	4	4	4	4	कुं
तक	32	28	24	20	16	12	8	4	1	57	53	49	45	41	37	33	29	25	21	17	13	9	5	2	58	53	49	45	41	37	
रात	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	5	मी
तक	51	49	45	40	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	53	49	45	41	37	33	29	25	21	17	13	9	5	1	57	
रात	9	9	9	9	9	9	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	7	7	7	7	7	7	7	7	मे
तक	23	19	15	11	7	3	59	55	51	47	43	40	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	41	37	33	29	
रात	11	11	11	11	11	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	वृ
तक	16	12	8	4	0	56	53	49	45	41	37	33	29	25	21	17	13	9	5	1	57	54	50	46	42	35	34	30	26	22	
रात	1	1	1	1	1	1	1	1	1	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	11	11	11	11	11	11	मि
तक	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	33	29	25	21	17	13	9	5	1	57	53	49	45	41	37	
रात	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	क
तक	55	51	46	43	39	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	37	33	29	25	21	17	13	9	5	1	
रात	6	6	6	6	6	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	सिं
तक	17	13	9	5	1	57	53	49	45	41	38	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	39	35	31	27	23	

दैनिक लग्न सारिणी कार्तिक मास (16 अक्टूबर से 14 नवंबर तक) के लिये -- भ.स्टै. समयानुसार																															
कार्तिक	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	
अंग्रेजी	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	नवं	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	
प्रातः	9	9	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	तु
तक	7	3	59	55	51	47	43	39	35	31	27	23	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	32	28	24	21	17	13	
दिन	11	11	11	11	11	11	11	11	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	9	9	9	9	9	9	9	वृं
तक	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	32	29	25	21	17	13	9	5	1	57	53	49	45	41	37	33	
दिन	1	1	1	1	1	1	1	1	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	11	11	11	11	11	11	11	धं
तक	30	26	22	18	14	10	6	2	58	55	51	47	43	39	35	31	27	23	19	15	11	7	1	59	56	52	48	44	40	36	
दिन	3	3	3	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	म
तक	9	5	1	57	53	49	45	41	37	33	29	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	30	27	23	19	15	
दिन	4	4	4	4	4	4	4	4	4	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	2	2	2	2	2	कुं
तक	34	30	26	22	18	14	10	6	3	59	55	51	47	43	39	35	31	27	23	19	15	11	7	4	0	56	52	48	44	40	
दिन	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	3	मी
तक	53	50	46	42	38	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	47	43	39	35	31	27	23	19	15	11	7	3	59	
शां	7	7	7	7	7	7	7	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	5	5	5	5	5	5	5	5	मे
तक	25	21	17	13	9	5	1	57	53	49	45	42	38	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	43	39	35	31	
रात	9	9	9	9	9	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	वृ
तक	18	14	10	6	2	58	55	51	47	43	39	35	31	27	23	19	15	11	7	3	59	56	52	48	44	40	36	32	28	24	
रात	11	11	11	11	11	11	11	11	11	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	9	9	9	9	9	9	मि
तक	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	35	31	27	23	19	15	11	7	3	59	55	51	47	43	39	
रात	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	क
तक	57	53	49	45	41	38	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	39	35	31	27	23	19	15	11	7	3	
रात	4	4	4	4	4	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	2	2	2	2	2	2	2	2	2	सिं
तक	19	15	11	7	3	59	55	51	47	43	40	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	41	37	33	29	25	
रात	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	4	4	4	4	कं
तक	39	35	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	33	29	22	21	17	13	9	5	1	57	53	49	45	

दैनिक लग्न सारिणी मार्ग मास (15 नवम्बर से 14 दिसंबर तक) के लिये -- भ.स्टै, समयानुसार																															
मार्ग	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	
अंग्रेज़ी	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	दिसं	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	
प्रातः	9	9	9	9	9	9	9	9	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	7	7	7	7	7	7	7	वृं
तक	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	31	27	23	19	15	11	7	3	59	55	51	47	43	39	35	
दिन	11	11	11	11	11	11	11	11	11	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	9	9	9	9	9	9	धं
तक	32	28	24	20	16	12	8	4	0	57	53	49	45	41	37	33	29	25	21	17	13	9	5	1	58	54	50	46	42	38	
दिन	1	1	1	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	म
तक	11	7	3	59	55	51	47	43	39	35	31	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	32	29	25	21	17	
दिन	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	12	12	12	12	12	कुं
तक	36	32	28	24	20	16	12	8	5	1	57	53	49	45	41	37	33	29	25	21	17	13	9	6	2	58	54	50	46	42	
दिन	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	मी
तक	55	52	48	44	40	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	53	49	45	41	37	33	29	25	21	17	13	9	5	1	
दिन	5	5	5	5	5	5	5	5	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	3	3	3	3	3	3	3	मे
तक	27	23	19	15	11	7	3	0	55	51	47	43	40	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	45	41	37	33	
शां	7	7	7	7	7	7	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	5	5	5	5	5	5	5	5	5	वृ
तक	20	16	12	8	4	0	57	53	49	45	41	37	33	29	25	21	17	13	9	5	1	58	54	50	46	42	38	34	30	26	
रात	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	7	7	7	7	7	मि
तक	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	37	33	29	25	21	17	13	9	5	1	57	53	49	45	41	
रात	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	क
तक	59	55	51	47	43	40	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	41	37	33	29	25	21	17	13	9	5	
रात	2	2	2	2	2	2	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	12	12	12	12	12	12	12	12	12	सिं
तक	21	17	13	9	5	1	57	53	49	45	42	38	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	43	39	35	31	27	
रात	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	2	2	2	2	कं
तक	41	37	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	35	31	27	23	19	15	11	7	3	59	55	51	47	
रात	7	7	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	तु
तक	5	1	57	53	49	45	41	37	33	29	25	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	30	26	23	19	15	11	

दैनिक लग्न सारिणी पौषमास (15 दिसम्बर से 12 जनवरी) तक के लिये -- भ.स्टै. समयानुसार

पौष	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	
अंग्रेजी	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	जन.	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
प्रातः	9	9	9	9	9	9	9	9	9	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	7	7	7	7	धं
तक	34	30	26	22	18	14	10	6	2	59	55	51	47	43	39	35	31	27	23	19	15	11	7	3	0	56	52	48	44	
दिन	11	11	11	11	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	म
तक	13	9	5	1	57	53	49	45	41	37	33	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	31	27	23	
दिन	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	10	10	10	कुं
तक	38	34	30	26	22	18	14	10	7	3	59	55	51	47	43	39	35	31	27	23	19	15	11	8	4	0	56	52	48	
दिन	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	मी
तक	57	54	50	46	42	38	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	55	51	47	43	39	35	31	27	23	19	15	11	7	
दिन	3	3	3	3	3	3	3	3	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	1	1	1	1	1	1	मे
तक	29	25	21	17	13	9	5	1	57	53	49	45	42	38	34	30	25	22	18	14	10	6	2	58	54	50	47	43	39	
दिन	5	5	5	5	5	5	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	3	3	3	3	3	3	3	वृ
तक	22	18	14	10	6	2	59	55	51	47	43	39	35	31	27	23	19	15	11	7	3	0	56	52	48	44	40	36	32	
शां	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	5	5	5	5	मि
तक	38	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	39	35	31	27	23	19	15	11	7	3	59	55	51	47	
रात	10	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	क
तक	1	57	53	49	45	42	38	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	43	39	35	31	27	23	19	15	11	
रात	12	12	12	12	12	12	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	10	10	10	10	10	10	10	सिं
तक	23	19	15	11	7	3	59	55	51	47	44	40	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	45	41	37	33	
रात	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	12	12	कं
तक	43	39	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	37	33	29	25	21	17	13	9	5	1	57	53	
रात	5	5	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	तु
तक	7	3	59	55	51	47	43	39	35	31	27	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	32	28	25	21	17	
रात	7	7	7	7	7	7	7	7	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	5	5	5	5	5	5	वृं
तक	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	32	29	25	21	17	13	9	5	1	57	53	49	45	41	37	

दैनिक लग्न सारिणी माघमास (13 जनवरी से 11 फर्वरी) तक के लिये -- भा.स्टै.समयानुसार

माघ	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	
अंग्रेजी	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	फर्वरी	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	
प्रात:	9	9	9	9	9	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	7	7	7	7	7	7	7	7	7	म
तक	19	15	11	7	3	59	55	51	47	43	39	35	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	33	29	25	
दिन	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	8	8	8	कुं
तक	44	40	36	32	28	24	20	16	12	9	5	1	57	53	49	45	41	37	33	29	25	21	17	13	10	6	2	58	54	50	
दिन	12	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	मी
तक	3	59	56	52	48	44	40	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	57	53	49	45	41	37	33	29	25	21	17	13	9	
दिन	1	1	1	1	1	1	1	1	1	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	11	11	11	11	11	मे
तक	35	31	27	23	19	15	11	7	3	59	55	51	48	44	40	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	49	45	41	
दिन	3	3	3	3	3	3	3	3	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	1	1	1	1	1	1	1	वृ
तक	28	24	20	16	12	8	4	1	57	53	49	45	41	37	33	29	25	21	17	13	9	4	2	58	54	50	46	42	38	34	
दिन	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	3	3	3	मि
तक	43	40	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	41	37	33	29	25	21	17	13	9	5	1	57	53	49	
शां	8	8	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	क
तक	7	3	59	55	51	47	44	40	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	45	41	37	33	29	25	21	17	13	
रात	10	10	10	10	10	10	10	10	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	8	8	8	8	8	8	8	सिं
तक	29	25	21	17	13	9	5	1	57	53	49	46	42	38	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	51	47	43	39	35	
रात	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	10	10	कं
तक	49	45	41	38	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	39	35	31	27	23	19	15	11	7	3	59	55	
रात	3	3	3	3	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	तु
तक	13	9	5	1	57	53	49	45	41	37	33	29	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	30	27	23	19	
रात	5	5	5	5	5	5	5	5	5	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	3	3	3	3	3	3	वृं
तक	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	35	31	27	23	19	15	11	7	3	59	55	51	47	43	39	
रात	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	5	5	5	5	5	धं
तक	36	32	28	24	20	16	12	8	4	1	57	53	49	45	41	37	33	29	25	21	17	13	9	5	2	58	54	50	46	42	

दैनिक लग्न सारिणी फाल्गुन मास (12 फर्वरी से 13 मार्च तक) के लिये -- भ.स्टै. समयानुसार

फाल्गुन	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	
अंग्रेजी	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	मार्च	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	
प्रातः	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	6	6	
तक	46	42	38	34	30	26	22	18	14	11	7	3	59	55	51	47	43	39	35	31	27	23	19	15	12	8	4	0	56	52	कुं
दिन	10	10	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	
तक	5	1	58	54	50	46	42	38	34	30	26	22	18	14	10	6	2	59	55	51	47	43	39	35	31	27	23	19	15	11	मी
दिन	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	9	9	9	9	9	
तक	37	33	29	25	21	17	13	9	5	1	57	53	50	46	42	38	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	51	47	43	मे
दिन	1	1	1	1	1	1	1	1	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	11	11	11	11	11	11	
तक	30	26	22	18	14	10	6	3	59	55	51	47	43	39	35	31	27	23	19	15	11	7	4	0	56	52	48	44	40	36	वृ
दिन	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	1	1	1	
तक	45	42	38	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	43	39	35	31	27	23	19	15	11	7	3	59	55	51	मि
दिन	6	6	6	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	
तक	9	5	1	57	53	49	46	42	38	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	47	43	39	35	31	27	23	19	15	क
शं	8	8	8	8	8	8	8	8	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	6	6	6	6	6	6	
तक	31	27	23	19	15	11	7	3	59	55	51	48	44	40	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	49	45	41	37	सिं
रात	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	8	
तक	51	47	43	40	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	41	37	33	29	25	21	17	13	9	5	1	57	कं
रात	1	1	1	1	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	11	11	11	11	11	11	11	11	11	11	
तक	15	11	7	3	59	55	51	47	43	39	35	31	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	36	32	29	25	21	तु
रात	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	1	1	1	1	1	
तक	36	32	8	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	37	33	29	25	21	17	13	9	5	1	57	53	49	45	41	वृं
रात	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	3	3	3	3	
तक	38	34	30	26	22	18	14	10	6	3	59	55	51	47	43	39	35	31	27	23	19	15	11	7	4	0	56	52	48	44	धं
रात	7	7	7	7	7	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	5	5	5	5	5	5	5	5	5	
तक	17	13	9	5	1	57	53	49	45	41	37	35	33	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	35	31	27	म

दैनिक लग्न सारिणी चैत्र मास (14 मार्च से 12 अप्रेल तक) के लिये -- भ.स्टै, समयानुसार																															
चैत्र	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	
अंग्रेज़ी	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	अप्रेल	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
प्रातः	8	8	8	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	मी
तक	7	3	0	56	52	48	45	40	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	57	53	49	45	41	37	33	29	25	21	17	13	
दिन	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	7	7	7	7	मे
तक	39	35	31	27	23	19	15	11	7	3	59	55	52	48	44	40	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	53	49	45	
दिन	11	11	11	11	11	11	11	11	11	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	9	9	9	9	9	9	वृ
तक	32	28	24	20	16	12	8	5	1	57	53	49	45	41	37	33	29	25	21	17	13	9	6	2	58	54	50	46	42	38	
दिन	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	11	11	मि
तक	47	44	40	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	45	41	37	33	29	25	21	17	13	9	5	1	57	53	
दिन	4	4	4	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	क
तक	11	7	3	59	55	51	48	44	40	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	49	45	41	37	33	29	25	21	17	
दिन	6	6	6	6	6	6	6	6	6	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	4	4	4	4	4	4	सिं
तक	33	29	25	21	17	13	9	5	1	57	53	50	46	42	38	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	47	43	39	
शां	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	8	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	6	कं
तक	53	49	45	42	38	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	43	39	35	31	27	23	19	15	11	7	3	59	
रात	11	11	11	11	11	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	10	9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	तु
तक	17	13	9	5	1	57	53	49	45	41	37	33	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	38	34	31	27	23	
रात	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	11	11	11	11	11	वृं
तक	38	34	30	26	22	18	14	10	6	2	58	54	50	46	42	39	35	31	27	23	19	15	11	7	3	59	55	51	47	43	
रात	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	3	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	2	1	1	1	1	धं
तक	40	36	32	28	24	20	16	12	8	5	1	57	53	49	45	41	37	33	29	25	21	17	13	9	6	2	58	54	50	46	
रात	5	5	5	5	5	5	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	3	3	3	3	3	3	3	3	म
तक	23	19	15	11	7	3	59	55	51	47	43	39	36	32	28	24	20	16	12	8	4	0	56	52	48	44	40	37	33	29	
रात	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	6	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	4	4	कुं
तक	48	44	40	36	32	28	24	20	16	13	9	5	1	57	53	49	45	41	37	33	29	25	21	17	14	10	6	2	58	54	

ग्रहस्पष्ट प्रत्येक पक्ष की अष्टमी के प्रातः 5 बजे 30

चैत्र शुक्ल पक्ष अष्ट॰ भौम 15 अप्रेल

सू	चं	भौ	बु	गु	शु	श	रा
0	3	4	0	9	0	11	5
1	4	23	15	23	4	18	3
15	29	58	50	31	26	18	43
2	3	9	11	4	32	38	41
58	718	12	4	8	74	7	3
43	17	46	3	50	58	14	11+

वैशाख कृष्ण पक्ष अष्ट॰ बुध॰ 30 अप्रेल

सू	चं	भौ	बु	गु	शु	श	रा
0	9	4	0	9	0	11	5
15	14	22	8	25	22	20	2
52	26	56	27	33	58	7	55
20	4	59	49	52	18	12	59
58	847	7	22	6	74	6	3
15	31	8	12+	1	32	38	11+

वैशाख शुक्ल पक्ष अष्ट॰ गुरु 15 मई

सू	चं	भौ	बु	गु	शु	श	रा
1	4	4	0	9	1	11	5
0	6	24	7	27	11	21	2
23	18	38	8	3	26	48	8
25	27	2	51	44	22	34	18
57	708	16	33	4	74	6	3
51	41	59	34+	45	26	8	11+

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष अष्ट॰ गुरु 29 मई

सू	चं	भौ	बु	गु	शु	श	रा
1	10	4	0	9	1	11	5
13	9	28	19	27	28	23	1
50	31	9	38	53	36	13	23
59	39	49	3	24	52	32	47
57	847	22	74	1	74	5	3
33	45	6	13	6	14	30	11

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष अष्ट शुक्र 13 जून

सू	चं	भौ	बु	गु	शु	श	रा
1	4	5	1	9	2	11	5
28	26	3	13	28	16	24	0
12	0	31	32	6	57	31	36
39	9	14	45	21	36	8	5
57	711	27	126	1	74	4	3
19	36	55	25	25+	2	27	11

आषाढ कृष्ण पक्ष सप्त॰ 27 जून

सू	चं	भौ	बु	गु	शु	श	रा
2	11	5	2	9	3	11	4
11	4	9	13	27	4	25	29
34	36	37	2	39	1	28	51
7	57	59	37	49	5	14	34
57	841	31	126	3	73	3	3
13	56	38	25	57+	50	16	11

आषाढ शुक्ल पक्ष अष्ट॰ रवि 13 जुला॰

सू	चं	भौ	बु	गु	शु	श	रा
2	5	5	3	9	3	11	4
26	27	17	14	26	23	26	29
49	52	37	53	27	26	12	0
37	22	13	12	4	1	24	42
57	733	34	105	6	73	1	3
13	53	7	52	7+	24	53	11+

श्रावण कृष्ण पक्ष अष्ट॰ 27 जुला॰

सू	चं	भौ	बु	गु	शु	श	रा
3	0	5	4	9	4	11	4
10	13	25	6	24	10	26	28
11	7	18	8	54	19	30	16
7	21	13	22	30	34	36	11
57	813	36	72	7	72	0	3
20	53	9	36	32+	56	32	11+

श्रावण शुक्ल पक्ष अष्ट॰ भौम॰ 12 अगस्त

सू	चं	भौ	बु	गु	शु	श	रा
3	7	6	4	9	4	11	4
25	0	4	20	22	29	26	27
30	58	43	57	51	30	26	25
29	47	59	26	35	4	46	19
57	773	37	37	7	72	0	3
35	29	55	36	42+	10	54+	11+

भाद्र कृष्ण पक्ष अष्ट॰ 25 अगस्त

सू	चं	भौ	बु	गु	शु	श	रा
4	1	6	4	9	5	11	4
8	6	12	19	21	14	26	26
0	45	49	58	13	56	4	43
38	44	37	40	14	29	41	59
57	798	39	19	7	71	2	3
53	5	24	13+	21+	29	12+	11+

भाद्र शुक्ल पक्ष अष्ट॰ 10 सितम्बर

सू	चं	भौ	बु	गु	शु	श	रा
4	7	6	4	9	6	11	4
23	22	23	8	19	3	25	25
30	43	15	52	32	44	16	53
12	52	19	36	40	6	36	7
58	793	40	39	5	70	3	3
19	5	44	13+	46+	23	30+	11+

आश्विन कृष्ण पक्ष अष्ट बुध 24 सित॰

सू	चं	भौ	बु	गु	शु	श	रा
5	2	7	4	9	6	11	4
7	12	2	21	18	19	24	25
9	16	45	51	36	55	19	8
24	19	11	20	8	14	55	36
58	752	42	101	3	68	4	3
46	39	9	4	7+	9	15+	11+

ग्रहस्पष्ट प्रत्येक पक्ष की अष्टमी के प्रात: 5 बजे 30

आश्विन शुक्ल पक्ष अष्ट गुरु 9 अक्टूबर

सू	चं	भौ	बु	गु	शु	श	रा
5	8	7	5	9	7	11	4
21	15	13	18	18	6	23	24
54	29	16	15	16	53	10	20
42	41	43	56	9	58	35	54
59	810	42	107	0	66	4	3
16	24	44	45	47+	47	40+	11+

कार्तिक कृष्ण पक्ष अष्ट॰ गुरु 23 अक्टू॰

सू	चं	भौ	बु	गु	शु	श	रा
6	3	7	6	9	7	11	4
5	3	23	11	18	22	22	23
47	30	23	51	37	14	5	36
26	21	25	48	45	7	8	23
59	735	43	104	1	63	4	3
45	3	56	17	44	50	16+	11+

कार्तिक शुक्ल पक्ष अष्ट॰ शनि 8 नव॰

सू	चं	भौ	बु	गु	शु	श	रा
6	9	8	7	9	8	11	4
21	23	5	6	19	8	20	22
47	0	14	33	48	46	58	45
27	4	57	43	1	18	31	31
60	840	44	91	5	56	3	3
15	3	40	10	34	22	37+	11+

मार्ग कृष्ण पक्ष अष्ट शनि 22 नव॰

सू	चं	भौ	बु	गु	शु	श	रा
7	4	8	7	9	8	11	4
5	5	15	26	21	21	20	22
53	53	50	17	25	52	14	1
14	43	52	16	25	20	27	0
60	711	45	73	7	47	2	3
37	38	14	49	38	32	15+	11+

मार्ग शुक्ल पक्ष अष्ट रवि 7 दिस॰

सू	चं	भौ	बु	गु	शु	श	रा
7	10	8	8	9	9	11	4
21	17	27	9	23	3	19	21
5	44	23	30	41	14	49	13
4	13	40	6	30	12	19	19
60	844	45	0	9	32	0	3
56	10	34	59+	32	58	53+	11+

पौष कृष्ण पक्ष अष्ट॰ सोम॰ 22 दिस॰

सू	चं	भौ	बु	गु	शु	श	रा
8	5	9	7	9	9	11	4
6	19	9	25	26	9	19	20
20	10	5	49	24	38	44	25
12	0	7	2	30	14	6	37
61	715	45	71	10	8	0	3
7	8	43	20+	56	47	42	11+

पौष शुक्ल पक्ष सप्त॰ सोम 5 जन॰

सू	चं	भौ	बु	गु	शु	श	रा
8	11	9	7	9	9	11	4
20	12	20	27	29	8	20	19
26	48	5	41	15	23	3	41
22	10	12	51	46	44	20	6
61	845	45	50	14	22	3	3
9	1	49	22	16	34+	9	11+

माघ कृष्ण पक्ष अष्ट॰ बुध 21 जन॰

सू	चं	भौ	बु	गु	शु	श	रा
9	6	10	8	10	8	11	4
6	8	2	17	2	29	20	18
54	52	42	18	48	34	50	50
5	12	15	0	7	25	22	14
61	725	47	83	14	35	3	3
4	45	4	9	16	50+	14	11+

माघ शुक्ल पक्ष अष्ट॰ बुध 4 फर॰

सू	चं	भौ	बु	गु	शु	श	रा
9	0	10	9	10	8	11	4
21	21	13	8	6	24	21	18
7	42	44	19	3	42	51	5
48	59	30	23	50	37	5	43
60	827	45	99	15	13	5	3
50	10	57	14	41	10	14	11+

फाल्गुण कृष्ण पक्ष अष्ट॰ 20 फर॰

सू	चं	भौ	बु	गु	शु	श	रा
10	7	10	10	10	8	11	6
7	11	26	5	9	28	23	17
18	21	17	23	53	15	19	14
28	33	42	14	28	41	8	51
60	757	44	111	12	29	6	3
29	31	14	19	38	24	2	11+

फाल्गुण शुक्ल पक्ष अष्ट॰ गुरु 5 मार्च

सू	चं	भौ	बु	गु	शु	श	रा
10	1	11	10	10	9	11	4
20	15	6	29	13	6	24	16
22	48	25	50	1	24	42	33
41	22	5	52	14	42	17	31
60	809	45	109	13	43	6	3
6	51	19	50	32	9	24	11+

चैत्र कृष्ण पक्ष अष्ट॰ शनि 21 मार्च

सू	चं	भौ	बु	गु	शु	श	रा
11	8	11	11	10	9	11	4
6	2	18	24	16	20	26	15
20	34	44	40	49	3	34	42
18	58	24	28	7	2	47	38
59	773	45	44	13	56	7	3
35	57	10	4	20	8	5	11+

विषय सूची

सम्मति	2	श्री राम स्तुति:	55-58	प्रेप्युन	101-104	पंचक	146
विजयेश्वर पंचांग	3	नवग्रह स्तोत्र	59-60	इन्द्राक्षी	105-106	गण्डान्त	147-148
गीता प्रवचन	4-5	श्री गणेशस्तुति:	61-62	आरती	107	ग्रह संचार	149
लल्लद्यद	6	आसय शरण	62-63	जातक मिलाप	108-117	मूल नक्षत्र चक्र	150
पंचस्तवी	7	देवी प्रार्थना	63-66	यात्रा प्रकरण	118-119	आश्लेषा चक्र	151
हमारे प्रकाशन	8-9	शंकर प्रार्थना	66-68	अवश्य पढ़िये	120-127	मुहूर्त 1998-2055	152-153
कार्यालय के नियम	10	शिवाय नम:	69-70	यज्ञोपवीत कब	128-129	सूर्योदयास्त	154-155
ब्राह्मी विद्या	11-12	लिंगाष्टकम्	71-72	लोक संग्रह	130	भविष्यवाणी	156-160
नित्य प्रार्थना विधि	12-15	शिवोऽहं	73-74	मस छुस वस	131	जन्त्री	161-184
दुर्गास्तोत्र	16	विष्णुस्तुति:	74-75	मांस खाना निषेध	132-133	मुहूर्त	185-224
गौरी स्तुति:	17-23	नारायण स्तुति:	75-76	भोजन खाने की विधि	134	राशि के अनुसार मुहूर्त	225-236
शिवस्तुति:	24-28	गुरुस्तुति:	77	ग्रहण	135	साढसत्ती	287
शिव संकल्प	28-30	विष्णु प्रार्थना	78	निषेध समय	135	राशिफल	237-286
अष्टादश श्लोकी गीता	31-37	शिवचामर	79	आमदनी खर्च	136-139	ढटय्या	288
सप्त श्लोकी गीता	37-40	प्रार्थना	80	महात्माओं के यज्ञ	140-141	लग्न सारणी	289-301
सप्त श्लोकी दुर्गा	40-43	गायत्री मन्त्र का महत्व	81-87	जयन्तियां	142	ग्रह स्पष्ट	302-303
वन्देमहापुरुष	44-52	धर्म शास्त्र	87-92	पितृ-पक्ष के श्राद्ध कब	142	विषय सूची	304
मंगलस्तोत्र	53-54	श्राद्ध संकल्प	93-93	हमारे पर्व और त्यौहार	143		
एक श्लोकी रामायण	55	जन्म दिन पूजा	94-100	व्रतों की सूची	144-146		

"सरस्वती वन्दना"

शारदा शारदाम्भोजवदना वदनाम्बुजे
सर्वदा सर्वदास्माकं सन्निधिं सन्निधिं क्रियात्।। 1।।

अन्वय-शब्दार्थ

शारदा = शारदामाता, **शारदाम्भोजवदना** = शरत् काल के समानमुख वाली, **वदनाम्बुजे** = मुख कमल में, **सर्वदा** = सब मनोरथों को देने वाली, **सर्वदा** = नित्य, **अस्माकं** = हमारे, **सन्निधिं सिंन्निधिं क्रियात्** = निवास करे।

अर्थ –शरत् काल के कमल के समान् मुखवाली, सब मनोरथों को देने वाली, शारदा भगवती नित्य मेरे मुख कमल में सदा निवास करे।

पातु नो निकषग्रावा मतिहेम्नः सरस्वती
प्राज्ञेतर-परिच्छेदं वचसैव करोति या।। 2।।

विजयेश्वर कैसट्स

1. **गीता प्रवचन** (काश्मीरी भाषा में अर्थ तथा व्याख्या सहित) ग्यारह कैसट्ों में सम्पूर्ण गीता मूल्य 300/- 2. **लल्लवाक्य** (काश्मीरी भाषा में अर्थ तथा व्याख्या सहित) 3. **रामगीता** 4. **अन्तिम संस्कार विधि** 5. **शिवरात्रि पूजा** 6. **भानी सहस्रनाम** 7. **नित्य नियम विधि** 8. **पंचस्तवी।**

प्रेम नाथ शास्त्री की जबान से भरे हुये ऊपर लिखित कैसट्स मंगवा कर अपने घर में धार्मिक तथा भारतीय संस्कृति को जीवित रखें।

नक्कालों से सावधान : *असली कैसट्स खरीदते समय कैसट् पर भगवान् कृष्ण का फोटू अवश्य देखें, हमारे प्रत्येक कैसट् पर भगवान् कृष्ण का फोटू ट्रेड मार्क के रूप में लगा हुआ हैं।*

-प्रबन्धक

मतिहेम्नः = बुद्धिरूपी सोने के लिये, **निकषग्रावा** = कसौटी के समान, **सरस्वती** = सरस्वती माता, **या** = जो, **वचसैव** = केवल बोलचाल से ही (प्राज्ञ = विद्वान्, **प्राज्ञ-इतर** = प्राज्ञ के विरुद्ध = मुर्ख) **प्राज्ञेतर**= मूर्ख और विद्वान् का, **परिच्छेदं** = भेद, **करोति** = करती है, **पातु** = रक्षा करे, **नः** = हमारी

अर्थ - बुद्धिरूपी सोने के लिये, कसौटी के समान, सरस्वती भगवती जो बोलचाल से ही मूर्ख और विद्वान् का भेद करती है, हमारी रक्षा करे।

सरस्वति महाभागे विद्ये कमल लोचने

विश्वरूपे विश्वालाक्षि विद्यां देहि सरस्वति।।3।।

अन्वय-शब्दार्थ

सरस्वति = हे सरस्वती माता, **महाभागे** = बड़े भाग्यवाली, **विद्ये** = ज्ञान रूप वाली, **कमल लोचने** = कमल के समान नेत्रवाली, **विश्व रूपे** = जगत रूप वाली, **विश्वालाक्षि** = विशाल नेत्र वाली, **विद्यां देहि** = हमें विद्या दे दो।

अर्थ-हे सरस्वती माता, हे बड़े भाग्यवाली, ज्ञानरूप वाली, कमल के समान नेत्रवाली, जगत् रुप वाली, विशाल नेत्र वाली हमें विद्या दे दो।

(पञ्चाङ्गप्रवर्तक)

यत्-चावहा-सार्थम्-असत्कृतोसि
विहारशय्यासन-भोजनेषु ।
एकोऽथवा-प्यच्युत तत्समक्ष
तत्-क्षामये-त्वाम्-अहम्-अप्रमेयम् ।।

श्री-मदमगवद्गीता

संशोधक :

भावार्थ :- हे गुरुदेव ! विहार शय्या आसन भोजनादि में अकेले अथवा किसी के सामने यदि आप भूल से भी मेरे से अपमानित हुये होंगे, उस अपराध के लिये क्षमा मांगता हूँ ।

जन्त्री मिलने का पता :

देहली : काश्मीरी समीत्ति, अमर कालोनी, लाजपत नगर,

2A. **तनेजा इल्कट्रोनिक्स एण्ड टैन्ट हाउस** लाजपत नगर, ☎ 6429046

B. **ब्रह्मपुत्र कम्पलैक्स,** शाप नं० 45 सैक्टर - 29 नौएडा ☎ 8539338

3. **D.P.B. PUBLICATION** (Dehati Pustak Bhandar) 110, Chawri Bazar, Delhi-110006 ☎ 3273220

जम्मू : **विजयेश्वर धार्मिक पुस्तक भण्डार** तालाब तिलो ☎ 555763, 555607

2. **जे० के० बुक शाप** तालाब तिलो

3. **भसीन पिकचर पैलस** पक्का ढंगा ☎ 43885

4. **गुप्ता स्टेशनरी स्टोर,** सीटी चौक

उधमपुर : **यूनिवर्सल न्यूज़ एजेन्सी,** मुकर्जी बाजार